MISCELLANEOUS

COLLECTED WORKS OF
G. B. K. HOOJA
VICE CHANCELOR

GURUKUL KANGRI VISPWAVIEYLAYA
HARDWAR

3

साप्ताहिक ... मुख पत्र

...प–७४२५०

...३५ दयानन्दाब्द १५५

कलह और वादविवाद

—कविराज बनवारीलाल शादां वैद्य मानिकपुरा नई दिल्ली

दुनियां में इस वक्त आपसी कलह जोरों पर है, एक देश कोई अच्छा काम करता है तो भी दूसरा उसे चुनौती समझता है। एक अगर कोई अच्छे समझौते की बात करता है तो दूसरा समझता है इसमें कोई चाल है।

इसका कारण और चाहे जो कुछ हो, एक बड़ा कारण यह है कि दुनियां के नेता बोलते बहुत ज्यादा हैं।

अगर दिल में किसी के लिये बुरा ख्याल आवे और हम उसे जाहिर न करें तो वह आगे ज़हर नहीं फैलाता और दबकर वहीं मर जाता है। इस बारे में भाषण करने से यह विष चारों तरफ फैलता जाता है।

यही कारण है कि प्राचीनकाल में भारत में मौन पर जोर दिया जाता था। क्योंकि यह एक जबरदस्त इन्द्रिय (जबान) पर काबू पाने का उपाय था। बरखिलाफ उसके अब ज्यादा बोलना सिखाया जाता है। प्राचीन नीतिकारों ने इस बारे में कैसा सुन्दर श्लोक कहा है—

पठतो नास्ति मूर्खत्वं, जपतो नास्ति पातकम्।
मौनिनः कलहो नास्ति, न भयं चास्ति जाग्रतः॥

अर्थात् जो अध्ययन करने का आदी है वह मूर्ख नहीं रह सकता, जो ईश्वरभजन करने वाला है उसे पाप नहीं छू सकता, जो चुप्पी साधना जानता है उसका किसी से झगड़ा नहीं हो सकता और जो जागता रहता है यानी हर वक्त सावधान रहता है उसके लिये डर पैदा नहीं हो सकता।"

अच्छा वातावरण बनाने के लिये हमें सोचना पड़ेगा। हम तभी सोच सकते हैं जब मौन होकर अपनी अच्छाइयों और बुराइयों का ध्यान करें। तभी तो हम कलह और वादविवाद से बचकर अपना उत्थान कर सकते हैं।

उत्तर दिया कि डिपार्टमैंट ... अदम हुसैन की पुशत पनाही पर भरोसा थे। 56 प्रतिशत और 66 प्रतिशन

. एल. पंजाब की तीन डिग्रियों के ी। यद्यपि उनके ऊपर अपनी और ...ल हो रहा था। लेकिन इसी धुन ...ation है Rehablitate है। ...मांदा जि ना था और तहसील सघड़ ...रीब तर तहसील थी। शिक्षा ने ...स्कूल के स्तर तक स्कूल को चलाना ...म होगा। (बाकी फिर)

...ा में ✝

...ाले लड़कों को इकट्ठा कर के एक ...ों और उनमें जितने लड़के असहाय ...रहने सहने, खाने पीने व किताबों ...ा चुनाव करें तो इस प्रकार से जो ...से वह पढ़ाई कर सकेंगे। उनका

...देकर दान

...।

...ी वेद व्यास साहब एडवोकेट का ...लोक चन्द भल्ला ने की। जनवरी ...8 को श्री लाल चन्द जी सभरवाल साहब एडवोकेट जालन्धर का व्याख्यान शराब ... कानून ... जावे ? पर हुआ। जिसकी प्रधानता श्री हरचरण सिंह साहिब गिल Retd. P.C. S. जालन्धर ने की।

○——○

स्वर्गवासी राय साहिब रंजीत राय नारंग रजिस्टरार पंजाब एंड हरियाणा हाई-कोर्ट चण्डगढ़, इस महानात्मा का जीवन चरित्र उचित समय पर पाठकों के सामने रखा जावेगा। सरकार के अधिकारियों का इकतदार का नशा इन्सान को इन्सान नहीं रहने देता। परन्तु नारंग साहब इतने बड़े अधिकारी होते हुए भी बहुत नम्र थे। समस्याओं का समाधान करना और फरियाद की ओर ध्यान देना इतना धार्मिक था। जिसका उदाहरण मिलना कठिन है। वह नेकी के एक नमूना थे। इस नेक आत्मा के चरणों में श्रद्धांजली भेंट की जाती है।

○——○

19 मार्च इतवार 4—30 बजे शाम सरदार उजागर सिंह एडवोकेट साहब का लैक्चर होगा।

...कार के तपस्या से शरीर दिल फौलाद की तरह सख्त बन ...पर यह परमात्मा की दया से प्राप्त होती है स्व० चमूपति जी इस तरह प्रकट किये हैं। ...रे अन्नमय कोष को शारीरिक ...णमय कोष को प्राणायाम से, ...कोष को मानसिक तप से ...फिर आनन्द कोष तो है ही ...। जिन का वह कोष खुल ...तो सोम रस के स्रोत में ही ...जो पकता है, वह प्रभु के परिष्कृत ...न करता है।

(सोम सरोवर पृष्ठ २२८

...प्रकार तपस्वी जीवन ही अमृत ...न करता हुआ। मोक्ष की ...ा ही चला जाता है, मुड़ता

—यज्ञमित्र

...वश्यकता है

...तिनिधि सभा पंजाब को आर्य ...देशक, भजनोपदेशकों की आव...कता है। कर्मठ कार्यकर्त्ता, सदा...ी वैदिक सिद्धान्तों से परिचित ...ब प्रान्त में ही रहकर वैदिक ...के प्रचार कार्य करने के ...क व्यक्ति आवेदन कर सकते ...गुरुकुलीय स्नातक, अनुभवी ...क्त को वरीयता दी जाएगी। ...योग्यतानुसार। आवेदन ...।

...रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री
...र्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब
जालन्धर-४

...र सोने के सिक्का रखने वाला ...ो खा नहीं सकता। क्योंकि ...उस सोने को न पचाने की ...मर्थ्य है न उसकी एवज में कुछ ...रने की कोशिश ही करता है। ...में प्रयत्न करने की शक्ति ...हीं है क्योंकि भोग-विलास ने ...शरीर के नस-नस को खोखला ...ा है। बच्चा जब जन्म लेकर ...पर चलने की कोशिश करता है ...से भोग्य सामग्री घेर लेते हैं। एवं ...यह एहसास नहीं होता कि ...ो किस प्रकार झेला जाए। जब ...ट को झेलना ही पुरुषार्थ है।

का कार्य करता है।

वाणी की पवित्रता, संयम ही आत्म चिन्तन का सहायक है। वाणी मधुयुक्त वाणी हो। मधुयुक्त वाणी ही सुनने का प्रयत्न करें। यही वाणी का तप है। दूसरा तप कर्म है। कर्म करने के लिये मनुष्य यहां आया है। कर्म की स्वतन्त्रता प्राप्त करके वह भटक गया। इस झमेले से दूर हटना चाहिए। इसके लिये अच्छे कर्म ही करना एक उपाय है। पर इस कर्म के लिये भी तप की आवश्यकता है। कर्म तप को गीता में निष्काम कर्म रूप में प्रस्तुत किया है। स्वार्थ रहित कर्म

इन चारों का कदापि नहीं हो सकता।

आर्य मर्यादा के पाठकों के लिए शुभ अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य मर्यादा के पाठकों को कुछ आर्थिक लाभ उठाने का शुभ अवसर प्रदान करने का निश्चय कर रही है। उसके निश्चयानुसार जो पाठक या संस्थायें कम से कम ६ ग्राहक एक साथ बनायेंगें उन्हें वार्षिक शुल्क में ५० प्रतिशत की कटौती तथा जो १२ ग्राहक एक साथ बनायेंगें उन्हें शत प्रतिशत (केवल एक वर्ष के लिये) की कटौती दी जायेगी। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें या पत्र लिखें।

व्यवस्थापक, आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर

कृण्वन्तो विश्वमार्य

सन्देश

साप्ताहिक

नई दिल्ली

रोड, नई दिल्ली-१ दूरभाष : ३१०

३५ रविवार, ९ जुलाई १९७८ दयानन्दाब्द १

प्रेरक प्रसंग

"हमारे भी मुर्शिद हो"

सन् १९४२ की बात है। श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ उन दिनों भाटीगेट लाहोर के बाहर, लोयर माल रोड पर स्थित, एक ऐसे मकान में जिसका मालिक एक मुसलमान व्यक्ति था, दूसरी मंज़िल पर कमरा किराये पर लेकर रहा करते थे। इसी मकान में नीचे की मंजिल में मकान-मालिक भी सपरि-

3

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् साप्ताहिक ... का मुखपत्र

और मियां फजल हुसैन तक जब यह शोर पहुंचा तो उन्होंने तसल्ली से उत्तर दिया कि डिपार्टमैंट की अदम तवज्जा से स्वयं यह हाई स्कूल समाप्त हो जावेगा। उनको मियां फज़ल हुसैन की पुशत पनाही पर भरोसा था। उन दिनों मिनिस्टरी से मुसलिम अक्सरीयत के फारमूले निकल रहे थे। 56 प्रतिशत और 66 प्रतिशन का फारमूला उस समय की मुसलिम जरबात की एक यादगार है।

प्रोफैसर गोवर्धन साहिब शिक्षा के लिहाज से एम.ए., एम. ओ. एल. पंजाब की तीन डिग्रियों के डिग्री होल्डर थे। 1882 पैदायश के लिहाज से उनकी आयु 38 वर्ष की थी। यद्यपि उनके ऊपर अपनी और अपने परिवार, रिशतेदार और सम्बन्धियों का बोझ उनके कन्धों पर बोझल हो रहा था। लेकिन इसी धुन में अपना समय लगाते रहे और आज वे गुड़गाँव में जहाँ इस इलाके का Allocation है Rehablitate है।

पंजाब के जब कि वो यूनाईटिड पंजाब था। गरीबतरीन पसमांदा जिला था और तहसील सघड़ का इलाका ज़िला डेरा गाजीखां के चार तहसीलों में पसमांदा और गरीब तर तहसील थी। शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले अन्दाज़ा लगायेंगे कि उस समय ऐसी अवस्था में हाई स्कूल के स्तर तक स्कूल को चलाना और बिना सहायता के स्कूल का खर्चा चलाने में इस महात्मा का कितना परिश्रम होगा। (बाकी फिर)

† एजुकेशन अफ़सर की सेवा में †

प्रत्येक स्कूल के प्राईमरी स्तर की परीक्षा में पांच प्रथम आने वाले लड़कों को इकट्ठा कर के एक परीक्षा रखी जावे। उनमें से जो पहले बीस लड़के इस परीक्षा में आने वाले हों और उनमें जितने लड़के असहाय या यतीम हों, उनको एजुकेशन सोसाईटी आगे की शिक्षा पढ़ायेगी। उनके रहने सहने, खाने पीने व किताबों का खर्च यह संस्था करेगी। यदि एजुकेशन अफसर साहिब ऐसा कष्ट करके ऐसा चुनाव करें तो इस प्रकार से जो बच्चे कि खर्च की तंगी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर सकते। इस तरह से वह पढ़ाई कर सकेंगे। उनका सारा खर्च यह संस्था करेगी।

o———o

दानी साहब ऐसी संस्था को दान देकर दान की सफलता प्राप्त करें।

एजुकेशन सैंटर में Study Circle 26 फरवरी 1978 को श्री वेद व्यास साहब एडवोकेट का व्याख्यान 'New Economics of India' पर हुआ। जिसकी प्रधानता श्री त्रिलोक चन्द भल्ला ने की। जनवरी मास में सख्त सर्दी के कारण कोई व्याख्यान न हो सका। फरवरी 1978 को श्री लाल चन्द जी सभरवाल साहिब एडवोकेट जालन्धर का व्याख्यान 'शराब नोशी क्या कानू से रोकी जावे ? पर हुआ। जिसकी प्रधानता श्री हरचरण सिंह साहिब गिल Retd. P.C. S. जालन्धर ने की।

o———o

स्वर्गवासी राय साहिब रंजीत राय नारंग रजिस्टरार पंजाब एंड हरियाणा हाई-कोर्ट चण्डगढ़, इस महानात्मा का जीवन चरित्र उचित समय पर पाठकों के सामने रखा जावेगा। सरकार के अधिकारियों का इकतदार का नशा इन्सान को इन्सान नहीं रहने देता। परन्तु नारंग साहब इतने बड़े अधिकारी होते हुए भी बहुत नम्र थे। समस्याओं का समाधान करना और फरियाद की ओर ध्यान देना इतना धार्मिक था। जिसका उदाहरण मिलना कठिन है। वह नेकी के एक नमूना थे। इस नेक आत्मा के चरणों में श्रद्धांजली भेंट की जाती है।

o———o

19 मार्च इतवार 4—30 बजे शाम सरदार उजागर सिंह एडवोकेट साहब का लैक्चर होगा।

...प–७४२५०

...३५ दयानन्दाब्द १५५

...कार के तपस्या से शरीर दिल ... फौलाद की तरह सख्त बन ... पर यह परमात्मा की दया से प्राप्त होती है स्व० चमूपति जी इस तरह प्रकट किये हैं। ...रे अन्नमय कोष को शारीरिक ...णमय कोष को प्राणायाम से, ... कोष को मानसिक तप से ... फिर आनन्द कोष तो है ही ...। जिन का वह कोष खुल ...तो सोम रस के स्रोत में ही जो पकता है, वह प्रभु के परिष्कृत ...न करता है।

(सोम सरोवर पृष्ठ २२८ ... प्रकार तपस्वी जीवन ही अमृत ...न करता हुआ। मोक्ष की ...ा ही चला जाता है, मुड़ता ...

—यज्ञमित्र

...वश्यकता है

...तिनिधि सभा पंजाब को आर्य ...देशक, भजनोपदेशकों की आव...कता है। कर्मठ कार्यकर्त्ता, सदा-...ी वैदिक सिद्धान्तों से परिचित ...ब प्रान्त में ही रहकर वैदिक ... के प्रचार कार्य करने के ...क व्यक्ति आवेदन कर सकते ... गुरुकुलीय स्नातक, अनुभवी ...क्त को वरीयता दी जाएगी। ...र योग्यतानुसार। आवेदन ...

रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री
...र्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब
जालन्धर-४

...र सोने के सिक्का रखने वाला ... खा नहीं सकता। क्योंकि ... उस सोने को न पचाने की ...मर्थ्य है न उसकी एवज में कुछ ...ने की कोशिश ही करता है। ... में प्रयत्न करने की शक्ति ...ीं है क्योंकि भोग-विलास ने ...शरीर के नस-नस को खोखला ...ा है। बच्चा जब जन्म लेकर ...र चलने की कोशिश करता है ...से भोग्य सामग्री घेर लेते हैं। एवं ... यह एहसास नहीं होता कि ...ो किस प्रकार भेजा जाए। जब ...ट को झेलना ही पुरुषार्थ है।

का कार्य करता है। वाणी की पवित्रता, संयम ही आत्म चिन्तन का सहायक है। वाणी मधुयुक्त वाणी हो। मधुयुक्त वाणी ही सुनने का प्रयत्न करें। यही वाणी का तप है। दूसरा तप कर्म है। कर्म करने के लिये मनुष्य यहां आया है। कर्म की स्वतन्त्रता प्राप्त करके वह भटक गया। इस झमेले से दूर हटना चाहिए। इसके लिये अच्छे कर्म ही करना एक उपाय है। पर इस कर्म के लिये भी तप की आवश्यकता है। कर्म तप को गीता में निष्काम कर्म रूप में प्रस्तुत किया है। स्वार्थ रहित कर्म

आर्य मर्यादा के पाठकों के लिए शुभ अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य मर्यादा के पाठकों को कुछ आर्थिक लाभ उठाने का शुभ अवसर प्रदान करने का निश्चय कर रही है। उसके निश्चयानुसार जो पाठक या संस्थायें कम से कम ६ ग्राहक एक साथ बनायेंगे उन्हें वार्षिक शुल्क में ५० प्रतिशत की कटौती तथा जो १२ ग्राहक एक साथ बनायेंगें उन्हें शत प्रतिशत (केवल एक वर्ष के लिये) की कटौती दी जायेगी। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें या पत्र लिखें।

व्यवस्थापक, आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर

'नेकी'

(मासिक पत्रिका)

सम्पादक—चमनलाल

अंक 3 मार्च 1978 4 वर्ष

"संसार के महान् युग प्रवर्तक"



प्रो. गोवर्धन जी

नेकी का सिलसिला उन महान् आत्माओं के जीवन को दर्शाने का है, जो गुमनामी की हालत में उन समयों में देश सेवा और जन सेवा का काम करते रहे। जिनके नाम से कोई परिचित नहीं है। चुनांचि जिन पाठकों ने अप्रैल 1977 का 'नेकी' पढ़ा है, उसमें महात्मा गोवर्धन जी महाराज के जीवन का कुछ भाग याद होगा कि इस महान् आत्मा ने सब से पहले एक अनपढ़ इलाके में जहां 150 मील के अन्दर कोई शिक्षा का प्रबन्ध न था, शिक्षा के लिए जिला डेरा गाजी खां के उत्तरी इलाके में तहसील संघड़ में सबसे पहले हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी का स्कूल खोला। इस स्कूल की नींव अप्रैल 1920 में इस महात्मा ने रखी। इस से पहले यदि कोई स्कूल थे तो वरनैक्यूलर स्कूल, आठवीं श्रेणी तक थे। जिसमें उर्दू और फ़ारसी पढ़ाने का प्रबन्ध था। इस इलाके में दो प्रतिशत हिन्दू उस समय थे और अठानवें प्रतिशत मुसलमान थे, सिख इत्यादि कोई और कौम नहीं थी। वहां यदि कोई अखबार आता था तो मौलवी सनाऊल्ला का अमृतसर से निकलने वाला 'वतन' उर्दू सप्ताहिक अखबार आता था, जिन पाठकों के पढ़ने में 'वतन' जैसा सम्प्रदायिक अखबार हो और फिर मौलवी सनाऊल्ला का ऐडिट किया हुआ अखबार हो वह कैसे हिन्दू रह सकता है? परन्तु इस इलाके में स्त्री जाति ने अपने धर्म में जाति की हिन्दू रस्मों को प्रचलित करने और न भूलने वाली मर्यादा के द्वारा हिन्दू धर्म की रक्षा की। इस दो प्रतिशत हिन्दुओं में से प्रति वर्ष 25-30 हिन्दू मुसलमान हो जाते थे। इस इलाके में इस महात्मा ने राकिम जसे जवान साथियों को अपनी शरण में ले लिया और एक सैक्यूलर स्कूल एंगलो वरनैक्यूलर हाई स्कूल की बुनियाद डाली। यदि इस अवस्था और हालात का ध्यान करते हुए 98 प्रतिशत मुसलमानों के गिरोह की चीख पुकार का अन्दाजा लगायें तो मालूम होना चाहिए कि किस कदर मुशकिल जमाना था और इस मुशकिल जमाने में कामयाबी का इमकान भी दो प्रतिशत से कितना अधिक हो सकता है। यह एक युग था। शिक्षा विभाग में मियां फज़ल हुसैन मिनिस्टर 1918 के आ चुके थे। पंजाब की शिक्षा उनके कंट्रोल में थी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र

आर्य प्रतिनिधि, कार्यालय--आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन कृष्णपुरा चौक जालन्धर, दूरभाष–७४२५०

क शुल्क १२) एक प्रति २५ पैसे, वर्ष ११, अंक २६ २ जुलाई १९७८, तदनुसार १८ आषाढ़ सम्वत् २०३५ दयानन्दाब्द १५५

वेदसुधा

ाक्तिशाली तपस्वी मानव

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणिपर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत ।।

सामवेद

अन्वयार्थ–(ब्रह्मणस्पते) ब्रह्माण्ड के पति, वेद रूप ब्रह्म के पति (ते पवित्रं ः) तेरी संजीवन शक्ति की पवित्र सुगन्धि हर तरफ फैल रही है, (प्रभुः) है, प्रभावशाली स्वामी है। (गात्राणि विश्वतः परि एषि) हमारे अंग २ को व ओर से घेर रखा है। (अतप्ततनूः) जसने शरीर को तपाया नहीं, वह ः) कच्चा मनुष्य (तत् न अश्नुते) तेरे इस पवित्र संजीवन को प्राप्त नहीं (शृतास इत्) तपस्या की आज में पके हुये मनुष्यों ने ही (वहन्तः) यज्ञ २ (तत् समाशत) तेरी संजीवनी का खूब उपभोग किया है।

ु पवित्र है, इसलिये उसकी ी पवित्र है। इसमें जो पवित्रता पृथ्वी पर विचरण करने वाले के लिये अप्राप्य है। क्योंकि वह ाध्य है। प्रयत्न करने के लिये अनेक उपाय किये हैं। यद्यपि ित्र शक्ति हमारे स्थूल आदि ीर. अन्नमय आदि पांच कोषों हुए हैं। हमारे पास शक्ति का धन है। पर है ठीक उसी प्रकार र सोने के सिक्का रखने वाला ो खा नहीं सकता। क्योंकि उस सोने को न पचाने की मर्थ्य है न उसकी एवज में कुछ रने की कोशिश ही करता है। में प्रयत्न करने की शक्ति ीं है क्योंकि भोग-विलास ने शरीर के नस-नस को खोखला ा है। बच्चा जब जन्म लेकर र चलने की कोशिश करता है े भोग्य सामग्री घेर लेते हैं। एवं यह एहसास नहीं होता कि ो किस प्रकार झेला जाए। जब ट को झेलना ही पुरुषार्थ है।

इसी पुरुषार्थ से पवित्र शक्ति का उपभोग मानव कर पाता है। इसको वेद ने तप कहा है। आत्मिक तप, मानसिक तप, बौद्धिक तप, कर्म सम्बन्धी तप, वाणी सम्बन्धी तप, यही पंचाग्नि तप हैं, आज का मनुष्य समाज इन तपों से दूर भागता है।

आत्मिक तप का तात्पर्य है आत्मा चिन्तन। इन पांचो तप का सम्बन्ध एक दूसरे से है। वाणी सम्बन्धी तप ही इन सब के लिये मूल आधार का कार्य करता है।

वाणी की पवित्रता, संयम ही आत्म चिन्तन का सहायक है। वाणी मधुयुक्त वाणी हो। मधुयुक्त वाणी ही सुनते का प्रयत्न करें। यही वाणी का तप है। दूसरा तप कर्म है। कर्म करने के लिये मनुष्य यहां आया है। कर्म की स्वतन्त्रता प्राप्त करके वह भटक गया। इस झमेले से दूर हटना चाहिए। इसके लिये अच्छे कर्म ही करना एक उपाय है। पर इस कर्म के लिये भी तप की आवश्यकता है। कर्म तप को गीता में निष्काम कर्म रूप में प्रस्तुत किया है। स्वार्थ रहित कर्म करना बहुत ही कष्ट साध्य है। इसको सफलता पूर्वक निभाना भी आसान नहीं। यश, धन, पुत्र इसके लिये बाधक है। मानव पुत्र से मुंह मोड़ सकता है, पर यश को छोड़ नहीं सकता, यश की कामना ही निष्काम कर्म का घातक है।

तीसरा तप मानसिक है। मन चंचल है, इसको स्थिर करना ही तप है। विषय के बन्धनों से छूट जाने पर यह स्थिर हो जाता है। विषय वासनाएं किस तरह मन से अछूती रह सकती है। गीता में इसका समाधान है। 'विषयाः विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः' भाव यह है जब व्यक्ति निराहार रहता है तो वह विषयों से मुक्त रहता है। पञ्च कर्मेद्रियों एवं पञ्च ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त करने वाले विषय ही आहार है। इनसे विमुख होना ही मन को स्थिर करने का एक मात्र उपाय है।

चौथा तप बौद्धिक है। बुद्धि समस्त शरीर को मार्ग दर्शन कराने वाली वस्तु है। बुद्धि के बिगड़ने पर सारा ही मामला बिगड़ जाता है। बुद्धि से सहयोग से ही संकल्प विकल्प उत्पन्न होते हैं। मानव उन्नति संकल्प शक्ति से करता है। विकल्प मात्र से अवनति की ओर ही जाता रहता है। संकल्प शक्ति हमें मन की स्थिरता से ही प्राप्त होती है। अतः बौद्धिक तप भी मानसिक तप पर ही आधारित है। इस प्रकार चारों प्रकार का तप करने वाला व्यक्ति ही आत्मिक तप कर सकता है। आत्म चिन्तन बिना इन चारों को कदापि नहीं हो सकता।

इन सब प्रकार के तपस्या से शरीर दिल आदि सब फौलाद की तरह सख्त बन जाता है। पर यह परमात्मा की दया से ही सिद्धि प्राप्त होती है स्व० चमूपति जी ने विचार इस तरह प्रकट किये हैं।

'हमारे अन्नमय कोष को शारीरिक रूप से. प्राणमय कोष को प्राणायाम से, मनोमय कोष को मानसिक तप से तपाओ। फिर आनन्द कोष तो है ही निरा यज्ञ। जिन का वह कोष खुल गया, वह तो सोम रस के स्रोत में ही जा पड़े जो पकता है, वह प्रभु के परिष्कृत रस का पान करता है।

(सोम सरोवर पृष्ठ २२८

इस प्रकार तपस्वी जीवन ही अमृत रस का पान करता हुआ। मोक्ष की तरफ बढ़ता ही चला जाता है, मुड़ता नहीं।

—यज्ञमित्र

ईश्वर सत्ता और विज्ञान

—स्वामी धर्मानन्द जी विद्यामार्तण्ड

ईश्वर सत्ता और विज्ञान विषयक प्रथम लेख में मैंने न्यूटन् लार्डकैलविन्, सर, ओलिवर् लाज आदि अनेक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के भाषणों, लेखों से उद्धृत करके यह दिखाने का प्रयत्न किया था कि वर्तमान विज्ञान के अनेक धुरन्धर विद्वान ईश्वर सत्ता में पूर्ण विश्वास करते हैं। इस विषय में इतना और स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि वैज्ञानिक धर्म के अनुसार ईश्वर का स्वरूप क्या है? वह कौन सा ईश्वर विषयक विचार (Conception of God) है जिसका विज्ञान कभी समर्थन नहीं कर सकता और जिसके कारण ही वास्तव में अनेक वैज्ञानिकों ने ईश्वरसत्ता से इन्कार कर दिया है। इसविषय में डी. पाल कैरस रचित पुस्तक "The Rilgion of the Science" से जिसका मैंने प्रथम लेख में उल्लेख किया था निम्नलिखित उद्धरण देना अत्यावश्यक तथा महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। वैज्ञानिक धर्म की ईश्वर विषयक कल्पना क्या है इस विषय में वे यों लिखते हैं:—

We should have an intimate relation to that All-Being in which, through which and to which we live This All-Being in its wonderful harmony of law surrounds and pervades own entire existence. Truly, it is grand and seblime and perfect beyond description. It is the source of all blessings and it encomp asses us with a beneficence that can be compared only to a Father's love."

("The Religion of the Science" P. ९४)

अर्थात् हमें उसे सर्वव्यापक सत्ता से घनिष्ठ सम्बन्ध रखना चाहिये जिसमें और जिसके द्वारा हम जीवित रहते वा विचरते है और जिसकी तरफ जाते हैं। यह सर्वव्यापक सत्ता अपने नियमों की आश्चर्यजनक समता वा व्यवस्था से हमारे सारे जीवन को व्याप्त करती हैं, सचमुच यह आश्चर्यजनक उत्कृष्ट और वर्णनातीत रीति से पूर्ण हैं। यह सारे मंगल का मूल हैं और जिस उपकार वा हित दृष्टि से यह हमें घेरे हुए हैं उसकी तुलना केवल एक पिता के सच्चे प्रेम के साथ की जा सकती है।

क्या इन वाक्यों को पढ़ते हुए एक आस्तिक आर्य को 'स नः पितेव सूनवेऽग्नेसूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये,' (ऋग्वेद १।१।९) और 'यतोवा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रत्यभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्वात् तद् ब्रह्मेति' (तैत्तिरीयोपनिषत) इत्यादि वेद तथा उपनिषद वचनों का स्पष्ट स्मरण नहीं हो आता जिनका भावानुवाद उपर्युक्त प्रतीत होता है? ऐसे वैज्ञानिक धर्मको नास्तिक मत कहना कितना अनुचित है?

सन् १६३३ में Religion of Scientists, Edited by Drawbridge M. A. नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें Royal Society के सदस्य लगभग २०० वर्तमान काल के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के धर्म विषयक विचारों का संग्रह है जो उन्होंने कुछ धार्मिकप्रश्नों के उत्तर स्वरूप दिये थे। उसके पढ़ने से भी स्पष्ट ज्ञात होता हैं कि वर्तमान वैज्ञानिकों की अधिक संख्या ईश्वरसत्ता में विश्वास रखती है यद्यपि ईसाइयों वा अन्यमतावलम्बियों के साकार ईश्वरवाद में उनका विश्वास असंभव है। इस प्रश्न का कि "Do you think that the recent remarkable developments in scientific thought are favourable to religious belief" अर्थात क्या आप समझते हैं कि वर्तमान अद्भुत वैज्ञानिक उन्नति धार्मिक विश्वासों के अनुकूल है वा नहीं? डा० ए० टी० मास्टर मैन (Dr. A. Master man F. R. S., A. D. Sc. E. R. S. ने निम्न लिखित महत्वपूर्ण उत्तर दिया जिससे बहुत से धुरन्धर वैज्ञानिकों ने अपनी सहमति प्रकट की है:—

"Only so far as the more we discover of His handiwork the more we become assured of His existence."

("The Religion of Scientists." P. १२१.

अर्थात् इतनी दूर तक ज्यों-ज्यों हमें ईश्वर की रचना का अधिक ज्ञान होता जाता है उसके अस्तित्व में भी हमारा विश्वास अधिकाधिक दृढ़ होता जाता है।

सर जेम्स ऐल्फ्रेड एविंग K.D.B. F. R.S.Hm., M.A. LL. D Sc F.R.S. vice president of the Royal Society ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए लिखा कि:—

Yes very favourable They have convinced the intelligent public of the futibilty of old fashioned materialism. The cocksure ness which found expression there is dead." (P. १२०)

अर्थात् वर्तमान वैज्ञानिक उन्नति धार्मिक विश्वासी के बहुत अनुकूल है। उन्होंने विचारशील जनता को निश्चय दिला दिया है कि पुराने फैशन का प्रकृतिवाद (जो ईश्वर विरोधी था) सर्वथा व्यर्थ और अशुद्ध है जिस दृढ़ निश्चय के साथ प्रकृतिवादी प्रकृति से ही सब वस्तुओं की व्याख्या करने का यत्न करते थे वह अब मर चुकी है।

प्रो. बी. डी. स्टील F. R.S., D. Sc,, F. C S, F l. C. ने भी इसी प्रकार का उत्तर दिया। उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ लिखा:—

"I think that recent developments in physical science are not only favourable but render suchbelief not only possible, but inevitable." (P.१२९)

अर्थात् विज्ञान की वर्तमान उन्नति न केवल ईश्वर सत्तादि विषयक धार्मिक विश्वासों के अनुकूल है किन्तु ऐसे विश्वास को केवल सम्भव ही नहीं बल्कि अनिवार्य बना देती है। अन्य भी सैकड़ों वैज्ञानिकों ने इसी प्रकार के विचार प्रकट किये। जिन्होंने इन्कार व निषेध किया वह ईश्वर की सत्ता का नहीं अपितु ईसाई मत विषयक ईश्वर कल्पना की है यह बात सुप्रसिद्ध अनेक वैज्ञानिकों के निम्न प्रकार के उत्तरों से स्पष्ट है:—

प्रश्न Christian Evidence Society की तरफ से निम्नलिखित था:—

"Do you think that science negatives the idea of a personal God a[s taug]ht by jesus vchrist'

अर्थात् क्या आपके विचार ईसामसीह द्वारा प्रतिपादित का खण्डन करता है? मि० मिडल मिस् ने इस प्रश्न के लिखा:—"Yes such a morphism is childish

अर्थात् ऐसी ईश्वर की कल्पना बालकों के समान है मान्य नहीं हो सकती।

प्रो०जे० बी० कोहन F D. Se, LL, D., F, इस प्रश्न के उत्तर में यों लिख

I think it does.ass the Personal God t human attributes, (

अर्थात् मैं समझता हूं कि ईसामसीह की ईश्वर विषयक जो मानव गुणों से युक्त उसे खण्डन करता है।

डा० ऐल्व्रब् F- R. S. Dr Sc. Ph. D. ने भी प्रकार का उत्तर दिया कि ई घरों की कल्पना का (यदि मसीह की शिक्षा थी) वि करता है। यह कहने की नहीं कि वैदिक निराकार ई यह कोई दोष नहीं आता।

—सार्वदेशिक

—

आर्य मर्यादा के ग्राहकों

एक निवेदन

आर्य मर्यादा ख्याति प्राप्त पत्रिका की उन्नति अपने पाठकों ही निर्भर है। मेरी नजर में यह बात समाई है कि कुछ अपने पाठ योगी वर्ग अपना वार्षिक शुल्क १९७५ से नहीं भेज रहे हैं। इसका प यही है कि पत्रिका घाटे की ओर अग्रसर है। इस सम्बन्ध के मेरी पाठक सहयोगियों की सेवा में यही निवेदन है वे सह-सम्पादक आर्य गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक जालन्धर-४ से पत्र-व्यवहार क देय शुल्क सम्बन्धी विवरण प्राप्त करें. साथ ही १९७९ चैत्र तक क प्रदान करके पुण्यशील बनें। आशा है कि सभी पाठकों ने यह अनुभव होगा कि पत्रिका का स्तर पहले से कुछ ऊंचा उठ रहा है। इस ऊंचाई पर पहुंचाने के लिये पाठकों का सहयोग विशेषतः आर्थिक अनिवार्य है। इस महान् ज्ञान यज्ञ में—

अपनी देय राशि की आहुति देकर अपना जीवन सफल करें।

आशाओं सहित—

निवेदक

सह-सम्पादक, आर्य मर्यादा

विदेश चर्चा

नैरोबी की डायरी—2

आर्य समाज नैरोबी का साप्ताहिक रविवारीय सत्संग बहुत ही अनूठा होता है। अगले सप्ताह रविवार से शनिवार तक कहां-कहां क्या-क्या होना है इस की सूचना आर्य समाज के मन्त्री पहले ही सप्ताह छाप करके सब सदस्यों के घर भेज देते हैं। इस सूचना पत्र का नाम इन्होंने न्यूज लैटर। हर मंगलवार को यह न्यूज लैटर तैयार हो जाता है और बुधवार को भेज देते हैं। सबके पास यह पत्र पहुंच जाता है। सबको सूचना रहती है कि इस रविवार को यज्ञ का यजमान कौन होगा, सन्ध्या कौन कराएंगे, भजन कौन बोलेंगे और किस विद्वान का भाषण हो रहा है।

ठीक १०-३० बजे प्रातः अग्निहोत्र शुरू होता है। अग्निहोत्र के बाद पुरोहित एक वेद मन्त्र को लेकर ५ मिनट की सरल व्याख्या करके समझा देता है। यह सब काम बाहर बरामदे में या आगन में हो जाता है। सत्संग हाल के अन्दर लगता है। हाल में एक बडा मंच सजा सजाया है। मंच के सामने फोम बिछे हुए हैं और अन्दर चादरें। जो पालथी मारकर बैठना चाहते हैं इन पर बैठ सकते हैं। लगभग १० फीट का स्थान इस प्रकार गद्दों का है। बाद में चार लाईनों में लोहे की कुर्सियां लगी हुई हैं। भवन की दीवारों पर बड़े बड़े आर्य नेताओं व नैरोबी के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ताओं के चित्र लगे हैं। ठीक ११-१५ बजे सन्ध्या प्रारम्भ हो जाती है। ११-२० बजे भजन होते है नैरोबी में एक देवी है श्रीमती तारासोफान बड़ा ही मधुर गाती है। भक्ति. प्रेम व सुन्दर लय के इस समुद्र में सदस्य लगभग मग्न हो जाते हैं। भजनों के बाद होता है प्रवचन! सारा कार्यक्रम लगभग १२-३० बजे तक चलता है। उसके बाद मन्त्री भी विभिन्न सूचनाएं देते हैं। सूचना में यदि कोई सदस्य बीमार हो या विदेश जा रहे हों तो उनकी भी सूचना दी जाती है। सप्ताह भर का सारा कार्यक्रम बनाया जाता है। इस सत्संग की सबसे विचित्र बात यह होती है कि वृद्धों के चेहरे कम और युवकों के चेहरे ज्यादा दिखाई देते हैं। ये अपनी समाज को आर्य परिवार के नाम से पुकारते हैं, पूरे सत्संग में एक गम्भीर शान्ति और भक्ति का माहौल होता है। लगता है कि वास्तव में सत्संग हो रहा है, वैसे ही हर सप्ताह की लकीर नहीं पिटी जा रही है। पुरुषों के साथ देवियां भी काफी बड़ी संख्या में आती हैं. बच्चों की भी बहुत बड़ी संख्या होती है।

प्रवचन सूचना आदि के बाद आरती गाई जाती है। गाने वाले कौन? छोटे-छोटे बच्चे और बच्चियां। इन सब को जो लगभग २० या ३० की संख्या में आते है। मंच पर बैठा दिया जाता हैं। बीच में श्रीमती तारासोफान हारमोनियम लेकर। तबले की भी व्यवस्था होती है। भजनों के साथ तबले के लिए १०१ शिलिंग का व्यय प्रति सप्ताह आर्य समाज करती है। इन बच्चों की लय के साथ पूरा सभा आरती बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है।

महीने के अन्तिम रविवार को प्रवचन आदि के बाद एक विशेष कार्यक्रम होता है। उस महीने जिसका जन्म दिवस आया हो या जिन-जिनकी विवाह वर्षगांठ आई हो उन सबको सभा में विशेष रूप में बुलाया जाता है। पहले जन्म-दिवस वाले बच्चों-बच्चियों को बुलाकर पुरोहित दीर्घायु की प्रार्थना करते हुए एक के मस्तक पर तिलक लगाकर माला पहनाता है। साथ में एक लिफाफे में डाल कर मिठाईभी उनको दी जाती है. इसी प्रकार विवाहित दम्पत्तियों को— जिनकी वर्ष गांठ उस महीने होती है। बुलाकर माला व तिलक से सत्कार किया जाता हैं। बाद में सभी उपस्थित सदस्य गण इन सबको पुष्प डालकर मन्त्रोच्चारण से आशीर्वाद देते हैं।

प्रति सप्ताह रविवार को सत्संग के बाद ऋषि लंगर होता है। लगभग ३०० ४०० व्यक्ति जो सत्संग में उपस्थित होते हैं १ बजे वहीं खाना खाते हैं। भोजन भी पूरी छोले नहीं। पूरा भोजन। रोटी, चावल, पूरी, दो सब्जियां, दाल, रायता, अचार, चटनी, सलाद, एक मिठाई, ऐसा बनता है जैसे सभी आर्य जन पिकनिक मना रहे हों। वास्तव में यह एक आर्य परिवार का रूप है। इन सारे भोजनादि की व्यवस्था बड़ी सुन्दर होती है।

ये सब बाते देखने और समझने वाली हैं। आप खुद आएंगे तो आपको यहां के आर्य परिवार की बातों का पता चलेगा, ऐसा मौका फिर नहीं आएगा। ४००० में आने-जाने की व्यवस्था केवल इसी वर्ष है। मौका न चूकिए। अवश्य आइए। आपका बहुत सुन्दर स्वागत होगा।

सत्यपाल शर्मा

दहेज एक अभिशाप है?

आज का युग भौतिक और विज्ञान का युग कहा जाता है। आधुनिक युग में धर्म-कर्म की अपेक्षा आज प्रत्येक कार्य अनुष्ठान और सामाजिक स्तर को ऊंचा रखने के लिए विशेषतय पैसे के इर्द-गिर्द चक्कर काटती हैं। पैसे के बिना इस जग में जीवित रहना कठिन और दूभर हो गया है। जिसके पास पैसा नहीं उसके पास कुछ भी नहीं।। आज धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मान्यताएं पैसे के इर्द-गिर्द चक्कर काटती रहती हैं पैसा ही सब पर हावी हो रहा है। इस कलियुग में न तो किसी गुण की कदर होती है, न सदाचार की बहुत ही शिक्षित की, न योग्यता की न कुलीनता की न उच्च परिवार की। यही कारण है कि बहुत ही शिक्षित रूप गुण सम्पन्न अच्छे घरानों की युवतियां कुमारी ही रह जाती हैं क्योंकि युवती के मां-बाप के पास और मध्य वर्गीय लोगों के पास इतना धन नहीं होता कि समाज की बढ़ती हुई आवश्यकता और मांग को पूरा कर सके। दहेज के लालची युवक का मुंह पैसे से भर सकें, दहेज की मांग बढ़ते २ अब एक महा-भयानक व्याधि का रूप ले चुकी है। आपातकालीनसमय में कांग्रेस सरकार ने इसे जड़-मूल से उखाड़ने की कोशिश की थी। पुलिस को भी हिदायत थी कि जो परिवार सीमित धन से अधिक खर्च विवाह-शादियों में करेंगे वे कानून की गिरफ्त में आ जाएंगे। इससे सामान्य परिवारों को कुछ राहत ही मिली थी। विशेषकर विवाह योग्य युवतियों को। मगर इतना कुछ होते हुए भी चोरी छिपे यह बीमारी बढ़ती रही है। दहेज देने-लेने में ही लोग अग्रसर होते हैं। जिसके पास काला धन अपार राशि के रूप में छिपा पड़ा है और वे इसे किसी न किसी रूप में व्यय करके समाज में वाह-वाही लूटना चाहते हैं। ऐसा करके वे ऐसे समाजिक तत्व निर्धन और धन हीन लोगों के मार्ग में रोड़ा अटकाते रहते हैं साथ ही वे विवाह योग्य बालाओं का अभिशाप भी मोल लेते हैं। आए दिन हम समाचार-पत्रों में पढ़ते हैं कि दहेज के अभाव में बहुत सी नव-विवाहिता स्त्रियां सदैव के लिये अपने प्राणों से हाथ धो देती है। कईयों को विवश होकर विष-पान कर तथा अग्नि में जलकर बहुत सी नवयुवतियां कुएं, ताला या नदी में कूदकर दहेज की भेंट च[ढ़] जाती हैं।

कहा तो यह गया है कि जनता सरकार के सत्तारूढ़ होने पर इस दहेज की बीमारी का सदा के लिए उन्मूलन क[र] दिया जाएगा। परन्तु आए दिन के आंक[ड़े] कुछ और ही बतलाते हैं, टीका, मंगनी और शादी के ठाट-बाट और चकाचौंध कर देने वाली अपार धन-राशि पानी की तरह से बहाई जा रही है।

आज के कथित समाज सेवक नेता गण तथा महिला कल्याणकारी सभाएं कुछ भी कर नहीं पातीं। सब जगह शो[र] तो बहुत होता है परन्तु व्यवहारिक रू[प] से दहेज को नष्ट करने वाला कोई ठो[स] कदम नहीं उठाया जाता जनता की आवाज सुनी अनसुनी कर जाती है। अपनी झूठी शान-शौकत लिए हजारों ही नहीं, लाखों रुपये पा[नी] की तरह ऋण लेकर भी बहा दिए ज[ाते] हैं। इस अवसर पर नवयुवक और न[व]युवतियां नाच-गान और भंगड़ा कर और शराब पीकर मस्त होना, गाली गलौच करना ही शादी एवं दहेज एक मात्र लक्ष्य रह गया है। दहेज बढ़ती हुई मांग का उन्मूलन करने उपाए यही है कि हमारी नौजवा[न] लड़कियां और शिक्षित बहनें आगे और दहेज के लोभी परिवारों में विवाह करने से कतई इन्कार कर दें।

सबसे बड़ी बात यह है कि आज युवतियां शिक्षा उपार्जन कर नौकरी लगी रहती हैं। कई बार इस प्रका[र] चालीस-पैंतालीस वर्ष की युवतियां प्रकार कुंवारी ही रह जाती हैं। मां-बाप को योग्य वर सुलभ होना क[ठिन] हो जाता है हमारे शास्त्रानुसार भी सो[लह] वर्ष से इक्कीस वर्ष तक की आयु लड़की का विवाह कर देना श्रेयस्कर और न्याय संगत होगा। फिर अ[धिक] सम्पन्न परिवारों के चक्कर में नहीं पड़[ना] चाहिए। ज्यों २ लड़की की आयु ब[ढ़ती] जाती है विवाह के बाजार में उ[सकी] कीमत उतनी ही कम होती जाती है।

अतएव समझदार नवयुवक नवयुवतियों को ही अपना अदम्य सा[हस,] हिम्मत और अपनी कार्यकुशलता [का] परिचय देना चाहिए। यदि अपनी [बिरा]दरी में उचित वर न मिले तो अन्त[र्]जातीय विवाह कर लेने मे कोई अ[पत्ति] नहीं होनी चाहिए। इसमें भी को[ई] मत नहीं है कि हमारे पूर्वजों में विदे[शियों] से भी विवाह करके अपने उदार[ता] का परिचय दिया था।

लेखराज नन्दा,
मलकागंज दिल्ली

सामयिक चर्चा

हमारी शिक्षा पद्धति-3

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

अन्ततोगत्वा स्कूल-कालेजों से जो लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष निकल रही है, शिक्षा के नाम पर उसके पास केवल इस बात के प्रमाण पत्र होते हैं कि यह अमुक श्रेणी तक अमुक विषय की पुस्तकें (विषय नहीं) इतने वर्ष पढ़ा है, उन्हीं प्रमाण पत्रों को देवी के पर्चे की भान्ति दिखाते फिरते हैं। बौद्धिक विकास तो इस शिक्षा से होता नहीं, अतः यह देवी के पर्चे वाले समझते हैं कि जब देवी का पर्चा हमारे पास है तो हमें रोक-थाम क्यों? हमारी रुचि के अनुसार जहां कहीं भी घुसने और जिस किसीभी कुर्सी पर बैठ जाने से हमें क्यों रोका जाता है। न बौद्धिक विकास न नैतिक का मन में प्रवेश, वह और करे भी क्या?

उत्तर प्रदेश में हाई स्कूल की परीक्षा में जो गद्य-संकलन नामक पुस्तक लगी है, उसकी भूमिका में लिखा है, जिस वय क्रम में छात्र और छात्राएं हाई स्कूल की कक्षाओं में प्रवेश करते है, उसमें नैतिक मूल्यों की महत्ता सर्वोपरि है, क्योंकि चरित्र-निर्माण की नींव इसी अवस्था में पड़ती है। भूमिका में यह लिखना सिद्ध करता है कि इसकी आवश्यकता को अनुभव तो किया जाता है। किन्तु उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयत्न लेश भी होता तो क्या भूमिका में लिखने मात्र से छात्र-छात्राओं में नैतिकता आ जाएगी।

हाई स्कूल में प्रवेश के समय बालक की कुमार-व्यवस्था होती है। इस आयु के बालक कुत्सित कामनाएं उत्पन्न होती हैं। इन कुत्सित कामनाओं को मार लें अर्थात् इन पर प्रभावी हो जाएं, इन्हें अपने ऊपर प्रभावी न होने में तो कुमारावस्था सफल, यदि इनमें फंस गया, कुछ का न मार सका तो कुमारावस्था की नैतिक परीक्षा असफल है। कहीं पाठ्यक्रम में इससे बच निकलने की शिक्षा, किसी विद्यालय में वह शिक्षा होती है, यदि नहीं तो ऐसी पढ़ाई से क्या लाभ? नैतिकता और चरित्र-निर्माण के मूल्यों को पुस्तकों की भूमिका में स्वीकार किया जाए और यदा-कदा चरित्र के नाश का अर्थ सर्वनाश है, वाक्य छात्र-छात्राओं को सुना दिया जाए. किन्तु चरित्र क्या है? उसकी रक्षा किस प्रकार होती है और नैतिकता किसे कहते है। यह न बताया और न सिखाया जाय। क्या यह उपहासास्पद नहीं है?

इसी का यह परिणाम है कि हाई स्कूल और इण्टर में पढ़ने वाले छात्र पिता की जेब से पैसे निकाल कर पुरानी पुस्तकें बेच कर तथा कुत्सित आचरण द्वारा भी पैसे प्राप्त करके सिनेमा देखने धूम्र-पान आदि करने के अपने चाव पूरे करते है। मार्ग में चलती लड़कियों को छेड़ते हैं। शिक्षकों को पीटते हैं, विद्यालयों सिनेमा घरों में आग लगाते और बड़े होकर डिग्री कालेजों और यूनिवर्सिटियों चले जाने पर दो ट्रेनों में यात्रा करती युवतियों के शील तक हरण करते हैं। शिक्षा-पद्धति पर मैं और मेरे जैसे कुछ सिर-फिरे लोग ही आये दिन नहीं चिल्लाते रहते अपितु भारत के प्रथम और द्वितीय राष्ट्रपतियों सर्वश्री डा० राजेन्द्र प्रसाद और डा० सर्व पल्ली राधा कृष्णन् ने भी वाराणसी यूनिवर्सिटी में दीक्षान्त भाषण देते हुये अपने-अपने भाषणों में कहा था. वर्तमान शिक्षा पद्धति नितान्त निकम्मी है। डा० राधा कृष्णन् ने तो यहां तक कह दिया था कि यदि मेरे हाथ में हो तो आज ही इस शिक्षा-पद्धति को बदल दूं। वर्तमान प्रधान मन्त्री भी इससे अपनी असन्तुष्टता दो बार शिक्षा-शास्त्रियों से व्यक्त कर चुके हैं। कई शताब्दी पूर्व भारत के विश्व प्रसिद्ध सन्त श्री स्वामी विवेकानन्द जी ने इस विषय में अपनी सम्मति निम्न शब्दों में व्यक्त की थी। उनका कहना था–

'शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूंस दिया गया है और जो आत्मसात् हुए बिना वहां आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन-निर्माण, मनुष्य-निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हों। यदि तुम केवल पांच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो, तो तुम एक पूरे ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो, । यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी ही होता, तब तो ग्रन्थालय संसार में सबसे बड़े सन्त हो जाते और विश्वकोष महान् ऋषि बन जाते।

विदेशी भाषा में दूसरे के विचारों को रटकर अपने मस्तिष्क में उन्हें ठूंस कर और विश्वविद्यालयों की कुछ पदवियां प्राप्त कर तुम अपने को शिक्षित समझते हो। क्या यही शिक्षा है? तुम्हारी शिक्षा का उद्देश्य क्या है? या तो मुंशीगिरी मिलना या वकील हो जाना या अधिक से अधिक डिप्टी मैजिस्ट्रेट बन जाना, जो मुंशीगिरी का ही दूसरा रूप है। बस यही न। इससे तुमको या तुम्हारे देश को क्या लाभ होगा? नेत्र खोलकर देखो, जो भरत खण्ड अन्न का का अक्षय भण्डार रहा है, आज वहीं अन्न के लिए कैसी करुण पुकार उठ रही है? क्या तुम्हारी शिक्षा इस अभाव की पूर्ति करती ? यह शिक्षा जो चरित्र शक्ति का विकास नहीं करती, जो प्राणी विषयक दया का भाव और सिंह का साहस पैदा नहीं करती, क्या उसे भी हम 'शिक्षा' का नाम दे सकते हैं?

हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक वीर्य बढ़, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। हमें आवश्यकता इस बात की है कि हम विदेशी प्रभाव से स्वतन्त्र रहकर अपने निजी ज्ञान-भण्डार की विभिन्न शाखाओं और उसके साथ ही अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करें। हमें यान्त्रिक और ऐसी सभी शिक्षाओं की आवश्यकता है, जिनसे उद्योग धन्दों की वृद्धि और विकास हों, जिससे मनुष्य नौकरी के लिए मारा-मारा फिरने के बदले अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त कमाई कर सके और आपात काल के लिए सञ्चय भी कर सके।

सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य 'मनुष्य' का निर्माण ही है। जिस प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य की इच्छा-शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके, उसी का नाम है, 'शिक्षा' हम 'मनुष्य' बनाने वाला धर्म ही चाहते हैं, हम 'मनुष्य' बनाने वाली सिद्धान्त ही चाहते हैं तथा हम सर्वत्र—सभी क्षेत्रों में 'मनुष्य' बनाने वाली शिक्षा ही चाहते हैं। प्रिय पाठकगण! स्वामी विवेकानन्द जी के इन विचारों का मनन कीजिए और आगे पढ़िए आचार्य भावे के विचार।

विनोवा भावे इस शिक्षा से इतने असन्तुष्ट हैं कि उन्होंने शिक्षकों और छात्रों को इस शिक्षा को बदलवाने के लिए हड़ताल करने तक की प्रेरणा कर डाली, फरवरी सन् १९७४ में बिहार में आचार्य कुल के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था–

मैंने १९१६ में ही स्कूल इसलिए छोड़ दिया था, क्योंकि मुझको नौकरी नहीं करनी थी, फिर आज तो नौकरी भी नहीं मिलती पर शिक्षा वही चल रही है। इससे बेकारी बढ़ रही है, पर कोई इसका त्याग करना नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि इस निकम्मी शिक्षा को बदलने के लिए शिक्षक और छात्र मिलकर हड़ताल करें।

एस० बी० ए० कालेज मांट जिला मथुरा के प्राध्यापक श्री डा० शिवराज सिंह ने 'भारतीय शिक्षा' नामक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक के पृष्ठ १३५ पर वह लिखते हैं, सभी यह बात अनुभव कर रहे है कि आज कल की शिक्षा का पाठ्यक्रम बिल्कुल व्यर्थ है. किन्तु फिर भी वही पाठ्यक्रम वर्षो से चला आ रहा है। क्या सचमुच भारतीय मनीषा दिवालिया हो गई है? यह हम स्वीकार करने को तैयार नहीं। हमारे पास सब कुछ है, किन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि हमने आज तक उस ओर देखा तक नहीं, आंखें होते हुए भी हम अन्धे होने का बहाना करते रहे हैं। रत्नों और मणियों को छोड़ कर कांच और पत्थर बीनते रहे हैं। यह सत्य है कि प्राचीन भारत के मनीषियों ही नहीं बीसवीं सदी के शिक्षाशास्त्रियों को भी हमारे लोग नहीं पढ़ते, पढ़ते क्या जानते तक भी नहीं। यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

ऊपर के परिच्छेद में पाठकों ने जो पढ़ा, इन उद्गारों से अभिभूत आगे पृष्ठ २४२ पर वह फिर लिखते हैं, शिक्षा वह अधूरी है, जिस पर व्यक्ति की आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति के चक्र में घूमते हैं, आज तो शिक्षित ही सबसे अधिक बेकार हैं, उच्छृंखल है। आचरणहीन है तथा उत्तरदायित्वहीन है। शिक्षित व्यक्तियों को देश की समस्यायें हल करनी चाहिए, आज स्थिति यह है कि शिक्षित व्यक्तियों को रोजगार देने की समस्या सबसे अधिक विकट बनी हुई है। समस्या पेट भरने की उतनी नहीं है, जितनी कि संयम, अनुशासन, सदाचरण, कार्य कुशलता एवं सहानुभूति की है।

आज सभी लोग यह कह रहे हैं कि देश में यह तो कोई समस्या है ही नहीं। सारी समस्या योग्यता की है। ऊंची से ऊंची डिग्री लेकर घूमने वाले सहस्रों हैं, किन्तु इनमें सच्चे विद्यावान कितने हैं? निकम्मी शिक्षा ने योग्यता का महत्व ही नष्ट करके रख दिया है। डाक्टर जी के उक्त विचार शतशः ठीक हैं। योग्यता के अभाव ने पहुंच और 'घूस' को बढ़ाने में बड़ा योगदान किया है और इस प्रकार अयोग्यों के उत्तरदायीं पदों पर पहुच जाने से राष्ट्र को प्रत्येक क्षेत्र में असफलता का मुंह देखना पड़ रहा है।

इसी पुस्तक के पृष्ठ २५६ पर पुनः सुयोग्य लेखक ने अपने हृदय की पीड़ा की अभिव्यक्ति इन शब्दों में की है—

कक्षा एक से लेकर एम० ए० तक या पी० एच० डी० तक जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है, क्या वह विद्यार्थियों को पुरुषार्थ साधन के योग्य बना रहा है।

(क्रमशः)

यह अंक
आपको कैसा लगा?

आर्य मर्यादा आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरी-पूरी कोशिश करते हैं कि आर्य मर्यादा का प्रत्येक अंक आपकी रुचि के अनुसार रहे और उससे आपको अधिक से अधिक सन्तोष हो और यह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे।

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिये कौन सी रचना आप को पसन्द आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख पढ़ना पसन्द करेंगे, हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे।

—सह-सम्पादक



साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र

-सम्पादक-डा. यज्ञमित्र, विशेषाधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन कृष्णपुरा चौक जालन्धर, दूरभाष-७४२५०

क शुल्क १२) एक प्रति २५ पैसे, वर्ष ११, अंक ४०, २४ सितम्बर १९७८, तदनुसार ९ आश्विन सम्वत् २०३५ दयानन्दाब्द १५४

वेद सुधा

अग्निना अग्निः समिध्यते

(ले० ओम प्रकाश आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष)

नं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति
धेनवः ।
तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो
वाजिन ।
स्तोतृभ्य आभर ॥ ऋ० ५/६/१

अर्थ—(तं) उसको (अग्निः) ज्ञान-आचार्य या ईश्वर (मन्थे) मानता ो वसुः) जो सबके भीतर वास हारा है (यं) जिसमें (धेनवः) यां, इन्द्रियां और रश्मियां जैसे (अस्त) घर में (यन्ति) आती है ी (अस्तं) आश्रय को प्राप्त होती (आशवः) व्यापन स्वभाव वाले न्तः) प्राण या प्राण वायु पञ्चभूत (अस्त) जिसमें आश्रय हैं और (नित्यास्ते) नित्य (वाजिनः) वान् युक्त आत्मायें, विद्वान् लोग ं) अपना गृह समझ कर आश्रय हैं। हे ईश्वर! (स्तोतृभ्यः) ाओं को (इषं) अन्न एवं ज्ञान र) प्राप्त कराओ।

इस वेद मन्त्र में सर्व व्यापक और क आश्रय भूत एवम् आनन्द प्रद ान को ही अग्नि नाम से व्याख्यात ा गया है। सभी स्थानों पर भट-भटकता और किसी में भी अपने स्वरूप की रक्षा करने वाली चेतना , शक्ति तथा आनन्द की उपलब्धि रता हुआ जीवात्मा हार थक कर अग्नि की ही शरण में आने कों श हो जाता है परन्तु यह अग्नि त में प्राप्त नही होता। अन्दर वाहर या हुआ होने पर भी इसके लिये कुछ करना पड़ता है क्योंकि—

रण्योर्निहितो जातवेदागर्भ इवेत्सु-
भृतो गर्भिणीभिः
वे दिवे ईड्यों जागृवद्भिर्हविष्मद्-
भिर्मनुष्येभि भरग्निः
ऋ० ३/२९/२

अर्थ-(अरण्योः) दो अरणियों में तवेदाः) जातवेदा अग्नि (निहितः) ा गया है। (गर्भिणीभिः) गर्भिणी यों द्वारा जैसे (गर्भ इव) गर्भ की ा की जाती है वैसे ही (इत् सुभृतः) जातवेदा भी अरणियों में सुरक्षित है। (दिवे दिवे) प्रतिदिन (जागृवद्भिः) जागते हुए ज्ञानी सत्यासत्य विवेकी (हविष्मद्भिः) हवि आदि पदार्थो से सम्पन्न (मनुष्येभिः) मनुष्यों को (अग्निः) वह अग्नि (ईडयः) उपासना करने योग्य हैं।

सर्वव्यापक होने पर भी यह अग्नि किन्हीं किन्हीं दो अरणियों के विधिवत् मन्थन के बिना समिद्ध प्रदीप्त नहीं होता गर्भगत बालक की जैसे गर्भिणी स्त्रियां रक्षा करती हैं और उसकी सुरक्षा के निमित्त आप खूब कष्ट उठाती हैं ठीक ऐसे ही इस सर्वव्यापक अग्नि को समद्धि करने के लिए ज्ञानी विवेकी, सर्वस्व त्यागी और संयमी बनने की आवश्यकता है। क्योंकि 'अतप्त तनूर्न दामो अश्नुते'।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह दो अरणियां कौन सी है जिनकी रगड़ से मन्थन से इस अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है। इस प्रश्न का उत्तर हमें महर्षि श्वेताम्बर ने बड़ा ही सुन्दर दिया हैं वे कहते हैं—

स्वदेहमरिणं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिम् ।
ध्यानं निर्मथनाभ्यासाद् देवं पश्येन्नि-
गूढवत् ॥
श्वेता-उपनिषद्

साधक अपनी देह को अधर अरणि और प्रणव ओंकार को उत्तर अरणि बनाकर ध्यान रूप निर्मथन को पुनः पुनः रगड़ रगड़ कर ज्योति स्वरूप आत्मा का दर्शन करे।

साधक देह और उसके द्वारा किया जा रहा सारा व्यवहार-व्यापार जब भगवान के आदेश-निर्देश के अनुसार होना प्रारम्भ हो जाता है तभी देह और ओंकार के सार्थक जाप का विशेष लाभ अनुभव होता है। देही शरीरी प्रभु के आदेश का पालन करे और देह से वही काम ले जिसके लेने के लिए वह उसे दी गई है। तभी वह उस निगूढ़ देव का साक्षात्कार कर सकेगा। तभी आत्म समर्पणका सद्भाव उसमें जागृत होगा, जब आत्मसमर्पणका भाव जग जाताहै तब कोई छली-कपटी और मायावी जन साधक को अपने पथ से विचलित नहीं कर सकता।

वेद कहता है—
न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥
ऋ० ८।२३।१५

अर्थ—(यः) जो पुरुष (हव्यदातये) ज्ञानदाता (अग्नये) परमात्मा और आचार्य के प्रति व्रते को (ददाश) समर्पण कर देता है (तस्य) उस का (रिपुः च न शत्रु भी (मर्त्यः) मनुष्य (मायया) बुद्धि द्वारा न (ईशीत) कभी कभी उस पर वश नहीं कर सकता उसे अपने अधीन नहीं बना सकता।

आओ ऐसे सर्वसुखदप्रद ईश्वर रूप अग्नि का जिसकी संगति से हमें नित्य आगे बढ़ने उन्नत होने तथा सबसे बढ़ कर सर्वथा मल रहित हो कर तद्-रूप बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है उसे अपने इसी जीवन में समिद्ध करने का यत्न करें और उसके समिद्ध हो जाने पर अनुभूति में आ जाने पर मिलकर कहें :—

तदग्ने द्युम्नभा भर यत् सासाह सदने कञ्चिदत्निणम्। मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥ ऋ० ८-१९-१५

हे अग्ने—स्वप्रकाश स्वरूप परमात्मन्। अन्न, धन, ज्ञान और बल हमें प्राप्त कराओ जो हमारे घर में (कञ्चिदत्निणम्) किसी भी पाप भोगी, चोर (मन्युं जनस्य) सर्वसाधारण के क्रोध के पात्र (दूढ्यं) पापी पुरुष को (सासाह) दबा सके।

अमृत वचन

१. यदि तुम मित्रों से मित्रता और विरोधियों से विरोध करना छोड़ दो और अपने धर्म तथा कर्त्तव्य का पालन करने में लग जाओ तो प्रभु के दर्शन करना कोई असम्भव नहीं।

२. जो व्यक्ति जितेन्द्रिय होकर क्रोध और अपमान पर नियन्त्रण कर लेता है यह समझ लो कि उसे दिग्विजय करने में कभी कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती।

३. हमारे पाप के कारण हमारे दुर्गुण कुविचार बुरे संकल्प आदि होते हैं। इन्हीं के कारण हमारा मन और इन्द्रिय हमें धोखा दे जाती हैं और तब हमें भले-बुरे का ज्ञान नहीं होता। मनुष्य का अधः पतन हो जाता है।

४, जो व्यक्ति अपने दोषों को देखकर उन्हें सुधारता और दूसरे के सद्गुणों और अच्छी आदतों और बातों का ग्रहण करता है बड़ी इस पृथ्वी पर महामानव कहलाता है।

हमारी शिक्षा पद्धति-4

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

भारतीय शिक्षा परम्परा से सर्वथा कटे हुए इस पाठ्यक्रम को पढ़ कर भारतीय युवक क्या कभी स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ ठाकुर या महात्मा गांधी बन सकेंगे ?

यह कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द को छोड़ कर यह अन्य तीन महापुरुष भी तो इसी शिक्षा पद्धति की देन थे। इसका उत्तर लेखक महोदय ने इन शब्दों में दिया है कि 'महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति ने जिसने अर्थ शास्त्र कभी पढ़ा नहीं था और स्पष्टतः कहते थे कि अर्थशास्त्र कोई शास्त्र नहीं है—देश की आर्थिक समस्याओं का गम्भीर चिन्तन कर उनका समाधान करने का प्रयत्न किया। उनमें यह योग्यता निश्चय कर ही गीता का अध्ययन और मनन करने से आई थी। आज अर्थशास्त्र से एम. ए. उतीर्ण छात्र महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का अध्ययन अपने पी. एच. डी. के शोध प्रबन्ध के लिए करता है। दर्शन शास्त्र में एम० ए० उतीर्ण छात्र गांधी के नैतिक विचारों का अध्ययन अपने शोध- प्रबन्ध में प्रस्तुत करता है, हिन्दी से एम० ए० छात्र हिन्दी कविता में गांधीवाद का प्रभाव ढूंढ कर अपने शोध प्रबन्ध करता में प्रस्तुत करता है, किन्तु गांधी जी तो अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शन या हिन्दी—किसी भी विषय में एम० ए० नहीं थे।'

केवल गांधी जी नहीं—बाल गंगाधर तिलक जैसे लोग भी गीता के अध्ययन से ही बन पाये। स्वामी विवेकानन्द का निर्माण भी इस शिक्षा द्वारा नहीं अपितु रामकृष्ण परमहंस जैसे विरक्तों के संसर्ग से हुआ और रवीन्द्रनाथ की गीतांजलि पढ़ने से तो उसमें वेद की छवि स्पष्ट प्रतीत होती है। यह बात प्रसिद्ध विद्वान श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने इस शब्दों में व्यक्त की है' मुझे निश्चय है कि रवीन्द्र की प्रतिभा का स्रोत अवश्यमेव वैदिक ऋचाएं थीं। वैदिक मन्त्रों से ही रवीन्द्र को ऐसे अमर गीतों की प्रेरणा मिली थी। उनके अनेक गीतों में वैदिक मन्त्रों की झलक दृष्टिगोचर होती है।'

'भारतीय शिक्षा' पुस्तक के लेखक श्री डा० शिवराज सिंह ने अपनी दो सौ साठ पृष्ठ की पुस्तक में न केवल शिक्षा के विविध पहलुओं पर विचार मात्र ही किया है अपितु एक विस्तृत पद्धति भी बनाकर प्रस्तुत कर दी है। उनकी यह पद्धति पठनीय और मननीय ही नहीं अपितु स्वीकरणीय है और इसके लिए पुस्तक के अन्त में पृष्ठ २५८ पर आपने लिखा हैं कि 'अब कोई यह न कहे कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में क्या परिवर्तन होना चाहिए, यह कोई नहीं बताता ? वास्तविक भारतीय शिक्षा का सप्रमाण निरुपण कर चुके है।'

प्रिय पाठकगण ! शिक्षा विषयक इस लेख का कलेवर अधिक होता हुआ देख कर भी हम कुछ शिक्षा शास्त्रियों के विचारों को इस लेख में देने का लोभ संवरण नहीं कर सके अतः उन्हें प्रस्तुत करके ही इस लेख का उपसहार करेंगे। राजा बलवन्त सिंह शिक्षा महाविद्यालय आगरा के प्राध्यापक श्री डा० रामशकल पांडेय कृत पुस्तक 'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री' पढ़ने को मिली। इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने विश्व के १२ शिक्षा-शास्त्रियों की विचारधारा तथा दृष्टिकोण का संकलन और समीक्षा की है। इनमें ६ पश्चिमी शिक्षा शास्त्री हैं और ६ भारतीय। इसी पुस्तक में से कुछ के विचार हम यहां उद्धृत कर रहे हैं। पाठक गण ध्यान देंगे कि यह सब शिक्षा विशेषज्ञ शिक्षा किसे कहते हैं—केवल अक्षर ज्ञान, पुस्तक रटन और परीक्षा प्रमाण-पत्रों को अथवा किसी तत्व को और शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना आ जाना अथवा कुछ और बताते हैं। साथ ही इनके विचारों के दृष्टिगत भारत में चालू वर्तमान शिक्षा पद्धति का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए।

एथेंस वासी श्री प्लेटो का कहना है 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो शिशुओं में उचित आदतों के निर्माण के द्वारा सद्गुणों को उत्पन्न करता हैं। इस प्रशिक्षण से हमें यह योग्यता प्राप्त हो जाती है कि हम उस वस्तु से सदा घृणा करें, जिससे हमें करनी चाहिए और उस वस्तु से प्रेम करें, जिससे वास्तव में किया जाना चाहिए।'. ऐसा नहीं कि जिससे हम चाहें घृणा करें जिससे चाहें प्यार करें।

इंग्लैंड निवासी श्री हरबर्ट स्पेन्सर के मत में 'शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सम्पूर्ण जीवन के लिए तैयार करना है। जीवन की प्रत्येक आवश्यकता—बौद्धिक नैतिक तथा शारीरिक शिक्षा के द्वारा पूरी होनी चाहिए।' वर्तमान शिक्षा से इन में से किसी एक आवश्यकता की भी पूर्ति नहीं हो रही।

शिकागो के प्रसिद्ध शिक्षा विशेषज्ञ अध्यापक श्री जान डीवी की सम्मति में 'शिक्षा उन सब शक्तियों के विकास का नाम है, जिनके द्वारा मनुष्य में अपने वातावरण पर नियन्त्रण रखने की तथा अपनी समस्त शक्तियों के विकास की सामर्थ्य उत्पन्न होती हो।' इस शिक्षा से अपने वातावरण पर नियन्त्रण रखने और अपनी शक्तियों के विकास की सामर्थ्य किसी भी अंग में उत्पन्न नहीं होती।

१९वीं शताब्दि के महान भारतीय सुधारक तथा युग प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में 'शिक्षा का लक्ष्य धर्माचरण है।' वह धर्म को वैशेषिक दर्शन के शब्दों में 'मतो अभ्युदय निश्श्रेयस् सिद्धिः स धर्मः' अर्थात जिससे सर्वांगपूर्ण रूप से जीवन विकसित हो और इस जीवन के पश्चात मोक्ष भी प्राप्त हो, वह धर्म है—ऐसा मानते हैं।

वह शिक्षा का प्रारम्भ वर्णोचार से मानते है। उनका अभिप्राय है कि प्रारम्भ में बालक को वर्णों का शुद्ध उच्चारण सिखाया जाना चाहिए। इस शिक्षा से शिक्षित तो प्रोफैसर भी तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' को दन्त्य 'स' बोलते हैं। 'महेन्द्र' का 'महेन्दर' और योगेन्द्र का योगेन्दर उच्चारण तो सामान्य सी बात है ही। अशुद्ध उच्चारण शब्दों के अर्थ बदल कर अनर्थ तो कर ही देते हैं, किन्तु लगता ऐसा है कि अर्थ अनर्थ का विचार न करने का ही सम्भवतः यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव हुआ है कि वर्तमान शिक्षा में पले व्यक्ति आजीविका प्राप्ति में भी अर्थ-अनर्थ की चिन्ता किए बिना, जिस किसी प्रकार भी सम्भव हो, धन अर्जन में लगे रहते हैं। जैसे वर्णों के अशुद्ध प्रयोग के लिए कह दिया जाता है–काम चलने से मतलब, शुद्ध बोला तब क्या अशुद्ध बोला तब क्या ? ठीक उसी प्रकार आजीविका के विषय में भी उचित-अनुचित का विचार समाप्त प्रायः है।

महर्षि दयानन्द भारत की प्राचीनतम शिक्षा पद्धति गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पक्ष पोषक हैं। स्वामी विवेकानन्द जो महाराज का भी मत यह है कि शिक्षा 'गुरु-गृह-बास है।' उनकी मान्यता है कि शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन के बिना शिक्षा हो ही नहीं सकती। शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशमान हो, उसे उच्चतम आदर्शों की सजीव मूर्ति होना है। उसे ज्ञान-दान के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। ज्ञान का दान बिना त्याग के नहीं हो सकता अतः उसे त्यागी भी होना चाहिए।

शिक्षक को छात्र के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए। शिष्य में सारी शक्ति लगा देने वाला ही सच्चा गुरु है। अच्छा शिक्षक अपने को शिष्य के स्तर पर लाकर अपनी आत्मा को शिष्य की आत्मा में प्रविष्ट कर देता है। शिक्षक को अपने शिष्यों के प्रति प्रेम होना चाहिए। जिस शिक्षक के हृदय में छात्र के प्रति प्रेम नहीं उमड़ता, वह छात्र को कुछ भी शिक्षा नहीं दे सकता। प्रेम सचार... लोभ नहीं आना चाहिए और न स्वार्थ। प्रेम केवल शिष्य को निर्देशित करने के लिए हो। ऐसे शुद्ध प्रेम से आध्यात्मिकता जागृत होती है। स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा से कदापि मूर्त रूप धारणा नहीं कर सकता। इन्हें तो मूर्त रूप महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित गुरुकुल शिक्षा पद्धति से ही प्राप्त हो सकता है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मान्यता के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा इनमें से किसी एक विकास की साधक नहीं है। हां बाधक अवश्य बनी हुई है।

योगी श्री अरविन्द घोष के विचार में 'वास्तविक, जीवन्त तथा सच्ची शिक्षा वह है जो बालक की सुषुप्त शक्तियों को उद्बुद्ध कर दे।' उनका कहना है कि शिक्षा को मानवात्मा की मांगों की पूर्ति करनी चाहिए। क्या वर्तमान तथाकथित शिक्षा द्वारा इन दोनों बातों में से कोई हो पा रहा है।

महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी के विचार में 'जो शिक्षा चित्त की शुद्धि न करे, मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाए, निर्भयता और स्वावलम्बन पैदा न करे। निर्वाह का साधन न बताए तथा स्वतन्त्र रहने का हौसला और सामर्थ्य न उपजाये. उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य मौजूद हो–वह सच्ची शिक्षा नहीं है।' उन्होंने कहा था 'शिक्षा के द्वारा मनुष्य में स्वावलम्बन का गुण आना आवश्यक है। जब बालक विद्यालयीय शिक्षा समाप्त करे तो वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। इसके लिए उसे व्यवसायिक दक्षता प्राप्त करनी होगी।

(क्रमशः)

यह अंक

आपको कैसा लगा ?

आर्य मर्यादा आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरी-पूरी कोशिश करते हैं कि आर्य मर्यादा का प्रत्येक अंक आपकी रुचि के अनुसार रहे और उससे आपको अधिक से अधिक सन्तोष हो और यह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे।

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिये कौन सी रचना आप को पसन्द आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख पढ़ना पसन्द करेंगे, हम आपकी आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे।

—सह-सम्पादक

सम्पादकीय

आर्य हिन्दू एवं आर्य समाजी

पिछले वर्ष जबकि ईरान के शाह का आगमन भारत में हुआ था, उस समय मैंने अनेक समाचार पत्रों में. विशेषतः अंग्रेजी के समाचार पत्रों में, प्रकाशित विज्ञापन रूप में समर्पित शुभ कामनाओं को जब पढ़ा तो आश्चर्य मिश्रित हर्ष हुआ कि शाह ईरान को आर्य मिहिर सम्बोधित किया था और यह विज्ञापन भी, यदि मैं भूल नहीं रहा हूं तो ईरान के एम्बेसी की ओर से प्रकाशित था। जिसका अभिप्रायः आर्यो का सूर्य था। मैंने फिर विचार किया कि 'आर्य' शब्द में कितनी सार्वभौमिक रूप छिपा हुआ है। उसमें मुस्लिम, ईसाई, सिख या अन्य मत-भेदों को कोई स्थान नहीं था।

क्योंकि आचरण से आर्य कहाते थे। जिसका आचरण व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का उत्थान करने वाला हो। उसी को आर्य कहा करते थे। अगर आर्यत्व को एक रेखा चित्र के अन्दर साक्षात् किया जाए तो अनुमानतः यही बनेगा कि चार भुजाओं वाला आर्यत्व है। एक भुजा में वैदिक धर्म की पताका, दूसरे में वेद की मशाल, तीसरे में शक्ति का प्रतीक कमल, चौथी भुजा में अनुशासन का प्रतीक गदा स्थित है। आर्यत्व शक्ति एवं धैर्य रूपी पैरों पर खड़ा है तथा आत्म विश्वास रूपी धरातल पर उसके पैर जम चुके हैं। यह तो प्राचीन युग का एक सलोना रूप था।

जब मध्य युग का पदार्पण हुआ तो आर्य जाति को विभाजित हमारे स्वार्थ राजनीति ने कर दिया। तब हिन्दू, मुस्लिम आदि अनेक भेद हो गये। आर्यत्व हिन्दुत्व की संकीर्ण दायरे में बन्द हो गया। जब हमें यह विचार करने का मौका मिला, कि हिन्दू चोर, लुटेरों का नाम, सिन्धु तटवर्ती इलाकों के आधार पर या पड़ा है तो आर्य शब्द को वापस लेने का अनथक प्रयास किया गया जिसमें कि काफी सफलता हासिल की। पर आर्य के साथ समाजी शब्द जोड़ कर हमने खोई हुई वस्तु को पुनः प्राप्त किया।

मेरी इसमें दो राय नहीं कि आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्ति को आर्य समाजी कहना गुनाह है। पर दुःख मुझे इसलिए होता है कि हम उसी मजहबी वातावरण में आ फंसे। खुलासे में अगर कहा जाये, तो पुराण को मानने वाले पौराणिक होते हैं, ईसू के अनुयायी ईसाई होते हैं। अगर हमें गुरु शिष्य परम्परा या धर्म ग्रन्थ के आधार पर ही अपने आपको व्यक्त करना था तो 'दयानन्द' अथवा 'वेदी' को आगे लाना था, चूंकि आर्य समाज न पुस्तक का नाम हैं, न सम्प्रदाय का तो क्यों हम पूर्वो का हिन्दू जाति को विभाजित करके, पौराणिक, एवं आर्य समाजी के नाम से अपने आपको प्रकट करें। आर्य समाज एक संगठन है। संगठन के नाम पर अपनी जाति को सम्बोधित करना एक धर्म के प्रति कृतघ्नता प्रकट करना है। जैसे कांग्रेस गुट के सदस्यों को कांग्रेसी नाम रखकर भारतीय एकात्मकता को चोट की है इसी प्रकार वैदिक धर्म या आर्यत्व को चोट पहुंचाई है। आज हम किन हालातों में से होकर गुजर रहे हैं इसका नमूना हम सरिता के सितम्बर ७८ द्वितीय अंक में देख सकते हैं। उसमें लिखा है।

'स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना हिन्दू समाय से अन्धविश्वास अवतारवाद व मूर्तिपूजा हटाने के लिये की थी, पर आज आर्य समाज के पदाधिकारी अपने पद और आमदनी बनाए रखने के लिये यह सब जानबूझ कर भुला रहे हैं। (पृष्ठ ८१)

इन वाक्यों में हीनता की बदबू कितनी जोर से हम को तंग कर रही हैं, इसका एहसास केवल स्वाभिकारी सहृदय पाठक ही कर सकते हैं। सिखो ने तों निरंकारियों का बहिष्कार हुक्मनामे को लिखकर किया था. पर हम अपने आपको आर्य समाजी कहकर अपने आप बहिष्कृत हो रहे हैं, हमारी बेटियों-बेटों का रिश्ता अगर कोई लेना भी चाहेगा तो हजार बार आगा-पीछा सोचकर आगे कदम बढ़ाएगा। आर्य समाजी, आर्य समाजी से रिश्ता जोड़ना कम ही पसन्द करेगा। क्या यह सब हृदय विदारक समाचार नहीं? आज का युग अपने आपको संकुचित करके अल्प-संख्यक या साम्प्रदायिकता को घेरे में लाने का युग नहीं।

जब हम अपने आपको हिन्दू या आर्य समाजी न कहकर आर्य कहलाने लगेंगे तब मालूम होगा कि विश्व तो आर्य पहले से ही बना है, जरूरत है उस आर्यत्व को कायम रखने की। संगठन के नाम पर जाति का नामकरण करना न केवल अपने लिये घातक है अपितु हमारे देश के लिये भी घातक है:

—सह-सम्पादक

बापू : आज का शासन

२ अक्तूबर को महात्मा गांधी का जन्म दिन भारत का बच्चा ही नहीं, देश के शासक एवं प्रशासक सभी गांधी जी के बुत पर (समाधि पर) श्रद्धा के साथ फूल चढ़ाकर मनाते हैं, 'रघुपति राघव राजा राम, का कीर्तन करते हैं। यही रीति हर साल निभाई जा रही है। पर देखने में वही ढाक के तीन पात। बापूजी का स्वप्न था कि राम-राज्य की स्थापना। राम-राज्य की तीन विशेषताएं थीं। १. दैहिक, दैविक एवं भौतिक ताप, इन तीनों का अभाव। २. राज्य, पद (कुर्सी) के प्रति निस्पृह भाव। प्रसिद्ध है अयोध्या की राजगद्दी के लिये राम एव भरत का पारस्परिक व्यवहार। ३. प्रेम भरा वातावरण।

आज के शासन में इन्हीं तीनों का अभाव हैं। किसी व्यक्ति की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने का तात्पर्य उनके बताये मार्ग पर चलना है। तीस साल तक कांग्रेस का शासन रहा, डेढ़ साल से जनता पार्टी का शासन रहा, क्या बापू के सपनों का थोड़ा-बहुत आदर किया है? मैं आज के वातावरण का वर्णन नहीं करना चाहता। फिर भी इसके जरिये आर्यों से पूछना चाहूंगा कि यह ढोंग कब तक चलता रहेगा? कौन इसको समाप्त करेगा?

श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी भारत के कर्णधारों के निर्माता थे। वे इनके कन्धों पर भारत का एक भव्य भवन खड़ा करना चाहते थे। पर आज उनके अनुयायी दुश्चरित्रता, हिंसा, बलात्कार, असुरक्षा, कुशिक्षा को आधार बनाकर भारतीयता को टिकाना चाहते है, क्या सम्भव है? गांधी जी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में हटात् हमें इस नुक्ते पर सोचना पड़ेगा।

सह-सम्पादक

सत्य का अभियान

कवि कस्तूरचन्द जी 'घनसार' प्रधान आर्य समाज पीपाड़ शहर

चला! सत्य का अभियान!

असुर आतङ्कता से है परेशान भले मानुष!
उनके कुकर्त्तव्य से है आज चले मानुष!
दिन-दिन होती है बड़ हान!
चला! सत्य का अभियान ।१।

अनार्यो की चल रही, सत्य सत्ता को है लोप!
इधर हो रहा काली करतुतियों का है कोप!!
मिटता जा रहा अरमान!
चला! सत्य का अभियान ।२।

दस्यों की है भरमार, लज्जा को रहे लूट!
आर्य रत्न मालाओं की रही है लड़ियां टूट!
कर वैदिक याद विधान!
चल! सत्य का अभियान ।३।

अकर्मण्यता अनिष्ठता मत्यता रही है छाय!
भौतिकता के लोलुन रहे विलासता को बिछाय!!
करते क्रीड़ा कीट मलान!
चला! सत्य का अभियान!!

ऋषि की लेखमाला को है कर याद चल!
आर्य सद्भावो को जगा के कर निनाद चख!!
बन मानव देव महान्!
चला! सत्य का अभियान!!

हमारी शिक्षा पद्धति–5

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करना देश और समाज के लिए तो लाभकारी है ही, स्वयं व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा प्राप्त करने पर भी यदि बालक बेकार रहता है तो इसमें शिक्षा का ही दोष है।"

उन्होंने यह भी कहा था "मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष की अपेक्षा सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूं। संस्कृति प्रारम्भिक वस्तु तथा आधार है।" तथ्य यह है कि संस्कृति विहीन साहित्य—हो ही नहीं सकता। जो मानव और मानव समाज का हित सिद्ध न करे—वह साहित्य नहीं है। मानवता का विकास तो संस्कृति में ही निहित है। संस्कृति से ही मनुष्य संस्कृत होता है, नहीं तो राक्षस, पिशाच आदि बन जाता है। सांस्कृतिक आधार के बिना साहित्य कोरा शब्दाडम्बर मात्र रह जाता है। उससे मानवता का हित तो संभव है ही नहीं, अहित की संभावना सुनिश्चित है। अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए गांधी जी कहते है "मैंने हृदय की संस्कृति या चरित्र-निर्माण को सदा प्रथम स्थान दिया है। मैंने चरित्र-निर्माण को शिक्षा की उपयुक्त आधारशिला माना है।"

गांधी जी वैयक्तिक स्वतन्त्रता का सदा आदर करते थे, किन्तु व्यक्ति को वह सामाजिक प्राणी के ही रूप में देखते थे। उनके विचार से "व्यक्तित्व का विकास शून्य में असम्भव है।" इसीलिए वह यह कहते थे कि "शिक्षा द्वारा आध्यात्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिए।" इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वह "सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वह है, जो मुक्ति के लिए है, का आदर्श मानते थे। जो साहित्य सांस्कृतिक आधार पर खड़ा होगा, वही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा सांस्कृतिक पथ से भ्रष्ट पुस्तकों के द्वारा इसकी सम्भावना नहीं हो सकती। शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य तो मुक्ति होना ही चाहिए, किन्तु स्वावलम्बन और आत्म-निर्भरता के बिना मोक्ष का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। इनके अभाव में तो मानव दुष्कर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। अतएव समग्र रूप से गांधी जी के यह विचार हमें वैशेषिक की उसी घोषणा का अनुसरण करने का निर्देश करते हैं "जिससे इस लोक में जीवन का सर्वांग विकास हो और मृत्योपरान्त मोक्ष मिले, वही धारण करने योग्य है और यह धारण सामर्थ्य सांस्कृतिक आधार पर स्थित शिक्षा और साहित्य से ही सम्भव है।

"गांधी जी ने वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं न कि विरोधी। गांधी जी बालकों में नैतिक गुणों का विकास करना चाहते थे। साक्षरता अपने आप में शिक्षा नहीं है। बच्चे का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा है। जीवन में श्रम का अत्यधिक महत्व है। गांधी जी श्रम को जीवन का आवश्यक आधार बताते थे। कहीं ऐसा न हो कि बालक श्रम से घृणा करने लगे। गांधी जी बालकों में श्रम का आदर जमा कर उनमें श्रम की आदत डालना चाहते थे।" यह विचार श्री रामशकल पाण्डेय ने अपनी पुस्तक में गांधी जी के दृष्टिकोण के विषय में प्रगट किए हैं।

डा. रामशकल पाण्डेय का कथन है कि "आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो गई है। इसका कारण है सरकारी नौकरियों का लोभ, जो हमें अंग्रेजी शासन-काल से उत्तराधिकार में मिला है। सरकारी नौकरी के लिए कागज के प्रमाण-पत्रों का अधिक मूल्य व्यक्ति के आदर्शों एवं उस की मान्यताओं का बहुत कम।' पाण्डेय जी आगे लिखते हैं "परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करना जीविकोपार्जन के लिए अधिक उपयोगी है और परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करने के लिए परीक्षक की चाटुकारिता......शिक्षा के नाम पर बेसिर-पैर की बातें रटना, परीक्षा के दिनों में किताबी कीड़ा बन जाना...... अपने चारों ओर शिक्षा जगत में यही तो हो रहा है।"

अन्त में इतना कहकर हम अपने पाठकों से विदा लेते हैं कि इन शिक्षा-शास्त्रियों के विचारों को अपने लेख के अन्तिम भाग में उद्धत करने का हमारा अभिप्राय यह है कि शिक्षा समस्या पर हमने जो विचार इस लेख में व्यक्त किए हैं, उन में हम अकेले नहीं हैं अपितु विश्व के उक्त प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री और महापुरुषों के मत भी हमारे दृष्टिकोण के प्रबल समर्थक हैं। इतना लिखने के पश्चात् हम यह आशा करेंगे कि यदि हमारे यह विचार देश के वर्तमान अधिकारों के पास तक पहुंचे तो अच्छा हो।

जब तक शिक्षा का सुधार नहीं होगा, भारत का वास्तविक हित नहीं होगा—सरकार चाहे जितने कानून और योजनाएं बनाले। यदि देश के स्वाधीन होने ही शिक्षा का सुधार हो जाता तो अब तक की तीस वर्षीय अवधि में भारत वास्तविक अर्थों में राष्ट्र बन गया होता। यदि अब भी राष्ट्र-नेताओं के नेत्र खुल जायें तो केवल बीस वर्ष में राष्ट्र का नव-निर्माण हो जायगा।

आर्यजन वैदिक संस्कृति के सैनिक बन कर सामने आएं

—डा. सत्यव्रत

विगत दिनों नैरोबी में भूतपूर्व संसद सदस्य और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने आज आर्य समाजियों को आह्वान किया कि जिस तरह आज से २२५० वर्ष पूर्व अशोक महान द्वारा आयोजित महासभा के बाद संसार के कोने-कोने में शांतिदूत, तथा अहिंसा के सन्देश लेकर चल पड़े थे उसी तरह अशांति तथा सकटों से ग्रस्त मानवता की शांति एवं आध्यात्मिकता का सन्देश देने के लिए वे ऋषि दयानन्द के वैदिक संस्कृति के सैनिक बनकर आगे आएं।

डा. सिद्धान्तालंकार आज यहां आर्य समाज नैरोबी की स्वर्ण जयन्ती समारोह पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण कर रहे थे।

इस आर्य सम्मेलन में भारत, अमरीका, कनाडा, मारीशस व पूर्वी अफ्रीका से लगभग ५०० प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

आयोजकों के अनुसार इस में विशुद्ध नागरिकता व विश्वबन्धुत्व के आर्यसमाज के महान सिद्धांतों पर विशेष रूप से जोर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के विशाल भवनों में शांति तथा भ्रातृत्व के लच्छेदार भाषणों के बावजूद विश्व में शांति का वातावरण उत्पन्न नहीं हो रहा, क्योंकि अशांति लड़ाई झगड़ा युद्ध आदि भूमि में नहीं लड़े जाते मनुष्य की मनोभूमि में लड़े जाते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों मैं "मेरा मन सभी के कल्याण कार्यों में लगे" सन्देश विश्व के कोने कोने में पहुंचा कर इस समस्या का हल ही निकाला जा सकता है।

मानव समाज के जीवन में चारों तरफ व्यास असंतोष एवं अशान्ति की समस्या को हल करने के ऐतिहासिक परिवेक्षण में वैदिक विचारधारा की भूमिका की चर्चा करते हुए डा. सिद्धातालंकार ने कहा कि आज के युग में जब वेदों तथा वैदिक संस्कृति का हम नाम लेने लगे थे, वेद क्या कहते हैं. भूल गए थे।

उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने फिर से उस सन्देश को जगाया और घोषणा की कि मानव समान "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की राह पर चल कर ही भौतिक बाद के प्रलयकारी परिणाम से बच सकता है। इसी उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना हुई।

संस्कृति की गूंज पैदा कर उस दृश्य का आर्य समाज के संस्थापक ने सपना लिया था।

उन्होंने कहा कि आज हम जिस लक्ष्य को लेकर यहां एकत्रित हुए हैं वह तभी पूरा होगा जब हम सारे संसार में भारत के ऋषि मुनियों की आवाज को गुंजा देंगे। सदियों से भौतिक वाद के जिस मार्ग पर संसार चला आ रहा है उस पर चलते-चलते वह थक गया है और हाथ उसके कुछ भी नहीं आया है।

वैदिक उपवन के माली

श्री स्व. प्रकाशचन्द्र कविरत्न अजमेर

दयानन्द बनकर आए, वैदिक उपवन के माली,
उपवन में नाना मत, पन्थों के कटु झाड़ बढ़े थे,
जन्तु विषैले पाखण्डी धूर्तों के अमित कढ़े थे,
तर्क कुठारे मे ऋषि ने सब भूमि शुद्ध कर डाली।

कड़ी धूप से उपवन के तब, पौधे थे मुरझाये,
हृदय रक्त से सींच-सींच कर ऋषि ने वे पनपनाये,
भाये मृदु फल-फूल हुई मन मानन अति हरियाली।
बन्दर आदि ढीठ वनचर उत्पात न कहीं मचाएं,
उपवन में घुसकर तरु पौधे नष्ट नहीं कर पाएं,
चहुं दिशि बाड़ लगा दी ऋषि ने आर्य समाज निराली।
आर्य समाज धूर्त ना-समझों को कण्टक लगता है,
सुबुध भलों के उर में आदर इसके प्रति जगता है.
इसके द्वारा उपवन की ऋषि ने दुर्दशा सम्भाली।
भ्रमित व्यक्ति जन को जो था अमृत फल देने वाला,
उस ऋषि माली को पिलवाया दुष्टों ने विष प्याला.
सम्वत् उन्नीस सौ चालीस की कैसी थी दीवाली।
बना गये ऋषि लेखराम, श्रद्धानन्द वीर लाजपत,
संन्यासी दर्शनानन्द जी हंसराज श्री गुरुदत्त,
करते रहे प्राणपण से इस उपवन की रखवाली।
श्री पं० नरेन्द्र कहलाए जो सोमानन्द स्वामी,
रहे अखण्ड ब्रह्मचारी सच्चे वैदिक पथगामी,
इस उपवन की रक्षा हित काया अर्पण कर डाली।
आर्यजनों! अब करो, आप रक्षा वैदिक उपवन की,
इसके लिये 'प्रकाश' लगा दो बाजी तन-मन-धन की,
जागृत रहो न कर पाये पामाली, शत्रु कुचाली।

इतिहास के पृष्ठों से—

दण्डी विरजानन्द विद्यालय और महर्षि दयानन्द का विद्याध्ययन

श्री प्रभुदयाल भोतल मथुरा

यह महत्वपूर्ण एवं परिचयात्मक लेख वर्तमान आर्य सन्तति के ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पाठक वर्ग इस लेख से कुछ लाभ उठाएगा।

—सह-सम्पादक

भारतवर्ष के प्राचीन और इतिहास प्रसिद्ध नगरों में मथुरा का महत्व सर्वमान्य है। भगवान् श्री कृष्ण के जन्म-स्थान होने के अतिरिक्त यह नगर विविध विद्याओं, कलाओं और ज्ञान-विज्ञान का भी विख्यात केन्द्र रहा है। इसके महत्व के कारण ही देश के प्रायः सभी प्रमुख धर्मों और सम्प्रदायों ने समय-समय पर यहां अपने मन्दिर, मठ, देवालय और केन्द्र बनाये, जिनके कारण विभिन्न स्थानों से आए हुए विशिष्ट व्यक्तियों का समुदाय यहां पर सदा से निवास करता रहा है। उन्होंने मथुरा के मूल निवासियों से भी अधिक इस नगर की गौरव-वृद्धि में योग दिया है। दण्डी विरजानन्द जी और स्वामी दयानन्द जी मथुरा के मूल निवासी नहीं थे। किन्तु उन्होंने इस नगरी के महत्व को वहां पर निवास कर और यहां से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी कीर्ति कौमुदी के साथ ही साथ मथुरा की यशोगाथा को भी विस्तीर्ण किया है।

दण्डी जी का संक्षिप्त परिचय—

दण्डी विरजानन्द जी का जन्म पंजाब के करतारपुर नगर के निकटवर्ती गंगापुर ग्राम में सं० १८३५ के लगभग हुआ था। वे भारद्वाज गौत्रीय सारस्वत ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम नारायण दत्त था उनका अपना नाम क्या था, यह ज्ञात नहीं होता है। यह निश्चित है संन्यास की दीक्षा लेने के अनन्तर उनका गुरुप्रदत्त नाम विरजानन्द हुआ था। वे इसी नाम से विख्यात हैं। मथुरा में वे दण्डी स्वामी के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं। नेत्रहीन होने से प्रज्ञा चक्षु भी कहलाते थे। वे जन्मान्ध तो नहीं थे किन्तु ५ वर्ष की अवोधावस्था में शीतला रोग से नेत्रहीन होने के कारण जन्मान्ध जैसे हो गये थे। उनकी स्मरण शक्ति और मेधा असाधारण थी। इन जन्मजात दैवी गुणों के कारण ही उनकी नेत्रहीनता उनके उज्ज्वल भविष्य में बाधक नहीं हुई और कालान्तर में वे अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान हुए।

विरजानन्द जी के नेत्रहीन होने पर भी उनके पिता ने उन्हें आरम्भिक शिक्षा देने का आयोजन किया था। दुर्भाग्य से उनके माता-पिता की शीघ्र मृत्यु हो गई और वे १२ वर्ष की बाल्यावस्था में अनाथ हो गए। इससे दुःखी होकर वे अपने जन्म स्थान को छोड़ कर हरिद्वार चले गये। वहां ऋषिकेश में निवास कर वे अहर्निश तपस्या और गायत्री मन्त्र का जाप करने लगे। कहते हैं उन्हें गायत्री मन्त्र सिद्ध हो गया था। इनके फलस्वरूप उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये और उनको बुद्धि का अद्भुत रूप मे विकास हुआ। ऋषिकेश में वे कनखल गये। वहां पर उन्होंने व्याकरणादि विद्याओं का अध्ययन कर उनमें दक्षता प्राप्त की थी।

कनखल में उन्होंने पूर्णानन्द नामक विद्वान से संन्यासाश्रम की दीक्षा ली थी, तदुपरान्त वे विरजानन्द नाम से प्रसिद्ध हुये। कनखल से वे काशी गये। वहां पर उन्होंने अपने विद्याध्ययन को पूर्ण किया। काशी में वे अध्ययन के साथ ही साथ अध्यापन कार्य भी किया करते थे। इस से उनकी विद्या का भली-भान्ति विकास हो गया था। उनके दीक्षा गुरु के रूप में पूर्णानन्द संन्यासी का नाम विदित है, किन्तु उनके शिक्षा गुरु का नाम प्रसिद्ध नहीं है। उन्होंने अलवर में जिस ग्रन्थ की रचना की थी, उसके अन्त में उन्होंने अपने को गौरीशंकर का शिष्य बतलाया है। इससे ज्ञात होता है कोई गौरीशंकर नामक विद्वान उनके शिक्षा गुरु थे।

काशी में विद्याध्ययन करने के उपरान्त वे गया आदि विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए सोरों आए। वहां के गड़ियाघाट पर निवास कर उन्होंने अध्यापन कार्य आरम्भ किया था। उन के सोरों निवासी शिष्यों में अंगदराम का नाम उल्लेखनीय है। सोरों में एक बार अलवर के राजा विनयसिंह गंगा स्नान के लिए आए थे। वे विरजानन्द की विद्वता से बड़े प्रभावित हुये। राजा विनयसिंह विद्याव्यसनी और विद्वानों के आश्रयदाता थे। उनके समय अलवर सुप्रसिद्ध विद्या केन्द्र बन गया था। उन्होंने विरजानन्द जी से अलवर चलने का विशेष आग्रह किया। विरजानन्द जी इस शर्त पर अलवर जाने को राजी हुए कि राजा उनसे व्याकरण पढ़ेगा। इसमें शिथिलता होते ही वे अलवर से चले आवेंगे।

राजा विनयसिंह ने अलवर में विरजानन्द जी के निवासादि की यथोचित व्यवस्था की थी। वे साधारण विद्यार्थी की भान्ति दण्डी जी से व्याकरण पढ़ने लगे, किन्तु राजकार्य में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण कभी-कभी उन्हें अध्ययन के लिये समय नहीं मिल पाता था। इससे असन्तुष्ट होकर विरजानन्द जी अलवर से सोरों वापिस चले गये। राजा विनयसिंह की प्रार्थना पर उन्हें सुगमता पूर्व व्याकरण की शिक्षा देने के लिए विरजानन्द जी ने अलवर में 'शब्द-बोध' नाम ग्रन्थ की रचना की थी। कहते हैं, इसकी हस्तप्रति अलवर के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित है। यदि यह वहां पर है, तो उसे दण्डी जी की कीतिरक्षा के लिए संपादित रूप में प्रकाशित कराना अत्यावश्यक है।

अब की बार वे अस्वस्थ हो जाने से सोरों में अधिक समय तक नहीं रह सके, स्वस्थ होते ही वे सोरों से मुरसान और वहां से भरतपुर चले गये। वहां के राजाओं ने उनका भली-भांति आतिथ्य सत्कार किया था, किन्तु वे दोनों स्थान विरजानन्द जी की स्थायी निवास के लिए उपयुक्त नहीं हुये। ऐसा जान पड़ता है, दण्डी विरजानन्द जी का मन तीर्थ स्थानों में अधिक रमता था। उस काल के तीर्थ स्थान धर्म, संस्कृतिके और विद्या के केन्द्र होते थे, अतः विरजानन्द जी जैसे विद्वान का मन उन स्थानों में लगना स्वभाविक ही था। यही कारण है अपना जन्म स्थान छोड़ने के उपरांत वे हरिद्वार, काशी, गया और सोरों में अधिकतर रहे थे। उन्हें आवश्यकतानुसार, मुरसान, भरतपुर आदि स्थानों में भी रहना पड़ा था, किन्तु उनका मन वहां नहीं लगा।

दण्डी जी का मथुरा आगमन और विद्यालय की स्थापना—

सोरों में निवास करते समय ही वे मथुरा के महत्व से प्रभावित थे। जब उन्होंने सोरों छोड़ दिया, तब वे मथुरा में स्थायी रूप से रहने लगे। उनके लिए मथुरा एक अपरिचित स्थान था, किन्तु वहां पर उन का एक परिचित व्यक्ति अलवर राज्य का जागीरदार गूजरमल निवास करता था। उसका मकान मथुरा चौक बाजार में था। जब विरजानन्द जी भरतपुर से मथुरा में स्थायी निवास करने गये, तब वे सर्वप्रथम उक्त गूजरमल के मकान पर ही ठहरे थे। पं० लें... के मतानुसार दण्डी विरजानन्द जी ... १८९३ में मथुरा आये थे। श्री देवे... नाथ मुखोपाध्याय के अनुसंधान से द... जी का आगमन १९०३-४ के लग... सिद्ध होता हैं। हमारे विचार से ... देवेन्द्रनाथ जी का मत ठीक हैं।

मथुरा आगमन से पहले भी दण्डी जी विभिन्न स्थानों में व्याकरण की शिक्षा दे चुके थे, किन्तु वहां पर ... कोई स्थायी व्यवस्था नहीं हो पाई ... संवत् १९०४ में उन्होंने मथुरा में ... रूप से विद्यालय की स्थापना कर, विधि पूर्वक अध्यापन का समारम्भ किया। कहते हैं, यह विद्यालय सर्वप्रथम गूजरमल के मकान में अथवा गतूकम नारायण के मन्दिर में स्थापित हुआ था। दो ... वाद इसके लिए कंस-खार के ... दो मजिला मकान ले लिया ... उसी में नियमित रूप से विद्याल... कार्य चलने लगा। इसमें पढ़ने वाले अ... छात्र व्याकरण के नामी विद्वान हुए।

दण्डी विरजानन्द जी एक अ... अध्यापक थे। उनके अध्यापन की ... भी अपूर्व थी। वे छात्रों को बड़ी सु... पूर्वक विषय का बोध कराते थे। वे ... से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लेते बल्कि निर्धन विद्यार्थियों की पुस्तकों ... व्यवस्था भी करा देते थे। उनके जी... निर्वाह तथा विद्यालय संचालन ... समस्त व्यय अलवर, भरतपुर और ... के राजाओं द्वारा दी हुई सहायता ... चलता था।

दण्डी जी द्वारा आर्ष ग्रन्थों ... आग्रह—

यह प्रसिद्ध बात है, दण्डी जी ... ग्रन्थों के प्रचार और अनार्ष ग्रन्थ... बहिष्कार के प्रबल आग्रही थे। इ... वे सिद्धान्त कौमुदी, मनोरम... जैसे अनार्ष व्याकरण ग्र... अष्टाध्यायी जैसे आर्ष व्या... पढाने के पक्षपाती थे। ऐस... है, दण्डी जी का यह आग्रह आरम्भ... नहीं था। उनके समय में सिद्ध... कौमुदी का विशेष प्रचार था और अ... ध्यायी जैसे सूत्रबद्ध प्राचीन व्याक... को बहुत कम लोग पढ़ते थे। दण्डी ... भी आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों का भेदभाव कि... बिना छात्रों की इच्छानुसार उन्हें ... प्रकार के ग्रन्थ पढ़ाया करते थे। ... वे आर्ष ग्रन्थों के इतने प्रबल पक्षपा... क्यों हो गये ? इसके सम्बन्ध में दो ... वदतियां विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

वे क्या थीं अगले अंक में पढ़िए।

हमारी शिक्षा पद्धति–5

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करना देश और समाज के लिए तो लाभकारी है ही, स्वयं व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा प्राप्त करने पर भी यदि बालक बेकार रहता है तो इसमें शिक्षा का ही दोष है।"

उन्होंने यह भी कहा था "मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष की अपेक्षा सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूं। संस्कृति प्रारम्भिक वस्तु तथा आधार है।" तथ्य यह है कि संस्कृति विहीन साहित्य—हो ही नहीं सकता। जो मानव और मानव समाज का हित सिद्ध न करे—वह साहित्य नहीं है। मानवता का विकास तो संस्कृति में ही निहित है। संस्कृति से ही मनुष्य संस्कृत होता है, नहीं तो राक्षस, पिशाच आदि बन जाता है। सांस्कृतिक आधार के बिना साहित्य कोरा शब्दाडम्बर मात्र रह जाता है। उससे मानवता का हित तो संभव है ही नहीं, अहित की संभावना सुनिश्चित है। अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए गांधी जी कहते है "मैंने हृदय की संस्कृति या चरित्र-निर्माण को सदा प्रथम स्थान दिया है। मैंने चरित्र-निर्माण को शिक्षा की उपयुक्त आधारशिला माना है।"

गांधी जी वैयक्तिक स्वतन्त्रता का सदा आदर करते थे, किन्तु व्यक्ति को वह सामाजिक प्राणी के ही रूप में देखते थे। उनके विचार से "व्यक्तित्व का विकास शून्य में असम्भव है।" इसीलिए वह यह कहते थे कि "शिक्षा द्वारा आध्यात्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिए।" इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वह "सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वह है, जो मुक्ति के लिए है, का आदर्श मानते थे। जो साहित्य सांस्कृतिक आधार पर खड़ा होगा, वही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा सांस्कृतिक पथ से भ्रष्ट पुस्तकों के द्वारा इसकी सम्भावना नहीं हो सकती। शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य तो मुक्ति होना ही चाहिए, किन्तु स्वावलम्बन और आत्म-निर्भरता के बिना मोक्ष का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। इनके अभाव में तो मानव दुष्कर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। अतएव समग्र रूप से गांधी जी के यह विचार हमें वैशेषिक की उसी घोषणा का अनुसरण करने का निर्देश करते हैं "जिससे इस लोक में जीवन का सर्वांग विकास हो और मृत्योपरान्त मोक्ष मिले, वही धारण करने योग्य है और यह धारण सामर्थ्य सांस्कृतिक आधार पर स्थित शिक्षा और साहित्य से ही सम्भव है।

"गांधी जी ने वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं न कि विरोधी। गांधी जी बालकों में नैतिक गुणों का विकास करना चाहते थे। साक्षरता अपने आप में शिक्षा नहीं है। बच्चे का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा है। जीवन में श्रम का अत्यधिक महत्व है। गांधी जी श्रम को जीवन का आवश्यक आधार बताते थे। कहीं ऐसा न हो कि बालक श्रम से घृणा करने लगे। गांधी जी बालकों में श्रम का आदर जमा कर उनमें श्रम की आदत डालना चाहते थे।" यह विचार श्री रामशकल पाण्डेय ने अपनी पुस्तक में गांधी जी के दृष्टिकोण के विषय में प्रगट किए हैं।

डा. रामशकल पाण्डेय का कथन है कि "आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो गई है। इसका कारण है सरकारी नौकरियों का लोभ, जो हमें अंग्रेजी शासन-काल से उत्तराधिकार में मिला है। सरकारी नौकरी के लिए कागज के प्रमाण-पत्रों का अधिक मूल्य व्यक्ति के आदर्शों एवं उस की मान्यताओं का बहुत कम।" पाण्डेय जी आगे लिखते हैं "परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करना जीविकोपार्जन के लिए अधिक उपयोगी है और परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करने के लिए परीक्षक की चाटुकारिता......शिक्षा के नाम पर बेसिर-पैर की बातें रटना, परीक्षा के दिनों में किताबी कीड़ा बन जाना...... अपने चारों ओर शिक्षा जगत में यही तो हो रहा है।"

अन्त में इतना कहकर हम अपने पाठकों से विदा लेते हैं कि इन शिक्षा-शास्त्रियों के विचारों को अपने लेख के अन्तिम भाग में उद्धत करने का हमारा अभिप्राय यह है कि शिक्षा समस्या पर हमने जो विचार इस लेख में व्यक्त किए हैं, उन में हम अकेले नहीं हैं अपितु विश्व के उक्त प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री और महापुरुषों के मत भी हमारे दृष्टिकोण के प्रबल समर्थक हैं। इतना लिखने के पश्चात् हम यह आशा करेंगे कि यदि हमारे यह विचार देश के वर्तमान अधिकारों के पास तक पहुंचे तो अच्छा हो।

जब तक शिक्षा का सुधार नहीं होगा, भारत का वास्तविक हित नहीं होगा—सरकार चाहे जितने कानून और योजनाएं बनाले। यदि देश के स्वाधीन होने ही शिक्षा का सुधार हो जाता तो अब तक की तीस वर्षीय अवधि में भारत वास्तविक अर्थों में राष्ट्र बन गया होता। यदि अब भी राष्ट्र-नेताओं के नेत्र खुल जायें तो केवल बीस वर्ष में राष्ट्र का नव-निर्माण हो जायेगा।

आर्यजन वैदिक संस्कृति के सैनिक बन कर सामने आएं

—डा. सत्यवृत

विगत दिनों नैरोबी में भूतपूर्व संसद सदस्य और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा. सत्यवृत सिद्धान्तालंकार ने आज आर्य समाजियों को आह्वान किया कि जिस तरह आज से २२५० वर्ष पूर्व अशोक महान द्वारा आयोजित महासभा के बाद संसार के कोने-कोने में शांतिदूत, तथा अहिंसा के सन्देश लेकर चल पड़े थे उसी तरह अशांति तथा सकटों से ग्रस्त मानवता की शांति एवं आध्यात्मिकता का सन्देश देने के लिए वे ऋषि दयानन्द के वैदिक संस्कृति के सैनिक बनकर आगे आएं।

डा. सिद्धान्तालंकार आज यहां आर्य समाज नैरोबी की स्वर्ण जयन्ती समारोह पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण कर रहे थे।

इस आर्य सम्मेलन में भारत, अमरीका, कनाडा, मारीशस व पूर्वी अफ्रीका से लगभग ५०० प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

आयोजकों के अनुसार इस में विशुद्ध नागरिकता व विश्वबन्धुत्व के आर्यसमाज के महान सिद्धांतों पर विशेष रूप से जोर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के विशाल भवनों में शांति तथा भ्रातृत्व के लच्छेदार भाषणों के बावजूद विश्व में शांति का वातावरण उत्पन्न नहीं हो रहा, क्योंकि अशांति लड़ाई झगड़ा युद्ध आदि भूमि में नहीं लड़े जाते मनुष्य की मनोभूमि में लड़े जाते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों में "मेरा मन सभी के कल्याण कार्यों में लगे" सन्देश विश्व के कोने कोने में पहुंचा कर इस समस्या का हल ही निकाला जा सकता है।

मानव समाज के जीवन में चारों तरफ व्यास असंतोष एवं अशान्ति की समस्या को हल करने के ऐतिहासिक परिवेक्षण में वैदिक विचारधारा की भूमिका की चर्चा करते हुए डा. सिद्धाता-लंकार ने कहा कि आज के युग में जब वेदों तथा वैदिक संस्कृति का हम नाम लेने लगे थे, वेद क्या कहते हैं. भूल गए थे।

उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द ने फिर से उस सन्देश को जगाया और घोषणा की कि मानव समान "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की राह पर चल कर ही भौतिक वाद के प्रलयकारी परिणाम से बच सकता है। इसी उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना हुई।

संस्कृति की गूंज पैदा कर उस दृश्य का आर्य समाज के संस्थापक ने सपना लिया था।

उन्होंने कहा कि आज हम जिस लक्ष्य को लेकर यहां एकत्रित हुए हैं वह तभी पूरा होगा जब हम सारे संसार में भारत के ऋषि मुनियों की आवाज को गुंजा देंगे। सदियों से भौतिक वाद के जिस मार्ग पर संसार चला आ रहा है उस पर चलते-चलते वह थक गया है और हाथ उसके कुछ भी नहीं आया है।

वैदिक उपवन के माली

श्री स्व. प्रकाशचन्द्र कविरत्न अजमेर

दयानन्द बनकर आए, वैदिक उपवन के माली,
उपवन में नाना मत, पन्थों के कटु झाड़ बढ़े थे,
जन्तु विषैले पाखण्डी धूर्तों के अमित कढ़े थे,
तर्क कुठारे से ऋषि ने सब भूमि शुद्ध कर डाली।

कड़ी धूप से उपवन के तब, पौधे थे मुरझाये,
हृदय रक्त से सींच-सींच कर ऋषि ने वे पनपनाये,
भाये मृदु फल-फूल हुई मन मानन अति हरियाली।
बन्दर आदि ढीठ वनचर उत्पात न कहीं मचाएं,
उपवन में घुसकर तरु पौधे नष्ट नहीं कर पाएं,
चहुं दिशि बाड़ लगा दी ऋषि ने आर्य समाज निराली।
आर्य समाज धूर्त ना-समझों को कण्टक लगता है,
सुबुध भलों के उर में आदर इसके प्रति जगता है.
इसके द्वारा उपवन की ऋषि ने दुर्दशा सम्भाली।
भ्रमित व्यक्ति जन को जो था अमृत फल देने वाला,
उस ऋषि माली को पिलवाया दुष्टों ने विष प्याला.
सम्वत् उन्नीस सौ चालीस की कैसी थी दीवाली।
बना गये ऋषि लेखराम, श्रद्धानन्द वीर लाजपत,
संन्यासी दर्शनानन्द जी हंसराज श्री गुरुदत्त,
करते रहे प्राणपण से इस उपवन की रखवाली।
श्री पं० नरेन्द्र कहलाए जो सोमानन्द स्वामी,
रहे अखण्ड ब्रह्मचारी सच्चे वैदिक पथगामी,
इस उपवन की रक्षा हित काया अर्पण कर डाली।
आर्यजनों! अब करो, आप रक्षा वैदिक उपवन की,
इसके लिये 'प्रकाश' लगा दो बाजी तन-मन-धन की,
जागृत रहो न कर पाये पामाली, शत्रु कुचाली।

इतिहास के पृष्ठों से—

दण्डी विरजानन्द विद्यालय और महर्षि दयानन्द का विद्याध्ययन

श्री प्रभुदयाल भोतल मथुरा

> यह महत्वपूर्ण एवं परिचयात्मक लेख वर्तमान आर्य सन्तति के ज्ञान वढ़ाने के उद्देश्य से पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पाठक वर्ग इस लेख से कुछ लाभ उठाएगा।
>
> —सह-सम्पादक

भारतवर्ष के प्राचीन और इतिहास प्रसिद्ध नगरों में मथुरा का महत्व सर्वमान्य है। भगवान् श्री कृष्ण के जन्म-स्थान होने के अतिरिक्त यह नगर विविध विद्याओं, कलाओं और ज्ञान-विज्ञान का भी विख्यात केन्द्र रहा है। इसके महत्व के कारण ही देश के प्रायः सभी प्रमुख धर्मों और सम्प्रदायों ने समय-समय पर यहां अपने मन्दिर, मठ, देवालय और केन्द्र बनाये, जिनके कारण विभिन्न स्थानों से आए हुए विशिष्ट व्यक्तियों का समुदाय यहां पर सदा से निवास करता रहा है। उन्होंने मथुरा के मूल निवासियों से भी अधिक इस नगर की गौरव-वृद्धि में योग दिया है। दण्डी विरजानन्द जी और स्वामी दयानन्द जी मथुरा के मूल निवासी नहीं थे। किन्तु उन्होंने इस नगरी के महत्व को वहां पर निवास कर और यहां से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी कीर्ति कौमुदी के साथ ही साथ मथुरा की यशोगाथा को भी विस्तीर्ण किया है।

दण्डी जी का संक्षिप्त परिचय—

दण्डी विरजानन्द जी का जन्म पंजाब के करतारपुर नगर के निकटवर्ती गंगापुर ग्राम में सं० १८३५ के लगभग हुआ था। वे भारद्वाज गौत्रीय सारस्वत ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम नारायण दत्त था उनका अपना नाम क्या था, यह ज्ञात नहीं होता है। यह निश्चित है संन्यास की दीक्षा लेने के अनन्तर उनका गुरुप्रदत्त नाम विरजानन्द हुआ था। वे इसी नाम से विख्यात हैं। मथुरा में वे दण्डी स्वामी के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं। नेत्रहीन होने से प्रज्ञा चक्षु भी कहलाते थे। वे जन्मान्ध तो नही थे किन्तु ५ वर्ष की अवोधावस्था में शीतला रोग से नेत्रहीन होने के कारण जन्मान्ध जैसे हो गये थे। उनकी स्मरण शक्ति और मेधा असाधारण थी। इन जन्मजात दैवी गुणों के कारण ही उनकी नेत्रहीनता उनके उज्ज्वल भविष्य में बाधक नहीं हुई और कालान्तर में वे अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान हुए।

विरजानन्द जी के नेत्रहीन होने पर भी उनके पिता ने उन्हें आरम्भिक शिक्षा देने का आयोजन किया था। दुर्भाग्य से उनके माता-पिता की शीघ्र मृत्यु हो गई और वे १२ वर्ष की बाल्यावस्था में अनाथ हो गए। इससे दुःखी होकर वे अपने जन्म स्थान को छोड़ कर हरिद्वार चले गये। वहां ऋषिकेश में निवास कर वे अहर्निश तपस्या और गायत्री मन्त्र का जाप करने लगे। कहते हैं उन्हें गायत्री मन्त्र सिद्ध हो गया था। इनके फलस्वरूप उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये और उनकी बुद्धि का अद्भुत रूप मे विकास हुआ। ऋषिकेश में वे कनखल गये। वहां पर उन्होंने व्याकरणादि विद्याओं का अध्ययन कर उनमें दक्षता प्राप्त की थी।

कनखल में उन्होंने पूर्णानन्द नामक विद्वान से संन्यासाश्रम की दीक्षा ली थी, तदुपरान्त वे विरजानन्द नाम से प्रसिद्ध हुये। कनखल से वे काशी गये। वहां पर उन्होंने अपने विद्याध्ययन को पूर्ण किया। काशी में वे अध्ययन के साथ ही साथ अध्यापन कार्य भी किया करते थे। इस से उनकी विद्या का भली-भान्ति विकास हो गया था। उनके दीक्षा गुरु के रूप में पूर्णानन्द संन्यासी का नाम विदित है, किन्तु उनके शिक्षा गुरु का नाम प्रसिद्ध नहीं है। उन्होंने अलवर में जिस ग्रन्थ की रचना की थी, उसके अन्त में उन्होंने अपने को गौरीशंकर का शिष्य बतलाया है। इससे ज्ञात होता है कोई गौरीशंकर नामक विद्वान उनके शिक्षा गुरु थे।

काशी में विद्याध्ययन करने के उपरान्त वे गया आदि विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए सोरों आए। वहां के गड़ियाघाट पर निवास कर उन्होंने अध्यापन कार्य आरम्भ किया था। उन के सोरों निवासी शिष्यों में अंगदराम का नाम उल्लेखनीय है। सोरों में एक बार अलवर के राजा विनयसिंह गंगा स्नान के लिए आए थे। वे विरजानन्द की विद्वता से बड़े प्रभावित हुये। राजा विनयसिंह विद्याव्यसनी और विद्वानों के आश्रयदाता थे। उनके समय अलवर सुप्रसिद्ध विद्या केन्द्र बन गया था। उन्होंने विरजानन्द जी से अलवर चलने का विशेष आग्रह किया। विरजानन्द जी इस शर्त पर अलवर जाने को राजी हुए कि राजा उनसे व्याकरण पढ़ेगा। इसमें शिथिलता होते ही वे अलवर से चले आवेंगे।

राजा विनयसिह ने अलवर में विरजानन्द जी के निवासादि की यथोचित व्यवस्था की थी। वे साधारण विद्यार्थी की भान्ति दण्डी जी से व्याकरण पढ़ने लगे, किन्तु राजकार्य में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण कभी-कभी उन्हें अध्ययन के लिये समय नहीं मिल पाता था। इससे असन्तुष्ट होकर विरजानन्द जी अलवर से सोरों वापिस चले गये। राजा विनयसिह की प्रार्थना पर उन्हें सुगमता पूर्व व्याकरण की शिक्षा देने के लिए विरजानन्द जी ने अलवर में 'शब्द-बोध' नाम ग्रन्थ की रचना की थी। कहते हैं, इसकी हस्तप्रति अलवर के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित है। यदि यह वहां पर है, तो उसे दण्डी जी की कीर्तिरक्षा के लिए संपादित रूप में प्रकाशित कराना अत्यावश्यक है।

अब की बार वे अस्वस्थ हो जाने से सोरों में अधिक समय तक नहीं रह सके, स्वस्थ होते ही वे सोरों से मुरसान और वहां से भरतपुर चले गये। वहां के राजाओं ने उनका भली-भांति आतिथ्य सत्कार किया था, किन्तु वे दोनों स्थान विरजानन्द जी की स्थायी निवास के लिए उपयुक्त नहीं हुये। ऐसा जान पड़ता है, दण्डी विरजानन्द जी का मन तीर्थ स्थानों में अधिक रमता था। उस काल के तीर्थ स्थान धर्म, संस्कृतिके और विद्या के केन्द्र होते थे, अतः विरजानन्द जी जैसे विद्वान का मन उन स्थानों में लगना स्वभाविक ही था। यही कारण है अपना जन्म स्थान छोड़ने के उपरांत वे हरिद्वार, काशी, गया और सोरों में अधिकतर रहे थे। उन्हें आवश्यकतानुसार, मुरसान, भरतपुर आदि स्थानों में भी रहना पड़ा था, किन्तु उनका मन वहां नहीं लगा।

दण्डी जी का मथुरा आगमन और विद्यालय की स्थापना—

सोरों में निवास करते समय ही वे मथुरा के महत्व से प्रभावित थे। जब उन्होंने सोरों छोड़ दिया, तब वे मथुरा में स्थायी रूप से रहने लगे। उनके लिए मथुरा एक अपरिचित स्थान था, किन्तु वहां पर उन का एक परिचित व्यक्ति अलवर राज्य का जागीरदार गुजरमल निवास करता था। उसका मकान मथुरा चौक बाजार में था। जब विरजानन्द जी भरतपुर से मथुरा में स्थायी निवास करने गये, तब वे सर्वप्रथम उक्त गुजरमल के मकान पर ही ठहरे थे। पं० लें[illegible] के मतानुसार दण्डी विरजानन्द जी [illegible] १८९३ में मथुरा आये थे। श्री देवे[न्द्र]नाथ मुखोपाध्याय के अनुसंधान से द[ण्डी] जी का आगमन १९०३-४ के लग[भग] सिद्ध होता हैं। हमारे विचार से [illegible] देवेन्द्रनाथ जी का मत ठीक हैं।

मथुरा आगमन से पहले भी दण्डी जी विभिन्न स्थानों में व्याकर[ण की] शिक्षा दे चुके थे, किन्तु वहां पर [illegible] कोई स्थायी व्यवस्था नहीं हो पाई[illegible] संवत् १९०४ में उन्होंने मथुरा में [illegible] रूप से विद्यालय की स्थापना कर विधि पूर्वक अध्यापन का समारम्भ किया। कहते हैं, यह विद्यालय सर्वप्रथम गुजरमल के मकान में अथवा गतश्रम नारायण के मन्दिर में स्थापित हुआ था। दो [illegible] बाद इसके लिए कंस-खार के [illegible] दो मजिला मकान ले लिया [illegible] उसी में नियमित रूप से विद्याल[य का] कार्य चलने लगा। इसमें पढ़ने वाले अ[नेक] छात्र व्याकरण के नामी विद्वान हुए।

दण्डी विरजानन्द जी एक अ[illegible] अध्यापक थे। उनके अध्यापन की [illegible] भी अपूर्व थी। वे छात्रों को बड़ी सु[illegible] पूर्वक विषय का बोध कराते थे। [illegible] से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लेते बल्कि निर्धन विद्यार्थियों की पुस्तकों [illegible] व्यवस्था भी करा देते थे। उनके ज[illegible] निर्वाह तथा विद्यालय संचालन [illegible] समस्त व्यय अलवर, भरतपुर और [illegible] के राजाओं द्वारा दी हुई सहायत[ा से] चलता था।

दण्डी जी द्वारा आर्ष ग्रन्थो[ं का] आग्रह—

यह प्रसिद्ध बात है, दण्डी जी [illegible] ग्रन्थों के प्रचार और अनार्ष ग्रन्थ[ों के] बहिष्कार के प्रबल आग्रही थे। इस[illegible] वे सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा और [illegible] जैसे अनार्ष व्याकरण ग्रन्थों की अ[illegible] अष्टाध्यायी जैसे आर्ष व्याकरण ग्रन्थ[ों को] पढाने के पक्षपाती थे। ऐसा कहा जा[ता] है, दण्डी जी का यह आग्रह आरम्भ [से] नहीं था। उनके समय में सिद्[धान्त] कौमुदी का विशेष प्रचार था और अष्टा[ध्यायी] ध्यायी जैसे सूत्रबद्ध प्राचीन व्याक[रण] को बहुत कम लोग पढ़ते थे। दण्डी [जी] भी आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों का भेदभाव कि[ये] बिना छात्रों की इच्छानुसार उन्हें [illegible] प्रकार के ग्रन्थ पढ़ाया करते थे। [illegible] वे आर्ष ग्रन्थों के इतने प्रबल पक्षपा[ती] क्यों हो गये? इसके सम्बन्ध में दो [illegible] वदतियां विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

वे क्या थीं अगले अंक में पढ़िए।

सम्पादकीय

आर्य समाज की विजय दशमी

हमारे शास्त्रों ने लिखा है—

'सत्यमेव जयते नानृतम् ।'

अर्थात्—सत्य की ही विजय होती है झूठ की नहीं ।

यही विजयदशमी का सन्देश है। एक ओर रावण का युद्ध भी तो सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय, शिष्टता और दुराचार के मध्य संघर्ष था। अन्ततः सत्य, न्याय और शिष्टता की विजय हुई। उसी खुशी में हम हजारों वर्षों से विजयदशमी मनाते चले आ रहे हैं। आज के दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी और सदा के लिए यह सिद्धान्त स्थापित कर दिया था कि अन्ततः विजय सत्य की होती है।

हर वर्ष आज के दिन हम इस युद्ध को याद करते हैं और इसी के साथ विजयदशमी के इस सन्देश को भी कि अन्ततः विजय सत्य की ही होती है।

आर्य समाज के इतिहास में भी कई लड़ाइयां लड़ी गई हैं। किन्तु पहली बार कुछ लोगों ने जो अपने आप को आर्य समाजी कहते हैं एक ऐसी लड़ाई शुरू की जिसमें उन्होंने नैतिकता और शिष्टता को भी तिलांजलि दे दी। यह कोई सिद्धान्त की लड़ाई नहीं थी, केवल व्यक्ति की लड़ाई थी। कुछ लोगों के हाथ से कुछ पद छिन गए। उन्होंने बदला लेने के लिए सारे आर्य समाज को ही गृह युद्ध की आग में झोंक दिया और अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए उन्होंने असली हथियारों का प्रयोग भी शुरू कर दिया।

गुण्डों का सहारा लेकर उन्हें शराब पिला कर उनके हाथों में लाठियां, भाले देकर आर्य समाज की संस्थाओं पर कब्जा करना शुरू कर दिया, इस अभियान का सबसे भयानक पक्ष यह था कि इसका नेतृत्व करने वाले कुछ भगवें वस्त्रधारी संन्यासी थे। भगवें रंग के लिए सम्मान और आदर रहा है, इसलिये कुछ लोग आंखें बन्द करके उनके पीछे चल पड़े।

यह लड़ाई अन्ततः अदालतों में जा पहुंची। आर्य समाज के इतिहास में इससे पूर्व कभी इतने मुकद्मे अदालतों में न लड़े गये थे। आर्य समाज की सारी ताकत इन मुकद्मों में लगा दी गई, कई बार तो ऐसा मालूम होता था कि आर्य समाज की सारी विरोधी शक्तियां इन केशधारी तथा कथित साधुओं के पीछे इकट्ठी हो गई है। कुछ राजनयिक नेताओं ने इनकी पीठ ठोंकनी शुरू की। जो लोग आर्य समाज को एक शक्तिशाली और संगठित संस्था के रूप में न देख सकते थे उन्होंने आर्य समाज की पंक्तियों में विघटन पैदा करने के लिए इन कथित साधुओं की सहायता करनी शुरू कर दी।

कुछ समाचार पत्रों ने समझा कि इसी बहाने अपनी दुकान चमका ली जाए तो क्या आपत्ति है। कुछ समय के लिए उन्होंने अपना ध्यान साईं बाबा ब्रह्म कुमारियों और आचार्य रजनीश जैसे भगवानों और देवी-देवताओं से हटाकर इन साधुओं की ओर लगा दिया। उन्होंने भी इनकी पीठ ठोंकनी शुरू कर दी। उनकी झूठी और निराधार खबरों का प्रचार शुरू कर दिया। झूठ समाचार सत्य और न्याय की धज्जियां उड़ा कर इन लोगों का सरक्षण शुरू कर दिया जो आर्य समाज की जड़ों पर कुठाराघात कर रहे थे।

ऐसे समय पर आर्य जनता का संरक्षण और आशीर्वाद उन लोगों के साथ जो इस तूफान में भी आर्य समाज का झण्डा उठाए हुये थे और जिन्होंने शपथ रखी थी कि चाहे इसका कितना मूल्य चुकाना पड़े इस ध्वज को झुकने न देंगे उन्होंने नहीं झुकने दिया। इससे पूर्व जालन्धर के एक विद्वान् सब-जज श्री बलदेवसिंह ने अपने ऐतिहासिक फैसला में इन विघटनकारी तत्वों का अन्त कर दिया था। किन्तु जालन्धर के सीनियर सब-जज ने कुछ देर के लिए मियाद दे दी थी। किन्तु जो फैसला जालन्धर के विद्वान् अतिरिक्त जिला जज ने दिया था उसने विघटनकारी तत्वों का सदा के लिए सफाया कर दिया है।

मेरी तो परमात्मा से प्रार्थना है कि वह अब भी उन्हें सद्बुद्धि दे कि यह सद्मार्ग पर आ जायें। जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम आज भी इन्हें गले लगाने को तैयार हैं। जो कुछ हो चुका सो हो चुका, आर्य समाज के लिए अपने सारे मतभेद भुलाकर और यदि कोई मतभेद हैं तो उन्हें परस्पर बातचीत से तय करके अब हमें निर्माण की ओर बढ़ना चाहिए ' मुकद्दमेबाजी हमारी समस्या का कोई समाधान नहीं है।

आज का दिन आर्य समाज के लिए विजय दशमी का दिन है। इस युद्ध में राम कौन था और रावण ? मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता। मेरे लिए तो यही काफी है कि हम इस योग्य हुए हैं कि विजय दशमी मना सकें। इस लड़ाई में सारी आर्य जनता की शुभ कामनाएं और प्रार्थनायें हमारे साथ रही हैं।

देश के ओर-छोर से आर्यजनों के सन्देश प्राप्त होते रहे हैं। प्रत्येक की निगाहें इस धर्म युद्ध की ओर लगी हुई थीं। इसीलिए दूर-दूर रहने वाले लोग भी यह जानने के इच्छुक थे कि फैसला क्या हुआ है और फैसला सुनने के बाद सबकी जुबान पर एक ही बात थी—'आर्य समाज बच गया।

इस लड़ाई में जिन मित्रों ने और जिन साथियों ने हमारा साथ दिया, मैं उनका हार्दिक धन्यवादी हूं। यह उनके प्रयत्नों का ही परिणाम है कि फिर हम विजय दशमी मना रहे हैं और जिन मित्रों ने हमारा विरोध किया उससे फिर कहना चाहता हूं कि यह रास्ता गलत है। यदि कोई शिकायत है तो बैठकर बात करो। कोई संस्था संगठन और अनुशासन के बिना नहीं चल सकती। इस संगठन और शनुशासन में रहकर जो कुछ भी लेना चाहो ले सकते हो।

किन्तु जो भी व्यक्ति इस संगठन और इसके अनुशासन को कमजोर करेगा इसका उससे बड़ा शत्रु दूसरा कोई नहीं हो सकता।

आओ ! हम सब मिलकर विजय दशमी के इस पवित्र पर्व पर यह संकल्प करें कि कुछ भी हो जाए अपने संगठन को किसी तरह कमजोर नहीं होने देंगे। जालन्धर के विद्वान् जज ने एक बार फिर हमें सन्मार्ग पर आने का अवसर दिया है। आओ हम सब मिलकर इसका लाभ उठाएं।

—वीरेन्द्र

बाढ़ पीड़ित, गोवंश रक्षा की ओर विशेष ध्यान दें

विगत दिनों दिल्ली तथा अन्य भारत के कई प्रान्तों में बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में सरकार एवं धनी लोग बाढ़ पीड़ित जनता की सेवा में तो लगे हैं किन्तु भूखे मर रहे गोवंश की ओर सरकार एवं सहायता करने वालों का ध्यान अभी तक नहीं गया। उक्त शब्द उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के बाढ़पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करके लौटे अ० भा० गो-संरक्षण परिषद के अध्यक्ष पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाने एवं पत्रों में प्रकाशनार्थ दिये वक्तव्य में कहे। स्वामी जी ने विभिन्न सरकारों एव बाढ़ पीड़ित सेवी संस्थाओं से अनुरोध किया है कि वह भारताधार गोवंश रक्षा की ओर भी पूर्ण ध्यान दें। स्वामी जी ने बाढ़ पीड़ित गोपालकों से अनुरोध किया कि वह अपनी आवश्यकताओं की सूचना परिषद के कार्यालय सनातन धर्म सभा मन्दिर, अशोक नगर, नई दिल्ली-१८ के पते पर अविलम्ब भेजें।

स्वामी जी ने दानी सज्जनों से अनुरोध किया है कि वह इस पवित्र कार्य में परिषद को हर प्रकार का सहयोग दें ताकि आवश्यकता के स्थानों पर गोवंश के लिए चारा, दाना भिजवाया जाए तथा गोवंश की उन्नति रक्षा करके भारत के मूल धन को बचाया जा सके।

राधेश्याम
अ० भा० गो-संरक्षण परिषद्

वानप्रस्थाश्रम

आज के परिवेश में

—डा० रामेश्वर दयाल गुप्त एम० ए०, पी० एच० डी०

किवदन्ती है कि जब घर में पौत्र (अपत्य का अपत्य) हो जाये तो पितामह को चाहिये कि वह वन की ओर चल पड़े अर्थात् वानप्रस्थी हो शेष जीवन व्यतीत करे। परन्तु अब न तो वन ही रहे और न वानप्रस्थी। उनसे शिक्षण लेने जाने वाले विद्यार्थी भी नहीं रहे, और न रहे उन आश्रमों

(क्रमशः)।

हज़ार रुपये पुरस्कार

श्री नवनीतलाल एडवोकेट ने अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीया सत्यप्रिया की स्मृति को स्थिर रखने के लिये "नवनीतलाल सत्यप्रिया धर्मार्थ ट्रस्ट" स्थापित किया है। ट्रस्ट का मुख्योद्देश्य सुपात्र सुयोग्य विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता एवं असहाय रोगियों की चिकित्सा तथा सहायता करना है। ट्रस्ट ने पिछले वर्ष लगभग २०००) रु० सहायता कार्य पर व्यय किये।

इस ट्रस्ट की ओर से घोषणा की गई है कि जो विद्वान् विद्यार्थियों को सदाचारी बनाने के लिये असाम्प्रदायिक धार्मिक और नैतिक शिक्षा की कम से कम १५० पृष्ठ की सबसे उत्तम पुस्तक लिखेगा उसको १०००) रु० पुरस्कार रूप में भेंट किये जायेंगे।

निःशुल्क उढल दत थ। य आश्रम हर प्रकार की प्रचुर सामग्री से भरपूर होते थे। इन आश्रमों का पुनरुद्धार करने के लिए हमें प्रयत्न करना चाहिये।

आज विद्यालयों में प्राध्यापक गृहस्थ हैं, अपनी भोग विलासता और महत्वाकांक्षाओं सहित—और उनका सम्पर्क विद्यार्थियों से कुछ घण्टों के लिए ही होता है। प्राध्यापक और विद्यार्थियों की संख्या का अनुपात भी एक और पचास का है। यही कारण है कि प्राध्यापक विद्यार्थियों पर अपने सदाचार का अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाते। यदि वानप्रस्थ व्यवस्था अनिवार्य बन जाय तो सोसाईटी को ऐसे निःशुल्क निस्पृह अध्यापक और प्रचारक प्रभूत संख्या में मिलें जिनके त्यागमय जीवन की छाप उनके सानिध्य में आने वालों पर अनायास ही पड़े।

यह नहीं कि सारे वानप्रस्थी शिक्षक ही बन जाते। कुछ उनमें अशक्त भी हो सकते हैं। परन्तु आजके भौतिकवादी चिन्तन में उनकी फ़िक्र कौन करे? नगरों के जिन एक-एक कमरों के आवासों में आज मजदूर, क्लर्क, और अध्यापक अपना जीवन काट देते हैं, उनमें वृद्धजनों की चारपाई का स्थान ही कहां है। हमारी परिवार प्रणाली को समाप्त करने के लिये साम्यवादोन्मुख समाजों और संस्कारों ने जो साधन प्रयोग किये हैं उनमें यह कबूतरखानों जैसे मकान भी हैं। वह दर्शन जीवित पितरों की पूजा अभ्यर्थना को एक अनावश्यक ढोंग करार देता है। क्योंकि वे अनुत्पादक हैं—धन और वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। इन वृद्धों की विचारधारा पुरानी और धर्म-निष्ठ है। वे देश की मर्यादा और संस्कारों एवं पर्वों से चिपके हुए हैं। साम्यवाद तो नई संस्कृति के निर्माण का डिमडिम पीटता है। उसे सब अध्यात्म-निष्णात-चिन्तन ढोंग लगते हैं। हा वृद्धजन! तुम अपने घर में ही अवांछनीय विदेशी हो गये। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पढ़ा-लिखा तुम्हारा पुत्र और पौत्र तुम्हारी हर प्रक्रिया की हंसी उड़ाता है, वह तो ८ बजे सोकर उठता है, 'शेव' करना ही उसका प्रातः का नित्यकर्म है, तदुपरान्त अंडे का 'आमलेट' उसका प्रिय प्रातराश है, किंवा सिनेमा या नग्न-नृत्य देखता है या फिल्मी गाने सुनता रहता है। उसकी बैठक में अर्धनग्न या निर्वसना सुन्दरी के फोटो टंगे हैं और वह अपने को 'मॉडर्न' कहकर अपने वृद्धों का उपहास करता है। यदि इन वृद्धों की इस सांस्कृतिक अवरोध से रक्षा करनी है तो इनको वानप्रस्थ आश्रमों में लाकर रखना ही होगा।

फिर वे वृद्ध-जन भी हैं जिन्हें विधाता ने सन्तान से और विशेषकर पुत्ररत्न से वंचित रक्खा है। जब तक युग्म जीवित है, ये चकवा-चकवी एक दूसरे का दुःख निवारण करते रहते हैं, पर युग्म टूटने पर इन विधुर या विधवा के आंसू कौन पोंछे, दुख-दर्द और बीमारी में सेवा-सुश्रूषा कौन करे, कौन करे इनकी मरणोपरान्त अंत्येष्टि ताकि उनका शव ठेला-गाड़ी में रखा जाकर किराये के मजदूरों द्वारा किये जाने वाले जल-प्रवाह या मिट्टी के तेल द्वारा अग्निदाह से बचाया जा सके। और फिर कौन करे उनका चौथा, त्रयोदशा अथवा वर्षी। इस प्रकार की असीम जन-संख्या की परवाह करने की व्यवस्था, इन आश्रमों में ही हो सकती है। अय कृतघ्न समाज! जिन वृद्धों ने भरी जवानी तेरे लिये उत्पादन में और तेरी विविध प्रकार की सेवा में आहूत कर दी, वार्धक्य में उनके अशक्त होने पर तू उनकी सेवा सुश्रूषा का प्रबन्ध भी न करे। ऐसा कर तू ने अपने को न केवल उन वृद्धों के पुनीत आशीर्वाद से वंचित किया है वरन कृतघ्नता का महापाप भी किया है। इस दुखावस्था के निराकरणार्थ वानप्रस्थ आश्रमों की संस्कृति स्थापित करनी ही पड़ेगी।

यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि भारतीय समाज और सरकार ने यह कार्य अब तक अपने हाथ में नहीं लिया। विदेश से आई मदर ट्रस्टा ने इन दशाब्दियों में यह कार्य हाथ में लिया और कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में वृद्ध-जन-आश्रम खोले हैं, जहाँ वृद्धों को स्थान मिले हैं और वे अपने जीवन के अंतिम दिन राहत से बिता रहे हैं। परन्तु ईसाई मिश्नरियों का औषधि-वितरण से लेकर वृद्धजनाश्रय निर्माण तक के सारे कार्य अपने प्रभु ईसा की शरण में मानवता को लाने का उपक्रम मात्र होते हैं। यह छिपी हुई अन्तर्भावना उनके सब कार्यों में से परसेवा के महानतम पुण्य को नष्ट कर देती है। दुख तो इस बात का है कि आश्रम-चतुष्टय की योजना के अन्तर्गत प्रस्तुत ऋषियों और स्मृतियों का यह निदान हमारे स्वतन्त्र भारत की व्यवस्थाओं में स्थान नहीं पा सका। लगभग दो करोड़ रुपया भारत सरकार मदर ट्रस्टा को दे चुकी है। पर वानप्रस्थ आश्रमों की ओर ध्यान उनका नहीं गया है। यदि सिविल कानून के अन्तर्गत सरकार निःसन्तान लोगों की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो सकती है तो उनके भोजनाच्छादन का उत्तरदायित्व क्यों नहीं लेती? मेरा विचार है कि भारतीय प्रजातन्त्र बुद्धिवादी (Rationalistic) है और यदि हम इसके स्तम्भों और जनसमुदाय को वानप्रस्थ-संस्कृति की उपयोगिता समझा सकें तो वह निस्सन्देह इस संबन्ध में अपना कर्त्तव्य पूरा करेगा।

भारतीय समाज तथा विधि ने नारी का सदा संरक्षण किया है। पर उसका उत्तरदायित्व उसके पति अथवा पतिकुल पर ही डाला है। पर आधुनिक समाज किलष्टतर होता गया है। और पश्चिमीय साम्यवादी चिन्तन ने सम्मिलित परिवार नष्ट कर दिये हैं। तेजी की अर्थ-व्यवस्था ने मानवीय-मूल्य धराशायी कर दिये हैं। अतएव निराश्रित महिला या, विधवा की दारुण दुःखकथा कल्पनातीत है। वह कहां जावे, कहां रहे, कैसे अपने सतीत्व और पवित्रता की रक्षा करे? सरकार ने बाजार से उठाकर पवित्र जीवन की ओर ले जाने के लिये वेश्याओं के लिये नारी-निकेतन बनाये हैं। यह स्तुत्य कार्य है; पर अन्य असहाय या दुष्काल द्वारा वैधव्य से ग्रसित नारियां कहां जावें? पुनर्विवाह सबका न तो हो सकता है, न सब करना ही चाहती हैं, और न सब कर ही सकती हैं। आयु का भी प्रश्न होता है। मध्य-युगीन अन्धकारमय भारत में उन्हें सती कह देते थे। सती प्रथा कानूनन बन्द कर दी गई। पर जीवनयापन का विकल्प निरूपित नहीं हुआ। अतः आवश्यक है कि वानप्रस्थाश्रमों का जाल देश में बिछाया जावे और प्रत्येक आश्रम में पृथक् महिला-विभाग हो।

हर एक सम्प्रदाय में मनुष्य प्रभुमिलन, स्वर्ग, या मुक्ति का महत्वाकांक्षी है। वृद्धावस्था में यह महत्त्वाकांक्षा अति बलवती हो जाती है। उसके भोग भोगने की शक्ति संतुष्ट हो चुकी होती है और भूला-बिसरा भगवान उसे याद आता है। अतः आवश्यकता है कि इन आश्रमों में भगवद् भजन और योग-प्रक्रिया का प्रबन्ध हो, आध्यात्मिक वातावरण प्रस्तुत किया जाता हो और इनमें वे लोग रह सकें जिनके अपने पेन्शन आदि फण्ड हों और वे लोग भी रह सकें जो निराधार हों पर जिनके व्यय का उत्तरदायित्व समाज और सरकार का हो।

हरिद्वार में पुण्य-तोया-जाह्नवी के तट पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आकर पाखण्ड-खंडिनी पताका फहराई थी और धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया था। यह आर्य समाजियों का सारनाथ है। यहीं महात्मा मुंशीराम ने ब्रह्मचर्याश्रम की वैदिक मर्यादा के निर्वाहार्थ गुरुकुल आन्दोलन का श्रीगणेश किया था और गंगा के इस ओर यहीं हमारे पूज्य महात्मा नारायण स्वामी ने वनीय-संस्कृति के परीक्षणार्थ विरक्त आश्रम को स्थापित किया था।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय

आर्य समाज की विजय दशमी

हमारे शास्त्रों ने लिखा है—

'सत्यमेव जयते नानृतम् ।'

अर्थात्—सत्य की ही निजय होती है झूठ की नहीं ।

यही विजयदशमी का सन्देश है। एक ओर रावण का युद्ध भी तो सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय, शिष्टता और दुराचार के मध्य संघर्ष था। अन्ततः मत्य, न्याय और शिष्टता की विजय हुई। उसी खुशी में हम हजारों वर्षों से विजयदशमी मनाते चले आ रहे हैं। आज के दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी और सदा के लिए यह सिद्धान्त स्थापित कर दिया था कि अन्ततः विजय सत्य की होती है।

हर वर्ष आज के दिन हम इस युद्ध को याद करते हैं और इसी के साथ विजयदशमी के इस सन्देश को भी कि अन्ततः विजय सत्य की ही होती है।

आर्य समाज के इतिहास में भी कई लड़ाइयां लड़ी गई हैं। किन्तु पहली बार कुछ लोगों ने जो अपने आप को आर्य समाजी कहते हैं एक ऐसी लड़ाई शुरू की जिसमें उन्होने नैतिकता और शिष्टता को भी तिलांजलि दे दी। यह कोई सिद्धान्त की लड़ाई नहीं थी, केवल व्यक्ति की लड़ाई थी। कुछ लोगो के हाथ से कुछ पद छिन गए। उन्होंने बदला लेने के लिए सारे आर्य समाज को ही गृह युद्ध की आग में फ़ैंक दिया और अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए उन्होंने नकसली हथियारों का प्रयोग भी शुरू कर दिया।

गुण्डों का सहारा लेकर उन्हें शराब पिला कर सनके हाथों में लाठियां, भाले देकर आर्य समाज की संस्थाओं पर कब्जा करना शुरू कर दिया, इस अभियान का सबसे भयानक पक्ष यह था कि इसका नेतृत्व करने वाले कुछ भंगवें वस्त्रधारी संन्यासी थे। भंगवें रंग के लिए सम्मान और आदर रहा है, इसलिये कुछ लोग आंखें बन्द करके उनके पीछें चल पड़े।

यह लड़ाई अन्ततः अदालतों में जा पहुंची। आर्य समाज के इतिहास में इससे पूर्व कभी इतने मुकद्मे अदालतों में न लड़े गये थे। आर्य समाज की सारी ताकत इन मुकद्मों में लगा दी गई, कई बार तो ऐसा मालूम होता था कि आर्य समाज की सारी विरोधी शक्तियां इन केशधारी तथा कथित साधुओं के पीछे इक्ट्ठी हो गई है। कुछ राजनयिक नेताओं ने इनकी पीठ ठोंकनी शुरू की। जो लोग आर्य समाज को एक शक्तिशाली और संगठित सस्था के रूप में न देख सकते थे उन्होंने आर्य समाज की पंक्तियों में विघटन पैदा करने के लिए इन कथित साधुओं की सहायता करनी शुरू कर दी।

कुछ समाचार पत्रों ने समझा कि इसी बहाने अपनी दुकान चमका ली जाए तो क्या आपत्ति है। कुछ समय के लिए उन्होंने अपना ध्यान साईं बाबा ब्रह्म कुमारियों और आचार्य रजनीश जैसे भगवानों और देवी-देवताओं से हटाकर इन साधुओं की ओर लगा दिया। उन्होंने भी इनकी पीठ ठोंकनी शुरू कर दी। इनकी झूठी और निराधार खबरों का प्रचार शुरू कर दिया। झूठ समाचार सत्य और न्याय की धज्जियां उड़ा कर इन लोगों का सरक्षण शुरू कर दिया जो आर्य समाज की जड़ों पर कुठाराघात कर रहे थे।

ऐसे समय पर आर्य जनता का संरक्षण और आशीर्वाद उन लोगों के साथ जो इस तूफान में भी आर्य समाज का झण्डा उठाए हुये थे और जिन्होंने शपथ रखी थी कि चाहे इसका कितना मूल्य चुकाना पड़े इस ध्वज को झुकने न देंगे उन्होंने नहीं झुकने दिया। इससे पूर्व जालन्धर के एक विद्वान् सब-जज श्री बलदेवसिंह ने अपने ऐतिहासिक फैसला में इन विघटनकारी तत्वों का अन्त कर दिया था। किन्तु जालन्धर के सीनियर सत्र-जज ने कुछ देर के लिए मियाद दे दीं थी। किन्तु जो फैस ला जालन्धर के विद्वान् अतिरिक्त जिला जज ने दिवा था उसने विघटनकारी। तत्वों का सदा के लिए सफाया कर दिया है।

मेरी तो परमात्मा से प्रार्थना है कि वह अब भी उन्हें सद्बुद्धि दे कि यह सद्मार्ग पर आ जायें। जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम आज भी इन्हें गले लगाने को तैयार हैं। जो कुछ हो चुका सो हो चुका, आर्य समाज के लिए अपने सारे मतभेद भुलाकर और यदि कोई मतभेद हैं तो उन्हें परस्पर बातचीत से तय करके अब हमें निर्माण की ओर बढ़ना चाहिए ' मुकद्देबाजी हमारी समस्या का कोई समाधान नहीं है।

आज का f
युद्ध में राम कौन
लिए तो यही काप
लड़ाई में सारी आ



देश के आ
निगाहें इस धर्म
यह जानने के इच्छ
जुबान पर एक ही

इस लड़ाई
उनका हार्दिक धन
विजय दशमी म
कहना चाहता हूं
करो। कोई संस्थ
संगठन और
हो।

किन्तु जो भी
इसका उससे बड़ा शत्रु दूसरा कोई नहीं हो सकता।

आओ! हम सब मिलकर विजय दशमी के इस पवित्र पर्व पर यह संकल्प करें कि कुछ भी हो जाए अपने संगठन को किसी तरह कमजोर नहीं होने देंगे। जालन्धर के विद्वान् जज ने एक बार फिर हमें सन्मार्ग पर आने का अवसर दिया है। आओ हम सब मिलकर इसका लाभ उठाएं।

—वीरेन्द्र

बाढ़ पीड़ित, गोवंश रक्षा की ओर विशेष ध्यान दें

विगत दिनों दिल्ली तथा अन्य भारत के कई प्रान्तों में बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में सरकार एवं धनी लोग नाढ़ पीड़ित जनता की सेवा में तो लगे हैं किन्तु भूखे मर रहे गोवश की ओर सरकार एवं सहायता करने वालों का ध्यान अभी तक नहीं गया। उक्त शब्द उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा के बाढ़पीड़ित क्षेत्रों का दौरा करके लौटे अ० भा० गो-संरक्षण परिषद के अध्यक्ष पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाने एवं पत्रों में प्रकाशनार्थ दिये वक्तव्य में कहे। स्वामी जी ने विभिन्न सरकारों एव बाढ़ पीड़ित सेवी संस्थाओं से अनुरोध किया है कि वह भारताधार गोवंश रक्षा की ओर भी पूर्ण ध्यान दें। स्वमी जी ने बाढ़ पीड़ित गोपालकों से अनुरोध किया कि वह अपनी आवश्यकताओं की सूचना परिषद के कार्यालय सनातन धर्म सभा मन्दिर, अशोक नगर, नई दिल्ली-१८ के पते पर अविलम्ब भेजें।

स्वामी जी ने दानी सज्जनों से अनुरोध किया है कि वह इस पवित्र कार्य में परिषद को हर प्रकार का सहयोग दें ताकि आवश्यकता के स्थानों पर गोवंश के लिए चारा, दाना भिजवाया जाए तथा गोवंश की उन्नति रक्षा करके भारत के मूल धन को बचाया जा सके।

राधेश्याम
अ० भा० गो-संरक्षण परिषद्

वानप्रस्थाश्रम

आज के परिवेश में

—डा० रामेश्वर दयाल गुप्त एम० ए०, पी० एच० डी०

किंवदन्ती है कि जब घर में पौत्र (अपत्य का अपत्य) हो जाये तो पितामह को चाहिये कि वह वन की ओर चल पड़े अर्थात् वानप्रस्थी हो शेष जीवन व्यतीत करे। परन्तु अब न तो वन ही रहे और न वानप्रस्थी। उनसे शिक्षण लेने जाने वाले विद्यार्थी भी नहीं रहे, और न रहे उन आश्रमों में चातुर्मास व्यतीत करने वाले गृहस्थ। सारी परम्परा ही लुप्त हो गयी। पुत्रेषणा से निवृत होने पर भी वनस्थ आश्रमियों की नून-तैल-लकड़ी की आवश्यकतायें तो बनी ही रहती हैं। समाज की उपेक्षादृष्टि के कारण तथा राजकीय संरक्षण न होने से इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपक्रम करना ही होता है। लोकेषणा के लिए भी समाज चाहिए ही। फलतः वनस्थ संस्कृति समाप्त प्रायः हो गई है। इसलिये आज यह आवश्यक है कि हम सोचें कि वानप्रस्थ प्रणाली को समय के अनुकूल कैसे बनाया जाये।

कविवर कालिदास महाराज विक्रमादित्य के समकालीन थे। रघुवंश में रघुओं की परम्परा उद्भासित करते हुए वह लिखते हैं :—"रघुकुल के व्यक्ति बचपन विद्याभ्यास में, यौवन गृहस्थ भोगने में, बुढ़ापा मुनिवृत्ति वाले होकर व्यतीत करते थे तथा अन्त में आध्यात्मिक वातावरण में देह त्यागते थे। कितने उत्तम आदर्श हैं। पहले चौथाई जीवन में विद्याध्ययन, दूसरे में गृहस्थ और सन्तानोत्पत्ति, तीसरे में मुनिवृत्ति और चौथे में मोक्ष चिन्तन के साथ शरीरोत्सर्ग। हमारे महाकाव्यों में ऋषियों के आश्रमों का उल्लेख है। इन आश्रमों में ब्रह्मचारी शिष्य भी ऋषियों के पास रहकर ही विद्या प्राप्त करते थे। भारतीय जनता वहां ऋषियों के चरणों में बैठकर अपने जीवनों को सफल बनाया करती थी। स्पष्ट है कि वानप्रस्थी लोग अपने जीवन-अनुभवों को इन आश्रमों में बास करते हुए शिष्यभाव से आये हुए राजपुत्रों से लेकर सामान्य लोगों के बच्चों तक के मानस में निःशुल्क उंढेल देते थे। ये आश्रम हर प्रकार की प्रचुर सामग्री से भरपूर होते थे। इन आश्रमों का पुनरुद्धार करने के लिए हमें प्रयत्न करना चाहिये।

आज विद्यालयों में प्राध्यापक गृहस्थ हैं, अपनी भोग विलासता और महत्वाकांक्षाओं सहित—और उनका सम्पर्क विद्यार्थियों से कुछ घण्टों के लिए ही होता है। प्राध्यापक और विद्यार्थियों की संख्या का अनुपात भी एक और पचास का है। यही कारण है कि प्राध्यापक विद्यार्थियों पर अपने सदाचार का अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाते। यदि वानप्रस्थ व्यवस्था अनिवार्य बन जाय तो सोसाईटी को ऐसे निःशुल्क निस्पृह अध्यापक और प्रचारक प्रभूत संख्या में मिलें जिनके त्यागमय जीवन की छाप उनके सानिध्य में आने वालों पर अनायास ही पड़े।

यह नहीं कि सारे वानप्रस्थी शिक्षक ही बन जाते। कुछ उनमें अशक्त भी हो सकते हैं। परन्तु आजके भौतिकवादी चिन्तन में उनकी फिक्र कौन करे? नगरों के जिन एक-एक कमरों के आवासों में आज मजदूर, क्लर्क, और अध्यापक अपना जीवन काट देते हैं, उनमें वृद्धजनों की चारपाई का स्थान ही कहां है। हमारी परिवार प्रणाली को समाप्त करने के लिये साम्यवादोन्मुख समाजों और संस्कारों ने जो साधन प्रयोग किये हैं उनमें यह कबूतरखानों जैसे मकान भी हैं। वह दर्शन जीवित पितरों की पूजा अभ्यर्थना को एक अनावश्यक ढोंग करार देता है। क्योंकि वे अनुत्पादक हैं—धन और वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। इन वृद्धों की विचारधारा पुरानी और धर्म-निष्ठ है। वे देश की मर्यादा और संस्कारों एवं पर्वों से चिपके हुए हैं। साम्यवाद तो नई संस्कृति के निर्माण का डिमडिम पीटता है। उसे सब अध्यात्म-निष्णात-चिन्तन ढोंग लगते हैं। हा वृद्धजन! तुम अपने घर में ही अवांछनीय विदेशी हो गये। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पढ़ा-लिखा तुम्हारा पुत्र और पौत्र तुम्हारी हर प्रक्रिया की हंसी उड़ाता है, वह तो ८ बजे सोकर उठता है, 'शेव' करना ही उसका प्रातःका नित्यकर्म है, तदुपरान्त अंडे का 'आमलेट' उसका प्रिय प्रातराश है, किंवा सिनेमा या नग्न-नृत्य देखता है या फिल्मी गाने सुनता रहता है। उसकी बैठक में अर्धनग्न या निर्वसना सुन्दरी के फोटो टंगे हैं और वह अपने को 'माडर्न' कहकर अपने वृद्धों का उपहास करता है। यदि इन वृद्धों की इस सांस्कृतिक अवरोध से रक्षा करनी है तो इनको वानप्रस्थ आश्रमों में लाकर रखना ही होगा।

फिर वे वृद्ध-जन भी हैं जिन्हें विधाता ने सन्तान से और विशेषकर पुत्ररत्न से वंचित रखा है। जब तक युग्म जीवित है, ये चकवा-चकवी एक दूसरे का दुःख निवारण करते रहते हैं, पर युग्म टूटने पर इन विधुर या विधवा के आंसू कौन पोंछे, दुख-दर्द और बीमारी में सेवा-सुश्रूषा कौन करे, कौन करे इनकी मरणोपरान्त अंत्येष्टि ताकि उनका शव ठेला-गाड़ी में रखा जाकर किराये के मजदूरों द्वारा किये जाने वाले जल-प्रवाह या मिट्टी के तेल द्वारा अग्निदाह से बचाया जा सके। और फिर कौन करे उनका चौथा, त्रयोदशा अथवा वर्षी। इस प्रकार की असीम जन-संख्या की परवाह करने की व्यवस्था, इन आश्रमों में ही हो सकती है। अय कृतघ्न समाज! जिन वृद्धों ने भरी जवानी तेरे लिये उत्पादन में और तेरी विविध प्रकार की सेवा में आहूत कर दी, वार्धक्य में उनके अशक्त होने पर तू उनकी सेवा सुश्रूषा का प्रबन्ध भी न करे। ऐसा कर तू ने अपने को न केवल उन वृद्धों के पुनीत आशीर्वाद से वंचित किया है वरन कृतघ्नता का महापाप भी किया है। इस दुखास्था के निराकरणार्थ वानप्रस्थ आश्रमों की संस्कृति स्थापित करनी ही पड़ेगी।

यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि भारतीय समाज और सरकार ने यह कार्य अब तक अपने हाथ में नहीं लिया। विदेश से आई मदर ट्रैस्टा ने इन दशाब्दियों में यह कार्य हाथ में लिया और कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में वृद्ध-जन-आश्रम खोले हैं, जहाँ वृद्धों को स्थान मिले हैं और वे अपने जीवन के अंतिम दिन राहत से बिता रहे हैं। परन्तु ईसाई मिशनरियों का औषधि-वितरण से लेकर वृद्धजनाश्रय निर्माण तक के सारे कार्य अपने प्रभु ईसा की शरण में मानवता को लाने का उपक्रम मात्र होते हैं। यह छिपी हुई अन्त-र्भावना उनके सब कार्यों में से परसेवा के महानतम पुण्य को नष्ट कर देती है। दुख तो इस बात का है कि आश्रम-चतुष्टय की योजना के अन्तर्गत प्रस्तुत ऋषियों और स्मृतियों का यह निदान हमारे स्वतन्त्र भारत की व्यवस्थाओं में स्थान नहीं पा सका। लगभग दो करोड़ रुपया भारत सरकार मदर ट्रैस्टा को दे चुकी है। पर वानप्रस्थ आश्रमों की ओर ध्यान उनका नहीं गया है। यदि सिविल कानून के अन्तर्गत सरकार निःसन्तान लोगों की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो सकती है तो उनके भोजनाच्छादन का उत्तर-दायित्व क्यों नहीं लेती? मेरा विचार है कि भारतीय प्रजातन्त्र बुद्धिवादी (Rationalistic) है और यदि हम इसके स्तम्भों और जनसमुदाय को वानप्रस्थ-संस्कृति की उपयोगिता समझा सकें तो वह निस्सन्देह इस संबन्ध में अपना कर्त्तव्य पूरा करेगा।

भारतीय समाज तथा विधि ने नारी का सदा संरक्षण किया है। पर उसका उत्तरदायित्व उसके पति अथवा पतिकुल पर ही डाला है। पर आधु-निक समाज क्लिष्टतर होता गया है। और पश्चिमीय साम्यवादी चिन्तन ने सम्मिलित परिवार नष्ट कर दिये हैं। तेजी की अर्थ-व्यवस्था ने मानवीय-मूल्य धराशायी कर दिये हैं। अतएव निराश्रित महिला या, विधवा की दारुण दुःखकथा कल्पनातीत है। वह कहां जावे, कहां रहे, कैसे अपने सतीत्व और पवित्रता की रक्षा करे? सरकार ने बाजार से उठाकर पवित्र जीवन की ओर ले जाने के लिये वेश्याओं के लिये नारी-निकेतन बनाये हैं। यह स्तुत्य कार्य है; पर अन्य असहाय या दुष्काल द्वारा वैधव्य से ग्रसित नारियां कहां जावें? पुनर्विवाह सबका न तो हो सकता है, न सब करना ही चाहती हैं, और न सब कर ही सकती हैं। आयु का भी प्रश्न होता है। मध्य-युगीन अन्धकारमय भारत में उन्हें सती कह देते थे। सती प्रथा कानूनन बन्द कर दी गई। पर जीवनयापन का विकल्प निरूपित नहीं हुआ। अतः आवश्यक है कि वानप्रस्थाश्रमों का जाल देश में बिछाया जावे और प्रत्येक आश्रम में पृथक् महिला-विभाग हो।

हर एक सम्प्रदाय में मनुष्य प्रभुमिलन, स्वर्ग, या मुक्ति का महत्वाकांक्षी है। वृद्धावस्था में यह महत्वाकांक्षा अति बलवती हो जाती है। उसके भोग भोगने की शक्ति संतुष्ट हो चुकी होती है और भूला-बिसरा भगवान उसे याद आता है। अतः आवश्यकता है कि इन आश्रमों में भगवद् भजन और योग-प्रक्रिया का प्रबन्ध हो, आध्यात्मिक वातावरण प्रस्तुत किया जाता हो और इनमें वे लोग रह सकें जिनके अपने पेन्शन आदि फण्ड हों और वे लोग भी रह सकें जो निराधार हों पर जिनके व्यय का उत्तरदायित्व समाज और सरकार का हो।

हरिद्वार में पुण्य-तोया-जाह्नवी के तट पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आकर पाखण्ड-खंडिनी पताका फहराई थी और धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया था। यह आर्य समाजियों का सारनाथ है। यहीं महात्मा मुंशीराम ने ब्रह्म-चर्याश्रम की वैदिक मर्यादा के निर्वाहार्थ गुरुकुल आन्दोलन का श्रीगणेश किया था और गंगा के इस ओर यहीं हमारे पूज्य महात्मा नारायण स्वामी ने वनीय-संस्कृति के परीक्षणार्थ विरक्त आश्रम को स्थापित किया था।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(शेष पृष्ठ २ का शेष)

समाचार पत्र के समालोचक ने "उपासना" नामक पुस्तक की समालोचना की है। स्मरण रहे 'उपासना' नामक पुस्तक में संध्या और हवन मन्त्रों की व्याख्या की गई है। समालोचना में लिखा गया है कि लेखक ने बड़ी योग्यता से सफलतापूर्वक यह समझाया है कि वास्तविक हिन्दु धर्म वह ही है जो कि ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में बतलाया है। पुराणों में लिखी हुई अन्ध विश्वास की बातें हिन्दु धर्म नहीं हो सकतीं। वस्तुतः सच्चा धर्म तो वेद का ही धर्म है।

अभी अभी आचार्य नरेन्द्र भूषण ने मलयालम भाषा में उपनिषदों का गुटका प्रकाशित किया है। सारे केरल में यह गुटका बहुत लोकप्रिय हो रहा है। कुछ दिन हुए केरल की पन्द्रह साहित्यिक संस्थाओं ने मिल कर आचार्य नरेन्द्र भूषण का उन द्वारा की गई साहित्य सेवा के लिए अभिनन्दन भी किया था। इससे वस्तुतः केरल में आर्य समाज का ही अभिनन्दन हुआ है।

आर्य भाईयो यह नवयुवक आर्य विद्वान् कितना काम कर रहा है—हर वर्ष सैकड़ों पृष्ठों की पुस्तकें लिख कर छाप देता है चोटी के आर्य लेखकों के लेखों का अनुवाद ही नहीं करता अपितु छपवा कर प्रकाशित भी कर देता है, प्रचार भी करता है, संगठन का कार्य भी करता है विरोधियों को उत्तर भी देता है. ऋषि के ग्रन्थ भी छाप रहा है, वेद, दर्शन, उपनिषद् भी प्रकाशित कर रहा है। ये सब कुछ शृंखलाबद्ध पुस्तकाकार में छप कर प्रकाशित हो रहा है। खेद है कि इस नवयुवक का स्वास्थ्य ठीक नहीं। वैद्यों ने परामर्श दिया है कि इसे अधिक कार्य नहीं करना चाहिए। औषध उपचार हो रहा है, खर्च उठ रहा है। खतरा है कि कहीं इसे अधरंग न हो जाये। अतः मैं सबसे अपील करूंगा कि दिल खोल कर उसकी धन से सहायता करें। ताकि उसकी दिमागी परेशानी दूर हो। वह रात दिन दीवाना वार यही माँग करता है कि मेरी भाषा में महर्षि के सब ग्रन्थ उपलब्ध होने चाहियें, वेद भी मलमालम में छप जाने चाहिय। बाईबल और कुरान मलयालम में मिलते हैं तो फिर वेद क्यों अनुपलब्ध रहें। उसे दिन रात चैन नहीं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि वह सत्यार्थ प्रकाश को मलयालम में प्रकाशित करवाने के बाद अपना लिखने का काम धीमा कर दे, ताकि उसका स्वास्थ्य कुछ सुधर सके। फिर वह सारा समय संगठन और प्रचार कार्य में लगाये। प्रभु करे कि आचार्य नरेन्द्र भूषण का स्वास्थ्य बना रहे और सर्वशक्तिमान प्रभु उन्हें कम अज कम ५० वर्ष और सुधार और सेवा करने का अवसर दें। उनके कार्य से देश की एकता को बल मिलेगा। धर्म पर बलिदान होने वाले लेखराम, श्रद्धानन्द का झण्डा केरल के गांव गाँव में फहरायेगा। लोहा गरम है चोट लगाओ। कदम बढ़ रहे हैं। इन बढ़ते हुए कदमों को चूम लो।

केरल के मन्दिरों के बोर्ड ने एक शानदार स्मारिका छपवाई है [illegible] इसमें केरल के चोटी के ५० विद्वानों के लेख हैं। उनमें एक लेख त्यागी, तपस्वी, आचार्य नरेन्द्र भूषण का है। शीर्षक है "सामवेद क्या है ?"। आचार्य नरेन्द्र भूषण से पहले केरल के साहित्य में वेद और दयानन्द कहां थे ? संस्कृत भाषा का रक्षक, उत्तर दक्षिण की एकता का पोषक, वैदिक धर्म प्रचार और शुद्धि के काम के लिए मर मिटने वाला "जिन्दा शहीद" नरेन्द्र भूषण जैसा रत्न आर्य समाज को सौभाग्य से मिला है। उसकी कमियों की तरफ मत देखो, अपितु सहायता दे उन्हें पूरा करो। उसकी तड़प, त्याग और योग्यता को समझो। श्रद्धानन्द का सपना साकार करना है तो मेरी पुकार सुनो, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। ओम् शम्।

(उर्दू "वैदिक धर्म" साप्ताहिक जालन्धर के सौजन्य से)

(पृष्ठ ४ का शेष)

टांग टूटी हुई तो क्या कमर है पतली उनकी।
टांग वह टांग कि जिस टांग ने दिल टांग दिया है॥

यह शेर सुनना था कि मास्टर साहिब आपे से बाहिर हो गए, चेहरा उनका तम-तमा उठा, बदन कापने लगा, मुंह में लड़खड़ाती हुई जबान से बोले "बेशरमों ! गुस्ताखो ! ओ बेइमानों ! लातों के भूत तुम बातों से नहीं मानते। मैं अभी तुम्हें सीधा किये देता हूं।" यह कहते हुए वह कमरे से उठ भागे और अनायास आरम्भ हुई विनोद सभा एकाएक इस "वाक-आउट" से ठप्प हो गई।

(पृष्ठ ५ का शेष)

भारतीयों की क्रान्ति साधु, सन्तों और महात्माओं द्वारा ही उद्भूत और प्रस्फुटित होती रही है। आइये इन संस्थाओं को वृहद रूप दें। देश-विदेश में फैली आर्य समाजों तथा प्रतिनिधि सभाओं से यह अपेक्षित है कि विद्यालय खोलने के बाद अब वे जिले में एक एक वानप्रस्थ आश्रम बनावें जहाँ से न केवल निशुल्क शिक्षा और प्रचार की व्यवस्था हो, वरन् जहां व्यवसाय-निवृत्त ससन्तान और निसन्तान दोनों प्रकार के वृद्ध-जन स्व-व्यय या समाज और सरकार के व्यय पर अपना शेष जीवन प्रकृति माता की गोद में सुगमता से और आध्यात्मिक वातावरण में बिता सकें।

(वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की स्वर्ण-जयन्ती पर हुए वानप्रस्थ सम्मेलन में दिये गये उद्घाटन भाषण से उद्धृत)



साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र

तार : आर्य प्रतिनिधि कार्यालय--आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन कृष्णपुरा चौक जालन्धर दूरभाष–७४२५०

षिक शुल्क १२) एक प्रति २५ पैसे, वर्ष ११, अंक १२, १९ मार्च १९७८, तदनुसार ६ चैत्र सम्वत् २०३४ दयानन्दाब्द १५३

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधियों द्वारा मांडलिक योजना स्वीकार

पंजाब के छ: मण्डल होंगे और प्रत्येक मंडल में एक उपसमिति होगी

हरिजन बस्तियों में और पिछड़े गांवों में वेद प्रचार किया जावे–आज़ाद

मांडलिक योजना से जहां वेद प्रचार में सक्रियता आएगी वहां पर आम लोगों से मिलने का अवसर मिलेगा–जावेद

—वीरेन्द्र भारती द्वारा—

गोष्ठी की झलकियां

—सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र के अस्वस्थ हो जाने और उनके नया नंगल न पहुंचने पर प्रतिनिधि उनकी अनुपस्थिति अनुभव करते रहे।

—जब पहली गोष्ठी प्रारम्भ हुई तो बादल छंटने शुरू हो गए और प्रतिनिधियों के आने की गति में भी तीव्रता आई।

—जब प्रतिनिधियों को बोलने का समय दिया जाता था तो वह समय हो जाने पर भी बोलते रहते थे, जिससे अध्यक्ष श्री पृथ्वी सिंह आजाद को बार-२ समय की पाबन्दी पर बल देना पड़ता था।

—श्री कृष्ण लाल आर्य ने अपने स्वागती भाषण में जहां नया नंगल समाज का जिक्र किया वहां पर वह नंगल टाउनशिप की आर्य समाज का इतिहास भी बताते रहे।

—नंगल की दोनों समाजों के जहां पुरुष कार्यकर्त्ता सक्रिय थे वहां महिलाएं भी काफी संख्या में काम करती दिखाई देती रहीं।

नया नंगल में आर्य प्रतिनिधि सभा ब के प्रतिनिधियों का विशेष अधि- । ११-१२ मार्च को सम्पन्न हो । ११ मार्च को प्रातः ८ बजे आर्य ज की सुन्दरतम यज्ञशाला में यज्ञ गया तत्पश्चात् आर्य समाज के वृद्ध नेता चौ० रूपचन्द एडवोकट गढ़, ने 'ओ३म' ध्वजा फहराई । रोहण के पश्चात् भाषण देते हुए रूपचन्द जी ने कहा—ध्वज किसी जाति, धर्म, समाज की सर्वप्रथम नी होती है और यह ओ३म ध्वजा में महर्षि दयानन्द की महान् अनु- से लहराने को मिली है। इस को लहराते हुए केवल प्रथा को नहीं करना है बल्कि जो आदर्श समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द प्रतिपादित किये गए थे, उन्हें कार्य ना है। ऋषि दयानन्द ने इसी को लेकर संसार का दृष्टिकोण ल दिया था और उस समय की कुप्रथाओं को समाज से दूर करने ड़ा उठाया था और इतने विरोधी ए भी वह कभी विचलित न हुए आज भी इस भारत में हमारी सभ्यता को नष्ट-भ्रष्ट करने की चली जा रही है और उड़ीसा, एवं बिहार में ईसाई स्थान की हेतु ईसाई मिशनरियां सक्रिय ब भारत में धर्म परिवर्तन का जी से बढ़ रहा हो तो आर्य वीर रदायित्व और भी बढ़ जाता है। में सर्वत्र त्याग की भावना को ख आर्य समाज की सेवा करनी होगी और अपनी सभ्यता संस्कृति की रक्षा के लिये सक्रिय कार्य करना होगा। जब तक बुराइयां इस देश में हैं आर्य समाजियों को उस समय तक चैन नहीं बैठना चाहिए क्योंकि सभी बुराइयों की अन्त की जुम्मेवारी इन पर आती है। ध्वजारोहण से हमें यह शिक्षा लेनी है कि सिर भले ही चला जाए, यह ध्वजा कभी नीचे न होगी। चौ० रूपचन्द जी के भाषण के पश्चात् सभा भजनोपदेशक श्री श्याम सिंह हितकर ने ध्वज पर गीत गया।

ध्वजारोहण के पश्चात् हाल में सभी प्रतिनिधि चले गए और चौ० रूपचन्द जी की अध्यक्षता में पहली गोष्ठी प्रारम्भ हुई। सबसे प्रथम श्री कृष्ण लाल जी आर्य ने स्वागत भाषण दिया और कहा है कि आज हम बहुत खुश हैं क्योंकि सभा ने अपना अधिवेशन करने के लिये नया नंगल का स्थान चुना और हमें सेवा करने का अवसर दिया। इसलिये मैं दोनों आर्य समाजों की ओर से सभा का आभारी हूं। तत्पश्चात् सभा महा-मन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद ने कहा कि देश की जागृति और नवनिर्माण में पिछले सौ वर्षों में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ रहा है। जो काम आर्य समाज ने स्वतन्त्रता से पहला किया वह वर्तमान भारत में नहीं कर सके। पंजाब ने आर्यसमाज के उत्थान के लिए बहुत नेता और कार्य-कर्ता दिए जिन्होंने देश की आजादी, आर्य समाज की उन्नति में बहुत काम किया परन्तु प्रत्येक आर्य समाजी वर्तमान परिस्थियों से निराश है और उसे आशा की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही आज पंजाब में आर्यसमाज के कार्य में वह सक्रियता नहीं जो होनी चाहिए उसी सक्रियता को लाने के लिए सभा ने यह अधिवेशन रखा है ताकि वेद प्रचार हिन्दी प्रचार तथा अन्य कार्यों में सक्रियता लाई जा सके। अपने भाषण के पश्चात श्री जावेद ने प्रतिनिधियों के आये हुए सुझावों को पढ़कर सुनाया–कई प्रतिनिधियों का विचार था कि जिलास्तर पर संगठन मजबूत होने चाहिए, युवक समाजों की स्थापना होनी चाहिए और प्रत्येक आर्यसमाज प्रति रात्री को खुलना चाहिए।

सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य ने अपने भाषण में वेद प्रचार विभाग के कार्य की चर्चा करते हुए कहाकि आज हम में अनुराग की भावना बढ़ गई है इसलिए आर्यसमाज में मानव निर्माण योजना सफल नहीं हो पाई यह योजना तभी सफल होगी जब हम ऋषि द्वारा प्रतिपादित ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे और पर्वों को ठीक ढंग से मनायेंगे आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव होने चाहिए, साप्ताहिक वेद कथाओं का आयोजन होना चाहिए और आर्यसमाजों को धर्म मन्दिर ही बनाया जाना चाहिए जहां यज्ञ, धर्म चर्चा के अतिरिक्त कुछ न होना चाहिए।

सभा के महोपदेशक श्री पं. निरञ्जन देव इतिहास केसरी ने कहाकि आज ग्रामों में वेद प्रचार की कमी है और शहरों की समाजों में वह सक्रियता नहीं जो होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ [illegible])

सदाचार और धर्म

(ले० स्वामी दयानन्द विदेह वेद संस्थान, सी-२२,
राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७)

सत्-सही, सुष्ठु, ठीक आचार- व्यवहार सदाचार कहाता है। सदाचार और धर्म दोनों अलग शब्द हैं, पर दोनों में विशेष अन्तर नहीं है। जहां सदाचार वहां धर्म। या यों कहिये जहां सदाचार होगा वहां धर्म है।

अब प्रश्न उठता है कि सदाचार के सूत्र क्या हैं और कहां से प्रारम्भ होता है इसके लिए अष्टांग-योग के दो अंगों पर विचार करना श्रेयस्कर है। जिसमें सदाचार-सूत्र (Formula) स्पष्ट हो जाता है। अष्टांग योग के प्रथम दो अंग हैं १) यम और २) नियम, इन दोनों को समझ लेने से सदाचार और धर्म क्या है बात साफ हो जाती है कि मनुष्य को क्या अपनानी चाहिए जिससे उसका जीवन सदाचारमय या धर्ममय हो। १) यम :—के पांच सूत्र हैं—(क) अहिंसा (ख) सत्य (ग) अस्तेय (घ) ब्रह्मचर्य और (ड.) अपरिग्रह।

अब इन पांचों पर विचारिये।

(क) अहिंसा :—किसी को मनसा वाचाकर्मणा न सताना अहिंसा है। परन्तु समाज, राष्ट्रहित के न्यायपूर्वक किसी को दण्ड देना भी अहिंसा है। दूसरी ओर थोड़ा और व्यावहारिक पक्ष भी लें। यदि व्यापारी परन्तु मुनाफा अधिक से अधिक कमाने की चेष्टा में मिलावटादि कुकर्म करते हैं तो आप समाज-राष्ट्र नागरिकों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं, यह हिंसा है। कई ऐसे हैं जो "अहिंसा परमो धर्मः" दुकानों पर लगा रखें, पर दिन भर उस सूत्र के विरुद्ध कार्य करते हैं। यह अहिंसा नहीं, हिंसा है। सदाचार नहीं, दुराचार है। धर्म नहीं, अधर्म है।

(ख) सत्य :—सदाचारी या योगी कभी असत्य भाषण नहीं करता। उसके कर्म सत्यपूर्ण होते हैं। आज तो राजनैतिक क्षेत्रों में असत्य का बाजार गर्म है। जब राजनीति में झूठ आ जाता, सारी झूठ को ही सत्य माना जाता है। सदाचारी सत्य के बल पर आगे बढ़ता है वैद सूक्ति आई है :—(सत्येन उर्ध्वस्तपति) सत्य के द्वारा मानव ऊंचा उठता है। सत्य की विजय अन्तिम क्षण अवश्यमेव होती है। अतः व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व सत्य की प्रतिष्ठा होना अनिवार्य है। यदि आप कहते हैं अमुक समय यह कार्य करूंगा या किसी व्यक्ति से मिलूंगा। अवश्य इसका पालन अन्यथा सदाचार के सोपान से आप गिर ज एंगे। बच्चों से व्यापार या किसी स्थान पर कभी असत्य भाषण न करें। ध्यान रखिये ! एक बार झूठ बोलने पर उसे ठीक जताने के लिये मनुष्य प्रायः दसियों झूठ और बोलने लगता है।

अस्तेय :—स्तेय कहते हैं चोरी करने को, अस्तेय उसका उसका उल्टा अर्थ रखता है। यानी चोरी नहीं करनी। आपकी आठ घण्टे की डयूटी है पर दो घण्टे गप-शप में खराब कर दी तो यह कार्य से आपने चोरी की सबसे कठिन साधना अस्तेय की है। किसी की सुन्दरता और वैभव को देख कर विकार को प्राप्त होना अस्तेय है। चोरी-छिपे जितने कार्य हैं सभी स्तेय के अन्तर्गत आ जाते हैं। ढोंग और पाखण्ड से किसी को ठगना भी भयंकर चोरी है। कर (Tax) की पूरी अदायगी न करना भी चोरी है। अतः सदाचार का रक्षक अस्तेय की सिद्धि प्राप्त करता है इसके बिगड़ने से सारी स्थिति धूल में मिल जाती है।

ब्रह्मचर्य :—ब्रह्म कहते हैं—आत्मा परमात्मा ज्ञान-विज्ञान को। इसमें जो विचरण करने वाले को ब्रह्मचारी कहते हैं। शरीर के रसों और धातुओं की वृद्धि करने वाले को भी ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य ब्रह्माण्ड को कंपाने-हिलाने वाला होता है। ब्रह्मचारी ,निर्भीक तथा परम पराक्रमी होता है। गृहस्थ में भी ब्रह्मचर्य की साधना है दाम्पत्य शुचिता (Sexsual Pureity) जो दम्पत्ति अधिक काम सक्त रहती हैं, उनकी संतान लम्पट-विषयी होकर पुरुषार्थ-हीन हो जाती है। अतः संयम के द्वारा ब्रह्मचारी बन कर महान् करतल दिखलाता है। ब्रह्मचर्य-साधना के लिए तीन उपाय हैं—शुद्ध चिन्तन, शुद्ध दृष्टि और शुद्ध आहार। सुनना, देखना, सबके अन्दर पवित्रता होना ब्रह्मचर्य के अंग हैं। परमात्मा पूर्ण ब्रह्मचारी है। अतः उसके भक्त को भी पूर्ण ब्रह्मचारी होना चाहिए।

अपरिग्रह :—परिग्रह का अर्थ है जमा करना, संग्रह करना। अपरिग्रह लेने का निषेध नहीं बल्कि संग्रह का निषेध करना है॥ संग्रह किया हुआ पुनः समाज राष्ट्र के हित के लिये लुटा देना अपरिग्रह है। उसमें अनाशक्ति की भावना है जो भी है पुरुषार्थ का है इस विचार से पुरुषार्थ और स्वार्थ करना चाहिये। परिवार में दो जोड़े वस्त्र से सुविधा पूर्वक कार्य हो जाता है तो दस कपड़े एक व्यक्ति के लिये होना सदा[चार] के विरुद्ध है। आवश्यकता से अ[धिक] वस्तु न रखना ही अपरिग्रह है।
नियम के सूत्रों पर ध्यान दें :— [(क)] शौच (ख) संतोष (ग) तप (घ) स्वा[ध्याय] और (ड.) ईश्वर प्रणिधान।

(क) शौच– अन्दर बाहर की प[वित्रता] का नाम शौच। शुद्धता के लिये [यह] श्लोक प्रसिद्ध है– अग्निर्गात्राणि शु[ध्यन्ति] मनः सत्येन शुध्यति। विद्या तपो[भ्यां] (ख) भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्य[ति] अर्थात् मन सत्य से शरीर जल से और तप से आत्मा और बुद्धि ज्ञा[न-वि]वेक से शुद्ध होती है। सत्य कथा, और सत्संग पवित्रता के साधन हैं पिता परमात्मा परम पवित्र है अ[तः यो]गी सदाचारी को भी सर्वत्र पवि[त्रता का] ध्यान रखना चाहिये। वस्त्र, भो[जन,] व्यापार और संस्था सब जगह [पवित्रता] की स्थापना करना सदाचार को [बढ़ाना] है। शौच की सिद्धि से मनुष्य अ[...] हो जाता है।

(ग) तप किसी भी साध वा स[...] निरन्तर साधना का नाम तप है [...] की साध किये चले जाना जब [तक उस] की सिद्धि न हो जाए तप कह[लाता है।] संयम पूर्वक सतत चिंतन और [...] अभ्यास का कोई साधारण बात [नहीं] बहुत बड़ा तप है। वासनाओं [...] कर परोपकार तथा प्रभुभक्ति [...] द्वन्द्व सहनं तपः अर्थात सुख [दुःख, हानि] लाभ में सम रहना तप है। मनु[ष्य] के लिये आगे बढ़ते जाना तप [है।]
(ख) संतोष :— थोड़ी बहुत [सफ]लता, सम्पति या सिद्धि प्राप्त [हो] उसी से तृप हो जाना– संतोष यह कदापि नहीं है। संतोष का [अर्थ] है (सम) धैर्य संयम (+तोष) [प्र]सन्नता। बिना धैर्य की प्र[सन्नता] नहीं सकती। योगी सदाचारी [...] जय के लिये पुरुषार्थ करता [है] पुरुषार्थ पर ही भरोसा करना [...]
(घ) स्वाध्याय :— स्व+ अ[ध्याय] स्व के अधि अयन अथवा आत्[म-चिन्तन] का नाम स्वाध्याय है। आत्[म-ज्ञान] के बिना तप निरर्थक है। [...] सदुपयोग के लिये आत्म निर[ीक्षण] आवश्यक है।

(च) ईश्वर प्रणिधान :—ईश्[वर] संपूर्ण भावना से अर्पित हो ज[ाना] में भावात्मक समाहिति। [...] अर्पण हो जाता है उसके गुण [...]ष्ट हो जाते। ईशार्पण से [...] सिधि होती है। जो भी का[र्य ...] को अर्पित सहित यह सदाच[ार ...]

भूलों को याद दिलाने

शिखारिणी छन्द गणात्मक

(रचियता–कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़ शहर राज०)

१

न होते मानो आर्य जनमत विद्या न पढ़ते !
न गाते-पाते मन्त्र सुखद सु ऊंचे न चढ़ते !!
नहीं वेदों को देखकर अपने को समझते !
रहे थे भूले सत्य-पथ न कहीं जान सकते !!

२

बताया कोई भी न धरम सही जो अपने !
न जागे सोते थे विपुल गुजरे सो सपने !!
पढ़ाया वो वेदोक्त धरम व स्वामी वर बड़े !
बचाया जाता था महितल भरे मोह सर बड़े !!

३

न आते स्वामी जी इस अवनि पे कौन ? बचते !
पड़े थे पाने वो गुड्डम, अयाने रचते !!
चलाया जाली जाल सुमनुपता को न गहही !!
गये थे दूरी पे न निकट हमें कौन लहही !!

४

मिटाया कैसा ? था भ्रम विवशता में रह गये !
खुलासा स्वामी ने अवगत कराके कह गये !!
चले वेदों के मारग यदि चहें जो निज भला !
सही सन्देशा है समझ अपने भ्रम जला !!

books and education

Cake for collegians and crumbs for school children

by Bhaskara Venugopal

ONE hundred and ten universities, more than 400 [st]udents. Quite an impressive [a]chievement. There is a ma[r]ching phenomenal growth in the [n]umber of pranches of study. Today [ou]r universities are comparable to [a]ny seat of higher education in ad[va]nced countries. We have been [ex]porting experts, scientists and [ed]ucationists. Facilities for study [an]d research in our universities [ar]e fairly comfortable. Thanks to [th]e pioneering activity of the UGC

handle classes of 60 innocent littles. The kids are crammed mostly into small and stuffy rooms in rented dilapidated houses. There won't be much of a worry also if there is no room or roof. Classes might as well be conducted beneath a tree or in a corridor. Roads are playgrounds. Physical training classes are one or two-hour stints of howling and jumping in the school neighbourhood.

The teacher is lucky if he has

tables of lessons he is asked to prepare. Lessons are numerous and the load of learning is too much. There is also an unhealthy stress on writing work. The gilt edge of the picture is the regional language chauvinism.

Teachers at the primary and secondary levels are also at the mercy of the local politics. Transfers and retentions are effected by 'influence'. Favouritism which is based on caste, religion, group and mother-tongue, has a play both in appointments and promotions.

or any other system, whether it is vocationalisation at an earlier stage or a later stage, the lop-sided emphasis on the higher level is to be rectified. Man's attitude to life and character are formed in the early years of his life. Higher education may at the most polish some of these qualities. Therefore, utmost care should be exercised in the primary and secondary stages where the formative years are spent.

Once the issue whether education has to remain a concurrent



सदाचार और धर्म

(ले० स्वामी दयानन्द विदेह वेद संस्थान, सी-२२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७)

सत्-सही, सुष्ठु, ठीक आचार-व्यवहार सदाचार कहाता है। सदाचार और धर्म दोनों अलग शब्द हैं, पर दोनों में विशेष अन्तर नहीं है। जहां सदाचार वहां धर्म। या यों कहिये जहां सदाचार होगा वहां धर्म है।

अब प्रश्न उठता है कि सदाचार के सूत्र क्या हैं और कहां से प्रारम्भ होता है इसके लिए अष्टांग-योग के दो अंगों पर विचार करना श्रेयस्कर है। जिसमें सदाचार-सूत्र (Formula) स्पष्ट हो जाता है। अष्टांग योग के प्रथम दो अंग हैं १) यम और २) नियम, इन दोनों को समझ लेने से सदाचार और धर्म क्या है बात साफ हो जाती है कि मनुष्य को क्या अपनानी चाहिए जिससे उसका जीवन सदाचारमय या धर्ममय हो। १) यम :—के पांच सूत्र हैं—(क) अहिंसा (ख) सत्य (ग) अस्तेय (घ) ब्रह्मचर्य और (ङ.) अपरिग्रह।

अब इन

(क) अहिं

वाचाकर्मणा

परन्तु समाज,

किसी को दण्

दूसरी ओर थो

भी लें। यदि

अधिक से अधिक

मिलावटादि क

समाज-राष्ट्र न

खिलवाड़ करते

ऐसे हैं जो "अहि

पर लगा रखें,

विरुद्ध कार्य कर

हिंसा है। सदा

धर्म नहीं, अधर्म

(ख) सत्य

कभी असत्य भा

कर्म सत्यपूर्ण ह

नैतिक क्षेत्रों में

है। जब राजन

सारी झूठ को

सदाचारी सत्य

है वेद सूबि

उर्ध्वस्तपति) स

उठता है। स

अवश्यमेव होत

वार, समाज,

की प्रतिष्ठा

आप कहते हैं

करूंगा या कि

अवश्य इसका

सोपान से आ

व्यापार या

भाषण न कर

बार झूठ बोल

के लिये मनुष्य

बोलने लगता

अस्तेय

करने को, अ

अर्थ रखता

करनी। आपकी आठ घण्टे की डयूटी है पर दो घण्टे गप-शप में खराब कर दी तो यह कार्य से आपने चोरी की सबसे कठिन साधना अस्तेय की है। किसी की सुन्दरता और वैभव को देख कर विकार को प्राप्त होना अस्तेय है। चोरी-छिपे जितने कार्य हैं सभी स्तेय के अन्तर्गत आ जाते हैं। ढोंग और पाखण्ड से किसी को ठगना भी भयंकर चोरी है। कर (Tax) की पूरी अदायगी न करना भी चोरी है। अतः सदाचार का

ब्रह्मचर्य की साधना है दाम्पत्य शुचिता (Sexsual Pureity) जो दम्पत्ति अधिक काम सक्त रहती हैं, उनकी संतान लम्पट-विषयी होकर पुरुषार्थ-हीन हो जाती है। अतः संयम के द्वारा ब्रह्मचारी बन कर महान् करतल दिखलाता है। ब्रह्मचर्य-साधना के लिए तीन उपाय हैं—शुद्ध चिन्तन, शुद्ध दृष्टि और शुद्ध आहार। सुनना, देखना, सबके अन्दर पवित्रता होना ब्रह्मचर्य के अंग हैं। परमात्मा पूर्ण ब्रह्मचारी है। अतः उसके

पूर्वक कार्य हो जाता है तो दस कपड़े एक व्यक्ति के लिये होना सदा के विरुद्ध है। आवश्यकता से अ वस्तु न रखना ही अपरिग्रह है। नियम के सूत्रों पर ध्यान दें :— शौच (ख) संतोष (ग) तप (घ) स्वा और (ङ.) ईश्वर प्रणिधान।

(क) शौच– अन्दर बाहर की प का नाम शौच। शुद्धता के लिये श्लोक प्रसिद्ध है– अग्निर्गात्राणि शु मनः सत्येन शुध्यति। विद्या तपो (ख) भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्य अर्थात् मन सत्य से शरीर जल से और तप से आत्मा और बुद्धि ज्ञा वेक से शुद्ध होती है। सत्य कथा, और सत्संग पवित्रता के साधन हैं पिता परमात्मा परम पवित्र है अ गी सदाचारी को भी सर्वत्र पवित्र ध्यान रखना चाहिये। वस्त्र, भोज व्यापार और संस्था सब जगह

भलों को याद दिलाने

...pport of his act... relationship with the ... of the university. The ...ors and the heads of de... ...ments, in turn, need the ...oval of the vice-chancellor ...their decisions, as also his ...inued support. The third area ...a vice-chancellor's concern is ...actions and reactions of the ...nger teachers, who are generally ...a cross purpose with the heads ...departments. The fourth ...of a vice-chancellor's concern ...the body of students ...under-graduate level to re... students. This group ...no constant movement, but ...hoc issues do come up from ...to time, needing decisions ...actions. The fifth area is ...karmacharis and their prob... The sixth deals with ...unforeseen circumstances ...may crop up in society as ...whole, like the imposition of ...ergency, etc.

Perhaps, in our country higher ...ucation has practically become ...governable and its adminis...tive rituals may well be on ...ir way to obsolescence. The ...tterns of governance have not ...anged since the medieval uni...rsities adopted the monastic ...le of administration, developed ...St. Benedict of Nursia in 530 ...D. under which the head was ...call together the whole com...unity (then small in number) ...a meeting to discuss the issues ...hand. In the light of the ...scussions the head would minute

...lectual and academic matters from the board of trustees and the president to the department and its individual members. This, coupled with the vigour of administratively strong presidents, is the source of unequal adaptiveness and innovativeness of the American university".

Our vice chancellors are comparatively powerless administrators and a major area of resentment is the monopoly power of the prestigious professor, as against devolution to ranks. The younger teachers describe him as a sort of academic baron with his control over grants, power of selection etc. Though the younger teachers participate in council and departmental meetings, policy has generally been already determined by the senior.

Analytical work on the administration of higher education in India is minimal if not altogether absent. Due to this vacuum it appars that higher education has become unmanageable. Today, 47 universities are closed, that is, about half the universities. The very fact that so many universities are closed makes one feel that the pattern of university administration requires innovation. The most general problem faced by the top administration of a university is the existence and dynamics of rival groups in various sectors — students, teachers and ministerial staff. The rival groups opposed each other irrespective of the merits of a case. Examples of this subjective attitude are given below.

Out of a dozen applicants only one teacher is to be promoted. Most out of the remaining eleven will then start opposing the vice chancellor. If certain professors are associated with various activities their rivals automatically become critical of the top administration and it does not matter who got the chance and how deserving one was. Comparatively, he university teachers appear to be the most jealous lot. Tolerance is not one of their virtues. Whenever attacks are launched in an academic council the academic barons prefer silence, forcing the chairman to give some sort of defence. The brunt is thus borne by the vice-chancellor.

Leaders of teachers' union generally bargain for their personal promotions and once they achieve

Karmacharis ... depends on how many gains — deserving or ... they can obtain. Performance of duty and welfare of society do not count at all. A vice-chancellor, who does not carry purses of white and black money for all labour demands faces problems of trade union attacks. The base of these problems, of course, is mostly political and it should not be difficult to name the political parties.

For their short-sighted interests and certain immediate gains, the political parties should not weaken the country by interfering with the campus life. What could be a greater harm to a nation than chaos in education? Perhaps, the Prime Minister should consider descussing these issues with the leaders of other political parties because the issue is a vital one. If the Prime Minister does not succeed, perhaps, like China, our universities should be closed for a decade instead of allowing them to be endlessly dragged from crisis to crisis.

The Kothari commission, on the role and appointment of the vice-chancellor, expected him to embody the spirit of academic freedom and the principles of good management. But the famous Clark Kerr visualises certain new roles for vice-chancellors and presidents. These are: his conduct will be less in the committee room and more in the open. He will appeal to mass groups and less to representatives. He will be more visible, more accessible, more of a public personality.

Indian vice-chancellors need to to play these roles. As these roles are equal to that of a minister, minus the latter's powers, the vice-chancellor should move from the present status of the first among equals to the status of a lieutenant-governor on a campus; otherwise he will continue to get mashed like a potato. One has to keep one's fingers crossed about the normalcy on our campuses even with the powers and status of a lieutenant-governor but at least a V.C. will not be locked in or locked out and violence will not take serious forms. An aditional way out may be to allow the emergence of at least one private university for the sake of change and some sober effect.

...thods Dr Lozanov emphasized the importance of "psychological relaxation", which unlocks the "hidden reserves of the sub-conscious".

The Lozanov methods have been adopted in Bulgaria for two programmes, one to teach adults foreign languages and the other to accelerate children's learning in public schools.

In the language course, classical music plays a vital role in establishing the relaxed atmosphere that Dr Lozanov feels is required to make students receptive to an accelerated learning process. On the first day of an English course, for instance, the students are asked to sit back and relax while the Bach Goldberg variations pour forth from a loudspeaker.

"The teacher must establish a relationship with the students just like a psychotherapist does with a patient", Dr Lozanov said. "The student learns to be sympathetic with the teacher. The teacher uses all the standard psychological therapeutic techniques".

After establishing a rapport with the students, the teacher begins playing the music and reading a prepared lesson, which contains at least 600 different English words.

The material is repeated by the teacher three times in different tones and voice levels. After the first session, the lessons are divided into sections for introducing new material, reviewing material from previous lessons and reinforcing, or repeating, material. A standard course lasts 32 four-hour-days.

"By this method we get many times better results, than traditional methods," Dr Lozanov said. "We are not talking about 10 per cent better results but 200, 300, and even 500 per cent better reception of new information".

Dr Lozanov claims that students trained by his method retain most of the new information they are given because their minds have been opened by the relaxing atmosphere in which the lessons are given (By arrangement with the Los Angeles Times).

—FORUM—

Kenneth Anderson

PERUSAL of Kenneth Anderson's jungle books published ...George Allen and Unwin Ltd. ...ould give the lie to P. N. Unnikrishnan's remark (The Sunday Standard, December 11) "Photographs are mostly shoddy. Evidently Kenneth Anderson was not as good at camera work as with the gun". Actually, bad reproduction of Anderson's pictures (in Rupa & Co — series) has made him look a mean photographer. He was'nt!

KARAN J. SINGH

CHANDIGARH

books and education

Cake for collegians and crumbs for school children

by Bhaskara Venugopal

ONE hundred and ten universities, more than 400 ...udents. Quite an impressive ...chievement. There is a ma...thing phenomenal growth in the ...umber of pranches of study.Today ...ur universities are comparable to ...ny seat of higher education in ad...anced countries. We have been ...rporting experts, scientists and ...ucationists. Facilities for study ...nd research in our universities ...e fairly comfortable. Thanks to ...e pioneering activity of the UGC ...d assistance from the Ministry ... Education, the laboratories ...d libraries in our universities do ...ovide the right atmosphere for ...ading and research. Most of ...em are housed in modern build...gs. The amenities—right from ...lour chalk pieces to glass writ...g boards and sophisticated inter...mmunication systems—are ex...plary.

Our college students contemplate ...rikes and bandhs to press their ...mands for fans in class rooms ...d extension counters of banks ...thin the college buildings. Boys ...d girls as also their teachers ...ar the most fashionable dresses ...d hair styles. Scores of scoo...s and mopeds and bicycles ...orn the college portico. With all ... expensiveness and comforts, ...gher education in the country ...s become an elitist activity.

Compared to this, the situation ...taining in the primary and ...condary stages of education pro...des a gloomy picture. At the ...llege level, where the teacher ...nsiders himself only to be a ...ide (and perhaps, there...re, drives the boys to depend ...re on guides) even a 40 strong ...ss is felt to be too much of a ...rden. At the primary and ...condary levels, an ill-equipped ...d poor to look at, if not un...spiring, teacher is supposed to handle classes of 60 innocent littles. The kids are crammed mostly into small and stuffy rooms in rented, dilapidated houses. There won't be much of a worry also if there is no room or roof. Classes might as well be conducted beneath a tree or in a corridor. Roads are playgrounds. Physical training classes are one or two-hour stints of howling and jumping in the school neighbourhood.

The teacher is lucky if he has enough quantity of chalk to scribble on the unsized black board. He won't complain if there is no chair for him. He will sit either on the rickety table or on some such raised thing, peeling off the leaves and skin from a freshly obtained branch to treat his wards whenever they fail to search for the right lesson in their book and learn it possibly by themselves.

At the secondary stage, except that the teachers in these schools are more enlightened, organise trade unions, agitate for more pay and try to draw their salaries regularly, the conditions under which teaching and learning take place are equally disconcerting. Here, the so-called tinkering with education is heavy. In their enthusiasm for reform, politicians try to give shape to each and every one of their brain waves. Numerous changes in curriculum and system of examination are implemented without any regard for the concept of academic year. There will be one model of question papers at the half-yearly exam and an entirely different model at the final exam. Classes and additional special coaching classes are conducted without any concern for the burden of work on the teacher and the taught. A teacher's efficiency is assessed by his teaching notes and the tables of lessons he is asked to prepare. Lessons are numerous and the load of learning is too much. There is also an unhealthy stress on writing work. The gilt edge of the picture is the regional language chauvinism.

Teachers at the primary and secondary levels are also at the mercy of the local politics. Transfers and retentions are effected by 'influence'. Favouritism which is based on caste, religion, group and mother-tongue, has a play both in appointments and promotions.

There is a lop-sided emphasis on the development of higher education. Thanks to the efforts of the UGC and the Central Ministry of Education, most of the development activity and investment in education is concentrated at the collegiate level and above. Even the local rich come forward with donations mostly to establish colleges but not primary or secondary schools. The demand for better schooling far outstrips the supply. It cannot be denied that just as a son in a poor family is accorded preferential treatment within the limited resources, higher education in India is receiving a disproportionately better deal. Again, thanks to its proximity to international activity because of language and literature, even the opportunities for growth of higher education are more and better.

As things stand, education at the secondary and primary stages is treated on a par with any other governmental activity like laying a road or building a wall. The fact that a class of boys cannot be treated like a file of papers is almost forgotten and that the aptitudes and efficiencies of a teacher are completely different from that of say a clerk or an officer is ignored.

Whether it is 10 plus 2 plus 3 or any other system, whether it is vocationalisation at an earlier stage or a later stage, the lop-sided emphasis on the higher level is to be rectified. Man's attitude to life and character are formed in the early years of his life. Higher education may at the most polish some of these qualities. Therefore, utmost care should be exercised in the primary and secondary stages where the formative years are spent.

Once the issue whether education has to remain a concurrent subject or not is decided, a commission on the lines of the UGC to encourage and finance learning at the primary and secondary stages may be created. Teachers who are properly trained for their job must be given an opportunity to participate at all levels of decision-making and implementation. More opportunities for growth should be provided for both the pupils and teachers in the lower educational institutions. We cannot afford to ignore the foundation and then make a fuss about the colour scheme of the superstructure.

Misery of being a VC

by Anand P. Srivastava

WHENEVER a new vice-chancellor joins a uni...rsity for a few weeks, there ... an atmosphere of cheer and ...odwill all over the campus. ...rlandings, parties and welcome ...eeches are the most important ...nts at this initial stage. But ... does not take many months, ...pending upon the size of the ...iversity, for "hai-hai" slogans ...d demads for his resignation ... become a common affair, ge...rally resulting in his leaving ... office before the expiry of his ...m. Only a thin attendence bids ...n 'fare well'.

Why does this happen? What ... the factors and in what ways ... the personality of a vice-...ancellor responsible for such ... end? These are the issues ...t need to be analysed.

A vice-chancellor's administra...sk could be categorised into ...llowing areas: his equation ...state authorities for ... funds and for ...ing his decisions the decisions and initiate action. The head was only the first among equals. The source of the authority was derived from the consent of the governed masters and teachers, who were also required to take "an oath of obedience to university statutes". Self-government was indeed the principle with dutiful attitude of all.

In England, the government of the universities of Oxford and Cambridge is described as "direct democracy" while in other universities it is identified as "a combination of an oligarchy and a representative democracy". The Robbins report of the sixties identified two pathologies in the governance of universities. First, the predominance of lay membership on courts or senates and, second, the excessive power of the professors, eclipsing the younger teachers whose revolt is generally a kind of reaction. The same is true about ... Ben-David summarises the governance of American universities as: ... of authority in ...

... it they either leave the union, or lose interest. Students also behave in the same way. If union elections are announced the group likely to lose presses for postponement. If the vice-chancellor agrees to the postponement, the groups go on a hunger strike on agitation. If the university goes ahead with the elections, the first groups go on a hunger strike. Student groups are constatly in competition with each other to gain popularity for themselves and hold for their political masters.

Whatever a vice-chancellor decides, opposition and stir shall be there, unless it is his own resignation. Gone is the man and the next one shall also leave. It has become the rhythm of the university's music.

A microscopic analysis reveals the presence of the same pattern of rivalry and mutual dislike among officers and karmacharis. The officers have groups and control many strings, while the ...

Education for a song

by Murray Seeger

IN an old building on Budapest Street, a dozen Bulgarian men and women settled back in their reclining chairs while their teacher started playing a taped Paganini violin concerto.

"Relax now and enjoy your concert," she said.

It was shortly before noon, the room was warm and quiet and the music lovely. After five minutes, the teacher began reading in English a story about a woman who had made a visit to Cairo. The scene could have been quiet hour at a kindergarten or story time at an old folks' home. Actually, it was the final hour of a day's English lesson at the Institute of Suggestology and Parapsychology.

Established in 1969, the institute is the creation of Dr Georgy Lozanov, a physician and psychotherapist whose experiments in using psychological teachniques to improve the learning process led the Bulgarian government to make the institute a part of its Ministry of Education.

The institute is also center of international interest and some controversy because of the claims Dr Lozanov has made for his development.

Dr Lozanov has lectured and demonstrated his teaching methods in western Europe and the United States. They are based on 15 years of research and experimentation and 25 years of prac...

२

सत्-सही, सुष्
हार सदाचार क
और धर्म दोनों
दोनों में विशेष अ
सदाचार वहां ध
जहां सदाचार होग

अब प्रश्न उठत
सूत्र क्या हैं और क
है इसके लिए अष्ट
पर विचार करना
सदाचार-सूत्र (F
जाता है। अष्टांग
हैं १) यम और २)
समझ लेने से सदाच
बात साफ हो जा
क्या अपनानी च
जीवन सदाचारम
१) यम :—के
अहिंसा (ख) स
ब्रह्मचर्य और (ड.)

अब इ
(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समाज,
किसी को दण
दूसरी ओर थो
भी लें। यदि
अधिक से अधि
मिलावटादि क
समाज-राष्ट्र
खिलवाड़ करते
ऐसे हैं जो "अ
पर लगा रखें,
विरुद्ध कार्य कर
हिंसा है। सदा
धर्म नहीं, अधर्म
(ख) सत्य
कभी असत्य भा
कर्म सत्यपूर्ण
नैतिक क्षेत्रों में
है। जब राज
सारी झूठ को
सदाचारी सत्य
है वेद सू
उर्ध्वस्तपति) स
उठता है। स
अवश्यमेव होत
वार, समाज,
की प्रतिष्ठा
आप कहते हैं
करूंगा या कि
अवश्य इसका
सोपान से प्रा
व्यापार या
भाषण न क
बार झूठ बो
के लिये मनुष
बोलने लगता
अस्तेय
करने को, अ
अर्थ रखता

...rtion

...dia's
...es
...ives
...Vest

Cooperation must be sought amidst the students and the youth at the district level. Some local inhabitants could undertake repair, conservation and restoration work upon the palaces in their neighbourhood, under the supervision and guidance of a qualified curator. This task is at once educative, practical, exciting and useful.

Let us not forget that if we want to build a tourist oriented country, as India is pre-disposed and capable of being 'par excellence,' palaces and castles constitute the main architectural attraction—even more than temples, which are, most of them, for the foreign tourist simply odd stone pyramids whose religious and symbolic value is not generally understood.

To do so we have to take account of the experience of countries likely Italy, Spain, France and U.S.A., where the preservation of palaces and castles has been seen as an inseparable corollary of the development of tourism.

Symbolic

In India, as a matter of fact, the basic policies and conceptions of tourism need to be changed; as do the preservation priorities. Attention and money have been showered on such complexes as Khajuraho which, to tell the truth, do not have so much fascination for a tourist that he should go hundreds of miles by plane to see them.

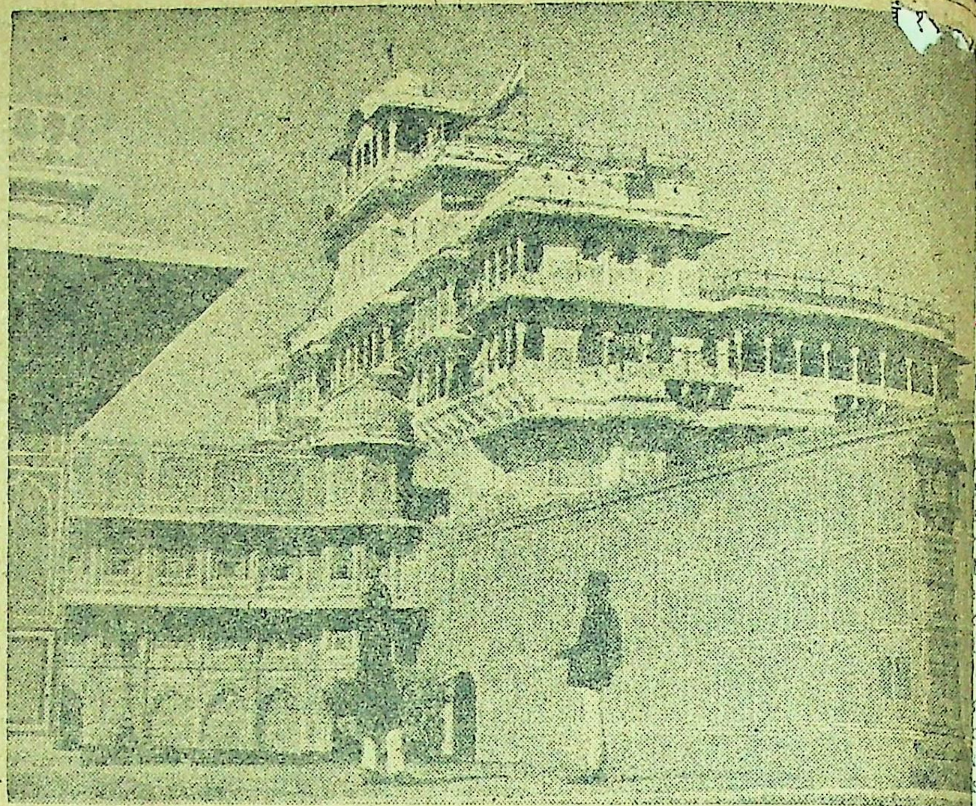
On the other hand, peerless buildings have been completely neglected or are even threatened in their very existence. Most palaces in Himachal, in Punjab, Rajasthan, Gujarat, Orissa and Andhra are suffering from lack of care and concern and this is going to be more and more so, now that even the symbolic institution of rulership has been abolished since 1971.

We have to be conscious and mature of the fact that India for the Western countries is a unique, special, fascinating land. The reason for this is India's aristocratic traditions, the charm and splendour of its ruling houses, its otherworldly loveliness. These are spiritual values which should be respected and taken into account.

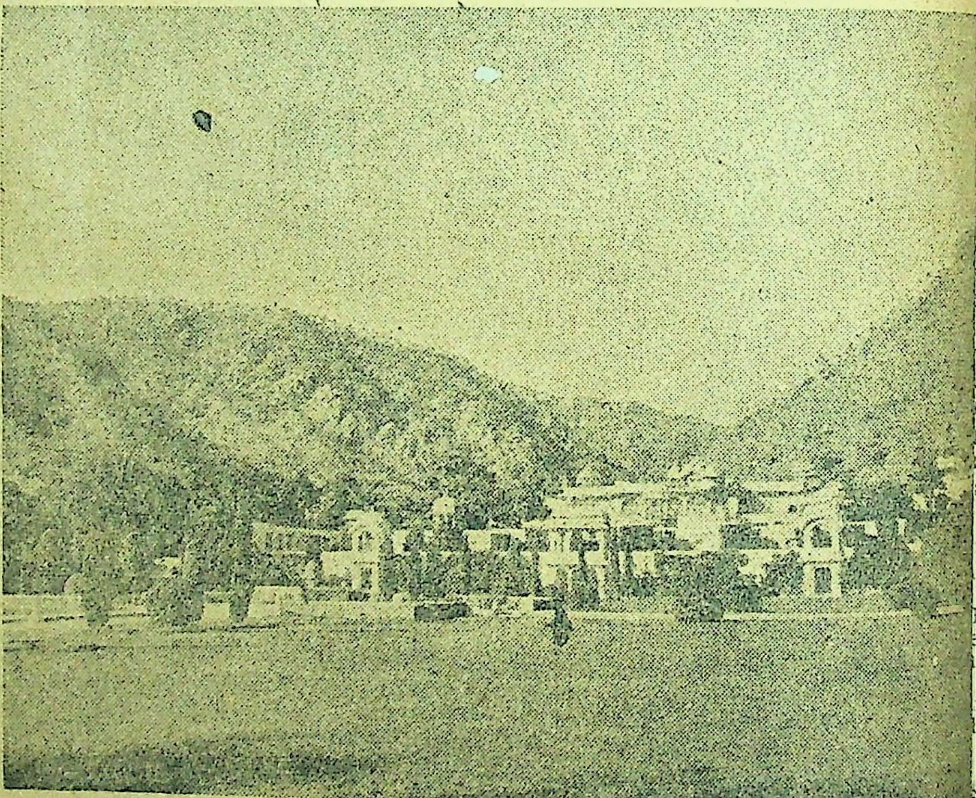
Preservation of ecology and respect and care of the cultural artistic legacy are one and the same thing. Now that a sincere effort has been made for wild-life protection and national awareness has been aroused for it—mainly thanks to the intelligent and dedicated initiatives of Dr. Karan Singh—we should not stop there. We must take continuous and comprehensive steps for an all-round preservation of the national architectural heritage, specially of castles and palaces.

Hesitant

Once again, the Government cannot be expected to shoulder the whole of this burden. Local interest and participation are needed, and ... spearheaded by the Union of the Rulers for the cultural ...



Jaipur's City Palace. The number and variety of royal abodes in India stupendous. Many of them are in a state of neglect.



The Sisodia Palace, Jaipur. The palaces of India are the preservers of lo... arts and crafts and ancient traditions.

in India are quite cheap and comparatively easy to set up. This does not imply getting into the 'museumania' of the U.S.A., but many lessons should be taken from that country in this regard.

Castles are very suitable for housing art galleries or ethnographic, archaeological, scientific, or historical display centres. It would be much cheaper than constructing new museums which do not have the historic value and prestige: after all, even when palaces are not aesthetically beautiful, they are the conservatory of the ancestral family traditions and most often have great spiritual value.

Certainly, in most cases, palaces would be very proper exhibition centres for the culture, art and social picture of the surrounding area.

The museum structure could be coupled to a more functional use in most cases. But the solutions have to be different, adopted to the area and the setting, history and characters of each place and the palace concerned. They could be cultural institutes, academies, trusts, libraries, conference halls, or even luxurious typical 'inns' for tourists, on the model of the 'Paradors' in Spain.

Palaces can certainly serve the cultural and spiritual welfare of the local community and be a great attraction for the tourist. At any cost, therefore, their artistic and traditional value and character must be preserved, whatever use is made of them.

Preservation of a palace or castle implies the preservation of its natural surroundings as well—park, garden, forests. This simple truth, the artistic ecology of an area, is too often unknown to our modern town planners and architects.

The traditional architectural equilibrium and beauty of most ancient cities of India is now being mercilessly destroyed and spoiled without any regard for the typical architectural ecology of the local cultures. Greed for land and the craze for modern buildings are spoiling all the ancient cities.

India should study the possibilities of giving to some typi... beautiful towns of the ... 'Preserved Cities' where ... and town planning would ... mitted to certain regulation... ing to maintain the harm... these urban settlements.

Such steps have been ... specific cases by many ... ments in the world—among ... Iran, Japan, Brazil, ... Spain, Italy, Mexico ... U.S.A.

These are many pro... which would require to be ... and taken into considera... the new government; but ... once again to suggest ... Indian princely rulers sho... the initiative in this field.

They should gather and ... together through an acti... mittee, in dialogue wi... government, the best wa... means and proper policies ... serve this peerless legacy ... princely past, the nost... modern democratic ... castles and palaces—in a ... openness, understanding ... cohesive unity.

THE INDIAN EXPRESS

New Delhi: January 17, 1978

Educational reform

ERHAPS never since Macaulay introduced modern educa-
tion in India has the education machine been subjected
such constant experimentation as in these past few years.
derlying the debate, informed and not-so-informed, and
reforms, actual and intended, is a growing national
sire to lend meaning and relevance to education. Un-
tunately, however, the lines of thinking and action have
so entangled that it is difficult to see the wood for the
es. The conceptual confusion and consequent uncertainty
ntinue to characterise much of the continuing debate on
s very vital issue.

In the event, the University Grants Commission's latest
ay at reforming higher education is likely to evoke a
nerally cynical response, especially on the part of stu-
nts and their bewildered parents. But it is time a dis-
ssionate and definitive discussion took place on two of
e Commission's major recommendations. One concerns
e long-standing, albeit controversial, advice that uni-
sities be treated as something different than assembly-
e degree-production centres. Gone are the days when a
chelor's Degree was a status symbol and a passport to
nful employment. Gone should, therefore, also be the
phasis that students as well as their prospective em-
yers put on such degrees. But this can only happen if a
liberate attempt is made to de-link degrees from jobs,
d this is what UGC has favoured.

There is nothing novel in either of these recommenda-
ns. But social, economic and political pressures have in-
riably stood between the reforms and their implementa-
n. Some of the objections are based on realities. In the
se of restricting university education to only the meri-
ious students, the question arises, what are the others
do? The best way out would be to provide comprehen-
e facilities for craft-based education and training.
the matter of de-linking degrees from recruitment to
rious jobs, the proposed reform obviously cannot include
gineering and medicine and such specialised disciplines.
t the most important aspect concerns the will of the poli-
al and educational managers to bring about the reforms.

and students

ma

though by some y) into a highly intel- useful and good citizen, hat his profession has purely mechanical t any social commit- The teacher feels that rent has failed to pro- his child with a basic background and a

is aware, the foundations of character are laid and atti- tudes that last a lifetime are formed. Very rarely can sub- sequent instruction alter them. No doubt, the average parent provides his child with quite a few things—good clothes, school/college fees, money for books, a bicycle,

et money, etc. But, un- nately, he thinks that his onsibility ceases with this. hat he woefully fails to ide him with are two important things—a part his time and a good nple. He fails to realise honesty, discipline, and other virtues are like , always flowing from a r level to a lower level. vill do well to keep con- ly before his mind what Schweitzer has said: mple is not the main in influencing people. the only thing."

d the reasons why nts do not give a part of time to their children not far to seek. By and , the rich parents are too getting richer, and often set only bad examples heir own vices. The time e middle-class parents is ly occupied in adjusting monthly budget and aping richer sections. The poor are too ignorant and too rated to be of any help guidance to their children. equently very few parents a genuine interest in the ation of their children.

st year, as a part of the pendence Day celebra- , the Principal of a college urnool, sent out nearly two ired invitations to local nts for the Parents Day tion, but only seven nts responded to the invi- n. In such circumstances, wonders whether Oscar was not right when he that children start by beying their parents, in they begin to judge and in adulthood, they ever forgive them.

teacher on his part d prove himself worthy noble task entrusted to him. He should have a feel- ing of warm affection for his students. He should realise that the nobility of his pro- fession consists partly in train- ing the young minds under his care and partly in possessing exceptional knowledge and wisdom, and leading a simple, unostentatious life, thus being a model not only to his stu- dents but to the society at large.

One of the evils to be com- bated by the Parent-Teacher Associations is the erosion of moral values through films, which are nowadays ridden with crime and sex in the raw. It is no exaggeration to say that there is not a single evil among the youngsters which cannot be traced to films. The news stands are full of cine magazines and cheap thrillers. The lonely voice of a legislator in the Assembly or Parliament crying out against these things is not enough. The crying need of the hour is a massive programme by the Parent- Teacher Associations to bring down our youngsters from the illusions and dreams of the silver screen to the throbbing core of hard realities and the pulsating facts of life. Protest meetings, demonstrations, de- legations to the concerned ministers, should be a part of the association's programme. In this regard, the associations in State capitals can do a lot, of course, in coordination with those at the district and taluk levels.

There are many other stu- dent welfare programmes in which the association can actively involve itself. Supply of stationary at cheap rates, sale of cheap and wholesome lunch packets, introduction of job-oriented educational pro- grammes, provision of suitable buildings and playgrounds, are some of the schemes regard- ing which the association can make effective representation to the appropriate authorities, and ensure the creation of a peaceful and congenial atmos- phere for the students to pur- sue their studies in.

Such representations through the association are not only more effective in achieving the desired results; they also save the precious time of the stu- dents from being wasted on agitations. Let us remember that students agitate for vari- ous things, because they feel that there is no one genuinely interested in their welfare.

... more intense students of the Arts &
Sciences and the best student will be he who always remains an ardent student and tries harder & harder to seek more and more knowledge. The fact that this concept, this attitude was presented 14 hundred years ago is nothing short of miraculous.

Another aspect of this hadith is that any knowledge acquired today becomes stale tomorrow because Allah's creation is not dead & inert. Everything changes constantly. Everything moves all the time. We are, so to say, travelling in a train. If at 4 p.m. someone asks: "where are we?". He may learn that he is at Kanpur. If he thinks he has acquired the knowledge and even 4 hours later he thinks he is still at Kanpur, he will be sadly mistaken. Therefore to know where we are at any moment we have to keep a constant track of the movement of the train.

Another instance. I passed my M A (Political Science) in 1955. Suppose I learnt all about the Indian Constitution and all about International Relations and suppose I topped in that examination in the entire world breaking all records and getting 100% marks in each & every paper. But thereafter I stopped studying.

२

सत्-सही, सुष
हार सदाचार क
और धर्म दोनों
दोनों में विशेष अ
सदाचार वहां ध
जहां सदाचार होग

अब प्रश्न उठ
सूत्र क्या हैं और क
है इसके लिए अष
पर विचार करना
सदाचार-सूत्र (F
जाता है। अष्टांग
हैं १) यम और २
समझ लेने से सदा
बात साफ हो जा
क्या अपनानी च
जीवन सदाचारम
१) यम :—के
अहिंसा (ख) स
ब्रह्मचर्य और (ङ.)

अब इ
(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समाज,
किसी को दण
दूसरी ओर थो
भी लें। यदि
अधिक से अधि
मिलावटादि क
समाज-राष्ट्र
खिलवाड़ करते
ऐसे हैं जो "अ
पर लगा रखें,
विरुद्ध कार्य कर
हिंसा है। सदा
धर्म नहीं, अधर्म

(ख) सत्य
कभी असत्य भा
कर्म सत्यपूर्ण
नैतिक क्षेत्रों में
है। जब राज
सारी झूठ को
सदाचारी सत्
है वैद सू
उर्ध्वस्तपति) स
उठता है। स
अवश्यमेव होत
वार, समाज,
की प्रतिष्ठा
आप कहते हैं
करूंगा या कि
अवश्य इसका
सोपान से आ
व्यापार या
भाषण न क
बार झूठ बो
के लिये मनुष
बोलने लगता

अस्तेय
करने को,
अर्थ रखता

...adat Chief

...in dedicates Zarih of ...n the great Martyr

English Version of Arabic invitation sent by Mohammed Anwar-us-Sadat, President of the Egypt Arab Republic, to His Holiness Dr. Sultan-El-Bohra El-Dai-El-Fatemi Mohammed Burhanuddin.

IN THE NAME OF ALLAH, THE BENEVOLENT AND THE MERCIFUL.

Your Holiness Dr. Sultan El-Bohra, El-Dai-El-Fatemi Mohammed Burhanuddin, Assalamo Alaikum Waramatullah-e-Waberkatuhu.

Reverential blessings accompanied by our esteem and the esteem of the people of Egypt for your sincere efforts and your ardour for the service of Islam and reverence of AHLE-BAIT of the Prophet (Peace be on him and his descendants).

We remember your noble accomplishments in the form of your gifts of the Maqsoorah (Zarih) of Moulana Al-Hussain (May Allah's blessings be on him) and also the MAQSOORAH of Syedah Zainab (May Allah's blessings be on her) which by Almighty Allah's grace, has already reached Egypt. All this has affirmed, with the passage of time, the truth of your concern in the service of Muslims and Arabs, and especially the people of Egypt in the land of Kinanah; and which has made a very significant addition to those strong spiritual and personal ties, which bind you with the Arab and Islamic world in general and with Egypt in particular, since the Fatemi suzerainty; and because of what we know of your noble personality and of those who are assisting you under the patronage of Dawah, which is the prime purpose of your life.

Indeed, so it pleases me that I send to you my invitation to visit Egypt and to participate with us and with our Egyptian people, the occasion of the opening of the season of Ziarat at Masjid of El-Syedah Zainab (May Allah's pleasure be on her) and the completion of the work of the new Maqsoorah presented by you.

May Allah make this new spiritual radiance, a harbinger of grace and well being for Egypt for the

A tribute to the memo... of Syedah Zainab (A.S...

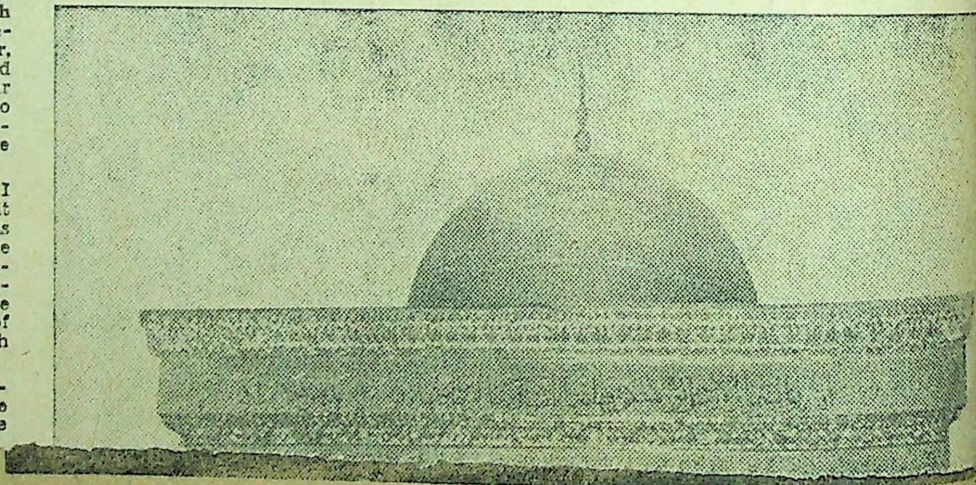
The dedication of the Zarih in memory of Syedah Zainab (A.S.), dau... of Amirul Momineen Maulana Ali (A.S.) and Syedah Fatema (A.S.) and ... of Imam Husain (A.S.) in Cairo by His Holiness Dr. Syedna Moha... Burhanuddin adds one more link in the friendly relations between ... and India.

These ties which can be traced back to thousands of years have strengthened on the political and religious planes by the peoples of ... two countries.

The Zarih which contains a hundred thousand tolas of silver, mea... 3.25m x 3.25m. while the top of the dome is 5.45m. from the ground... cost of this Zarih has been contributed by the Dawoodi Bohras of Pak... It was transported from Karachi to Cairo in a special plane sent by ... Government of the Arab Republic of Egypt.

The two earlier Zarihs, one at Kerbala (Iraq) in memory of Imam H... (A.S.), grandson of the Prophet (S.A.) and the other at Najaf in h... honour of Amirul Momineen Maulana Ali (A.S.), were fabricated in Bo... and were the gifts of the Indian Dawoodi Bohras.

The present gift of a Zarih is a manifestation of the common brothe... and ideals which transcend national boundaries; but above all, a trib... the memory of Syedah Zainab (A.S.), a paragon of Islamic woman... Syedah Zainab (A.S.) was an outstanding woman of lofty character pe... fying Islamic ideals of piety and devotion to the faith. She witnesse... barbarous atrocities and persecution of Imam Husain (A.S.) and his kith... kin which culminated in his assassination and that of his entourage in... ing her two sons. In shock and sorrow, she outstone all by her patience... courage and remains to this day a beacon unto the devotees of Imam H... (A.S.) the great martyr of Kerbala.



The Sisodia Palace, Jaipur. The palaces of India are the preservers of lo... arts and crafts and ancient traditions.

in their very existence. Most palaces in Himachal, in Punjab, Rajasthan, Gujarat, Orissa and Andhra are suffering from lack of care and concern and this is going to be more and more so, now that even the symbolic institution of rulership has been abolished since 1971.

We have to be conscious and mature of the fact that India for the Western countries is a unique, special, fascinating land. The reason for this is India's aristocratic traditions, the charm and splendour of its ruling houses, its otherworldly loveliness. These are spiritual values which should be respected and taken into account.

Preservation of ecology and respect and care of the cultural artistic legacy are one and the same thing. Now that a sincere effort has been made for wild-life protection and national awareness has been aroused for it—mainly thanks to the intelligent and dedicated initiatives of Dr. Karan Singh—we should not stop there. We must take continuous and comprehensive steps for an all-round preservation of the national architectural heritage, specially of castles and palaces.

Hesitant

Once again, the Government cannot be expected to shoulder the whole of this burden. Local interest and ... and this movement could be spearheaded by the Union of the Rulers for the cultural ...

in India are quite cheap and comparatively easy to get up. This does not imply getting into the 'museumania' of the U.S.A., but many lessons should be taken from that country in this regard.

Castles are very suitable for housing art galleries or ethnographic, archaeological, scientific, or historical display centres. It would be much cheaper than constructing new museums which do not have the historic value and prestige; after all, even when palaces are not aesthetically beautiful, they are the conservatory of the ancestral family traditions and most often have great spiritual value.

Certainly, in most cases, palaces would be very proper exhibition centres for the culture, art and social picture of the surrounding area.

The museum structure could be coupled to a more functional use in most cases. But the solutions have to be different, adopted to the area and the setting, history and characters of each place and the palace concerned. They could be cultural institutes, academies, trusts, libraries, conference halls, or even luxurious typical 'inns' for tourists, on the model of the 'Paradors' in Spain.

Palaces can certainly serve the cultural and spiritual welfare of the local community and be a great attraction for the tourist. At any cost, therefore, their artistic and traditional value and character must be preserved, whatever use is made of them.

Preservation of a palace or castle implies the preservation of its natural surroundings as well—park, garden, forests. This simple truth, the artistic ecology of an area, is too often unknown to our modern town planners and architects.

The traditional architectural equilibrium and beauty of most ancient cities of India is now being mercilessly destroyed and spoiled without any regard for the typical architectural ecology of the local cultures. Greed for land and the craze for modern buildings are spoiling all the ancient cities.

India should study the possibilities of giving to some typi... beautiful towns of the ... 'Preserved Cities' where ... and town planning would ... mitted to certain regulation... ing to maintain the har... these urban settlements.

Such steps have been ... specific cases by many ... ments in the world—among ... Iran, Japan, Brazil, ... Spain, Italy, Mexico ... U.S.A.

These are many pro... which would require to be ... and taken into considera... the new government; but ... once again to suggest ... Indian princely rulers sho... the initiative in this field.

They should gather and ... together through an ac... mittee, in dialogue ... government, the best ... means and proper policies ... serve this peerless legacy ... princely past, the nob... modern democratic ... castles and palaces—in a ... openness, understanding ... cohesive unity.

Not for publication. Not even for public circulation.

This note is being sent to selected scholars whom I regard as my respected elders or honoured friends with a request that they may please guide me and help me to correct myself if anything I have written is wrong. I will change this article in the light of the criticism and suggestions received and thereafter I may send it for publication.

EDUCATION WILL MAKE US BETTER MUSLIMS

Ahmad Rashid Shervani

I am not aware if any other religion has laid so much stress on education as Islam has done. Nearly 1400 years ago in the desert of Arabia the Messenger of Allah (peace be upon him) said: "Education is compulsory for all Muslim men and Muslim women" (Talabul ilm fareezatun ala kulle Muslimin va Muslimatin). At that time even in Europe there was hardly any concept of the education of women. It is obvious that the religion which enjoined every woman to get education must be the most progressive and forward looking religion even from the standards of today. Fourteen centuries ago it was nothing less than revolutionary.

Some ignorant mullas say that ilm means only ilm e deen or religious knowledge. This is absolutely wrong. Ilm in Arabic actually means science and aalim means a scientist. All reasonable indications are that by the word ilm it is meant that Muslims should study and learn about this world.

Another hadith further confirms this view. The prophet (peace be upon him a hundred times) said: "Seek ilm even if you have to go to China for it" (Utlubul ilma va lo kana bis Seen). It is obvious that in those times all the ilm e deen was available only in Mecca and Medina. If he had meant 'knowledge of Islam and Shariat' by the word 'ilm' then he would not have asked his followers to go to China for it because at that time no ilm e deen could be found in China. Islam had not even reached China by then. On the other hand, China was famous for its scientific and technical knowledge. (Paper was first made in China. Printing is also said to have originated there. The Chinese were the first to make gun - powder.) The reference to China confirms that ilm means worldly knowledge.

IT NEVER ENDS

Yet another hadith calls upon us to "Seek ilm from the cradle to the grave" (Utlubul ilma minal mehdi ilal lehdi). This sacred hadith set me thinking. It gives the most modern, the penultimate concept of education. Knowledge is never complete. The more we learn the more we realise how much more there is yet to learn. This is the crux of the latest thinking on education. This was not fully realised till recently. All the degrees of 'Master of Art' and 'Master of Science' are misnomers. At best we can be more intense students of the Arts & Sciences and the best student will be he who always remains an ardent student and tries harder & harder to seek more and more knowledge. The fact that this concept, this attitude was presented 14 hundred years ago is nothing short of miraculous.

Another aspect of this hadith is that any knowledge acquired today becomes stale tomorrow because Allah's creation is not dead & inert. Everything changes constantly. Everything moves all the time. We are, so to say, travelling in a train. If at 4 p.m. someone asks: "where are we?". He may learn that he is at Kanpur. If he thinks he has acquired the knowledge and even 4 hours later he thinks he is still at Kanpur, he will be sadly mistaken. Therefore to know where we are at any moment we have to keep a constant track of the movement of the train.

Another instance. I passed my M A (Political Science) in 1955. Suppose I learnt all about the Indian Constitution and all about International Relations and suppose I topped in that examination in the entire world breaking all records and getting 100% marks in each & every paper. But thereafter I stopped studying.

सत्-सही,
हार सदाचार
और धर्म दोन
दोनों में विशेष
सदाचार वहां
जहां सदाचार

अब प्रश्न
सूत्र क्या हैं औ
है इसके लिए
पर विचार क
सदाचार-सूत्र
जाता है। अ
हैं १) यम औ
समझ लेने से
बात साफ हो
क्या अपनाने
जीवन सदा
१) यम :-
अहिंसा (ख
ब्रह्मचर्य और

अब इ
(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समाज
किसी को
दूसरी ओर
भी लें। य
अधिक से अ
मिलावटादि
समाज-राष्
खिलवाड़
ऐसे हैं जो
पर लगा
विरुद्ध का
हिंसा है।
धर्म नहीं,

(ख)
कभी असं
कर्म सत्य
नैतिक क्षे
है। अब
सारी भू
सदाचा
है वै
उर्ध्वस्त
उठता
अवश्य
वार,
की प्रि
आप
करूं ग
अवश्य
सोपा
व्याप
भाष
बार
के
बोल

करने को,
अर्थ रखता

Once again, the Government cannot be expected to shoulder the whole of this burden. Local interest and ... and this movement could be spearheaded by the Union of the ...

the palace concerned. They could ...

am utterly ignorant today. The Constitution of India has changed beyond recog-ition. So many articles which I had memorised in 1954 have vanished and new ones ave come in their place. In International Relations, half the members of the nited Nations today did not exist as nation states in 1955. China & USA were worn enemies then. They seem bosom pals now. And so on and so forth. So nowledge is not and never can be complete and that is why the prophet (peace be pon him a thousand times) has asked us to seek ilm from the cradle to the grave.

In the presence of three such clear & powerful commandments to seek ilm I eally cannot see what right the Muslims have to remain educationally so backward s they are today.

If the Muslims follow these commands they should be educationally the most dvanced. They are not even at par with the non-Muslims. (Particularly in North ndia and more specifically in U P & Delhi I find that the Muslims are five to six imes behind the rest of the people in education.) This is a disgrace for those ho call themselves Muslims.

"MY FATHER WAS A SULTAN" --- THEN WHAT HAPPENED ?

A lot of Muslims talk about the golden age of Islam. The ignorant mullas ay that in those glorious days the Muslims were more pious & religious and the uslims of today have forgotten Islam and have fallen in "lehv o la'ab" which eans luxuries and enjoyments. As far as I can see, the poor Indian Muslims of oday can hardly afford any lehv o la'ab. I also do not believe that in the time f Haroon-al-Rashid the Muslims had less luxuries and enjoyments than the Indian uslims of today.

I think the main difference is that in those days the Muslims were more ducated than the other people of the time. The Muslims got hold of the Greek and oman knowledge. They studied all the available literature on Science, Mathmetics, hysics, Chemistry, Medicine, Botany, Zoology and Philosophy etc. They further eveloped these branches of learning. Ibne Sina, Ibnur Rushd, Al-Ghazali, l-Farabi, Al-Kindi, Ibnul Arabi, Ibne Tufail and others were the most educated ersons of their time in the whole wide world.

Muslims acquired uptodate knowledge of engineering. They further developed his knowledge. They made new advances in the sciences. They constructed most agnificent buildings, they laid roads, they made bridges on rivers and crossed hese. They took the hindasas from India. These are the 'international umerals' on which modern mathmetics rests.

Muslims were at the top in astronomy with the help of which they navigated nd mastered the seas. Muslims were the most successful traders and merchants. heir knowledge of geography and economics etc was extensive. When the Muslims ere educated and advanced the world lay at their feet.

When the Muslims became lethargic and lazy, when they lost education, when thers overtook them in science & technology etc., the Muslims became subjugated. hey were at the feet of the world. They were getting kicked about.

THE DANGER AHEAD

Every great religion, and Islam more than any other religion, advocates a ational and intelligent approach to life. This approach can only flow from roper education and proper understanding of the universe and its phenomenae. hen the first Sputnik went into space many ignorant mullas started shouting that his action is satanic. However, subsequently some more educated maulanas told s that the Holy Quraan itself contains certain ayat in which it is mentioned hat Allah has given man the ability to reach the Moon and the Stars. This shows hat ignorance and lack of education prevents an ignorant mulla from even under-tanding the Holy Quraan properly. What the ignorant Mulla called satanic an-ducated Maulana called Quraanic.

It is obvious, that in the fourth quarter of the 20th century no group of eople can exist without knowledge of modern science and modern techniques. In

सत्-सही,
हार सदाचार
और धर्म दो
दोनों में विशे
सदाचार वहां
जहां सदाचार

अब प्रश्न
सूत्र क्या हैं औ
है इसके लिए
पर विचार क
सदाचार-सूत्र
जाता है। अ
हैं १) यम औ
समझ लेने से
बात साफ हो
क्या अपना
जीवन सदा
१) यम :-
अहिंसा (ख
ब्रह्मचर्य और

अब इ

(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समा
किसी को
दूसरी ओर
भी लें। य
अधिक से अ
मिलावटा
समाज-रा
खिलवाड़
ऐसे हैं जो
पर लगा
विरुद्ध का
हिंसा है।
धर्म नहीं,

(ख)
कभी अस
कर्म सत्य
नैतिक क्षे
है। ज
सारी भू
सदाचा
है वै
उध्वंस्त
उठता
अवश्य
वार,
की प्र
आप
करूंग
अवश्य
सोपा
व्याप
भाष
बार
के
बोल

करने को, अ
अर्थ रखता

Once again, ...
cannot be expected to shoulder the
whole of this burden. Local inte-
rest and ...
and this movement could be
spearheaded by the Union of the
Rulers for the cultural and ...

the olden days men could just climb on trees and pluck some fruit and eat these because there were very few human beings and a lot of jungles and forests with many trees laden with fruit. However, today the people will not get food unless they adopt the latest agricultural techniques. Unless there is constant research carried on to improve seeds and fertilisers and increase yield per acre, all of us, even mullas, will be without food. And how can the Muslims offer namaaz unless they eat?

Unless botanists, zoologists, minerologists, geographers etc keep finding more sources of food, there will be no food left and people will die of hunger or they may start killing and eating each other. Even the mullas may get eaten up.

In fact we have come to the stage where the surface of the earth seems insufficient to provide for all our needs and requirements. We have to study oceanography, marine biology. We have to go deep into the ocean and from there we will get food for human beings. We will get other material with which we will make clothes and other articles to satisfy our daily needs. How will we do all this unless we learn the marine sciences?

Islam is a rational and modern religion. Islam certainly does not tell us that we should ignore this world and become tarik-ud-dunia. Islam clearly commands us to seek knowledge, to learn science to master modern techniques, to be most advanced, to take the world forward, to take humanity ahead.

COME AND TAKE IT

Islam tells us that we should enjoy the boons and blessings (n'emats) which Allah has given us. But how can we enjoy the n'emats which are there thousands of feet below the surface of the earth unless we know the science of mining & minerology? How can we enjoy the n'emats which are there in the depth of the ocean unless we learn oceanography? How can we enjoy the n'emats that may be there on the other planets & stars if we shun space-science as 'satanic'?

Therefore, if we take an intelligent view of religion we can only come to the conclusion that we must be modern and forward-looking. We must know as much as we can about this wonderful creation of Allah, the earth and then the universe. We must study the cells in the living beings. We must drill the earth. We must dive deep into the sea. We must fly high up in the air and in the space. We must go to the Moon and Mars and find out what is there on the stars and planets. A lot of n'emats of Allah are lying there. The greatest n'emat of Allah is the brains and intelligence which he has given to human beings. We must use our brains otherwise it will be kufran e n'emat which is a horrible sin. No, sorry. The greatest n'emat is the guidance Allah has given us through the prophet (peace be upon him a million times) who has told us to seek ilm. Rejecting this n'emat will be a deadly sin.

It is a pity that some persons have acquired a vested interest in the ignorance and backwardness of the Muslims. These elements somehow or the other manage to mislead the Muslims and keep them backward. They say that if any Muslim learns science he will cease to be a Muslim. They prevent Muslim children from going to schools. Are these fellows fools or knaves?

FEAR AND THEN LOVE

I think that it is absolutely false that a Muslim who learns science ceases to be a Muslim. I say that in the modern world to be true and better Muslims we must know more about the wonderful creations of Allah. We must know what Allah has hidden for us under the earth, deep in the seas and high up in space. We must find it with the help of the intelligence and brains which Allah, the kind and merciful, has given us. He who is ignorant of the creation of Allah and its many wonders and splendours, what will he understand about Allah? The more we know about Allah's kainaat, the more we will fear and love Allah. It is a fact that most of the persons who went up in space became ardent believers. They saw something (just a little bit) of the magnitude of the universe and that made them believe. The ignorant cannot even imagine how beauteous & wondrous the universe is.

....4/-

सत्-सही,
हार सदाचार
और धर्म दो
दोनों में विशे
सदाचार वह
जहां सदाचार

अब प्रश्न
सूत्र क्या हैं अ
है इसके लिए
पर विचार क
सदाचार-सूत्र
जाता है। अ
हैं १) यम औ
समझ लेने से
बात साफ हो
क्या अपनाने
जीवन सदा

१) यम :-
अहिंसा (ख
ब्रह्मचर्य और

अब इ

(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समाज
किसी को
दूसरी ओर
भी लें। य
अधिक से अ
मिलावटा
समाज-राष्
खिलवाड़
ऐसे हैं जो
पर लगा
विरुद्ध का
हिंसा है।
धर्म नहीं,

(ख)
कभी अस
कर्म सत्य
नैतिक क्षे
है। जब
सारी भू
सदाचा
है वै
उध्वंस्त
उठता
अवश्य
वार,
की प्रति
आप
करु
अवश
सोपा
व्याप
भाष
बार
के
बोल

करने का,
अर्थ रखता

whole of this burden. Local inte-
rest and ...
and this movement could be
spearheaded by the Union of the
Writers for the cultural ...

How utterly small and infinitesimal we human beings are ! Science shows us by giving us a glimpse of our insignificance. This realisation makes us fear Allah. And how powerful this insignificant, sub-minute particle can become by acquiring a little bit of ilm ! This realisation makes us love Allah.

We face the problems. We fear Allah. We seek and find the solutions. We love Allah.

As I have said earlier the ignorant mullas considered the Sputnik to be satanic. It is only the educated maulanas who could take a sensible view. Therefore, I say that the ignorant will be ignorant of the true meaning of Islam also.

The modern concept of education is that no one can know all. We have to select specific fields of education and share our knowledge with each other. The more we study the more we realise how shallow our knowledge is and then and only then that we grasp the meaning of the words that Allah is the only aalim, the only aleem. The ignorant consider themselves to be aalims. A mulla says: "I am farighut tehseel from darul uloom so & so."

Let us not defame Islam. Let not the world say that the Muslims are ignorant and backward. Let us show to the world that we are followers of the prophet (peace be upon him a billion times) who clearly commanded us to be educated and advanced. Let us remind the world that there was a time when the Muslims were the most educated and the most advanced people on the face of the earth. If we say this today half the world will not believe us. The other half will say: "we know, but what are you today?"

TO END JAHILIAT

Let us wash out the disgrace of illiteracy and ignorance from the Muslims. Until the Muslims are ignorant fools, everyone will only laugh when they call themselves khair ummat and talk about aqaamat e deen.

We must come forward in education. These things will not be done only by slogans. Consistent and persistent hard work has to be done. If we put a child in Class I this year he will pass the High School in ten years and graduation in fifteen years. We have already lagged behind by half a century. Let us try to make up for the lost time. Let us, in all sincerety pray: Rabbe Zedni Ilma (Lord, enhance my ilm)

No one will wait for us. If we do not rise and run with the world we will get left further behind. In fact we might even get trampled under the feet of the fast advancing caravan of life.

We have to get up. We have to catch up with the rest of the people. We have to surpass them, get ahead of them and then lead them and take them further forward faster.

Then the world will say ---- the Muslims lead, they are the khair ummat and Islam is the deen of aqaamat. Then we may be fit to call ourselves the real followers of Rahmatulil Alameen, for whom all praise is meant, peace be upon him ad infinitum.

Ahmad Rashid Shervani,
12-A, Connaught Place,
New Delhi - 110 001.

28.5.79

२

सत्-सही
हार सदाचा
और धर्म
दोनों में विशे
सदाचार वह
जहां सदाचार

अब प्रश्न
सूत्र क्या हैं
है इसके लिए
पर विचार
सदाचार-सूत्
जाता है।
हैं १) यम
समझ लेने से
बात साफ
क्या अपना
जीवन सदा
१) यम
अहिंसा (
ब्रह्मचर्य औ

अब इ
(क) अ
वाचाकर्मणा
परन्तु समा
किसी को
दूसरी ओर
भी लें। य
अधिक से
मिलावटा
समाज-रा
खिलवाड़
ऐसे हैं जो
पर लगा
विरुद्ध का
हिंसा है।
धर्म नहीं

(ख)
कभी अस
कर्म सत्य
नैतिक
है। ज
सारी भ
सदाचा
है वै
उर्ध्वस्त
उठता
अवश्य
वार,
की प्र
आप
करू
अवश
सोपा
व्याप
भाष
बार
के
बो

करने का,
अर्थ रखता

whole of this burden ... (ex...
rest and participation ...
and this movement could be
spearheaded by the Union of the
Rulers for the cultural ...

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है। ... कर्मण्यता और संवेदन शून्यता ... ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन ... लित है। हर क्षेत्र में लोग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पत्रांक : 912 दिनांक : 22-9-1983

प्रिय महोदय,

कुलपति महोदय, बरमिंघम में हुए 13वें राष्ट्रमण्डलीय सम्मेलन में भाग लेकर अभी-अभी लौटे हैं। आपकी सेवा में उनके कुछ संस्मरण प्रकाशनार्थ/उचित कार्यवाही हेतु प्रेषित हैं।

भवदीय

(डा. जबर सिंह सेंगर)
कुलसचिव

कुलपतिजी

...प्त करने के लिए अहिंसा, ... सार्वजनिक सम्पत्ति ... ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

१९७८

हीं हैं। र लाल ज्य की दिया। ने नहीं भूमिका संचार हमने लिया,

गई

समाप्त करना

ना बढ़कर

पड़ोस के तो करते शिक्षा-

क स्कूलों मुहल्ले ल देना विद्यार्थी, र निकलें बीमारी,

१२ वर्ष के ारी नौकरी ना चाहिए।

सत्-सही
हार सदाचा
और धर्म द
दोनों में विशे
सदाचार वह
जहां सदाचार

अब
सूत्र क्या
है इसके
पर विचा
सदाचार-
जाता है
हैं १) यम
समझ लेने
बात साप
क्या अप
जीवन
१) यम
अहिंसा
ब्रह्मचर्य

अब

(क
वाचाक
परन्तु स
किसी व
दूसरी
भी लें।
अधिक
मिलाव
समाज-
खिलव
ऐसे हैं
पर ल
विरुद्ध
हिंसा
धर्म न

(
कभी
कर्म
नैतिक
है।
सारी
सदाचा
है
उर्ध्वस्त
उठता
अवश्य
वार,
की प्र
आप
करें
अवश
सोपा
व्या
भाष
वा
के
बो

करने का,
अर्थ रखता

whole of this burden. Local inte-
rest and participation are needed
and this movement could be
spearheaded by the Union of the
Rulers for the cultural ...

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मृत्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ
कर्मण्यता और संवेदन शुन्यता
ना ढुंढने के लिए सहचिन्तन
लित है। हर क्षेत्र में लोग
ण्ठीत रखने के लिये भेद पर
पैदा कर रही है। वे जाति,
मे इस्तेमाल करने में नही
म करने लगी है। ऐसी हालत
ने का कार्य आचार्यों के अलावा

प्रेरक और पुरक है। जब
शव शक्ति प्रगट होती है।
धिकारों की छी नाझपटी
श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

यादी प्रश्न है। जैसे -
भारत का स्थान सम्पन्नता
ा? कैसी सुखी घी-दुध की

ों से बीस के बीच है।
।
है।
ने आप में चुनौती नही है?
ऊपर है और प्रति दस हजार

बढाते जाना क्या उचित है
नया और जापान के मुकाबले
विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
को पुरूषार्थ का अवसर

प्त करने के लिए अहिंसा,
सार्वजिनिक सम्पत्ति
ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

••2

PEOPLE'S FORUM OF INDIA

BHARTIYA LOK MANCH

The missing dimension in the edifice of democracy

CONSTITUTION & PROGRAMME

Chief Convener : GULZARILAL NANDA

१९७८
हीं हैं।
र लाल
ज्य की
दिया।
ने नहीं
भूमिका
संचार
हमने
लिया,
त उन-
। अब
जाये,
व वर्ष
प्राव-
संस्थायें
में वह
करते
चं है।
देते?
मेदारी
ो कम
संस्थायें

होंगे।
सरकारी
पब्लिक
न प्राप्त
इच्छा तो
निम्न
तक सब
महत्वाकांक्षी
भाषा हो,

भाषाओं के
मस्तिष्क पर
की भावना
सत्साहित्य से
ाई है। इससे
ाज तीस वर्ष
ण नहीं कर
ों की मार्केट
ाकों, लेखकों
ात्रा बढ़कर

पड़ोस के
तो करते
शिक्षा-

क स्कूलों
मुहल्ले
ाल देना
विद्यार्थी,
र निकलें
बीमारी,

१२ वर्ष के
ारी नौकरी
ना चाहिए।

PEOPLE'S FORUM OF INDIA

Sponsered by the MANAV DHARMA MISSION

CONTENTS

14-15, North End Complex,
Rama Krishna Ashram Marg,
Punchkuin Road,
New Delhi-110001

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कुतिक जीवन मृत्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ

CONSTITUTION & PROGRAMME

OF

The People's Forum of India

INTRODUCTION

Any one can see the heavy damage that has been done to the political and social fabric of the country by events in recent years. The situation has become a source of very deep concern to those who cherish the preservation of democratic institutions and have been looking forward to an era of economic and social well being in free India.

Doubts are being expressed as to whether there is any way of clearing the mess that has been created by the leadership of the nation and establishing health and sanity in the conduct of its affairs. It is clear also that without making the good of the nation and personal integrity, our touchstone, in all matters, it would not be possible to overcome the current crisis, lay the foundation of a new system which can withstand the strains of the conflicts inherent in the processes of democracy and ensure a steady advance towards the attainment of the accepted national goals.

In this context there has to be a clear recognition of the presence, and operation of two sets of factors and forces with which we have to reckon at every stage. They are related to the human mind on one side. and the social system on the other. The social situation at any time is n outcome of the interaction of the two. It will be well to attach equal mportance to both.

The social experience which a generation gathers and the moral and piritual influences at work on the human mind create the climate which etermines how any kind of social system will actually function. At the ame time the power structure and its foundations, the way those in uthority operate through the laws and other paraphernalia, the economic rganization, and the administrative framework in all spheres, set severe mits to the effectiveness of human initiative, to carve out new paths nd speed towards the goals ahead of man and society. The saving race lies in the fact that, in the last resort, initiative somehow rests the hands of Man.

The first call for the exercise of this initiative is, of course, to guard e freedoms which are the essential content of a real democracy. This so is the means for the attainment of a higher end—the quality of the iman being and the kind of society which he creates for himself, in der that he may move towards and realize his true destiny

कर्मण्यता और संवेदन शुन्यता
ना ढुंढने के लिए सहचिन्तन
लित है। हर क्षेत्र में लोग
ष्ठीत रखने के लिये भेद पर
पैदा कर रही है। वे जाति,
मे इस्तेमाल करने में नही
म करने लगी है। ऐसी हालत
ने का कार्य आचार्यों के अलावा

प्रेरक और पुरक है। जब
शव शक्ति प्रगट होती है।
धिकारों की छी नाझपटी
श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

यादी प्रश्न है। जैसे -
भारत का स्थान सम्पन्नता
?ं कैसी सुखी घी-दुध की

ों से बीस के बीच है।
।
है।

ने आप में चुनौती नही है?
ऊपर है और प्रति दस हजार

बढाते जाना क्या उचित है
नया और जापान के मुकाबले
विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
को पुरूषार्थ का अवसर

प्त करने के लिए अहिंसा,
सार्वजिनिक सम्पत्ति
ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो वित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

••2

हीं हैं।
र लाल
ज्य की
दिया।
ने नहीं
भूमिका
संचार
हमने
लिया,
न उन-
। अब
जाये,
व वर्ष

गई

प्राव-
संस्थायें
में बह
करते
र्च है।
देते?
मेदारी
ो कम
संस्थायें

होंगे।
सरकारी
पब्लिक
न प्राप्त
इच्छा तो

समाप्त करना

तक सब
महत्वाकांक्षी
भाषा हो,

भाषाओं के
मस्तिष्क पर
की भावना
सत्साहित्य से
ई है। इससे
ाज तीस वर्ष
ण नहीं कर
तों की मार्केट
कों, लेखकों
मात्रा बढ़कर

पड़ोस के
तो करते
शिक्षा-

स्कूलों
मुहल्ले
ल देना
विद्यार्थी,
र निकलें
बीमारी,

१२ वर्ष के
री नौकरी
ना चाहिए।

Today the path we are treading can take us no where near the goa
We are in fact moving away from it. Man is being dwarfed despite th
mounting record of his achievements. In the society built up around u
corruption, selfseeking, self indulgence and thoughtlessness prevail; an
are becoming a way of life. In such a society progress must slow dow
There can be no justice in it, and therefore no peace or happiness.

All this has to change and this is the revolution which the situatio
demands; but it will entail a phenomenal struggle. Let it not develo
into a class war. Let it not produce the horrors of violence and anarch
But that can be only if all those who value both freedom and righteou
ness in life take their positions and do their bit on the side of this gre
cause. Otherwise no body can vouch for what kind of future may
our fate.

An important step in terms of social action has therefore to be
vast campaign for creating widespread realization of what stakes, issu
and basic considerations are involved.

Here is an attempt to provide some answer to the questions whi
arise and to show that the people of India have it in their own hand
to exercise a check on the divisive forces at work and to arrest t
course of developments, which has pushed the country to the bri
of disaster.

This People's Forum of India which was sponsored by the Mar
Dharma Mission and formed in May, 1978 would, it is hoped, furnis
helpful approach, technique and programme to achieve these en
Wherever the message of the Forum has reached, it has evoked a po
tive response. Nucleii of Branches have already been formed in seve
States. This is a measure of the acceptance of the ideas embodied
the scheme that has been presented in the pages.

To sum up, the Forum has set before itself the followi aims :—

1. **To institute a course of direct enlightement for all the pe ple of India regarding the present situation and the pla for the future, through a net-work of cells or units at t bottom, and panels for writers and thinkers for the peo at the top;**
2. **To elicit opinion of [the] people, regarding all matters public interest;**
3. **To generate a consensus, which will be as wide and go far as possible, regarding problems and their solution;**

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरुषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

3

To explain and propogate the terms of a consensus as extensively as possible, and thus to create a powerful democratic force and sanction in the affairs of the nation;

To evolve methods and prepare instruments for the enforcement of the consensus.

For carrying out the programmes which emerge, the Forum will on behalf of the Manav Dharma Mission set up Manav Nirman Mandals and Lok Sewa Mandals, wherever its units and Branches are established. Moral education and training will at present be its principal activity for a Manav Nirman Mandal. The Lok Sewa Mandal will, in the beginning, devote itself largely to assistance in the implementation of plan for the Five needs of life, namely nutrition, lodging, clothing, education and health, provided as a birthright to every citizen of the country, upto the standard which is optimum, for growth towards values of life and not higher standards of living.

It has been envisaged that the field work for the redress of grievances will be taken up through a new formation—the Lok Sangh (People's Union). It will give organized and peaceful expression to the good sense and strength of the community, to secure justice for the people and protection of their rights. It can also be brought into play when any group or section of the community transgresses the norms and limits of legitimate protest, disturbs peace and creates a sense of insecurity among the people.

Something on the lines visualized here, is the immediate need of the hour. How soon we may achieve the desired advance and transformation will of course depend on how many of us are prepared to involve ourselves in this national endeavour, and make the modest contribution which it demands.

...th March, 1979

(G.L. NANDA)
(Gulzari Lal Nanda)

...कर्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन
...लित है। हर क्षेत्र में लोग
...ष्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पुरक है। जब
...शिव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छी नाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...ाड़ कैसी सड़ी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढ़ाते जाना क्या उचित है
...नया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
...ों को पुरुषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजिनिक सम्पत्ति
...ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो वित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

:९७८
...हीं हैं।
...र लाल
...ज्य की
...दिया।
...ने नहीं
...भूमिका
...संचार,
...हमने
...लिया,
...उन-
...। अब
...जाये,
...व वर्ष
...प्राव-
...स्थायें
...में वह
...करते
...चं है।
...देते?
...नेदारी
...ते कम
...स्थायें
...होंगे।
...सरकारी
...पब्लिक
...न प्राप्त
...इच्छा तो
...नि्म्न
...तक सब
...त्वाकांक्षी
...भाषा हो,
...भाषाओं के
...मस्तिष्क पर
...की भावना
...सत्साहित्य से
...ाई है। इससे
...ाज तीस वर्ष
...ण नहीं कर
...तों की मार्केट
...ाकों, लेखकों
...त्रा बढ़कर
...पड़ोस के
...तो करते
...शिक्षा-
...स्कूलों
...मुहल्ले
...ल देना
...विद्यार्थी,
...र निकलें
...बीमारी,
...२ वर्ष के
...ारी नौकरी
...ना चाहिए।

People's Forum of India

(BHARTIYA LOK MANCH)

CONSTITUTION & PROGRAMME

A call for revolutionary change and the way to a ne[w] social order.

PREAMBLE

An all pervading feeling of discontent and sense of despair sta[nds] out as the central fact of the current situation in India. Whether fu[lly] justified or not, it is by itself a portent of grave dangers ahead of us. [At] any rate, democracy in the country has been placed in serious jeopardy.

We have to reckon with this fact and find answers to the challen[ge]. What heightens the tragedy of the situation is that while there is acu[te] consciousness of the alarming and worsening situation in the country, [no] remedies have been offered, which may create hope and confide[nce] about the future. The crisis is aggravated by widespread apathy a[nd] cynicism about any earnest effort in the direction of a solution of [our] problems.

Political action, the political institutions and the leaders in t[his] field have failed to cope with the crisis. Their performance hitherto [has] added to the bitterness and pessimism among the people, has und[er]mined their faith in democracy, and has lowered its prestige in their mi[nds].

Above the political parties which come and go, we have the peo[ple] who are always there. They are, in every sense, vastly bigger than all [the] parties put together. It is the wisdom and power of the people al[one] which can become a solvent of the nation's intractable problems an[d a] safeguard against the grave risks of growth of anarchical conditions [and] collapse of the democratic system.

This will be a new vital force, which has not come into play [so] far. We have now become aware of this missing dimension in the edi[fice] of democracy. Processes have to be initiated to fill this gap.

The people have to be made aware of what they are up agai[nst], the problems and dangers with which the nation stands confronted n[ow] and what can be the ways to avoid these perils. They must know w[hat] their own role is in these circumstances and how they can ful[fil it] adequately.

The immediate task before us all is to discover the techniques to create the organization by which such awakening of the people

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मृत्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

5

)e accomplished, a common mind developed among them and the power :hus generated can be directed to the achievement of agreed purposes.

A great deal remains to be done to nourish the seeds of democracy ı the minds of the people and to create a favourable environment for heir growth and fructification. This must embrace ceaseless endeavour › foster moral, and social values, to promote social cohesion and nity among different sections of the community, and to develop methods nd traditions of peaceful settlement of disputes and differences in every vhere.

In essence, our endeavour has to be to adopt the Gandhian appro-ch towards the solution of our problems and to translate into practice nd make a reality of Mahatma Gandhi's concept of Trusteeship for ciety as a whole. For this it is essential to create appropriate mecha-,sms and a suitable climate. The people must be enlightened and ained for this momentous role, and for the discharge of this great sponsibility. Thus alone it will be possible to establish non-party overnance of the affairs of the country, in spirit, if not in form.

An understanding of the realities of the situation in the country nd the lessons of the national experience since the advent of Indepen-ence leads inevitably to the conclusion that the ailmants of the nation ll for radical measures, and changes of a revolutionary character in the litical, social and economic system of the country. If these have to be ought about on democratic lines, the approach, and organization tlined here become inescapable. It has to be a People's revolution. fact, peaceful transformation would not be possible, otherwise.

For creating and sustaining a new social order, a new institutional mework, and a new climate of thought and feeling are indespensable. ople's action and not laws of the State will be the mainstay of reform l change.

With this background, and for the realization of the aforesaid aims, Manav Dharma Mission has sponsered the setting up of the people's um of India, as an autonomous organization.

Name and Headquarters

The People's Forum of India, which may also be described as the artiya Lok Manch, shall have its headquarters at Delhi.

Objectives

It will be organized as a movement to achieve the following ctives :—

To bring about a real and effective democracy in the ntry by the two fold process of—

a sustained and unbiased course of direct enlightenment of the

र्मण्यता और संवेदन शुन्यता
ना ढुंढने के लिए सहचिन्तन
लित है। हर क्षेत्र में लोग
ण्ठीत रखने के लिये भेद पर
पैदा कर रही है। वे जाति,
मे इस्तेमाल करने में नही
म करने लगी है। ऐसी हालत
ने का कार्य आचार्यों के अलावा

प्रेरक और पुरक है। जब
शव शक्ति प्रगट होती है।
धिकारों की छी नाझपटी
श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

यादी प्रश्न है। जैसे -
भारत का स्थान सम्पन्नता
ा? कैसी सूखी घी-दुध की

ों से बीस के बीच है।
।
है।

ने आप में चुनौती नही है?
ऊपर है और प्रति दस हजार

बढाते जाना क्या उचित है
नया और जापान के मुकाबले
विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
ं को पुरूषार्थ का अवसर

प्त करने के लिए अहिंसा,
सार्वजिनिक सम्पत्ति
तो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

••2

people, primarily by means of a network of study and discussion ci[rcles]
in residential areas.

(b) Generating a consensus among the people and a climate of opi[nion]
aiming at the common good, which will become the overriding [force in]
the affairs of the nation and serve as a check on the misuse of pow[er by]
those in authority. This force can bring to bear on any situation [the]
mind and will of the people, so that a Government may be help[ed to]
withstand the pressures and counterpressures of vested or sect[ional]
interests and be not swayed from the right course. It will operate [as a]
check on the activities of anti-social or anti-national elements. [The]
Forum can also mobilize these people in support of plans and meas[ures]
of the State for their welfare and good.

(2) To secure the best use of the possibilities residing in [the] existing social system by :

(a) necessary reforms in every direction in keeping with the acc[epted]
moral standards and values, specially, in the matter of the law and [order]
situation, the rampart corruption and nepotism, and the denial of [fair]
deal in elections, in the legal processes, and the administration gen[erally].

(b) Initiating a process of planning from below, starting right [at the]
grassroots.

(c) People's self reliant effort and mutual help to become a gro[wing]
factor in their economic and social life, and in the progress of the n[ation]
through the development of their own initiative, organization [and]
leadership.

(3) To work out a blue print of a new social order root[ed in] India's cultural heritage, and attuned to the needs and cha[llen]ges of modern Society, which will :

(a) minister adequately to the material, moral and spiritual nee[ds of]
Indian Society;

(b) rid the country of every form of exploitation and injustice [and]
narrow down economic and social disparities to the utmost [extent]
possible ;

(c) ensure the best utilization of the human and material resour[ces of]
the nation, and

(d) provide fully for the satisfaction of the basic needs of every i[ndivi]dual in the country.

3. **Basic Principles**

(1) The creed of the Forum comprises the following five principles :

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

7

(i) *Democracy as a way of life :* Observance of the forms and loyalty to the values of democracy, giving faithful expression to the enlightened mind and will of the people.

(ii) *Peaceful Environment :* As a prerequiste for the exercise of the democratic rights of the people and for ensuring that the common man is not left at the mercy of anti-social elements and forces.

(iii) *Towards Unity :* The people, to be treated as one entity. To contain and eliminate areas of strife and sources of tension.

(iv) *Ethical Living :* To secure acceptance of the role of moral values and standards in achieving all desirable ends. This embraces an appreciation of the distinction between right and wrong, good and evil, as well as its expression and observance in thought, word and deed.

(v) *Political Morality :* The yardstick of simple honesty to be, applied to the life and doings of all in public life.

(2) The Forum will remain completely aloof from party politics, elections, and the pursuit of power.

4. The Forum will function as an autonomous body with the collaboration of associations which are in agreement with regard to its objectives and creed.

5. **Functions**

(1) The Forum is a national project for :

(a) continuous appraisal of the situation in the country.

(b) eliciting and cultivating public opinion, and providing enlightenment to the people, free from any bias or sectional commitment.

(c) developing and articulating as wide a consensus as possible in all matters of interest and concern to the people.

(d) Setting up of a countrywide system of communication and building cadres which are essential for the purposes of the Forum, and will be available and useful for the related activities as indicated in Schedule C :

(2) The scope of the functions of the Forum will be enlarged with the growth of experience, and of its capacity to undertake larger responsibilities.

6. **Tests and Criteria**

(1) In formulating its proposals and recommendations to the people

...र्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ना ढुंढने के लिए सहचिन्तन
...लित है। हर क्षेत्र में लोग
...ण्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पुरक है। जब
...शिव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छी नाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...ा? कैसी सुखी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढाते जाना क्या उचित है
...नया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
... को पुरूषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजिनिक सम्पत्ति
...तो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हमसें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

• • 2

...६७८

...हीं हैं।
...र लाल
...ज्य की
...दिया।
...ने नहीं
...भूमिका
...संचार
...हमने
...लिया,
...न उन-
...। अब
...जाये,
...व वर्ष (गई)
...प्राव-
...संस्थायें
...में बह
...करते
...र्च है।
...देते?
...म्मेदारी
...ो कम
...संस्थायें

...होंगे।
...सरकारी
...पब्लिक
...न प्राप्त
...इच्छा तो (समाप्त करना)
...निम्न
...ु तक सब
...हत्वाकांक्षी
...भाषा हो,

...भाषाओं के
...मस्तिष्क पर
...ा की भावना
...सत्साहित्य से
...ई है। इससे
...ाज तीस वर्ष
...ण नहीं कर
...तों की मार्केट
...ाकों, लेखकों
...मात्रा बढ़कर

...पड़ौस के
...तो करते
... शिक्षा-

...क स्कूलों
...मुहल्ले
...ल देना
...विद्यार्थी,
...र निकलें
...बीमारी,

...१२ वर्ष के
...ारी नौकरी
...ा चाहिए।

for discussion, it has to be ensured that they are in keepi with the objectives and Creed of the Forum, as laid down clause 2 and clause 3.

(2) Other criteria may be developed to help in evaluatio merits of various propositions, placed before the people.

The criteria approved so far, are :

A. - With regard to the economic situation and plans and policies f the future, the following considerations will provide help guidance.

(a) In respect of the claims for a share in the national product, simple test is the extent to which the Five Needs of Li namely, Nutrition, Lodging, Clothing, Education and Health a provided as a birthright to every citizen of the country up the standard which is optimum for the growth towards high values of Life and not higher standards of living.

(b) In order that this objective can take concrete shape, there h to be assured availability of goods and services on a corre ponding scale. This will require sustained economic growt Whatever comes up as an obstruction in its way has to b dealt with firmly.

(c) It is assumed, at the same time, that the fruits of progress w be channelled primarily for the realization of these aims, a there will be no room for exploitation, illegitimate gains a corrupt practices.

(d) There will be earnest efforts and campaigns to secure hone performance, discipline, hard work, and avoidance of waste.

B. A concomitant condition would be to make sure that promises a fulfilled and programmes are implemented fully at all levels administration, and none is allowed to get away with excuse It presuposes that promises and plans will be made on realist assumptions with full consciousness of the obligations incu rred. This is the test of fulfilment.

C. It has to be kept in view constantly that nothing will be allowe to happen which may impair the sovereignity and security of th nation. Patriotism and the spirit of sacrifice for the good of th nation to become the badge of the true citizen of India.

7. **Organization**

The organizational set up of the Forum has been designed to serv the following ends :

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

9

(1) Material of the best quality in the form of papers, notes, declarations etc. will be prepared for discussion in suitable form and language for dealing with important problems and various facets of the national situation.

(2) Channels of communication will be created for transmitting this material to the points where the people will engage themselves in discussion.

(3) To facilitate full and frank discussion and expression of views relating to various issues, groups of convenient size will be formed in residential areas and places of work, so that meetings can take place frequently without incurring expenditure of time and money on movement and facing difficulty in respect of accommodation.

Structure

(1) *Primary Units :* (a) Basically the Forum has to be a loose network of units of small size linked horizontally and vertically through a system of communication.

(b) A Unit is to be composed of not less than eleven members, one of them being its convener. The number of members in any unit should not be so large as to come in the way of adequate participation by all the members. There can be more than one unit in a local area.

(2) *Branches :* Besides the national centre located at Delhi, there will be Branches at State, District and other levels, to be constituted in accordance with the Rules framed by the Central Steering Committee.

(3) *Committees :* Committees may be set up for raising resources, dissemination of information, and any other defined purpose. The committees will be constituted on the lines laid down by the Central Steering Committee.

(4) *Panels of Thinkers and Writers for the People :* At the centre and at the level of the State Branches, Panels, will be constituted for different subjects or groups of topics. Those from among the members and others who have special knowledge of a subject or can make valuable contribution in relation to it, will be requested to join the appropriate panel. They can enlist the help of others who may not have joined the panel.

(5) *Special Teams :* (a) Well informed persons, who are familiar with the conditions and problems of a section of the community, and share the outlook of the Forum, will be chosen as members of a team for this section. They may also be invited

...र्मण्यता और संवेदन शुन्यता ...ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन ...लित है। हर क्षेत्र में लोग ...ष्ठीत रखने के लिये भेद पर ...पैदा कर रही है। वे जाति, ...मे इस्तेमाल करने में नही ...म करने लगी है। ऐसी हालत ...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पुरक है। जब ...शिव शक्ति प्रगट होती है। ...धिकारों की छी नाझपटी ...ृय आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे - ...भारत का स्थान सम्पन्नता ...ा? कैसी सुखी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है। ...। ...है।

...ने आप में चुनौती नही है? ...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढ़ाते जाना क्या उचित है ...नया और जापान के मुकाबले ...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय ...ों को पुरूषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा, ... सार्वजिनिक सम्पत्ति ...ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

to join in a representative capacity. Teams will be constit for various sections of the community, for the purpose of sultation regarding matters for consideration by the Forum.

(b) There will also be special teams for persons, connected social service organizations or other groups. They may individuals or in a representative capacity.

(6) *Collaborating organizations :* Steps will be taken to se coordination with the 'Collaborating organizations regar the formulations which are circulated for discussion wi view to achieving a consensus.

(7) *General Council :* There shall be a General Council at Centre, composed of members of committees, the conve of panels and special teams at the Centre and representat of State Branches chosen in the prescribed manner.

(8) *Conveners :* (a) A convener shall be appointed to serv primary unit. There will be a convener for a committee panel. The convener of a unit has to record and report proceedings of meetings of the unit and look after its work There may be joint conveners also, if necessary.

(b) There shall be a Chief Convener for the Forum, as a whole.

9. Members and Associates :

(1) Persons who become members of the Forum and join one or another have to accept the Creed which the Forum ado A member is expected to take an independent view of affairs of the nation without any bias or commitment, in fa of any sectional interest. He has to indentify himself whatever is good for the nation, and the welfare of the com nity as a whole.

(2) There will be no fixed fees, but members may contribute a regular basis or give ad hoc donations and enlist the sup of others for maintaining the organization and carrying ou programme. A member is expected to pay some amount e month. A member may pay in advance for a year or a sh period, the monthly contribution offered by him.

(3) Those who though agreeing with the purpose and broad roach of the Forum do not become members can join as a ciates, if they are prepared to help in promoting the organiza and activities of the Forum. They may attend meetings invitation.

10. Meetings :

(1) A Primary Unit should hold a meeting at least once in week. Seven shall be the quorm for a meeting of the Unit.

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

11

(2) The committees set up for the Centre and Branches shall meet at least once in a month.

(3) The General Council shall ordinarily meet once in a quarter.

(4) General Meetings : The members, associates and other persons, whether invited specifically by name, or generally may assemble to consider and discuss in accordance with the directions for this purpose, matters within the purview of the Forum. These meetings may be held within the area of a primary unit, or a Branch.

11. Programme

(1) **Consensus : (a) The Forum has to serve the need of developing a consensus regarding assessments about the national situation, appraisal of trends and developments, evaluation of plans and policies and desirable action touching any subject of interest for the nation or any section of it. It will deal with major problems as well as current issues and developments.**

(b) A list of topics is given in Schedule A to facilitate an immediate choice. The list will be enlarged and selection of topics will be made by the Central Steering Committee. A Steering Committee at the State level may, also include other topics for discussion, which may be of interest to a particular State.

(c) Branches at lower levels and primary units may choose topics of local interest for discussion. They will not form the subject of consensus for public declaration. At the weekly meeting of a unit events and developments in the area or in the rest of the country will be discussed. Regarding any matter of interest to the participants, they may indicate their approval or disapproval and if possible, the considerations on which their attitude is based. The difficulties encountered by the people in their own lives will also be the subject matter of deliberations with a view to immediate redress, as well as long term solutions.

(d) The discussions have to be on the basis of an agenda with a specific topic, for which there should be a note or a key paper. The points made by the members and the conclusions reached will be recorded briefly. The proceedings will be circulated to other units in the same area and a copy sent up to the office of the Forum of a higher level as specified.

(e) A paper prepared for the national centre will be circulated to Branches at lower levels, and will be made available to the primary units.

...कर्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन
...लित है। हर क्षेत्र में लोग
...ष्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पूरक है। जब
...शिव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छीनाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...ा? कैसी सूखी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढाते जाना क्या उचित है
...नया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
...ों को पुरूषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजिनिक सम्पत्ति
...ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

...१९७८

...हीं हैं। ...र लाल ...ज्य की ...दिया। ...ने नहीं ...भूमिका ...संचार, ...हमने ...लिया, ...त उन- ...। अब ...जाये, ...व वर्ष ...प्राव- ...संस्थायें ...में वह ...करते ...चं है। ...देते? ...वेदारी ...ो कम ...संस्थायें

...होंगे। ...सरकारी ...पब्लिक ...न प्राप्त ...इच्छा तो ...निम्न ...ु तक सब ...हत्वाकांक्षी ...भाषा हो,

...भाषाओं के ...मस्तिष्क पर ...की भावना ...सरसाहित्य से ...ई है। इससे ...आज तीस वर्ष ...ण नहीं कर ...ों की मार्केट ...ाकों, लेखकों ...मात्रा बढ़कर

...पड़ोस के ...तो करते ...शिक्षा-

...क स्कूलों ...मुहल्ले ...ल देना ...विद्यार्थी, ...र निकलें ...बीमारी,

...२ वर्ष के ...ारी नौकरी ...ना चाहिए।

(f) A paper or a note may also emanate from a Branch or a Un[it]. It will be taken up for consideration at the centre and th[e] State Branches, as the case may be.

(g) Arrangement will be made for compiling the outcome [of] discussion to reflect as accurately as possible, the views [of] the participants. The report will be referred back for examin[a]tion and consideration by those who had prepared the materi[al] so that the original formulations may be amended, if necessar[y] and answers may be provided for the arguments, doubts an[d] questions with which may have arisen during these discussion[s].

(h) Appropriate procedures will be adopted for making a declara[-] tion regarding a consensus, and bringing it to the notice of [a] the people and the authorities concerned.

(i) At the beginning, declarations of a consensus will be confine[d] to the national centre and the State Branches, and will emerg[e] as such only if there is a consensus in the steering committe[e] in favour of such a declaration. There will be no declaratio[n] of a consensus if the number of those in favour of a proposi[-] tion fails short of three-fourth of those who have participate[d] in the discussion.

(j) It will be a part of the programme of the Forum to adop[t] other useful methods of ascertaining the attitude, views an[d] wishes of the people regarding any specific question. Question[-] naires may be drawn up and issued to selected persons fo[r] answers which may be compiled, analysed and utilised fo[r] circulation.

(k) At different levels, meetings will be organized in rural as wel[l] as urban areas to acquaint the people with the facts of the situation, the nature of the problems and the pros and cons of various issues with which the community is confronted. A unit may itself try to involve small groups in this process in the area of its operation.

(2) National Goals : Besides the objectives and the creed and criteria accepted by the Forum, approved national goals will be kept in view, while considering any proposal for discussion and recommendations. A tentative list of such goals is given as Schedule B.

Other Programmes

12. The interrelation of the activities of the Forum, and the other programmes of the Manav Dharma Mission is brought out in the synoptic view in Schedule C.

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ

...र्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन
...लित है। हर क्षेत्र में लोग
...कुण्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

13

13. *Rules :* Rules will be framed by the Central Steering Committee regarding procedures and other matters in pursuance of the provisions of the Constitution.

14. *Transitional Arrangements :* During the period, till, essential arrangements have been made in accordance with the provisions of the Constitution, the Chief Convener will take the necessary steps in accordance with directions of the Steering Committee at the Centre.

15. Changes in the Constitution : (1) The five elements of the Creed in clause (2) shall remain intact permanently. (2) Any substantial alteration in the provisions relating to objectives (Cl 2,), Functions (Cl 5) and National Goals 11 2) shall be on the basis of a consensus in terms of Cl 4.

SCHEDULE A

SUBJECTS FOR DISCUSSION

1. The National Situation and the role of the people.
2. Deficiencies of the existing social system and what should be the basic features of a new social order keeping in view the trends of future development.
3. Functioning of political parties or groups and their mutual relations to ensure that this strengthens democratic institutions and accelerats the progress of the country.
4. Electroral Reforms.
5. Centre and State relations.
6. Administration in relation to the day to day the life of the citizen.
7. Corruption in public life.
8. Violence in public life.
9. The citizen and the administration of justice.
10. Student unrest.
11. Educational Reform.
12. Availability of employment opportunities—their expansion and distribution.
13. The appropriate organization, methods and approach for the development of the rural areas and the betterment of the rural community, at the optimum level. Application of the principles and technipues of planning at the grassroots.
14. Rights, responsibilities and contribution of the working class and employers in the framework of the national goals.
15. Problems and protection of consumers.

...प्रेरक और पुरक है। जब
...शिव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छी नाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...राष्ट्र कैसी सुखी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढाते जाना क्या उचित है
...नया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
...ों को पुरूषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजनिक सम्पत्ति
...तो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

हीं हैं। / र लाल / ज्य की / दिया। / ने नहीं / भूमिका / संचार / हमने / लिया, / त उन- / । अब / जाये, / व वर्ष / प्राव- / संस्थायें / में बह / करते / थे है। / देते? / मेदारी / े कम / संस्थायें / होंगे। / सरकारी / पब्लिक / न प्राप्त / इच्छा तो / ... तक सब / इत्वाकांक्षी / भाषा हो, / भाषाओं के / मस्तिष्क पर / की भावना / सत्साहित्य से / गई है। इससे / राज तीस वर्ष / ण नहीं कर / तों की मार्केट / लकों, लेखकों / मात्रा बढ़कर / पड़ोस के / तो करते / शिक्षा- / क स्कूलों / मुहल्ले / ...ल देना / विद्यार्थी, / र निकलें / बीमारी, / १२ वर्ष के / ारी नौकरी / ना चाहिए।

SCHEDULE B

NATIONAL GOALS

1. To provide the Five Needs of Life namely, Nutrition, Lodgi Clothing, Education and Health as a birthright to every citizen country up to the standard which is optimum for their growth towa higher values of life and not higher standards of living, particularly those who are unemployed by virtue of being unable to get jobs tempo rarily or permanently and unemployables such as orphans, invalid widows etc.

2. Progressive rise in the material well being of the people. achieve the largest measure of economic equality as among individu groups and regions. To formulate polices and programmes regarding pro duction, employment, prices, incomes, and taxation, to achieve the ends.

3. To make India an intrinsically strong nation, earning a good nam and respect throughout the world by rendering service of a high ord to the people and by fulfilling its obligations to the world community.

4. All round peace and security, and full observance of the rule law.

5. To ensure that those discharging any function of administratio give due consideration, fair treatment and prompt attention to eve citizen. The ideal of selfrule to be translated through different forms an degrees of decentralization.

6. Freedom guaranteed by the Constitution to be a reality in th day to day life of the citizen, reflecting all the values of democrac Society will be organized on a cooperative and decentralized basis.

7. Elimination of corrupt practices, illegitimate gains and exploita tion, in any form.

8. To create a good society, in which social, economic and poli tics life bears the impress of India's high cultural tradition and tim honoured moral values. Stress has to be laid on building character of th people, especially of the younger generation. Righteousness, Freedom Integration, Productivity and the principle of Trusteeship may be counte as pillars of a good society.

9. By State action and efforts of the people, to secure and protec human rights and human dignity without discrimination.

10. To identify the enemies of the people, i.e, whosoever an whatsoever olstructs the realization of the aforesaid aims, and to figh these avils relentlessly with the power of the people, specially the force o enlightened public opinion, deployed in conformity with the principle adopted by the Forum.

For their accomplishment, the tasks we have set before ourselve

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

...कर्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ना ढूंढने के लिए सहचिन्तन
...नत है। हर क्षेत्र में लोग
...ष्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पुरक है। जब
...शव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छी नाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...ाः कैसी सूखी घी-दूध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढाते जाना क्या उचित है
...नया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
...ों को पुरूषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजिनिक सम्पत्ति
...ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

15

...quire intense and sustained effort over a considerable period, bnt it can ...e depended on to pay rich dividends.

SCHEDULE C

OTHER PROGRAMMES

The People's Forum aims at devoloping a consensus among the ...eople regarding the problems and issues confronting them from day to ...ay. This will help to generate a climate of opinion which will strengthen ...e democratic elements and forces in the country and improve the ...hances of the common man to obtain a fair deal at the hands of the ...dministration and other centres of power. It will also secure a construc-...ive response from the members of the community, in respect of the ...emands of the nation.

But all this can only meet a part of the challenges, we are facing ...oday. There will remain grounds and occasions for collective activity to ...rotect the freedoms of the people. and rid the nation of exploitation, ...orruption and social oppression. This lies outside the scope of the ...eople's Forum as such. The Forum is one of the three wings of the Manav ...harma Mission, the other two being—Lok Vikas (All round human devo-...opment) and Lok Sangh (People Union). Lok Vikas comprizes two ...epartments : Manav Nirman and Lok Sewa. Lok Sangh can become a ...owerful instrument for the use of organised strength of the people, to ...age a war against these evils, and to obtain redress of tho grievances of ...e people by non-violent action on the lines laid down by Mahatma ...andhi, the People's Unions, too, will remain completely aloof from ...arty politics, elections and the pursuit of power.

MANAV DHARMA MISSION

(A SYNOPTIC VIEW)

The Mission has to strive for the establishment of a social order in ...which every indvidual has equal opportunity and adequate means for the ...ursuit of happiness and all round development. The social system which ...as been functioning in our country, over a long stretch of years, has ...roved to be incapable of achieving this goal. Nothing short of a revo-...utionary transformation will open the way for the fruition of this aim. ...or this purpose, broadly speaking, there are two distinct appro-...ches, which lead to divergent courses. One of these, views the nature ...of society and the destiny of man, purely, in terms of materialism. For ...most people in this country, this is an unacceptable ideal. The only alter-...native is the concept of a good society, which rests on moral foundations, ...and, while striving for the requisite degree of material well being, is ...eared to serve the spiritual ends of man. The human being is meant to ...make the fullest use of his talents and faculties for his own good and

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेत ना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो चित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

••2

...१९७८

...हीं हैं। ...र लाल ...ज्य की ...दिया। ...ने नहीं ...भूमिका ...संचार ...हमने ...लिया, ...उन-... अब ...जाये, ...व वर्ष ...प्राव-...संस्थायें ...में बह ...करते ...चं है। ...देते? ...नेदारी ...कम ...संस्थायें

...होंगे। ...रकारी ...पब्लिक ...न प्राप्त ...इच्छा तो ...निम्न ...ु तक सब ...हत्वाकांक्षी ...भाषा हो,

...भाषाओं के ...मस्तिष्क पर ...की भावना ...सत्साहित्य से ...ई है। इससे ...ज तीस वर्ष ...ण नहीं कर ...तों की मार्केट ...कों, लेखकों ...ात्रा बढ़कर

...पड़ोस के ...तो करते ...शिक्षा-

...स्कूलों ...मुहल्ले ...ख देना ...विद्यार्थी, ...र निकलें ...बीमारी,

...२ वर्ष के ...ारी नौकरी ...ा चाहिए।

that of society, to discharge his moral and social obligations, rea
that the happiness of every individual is of equal importance to his
and to attain the true purpose of human existence, through rising
of consciousness. To succeed in this, he has to grow in moral stre
The adoption of the principles of Manav Dharma Mission, therefo
mains the only basis for the creation of a new economic, social
political system in this country. Keeping this in view, the Manav Dh
Mission has been brought into being to spread the message of Dha
to establish the ascendancy of moral and spiritual values, and to
state Dharma in the lives of the people.

There are three Divisions of the Mission :

Bhartiya Lok Manch : Manav Vikas : Lok Sangh :

1. Bhartiya Lok Manch (People's Forum of India) :
(For a real and effective democracy)

It is a project for eliciting enlightening and cultivating public
nion, on all important matters of interest and concern to the people.

It will engage itself in continuous endeavour to develo wide a consensus as possible around these issues. It will t become possible to bring to bear on the processes of decis making at the level of authority, and individual or collec action on the part of the people a clear and powerful express of their common mind in respect of all vital questions of pu interest.

II. Manav Vikas (All round human development)

It has two Department : Manav Nirman (Human Transf mation) and Lok Sewa (Service of the people).

Mandals will be constituted for carrying out the programmes un these following two heads :

A. Manav Nirman : The Mission is concerned primarily w the transformation of the outlook and conduct of the peo so that a way of life may emerge which is in keeping with social norms and moral values. This department embraces t following activities :

1. To build up national character and strengthen the moral fibre the people, with the help of Satsangh, Shiksha and Sahitya. Mo education & Training is the most important weapon for use in this field
2. To create a good society through reform with regard to soc practices, customs, traditions, festivals and the working of religio institutions.
3. The Bhartiya Sanskriti Kendra. To arrange for research, hig studies and training for the discovery and application of the principle values, truths and insights enshrined in the cultural heritage of India.

The Manav Dharma Parishad stands at the top of the structure

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है।

the Mission, in order to lay down principles and policies and give general guidance and help regarding the programmes that are undertaken.

B. Lok Sewa Mandal :

It is a function of the Mission to provide avenues of service of the poeple. Among them are, relief of distress, and mobilization of the community for protection against anti-social elements.

The foremost aim of this Mandal is to undertake a campaign for implementing the plan for providing the Five Needs of life as a birthright to every citizen of the country up to the standard optimum for the growth towards higher values of life and not higher standards of living, particularly to those who are unemployed by virtue of being unable to get jobs temporarily or permanently and unemployables such as orphans invalids, widows etc.

III. Lok Sangh (People's Union) :

A. Lok Sanrakhshan (Assistance in the redress of grievances) The grievances for redress may relate to acts of omission and commission of the States, Public bodies and others.

B. Lok Satta (Sanctions of the People) :

When the normal means of redress fail, the community may be called upon to bring to bear its organized strength (Lok Satta) on the solution of the problems, and the removal of the obstacles, on the lines and principles laid down by Mahatma Gandhi. The Mission will then function as the People's Union.

The Mission will remain completely aloof from party politics, elections and the pursuit of power.

GULZARILAL NANDA
President
MANAV DHARMA MISSION

Printed at Alka Printing Press, 900/2, Gurdwara Road, K.M. Pur, New Delhi-3

...र्मण्यता और संवेदन शुन्यता
...ा ढूंढने के लिए सहचिन्तन
...लित है। हर क्षेत्र में लोग
...ष्ठीत रखने के लिये भेद पर
...पैदा कर रही है। वे जाति,
...मे इस्तेमाल करने में नही
...म करने लगी है। ऐसी हालत
...ने का कार्य आचार्यों के अलावा

...प्रेरक और पूरक है। जब
...ाव शक्ति प्रगट होती है।
...धिकारों की छीनाझपटी
...श्य आकांक्षाओं के गुलाम न

...यादी प्रश्न है। जैसे -
...भारत का स्थान सम्पन्नता
...ाइ कैसी सुनी घी-दुध की

...ों से बीस के बीच है।
...।
...है।

...ने आप में चुनौती नही है?
...ऊपर है और प्रति दस हजार

...बढ़ाते जाना क्या उचित है
...लया और जापान के मुकाबले
...विद्यालयों के लिए चिन्तनीय
...ो को पुरुषार्थ का अवसर

...प्त करने के लिए अहिंसा,
... सार्वजनिक सम्पत्ति
...ो शिक्षण का क्या वर्चस्व

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेतना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो वित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

२

सत्-सही
हार सदाचा
और धर्म
दोनों में वि
सदाचार व
जहां सदाचा

अब
सूत्र क्या
है इसके
पर विच
सदाचार
जाता है
हैं १) य
समझ ले
बात सा
क्या अ
जीवन
१) य
अहिंसा
ब्रह्मचर्य
अ
(
वाचाक
परन्तु
किसी
दूसरी
भी लें
अधिक
मिला
समाज
खिल
ऐसे है
पर ल
विरुद
हिंसा
धर्म

कभी
कर्म
नैतिक
है। ज
सारी
सदाच
है
उध्वंस
उठता
अवश
वार,
की प्र
आप
करू
अव
सोप
व्या
भा
बा
के
बो
करने का,
अर्थ रखता

cannot be expected to shoulder the
whole of this burden. Local inte-
rest and participation
and this movement could be
spearheaded by the Union of the
...

आचार्यकुल की उपादेयता

भारत में सांस्कुतिक जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हैं। प्रकृति से ऊपर उठकर हमनें जो विकास किया, उसमें सर्वत्र पुरूषार्थ उजागर रहा है। लेकिन अब स्थितियाँ बदल गयी है। राष्ट्रव्यापी जड़ता, उदासीनता, अकर्मण्यता और संवेदन शुन्यता देखकर लगता है हम कहीं भटक गये है। इसमें से रास्ता ढुंढने के लिए सहचिन्तन आवश्यक है। आज सारा समाज राजनीति से परिचलित है। हर क्षेत्र में लोग राजनीतिज्ञों का मुंह देखते है, जो कि स्वयं को प्रतिष्ठीत रखने के लिये भेद पर भेद खड़ें करते जा रहे है। विभीन्न पार्टियाँ अलगाव पैदा कर रही है। वे जाति, धर्म-सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त आदि को साधन के रूप मे इस्तेमाल करने में नही झिझकते - इस से जोड़ने वाली शक्तियाँ तोड़ने का काम करने लगी है। ऐसी हालत में कर्वव्यों के प्रति जागृति एवं प्रयत्न के लिए प्रेरणा देने का कार्य आचार्यों के अलावा कौन कर सकता है?

विनोबा जी कहते हैं कि आचार्य शक्ति तारक, प्रेरक और पुरक है। जब तारक और प्रेरक शक्तियाँ सम्मिलित हो-ती है तो शिव शक्ति प्रगट होती है। बिना शिव के न सत्य टिकता है, और न सुन्दर। अधिकारों की छी नाझपटी को रोकने की क्षमता केवल शिव में होती है, जो अदृश्य आकांक्षाओं के गुलाम न होकर दुर्दमनीय व्यक्तित्व के धनी होते है।

वर्तमान परिस्थिति में समाज के सामने कई बुनियादी प्रश्न है। जैसे -
1 गरीबी मिटाने की बात ही लें। विश्व में भारत का स्थान सम्पन्नता की दृष्टि से 111वा है। कहां गयी सोने की चिडिया? कैसी सूखी घी-दुध की नदियाँ?

- 24 करोड लोगों की मासिक आय दस रूपयों से बीस के बीच है।
- 16 करोड की आय बीस से तीस के बीच है।
- 14 करोड की आय तीस से पचास के बीच है।

जीवन स्तर उठाने वालो के सामने क्या यह अपने आप में चुनौती नही है?

मात्र दस हजार में से एक की आय पांच सौ से ऊपर है और प्रति दस हजार में एक की आय पांच हजार से अधिक है।

ऐसी हालत दिखावा, प्रदर्शन और जीवन स्तर बढाते जाना क्या उचित है

-धान की प्रति एकड़ उपज स्पेन, आस्ट्रेलिया और जापान के मुकाबले 80 प्रतिशत कम है क्या यह कालेजों और कृषि विश्व विद्यालयों के लिए चिन्तनीय सवाल नही है:? जय जवान जयकिसान कहने वाले युवकों को पुरूषार्थ का अवसर देने के लिए व्यवहार में क्या किया जा सकता है।

गरीब देश में अपनी मांगे रखने और अधिकार प्राप्त करने के लिए अहिंसा, लोकतंत्र और बुद्धि निष्ठा के मुल्यों को अस्वीकार कर सार्वजिनिक सम्पत्ति को नष्ट करना जायज है? विकल्प नही खोजा गया तो शिक्षण का क्या वर्चस्व रह जायेगा?

खाने में मिलावट, काम में अरूचि, अनुत्पादक व्यवसायों में इजाफा और जन आवश्यकताओं के बारे में अज्ञान होने से जो संकट पैदा हुआ है उस से बचने-बचाने की कीमिया ही हममें चेत ना, उत्साह, कर्मठता और सहृदयता का संचार कर सकती है। इस के लिए आचार्य कुल ऐसा मंच है जो वित्त, चिन्तन और चरित्रको रचनात्मक दिशा दे रहा है। अब सामुहिक तौर पर नये क्षितिज खोलने हेतु आप

..2

का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है ताकि विभिन्न स्तरों पर उठने वाले सवालों का समाधान हो और परमार्थमूलक सांस्कृतिक मूल्य प्रतिष्ठित रहें।

- -

8 दिसम्बर 1979.

" आचार्यकुल,"
ब्रह्मविद्या मंदिर, पवनार (वर्धा)

देहाती शिक्षा

श्री बलभद्र कुमार, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हम लोग देहाती शिक्षा की बात तो करते हैं। पर हम हैं कौन देहाती शिक्षा की बात करने वाले ? खुदाई फौजदार, जो हर पवनचक्की को दानव समझ कर उस पर हमला करने को तैयार हैं। पिछले तीस बरस से हम ऐसे ही कितने हमले कर चुके हैं, परन्तु हुआ क्या ? हवा में तलवारें चलाकर हम समझते रहे कि हमने दुश्मन फतह कर लिया।

बहुत पहले एक ऋषि ने कहा था, हकीम जी ! अपना ही इलाज कर लो तो काफी है। क्या वही नुसखा हम पर लागू नहीं होता ? हमारा किसी अन्य तबके को सुशिक्षित करने का अधिकार ही क्या है ? शिक्षा तो वह प्रदान करे जो स्वयं शिक्षित हो। अन्धा अन्धे को क्या राह दिखायेगा ? जरा अपने से पूछो, क्या हम स्वयं सुशिक्षित हैं ? क्या हम में सुशिक्षित व्यक्तियों के गुण हैं ? आज देश के ११४ विश्वविद्यालयों में से [illegible] अराजकता, अव्यवस्था, उपद्रव के कारण बन्द पड़े हैं। शिष्यों और गुरुओं में, गुरुओं और कर्मचारियों में, गुरुओं और प्रबन्धकों में, गुरुओं और गुरुओं में तनाव है। लाठियाँ चलती हैं, डण्डे चलते हैं। महीनों परिसरों में पुलिस पड़ी रहती है। वह भी गुण्डों से डरती है। निरी तमाशबीन की तरह खड़ी दिलचस्पी से, चस्के से नाटक देखती रह जाती है, तटस्थ, पंगु। अध्ययन-अध्यापन करने वाले ब्राह्मण, गुरुजन ऐसे वातावरण में क्या पढ़ाई-लिखाई करें ? वह गुण्डों के आतंक से निष्पौरुष हो जाते हैं या फिर परिसर छोड़ जाते हैं और चक्कर लगाते हैं, राजाओं के दरबारों के, रक्षा-याचन करते हुए, जैसे विश्वामित्र गये थे राजा दशरथ के दरबार में। यह तो हुआ एक दृश्य।

अब देखिये, दूसरा दृश्य। जहाँ और जब शहरी शिक्षा संस्थायें चल भी रही हैं, तो किस प्रकार ? एक ओर अमीरों के, रईसों के स्कूल हैं। चुस्त स्कूली ड्रेस पहने विद्यार्थी मोटरों में, बसों में चढ़कर स्कूल पहुँचते हैं, गिट-पिट, गिट-पिट करते हुए विदेशी तौर-तरीके से एक दूसरे को राम राम कहते हैं और जुट जाते हैं, इस समाज के "चूहा दौड़", "कुर्सी युद्ध" के लिये अपने को तैयार करने में। दूसरी ओर अनगिनत बच्चे, फटे पुराने कपड़ों में अपनी ठंड और गरीबी दबाते, छिपाते हुए, बदहाल पहुँचते हैं टूटे-फूटे फर्नीचररहित स्कूलों में और रटने लगते हैं, सी ए टी 'कैट', बी ए टी 'बैट', "बी" से ब्लेक शीप तैयार किया जा रहा है, उनको कोल्हू के बैल बनने के लिये।

फिर एक और दृश्य। ऐसे स्कूलों से निकले हुए बच्चे साइकलों पर ट्रांजिस्टर लटकाये घूम रहे हैं, पान-बीड़ी की दुकानों पर छोटे-छोटे गिरोह बनाकर खड़े हैं, सिनेमाघरों के बाहर लम्बे-लम्बे 'क्यू' बनाकर खड़े हैं। उनके गरीब माता-पिता घुटनों तक पानी भरे खेतों में कमरें झुकाये धान रोप रहे हैं, बाजारों, मण्डियों में ठेले ढो रहे हैं।

एक और दृश्य। जयपुर की सुन्दर गुलाबी नगरी। तिलक नगर का संभ्रान्त मुहल्ला। विश्वविद्यालय की छाया में बसा हुआ उपनगर। सड़कों पर कूड़े कचरे के ढेर। सुअरों के बच्चे, और इन्सान के बच्चे उन ढेरों में खाद्य पदार्थ चुनते हुए। इकट्ठा एक-साथ खाते हुए, एक साथ खेलते हुए। "आत्मा वै सर्वभूतेषु" का जीता-जागता नमूना।

फिर एक और दृश्य। पार्लियामैंट स्ट्रीट की कचहरियां। देशी-विदेशी से खचाखच भरी हुई। पर महीनों से कूड़ा कर्कट नहीं उठा। सफाई नहीं हुई। नई दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी कहती है, यह डिप्टी कमिश्नर का कार्य है। डिप्टी कमिश्नर कहता है, यह डिस्ट्रिकट जज का काम है। डिस्ट्रिकट जज कहता है यह म्युनिसिपल कमेटी का काम है। पत्राचार में मोटी-लम्बी फाईल पैदा हो गई है। कचरा बदस्तूर बढ़ता जा रहा है।

तो फिर हम क्या करें ?

मैंने अभी हाल में श्री जे० पी० नायक द्वारा तैयार किया हुआ शिक्षा-सम्बन्धी नोट देखा है। उसकी प्रायः सभी बातों [illegible] करूंगा। हाँ, मुझे उनकी अन्त में दी गई आन्दोलन की बात समझ में नहीं आई। यदि आन्दोलन मे अभिप्राय जुलूसबाजी, नारेबाजी से है, तो इससे समस्या हल होने वाली नहीं है। यह तो 'डाइवर्शिनरी' खेल होगा। हमें देहाती शिक्षा के महान् कार्यक्रम को सिरे चढ़ाने के लिए देहाती संस्थाओं को सुगठित करना होगा। हमारे पास वह तंत्र मौजूद है भी लेकिन हम शहरियों ने अपनी खुद-गर्जी के वश होकर उसे पनपने नहीं दिया और कहते हैं कि देहातियों में अपनी संस्थायें चलाने की क्षमता नहीं है। ठीक वैसे, जैसे अंग्रेज हमें स्वराज्य के योग्य नहीं समझता था, हम समझते हैं, देहाती भी स्वराज्य के योग्य नहीं हैं। आज से १९ वर्ष पहले राजस्थान के नागौर नगर में पं० जवाहर लाल नेहरू ने बड़े ढोल, दमामे, बाजे, नक्कारों के साथ देश में पंचायती राज्य की ज्योति जगाई थी, लेकिन हमने उसे पर्याप्त तेल न देकर चमकने नहीं दिया। किसी न किसी बहाने, हमने दोबारा पंचायती संस्थाओं के चुनाव होने नहीं दिये। चुनाव भी सार्वजनिक शिक्षा के कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वक्त पर चुनाव होते रहें तो शासन-तन्त्र में नये रक्त का संचार होता है, नई चेतना, नया उत्साह, नये संकल्प उजागर होते हैं, लेकिन हमने देहाती क्षेत्र में ऐसा नहीं होने दिया। शहरियों ने तो स्वराज्य प्राप्त कर लिया, वे ऊँचे-ऊँचे सिंहासनों पर आरूढ़ हो गये, परन्तु स्वराज्य की गंगा बस उन-की जटाओं में उलझ कर रह गई। उसका गांवों में अवतरण नहीं हुआ। अब हमारा ध्यान इधर गया है जरूर। लेकिन यह गंगा फिर कहीं उलझ न जाये, इसके लिये आवश्यक है कि जैसे संसद और विधान सभाओं के हर पाँच वर्ष में चुनाव करने की बात संविधान में रखी जाने वाली है, इसी तरह का प्राव-धान पंचायती राज्य संस्थाओं के बारे में भी होना चाहिए। तभी यह संस्थायें पनपेंगी, गाँवों को नया ग्रामीण नेतृत्व उपलब्ध होगा और उस प्रवाह में बह जायेंगे, अज्ञान, निरक्षरता, उदासीनता, बेबसी। नुक्ताचीन लोग बात करते हैं, वित्तीय साधनों के अभाव की। सच पूछिये, तो यह जबानी जमा खर्च है। क्यों नहीं हम राजस्व की समूची आय पंचायती संस्थाओं के हवाले कर देते, साथ में हम उन्हें ग्रामीण स्तर की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संस्थाओं की जिम्मेदारी भी दे दें, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे इन्हें योग्यता से चलायेंगे, कम से कम उतनी योग्यता से तो जरूर जितनी योग्यता से हम शहरी लोग अपनी संस्थायें चला रहे हैं।

इसके साथ ही हमें कुछ और क्रान्तिकारी कदम भी उठाने होंगे। विशेषकर नागरिक क्षेत्र में। हमें पब्लिक स्कूलों और साधारण सरकारी स्कूलों का अन्तर कम करना होगा। ठीक है कानूनन हम तथाकथित पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध नहीं लगा सकते। लेकिन आज जो इन्हें सम्मान प्राप्त है उतना ही सम्मान हम साधारण सरकारी स्कूलों को भी देने की इच्छा तो प्रकट करें। इसके लिए हमें पांच निर्णय लेने होंगे।

क्या हम इस बात के लिये तैयार हैं कि १२ वर्ष तक की आयु तक सब पठन-पाठन क्षेत्रीय भाषाओं में हो और जिन बच्चों के माता-पिता महत्वाकांक्षी हों, उनका अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि कोई भी विदेशी भाषा हो, उसमें प्रवेश १२ वर्ष की आयु के बाद ही आरम्भ हो।

दूसरे, अब वक्त आ गया है कि हम देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं के लिये एक ही लिपि अपनाने की बात करें। इससे जहाँ बच्चों के मस्तिष्क पर भिन्न-भिन्न लिपियाँ सीखने का बोझ नहीं पड़ेगा, वहाँ देश में एकता की भावना प्रबल होगी, एक प्रदेश के विद्यार्थी, शिक्षार्थी, दूसरे प्रदेश के सत्साहित्य से लाभ उठाने की स्थिति में होंगे। मराठी ने देवनागरी लिपि अपनाई है। इससे मराठी की कोई हानि हुई हो, मुझे तो उसका ज्ञान नहीं है। आज तीस वर्ष के बाद भी हम अपनी भाषाओं में शिक्षा देने के लिए ग्रन्थ निर्माण नहीं कर सकते, इसका एक कारण यह भी है कि प्रादेशिक लिपियों के ग्रन्थों की मार्केट सीमित है। यदि सभी भाषाओं की एक ही लिपि हो जाय तो प्रकाशकों, लेखकों को विस्तृत मार्केट उपलब्ध हो जायेगी और उनके लाभ की मात्रा बढ़कर उनकी उत्साहवृद्धि होगी।

तीसरे, सभी बच्चों का, चाहे गरीब हों, या अमीरों के हों, पड़ौस के मुहल्ला-स्कूलों में ही दाखला हो। हम कृष्ण सुदामा की बात तो करते हैं। क्यों न इस जनता के युग में कृष्ण सुदामा को एक ही स्कूल में शिक्षा-दीक्षा दें।

चौथे, हमें इन मुहल्ला स्कूलों पर (जिन में मैं तथाकथित पब्लिक स्कूलों और कालिजों आदि को भी शामिल करता हूँ, आखिर वे किसी मुहल्ले में ही तो स्थापित हैं) उस मुहल्ले की सफाई की जिम्मेदारी डाल देना चाहिए। हर शनिवार को समस्त प्रोफेसर, मास्टर, कर्मचारी, विद्यार्थी, निकरें पहनकर, हाथों में झाड़ू लेकर, अपने मुहल्ले की सफाई पर निकलें और मुहल्ले के तथा अपने दिमागों के कोने-कोने से कूड़ा, गंदगी, बीमारी, मच्छर और असमानता के कीड़े खदेड़-खदेड़ कर बाहर निकालें।

पांचवें, हमें मैडिकल एजूकेशन का पहला डिग्री कोर्स १२ वर्ष के बाद ३ वर्ष का कर देना चाहिए। तत्पश्चात् जो डॉक्टर सरकारी नौकरी करना चाहे, उन्हें कम-से-कम ३ वर्ष के लिए ग्राम सेवा में भेजना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द के आत्मसंस्मरण (१८)

"कुछ आप बीती, कुछ जग बीती"

—प्रिन्सिपल कृष्णचन्द्र एम० ए०, एम० ओ० एल०, शास्त्री

[२५-६-७८ के अंक में छपे लेख से आगे]

सत्य का प्रभाव—

—मैंने जलन्धर पहुंचकर सुना कि पञ्जाब विश्वविद्यालय के नए रजिस्ट्रार महोदय मिस्टर लारपेण्ट ने रिश्वत लेनी आरम्भ कर दी है। मुझे सन्देश दिया गया कि मुझसे अत्यन्त कम अंक प्राप्त करने वाले दो छात्रों ने पांच पांच सौ रुपये रिश्वत दे कर उत्तीर्ण होने की व्यवस्था कर ली है और लारपेण्ट साहब मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं यदि दो ढ़ाई सौ रुपये भी दे दूं तो मुझे उत्तीर्ण कर देंगे। मैंने ऐसा करने से सर्वथा इनकार कर दिया और साथ ही लारपेण्ट साहब को पत्र लिख दिया कि यदि वे ऐसे छात्रों को उत्तीर्ण कर देंगे. जो अपने अनुत्तीर्ण होने को स्वयं स्वीकार कर चुके हैं तो उनकी पोल समाचार पत्रों में खोली जाएगी। इसके साथ ही एक बड़ी मूंछों वाले यूरेशियन ने, जिनका नाम मिस्टर ब्रण्डन था और जो कहीं क्लर्क थे, लाहौर पहुंचकर धमकी दी कि उन्हें भी उत्तीर्ण कर दिया जाए, अन्यथा वह आकाश पाताल एक कर देंगे। परिणाम यह हुआ कि न मैं उत्तीर्ण हुआ और न ही रिश्वत देने वाले उत्तीर्ण हुए। परन्तु ऐसा नहीं कि कोई भी रिश्वत देने वाला उत्तीर्ण न हुआ हो।

—आर्यसमाज जालन्धर के उपप्रधान उस समय लाला भक्तराम बी० ए० थे जो मिशन स्कूल जालन्धर के मुख्याध्यापक थे। उन्होंने मुखतारी की परीक्षा दी थी और वसुबाबू के वार से घायल पड़े थे। उनसे रिश्वत मांगी गई और उनके एक सम्बन्धी ने उन्हें रिश्वत देने के लिए रुपये ला कर दिए भी परन्तु धर्मात्मा भक्तराम ने इस प्रकार के उत्तीर्ण होने को पाप समझा। किन्तु उनके सम्बन्धी ने एक अन्य आर्य समाजी भाई को भी रुपये ऋण के रूप में दे दिए। जिसने कई लोगों से पांच सौ रुपयों से कुछ अधिक ऋण लेकर लारपेण्ट देवता के चरणों में रखे और एल०एल० का प्रमाण पत्र प्राप्त करके हजारों के वारे न्यारे करने आरम्भ कर दिए।

—उन दिनों एल० एल० की भी खूब मिट्टी पलीद हुई। लोगों ने एल० एल० का अर्थ यह घड़ लिया कि ऐसा वकील जो लारपेण्ट को रिश्वत देकर उत्तीर्ण हुआ है। लारपेण्ट की कहानी यहां पर ही समाप्त नहीं होती। क्योंकि वह पञ्जाब के छात्रों को, विशेष रूप से कानूनी परीक्षा के प्रत्याशियों को जोंक की भांति एक वर्ष और चिमटा रहा। १८८५ ई० के दिसम्बर की परीक्षा की अन्तिम आहुति देते हुए केवल इतना लिखना सम्भवतः रह गया है कि इस वर्ष जो महाशय वकालत की परीक्षा में प्रथम आए थे, उनके और मेरे अंकों के योग का सम्भवतः पचास के लगभग अन्तर था। परन्तु इससे क्या होता था? जबकि उपरिवर्णित देवता की पूजा ही न की गई थी।

—१८८६ ई० से मैंने जालन्धर जा सूदों के चौक में एक दो मन्जिल वाला मकान किराया पर लिया और मुखतारी का कार्य जोर शोर से करना आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही आर्यसमाज के कार्य में भी प्रबल रूप से भाग लेना आरम्भ किया। परन्तु एक अत्यन्त मनोरञ्जक बात यह थी कि मैं आर्य समाज का प्रधान था और मुझे हिन्दू समाज की कुरीतियों के विरुद्ध कार्य करना पड़ता था, परन्तु मैं लाला बसन्त राय कोहली के मकान में निवास करता था। जो उस वर्ष पौराणिक सनातन धर्म सभा के मन्त्री बने थे और जिनकी दुकान मेरे मकान के नीचे ही थी। यह अत्यन्त ही मनोरञ्जक था कि जो विज्ञापन नीचे लिखा जा रहा है उसका खण्डन उसी के ऊपर तय्यार हो रहा है। (क्रमशः)

आओ मनुष्य बनें

—श्री नकुलसैन सच्चर पंजाबी बाग

जब से भारत स्वतन्त्र हुआ है यहाँ कई वाद उदय हो चुके हैं। प्रत्येक वाद के पृष्ठपोषक गला फाड़ फाड़ कर कह रहे हैं कि "जब राजसत्ता हमारे हाथ आयेगी तब ही संभव है कि देश से गरीबी पूरी तरह से समाप्त की जा सके।" यहाँ एक ऐसा वाद भी सर उठा रहा है जिसके हामियों की निश्चित राय है कि अमीरों को मार, धन छीनकर गरीबों में बांट देना चाहिये। ये भाई सबको बराबर बना देना चाहते हैं। ये भूल जाते हैं कि हमारे जीवन की बाग डोर हमारे अपने हाथ में नहीं अपितु एक ऐसी शक्ति के हाथ में है जो कभी भूल नहीं करती। सबको बराबर करने में उनका उद्देश्य केवल जीवन की वर्तमान स्थिति को ही सुधारना है। भूत और भविष्यत से उनका कोई सरोकार नहीं। या यूं समझो कि अगले और पिछले जन्म को वे मानते ही नहीं।

दुनियां में कई ऐसे बालक जन्मते हैं जिन्हें अपने पिछले जन्म का ज्ञान होता है। गीता में भी कहा गया है कि जो जन्म लेता है उसका मरना अवश्यंभावी है और जो मरता है उसका जन्म होना भी जरूरी है। जन्म मरण का यह चक्कर निरन्तर चलता रहता है जब तक कि जीव मोक्ष को प्राप्त न हो जाये। यह शरीर तो पूर्वकृत कर्मों को भोगने का एक "आयतन" अर्थात् बर्तन मात्र है। जैसा कर्म इस जीवन में करोगे वैसा फल भोगने के लिये भावी शरीर मिलेगा। किसी भी वाद अथवा "फ़िलासफी" में शक्ति नहीं और न ही भविष्य में हो सकती है जो सब प्राणियों के कर्मों को एकसा बनाकर सबको समान दुःख सुख दे सके। ऐसा मानने पर जीव की स्वतन्त्रता नष्ट हो जायेगी।

क्या पूंजीवादी और साम्यवादी देशों में दुःख से पीड़ित लोग नहीं रहते? क्या अमरीका अथवा इंगलेण्ड में सब व्यक्ति समान स्तर के ही हैं? क्या वहां छोटे बड़े लोग नहीं हैं? क्या रूस में सब लोग एक जैसे घरों में रहते हैं? क्या वहां कुछ लोग ऐसे नहीं जो मोटर गाड़ियों में फ़िरते हैं जबकि अन्य बहुतेरे पैदल चलने पर ही कनायत करते हैं? यदि उपर्युक्त स्वतन्त्र देशों में ऐसी असमानता विद्यमान है तो यहां झगड़ा किस बात का है?

आओ विचार करें कि दुनियां में सर्वत्र व्यक्ति व्यक्ति में असमानता क्यों है? सच्चाई तो यह है कि दुनियां में आगे बढ़ने के लिये जहां व्यक्ति को स्वयं पुरुषार्थ करना चाहिये वहां उसके पूर्व जन्मों में किये गये अच्छे कर्म भी उसको इस दौड़ में सहायता देते हैं। जो व्यक्ति इस जन्म में किसी के हक्क को छीन कर अथवा रिश्वत आदि लेकर जीवन को सुखी बनाना चाहते हैं क्या सर्वदा इस उद्देश्य में सफल होते हैं? यह प्रायः देखा गया है कि जीवन की स्थिति एक जैसी नहीं रहती। जो आज राजाओं की तरह महलों में रहते हैं हो सकता है कि कल को पूर्वकृत अपने पुण्य कर्मों के क्षीण होने पर अथवा पाप कर्मों के उदय होने पर अपने जीवन निर्वाह के लिये सड़कों पर भीख मांगते फिरें। पाप और पुण्य की यह फिलासफी बड़ी गहरी है। इसका प्रभाव-चक्कर निरन्तर चलता रहता है। अतः संसार में आज तक न कभी सब बराबर हुए हैं न होंगे। इन अर्थों में न साम्यवाद कभी था और न कभी होगा। इस लिये प्रश्न पूंजीवाद और साम्यवाद का नहीं अपितु देश में से 'कुराज्य' उखाड़ फेंकने, "सुराज्य" स्थापित करने का है। 'सुराज्य' वह सशक्त राज्यव्यवस्था है जो देश के हर नागरिक के लिये "आलम्बन पदार्थों" की प्राप्ति सुनिश्चित कराये। शेष अन्य पदार्थ जिन्हें "अनुबन्ध पदार्थों" की संज्ञा दी जा सकती है नागरिक स्वयं प्राप्त करने का यत्न करें। मेरे विचार में आलम्बन पदार्थ निम्नलिखित पाँच है—

(१) प्रत्येक नागरिक को उसकी आवश्यकतानुसार खाने के लिये पौष्टिक आहार मिलना चाहिये।

(२) प्रत्येक नागरिक के लिये उसकी आवश्यकतानुसार पहनने के लिये ऋतु-अनुकूल पर्याप्त कपड़ा सुनिश्चित कराया जाना चाहिये।

(३) प्रत्येक नागरिक को रहने के लिये उसकी आवश्यकता के अनुसार कमो बेश स्वच्छ और हवादार मकान प्राप्त कराया जाना चाहिये।

(४) प्रत्येक नागरिक का रोगी होने की अवस्था में उत्तम से उत्तम इलाज कराया जाना चाहिये।

(५) प्रत्येक नागरिक बच्चे के लिये उसकी रुचि और प्रतिभा के अनुकूल उच्च से उच्च शिक्षा का प्रबन्ध किया जाना चाहिये।

स्मरण रहे कि उपर्युक्त पांचों पदार्थों से देश का कोई भी नागरिक वंचित नहीं रहना चाहिये। (शेष बायें स्तम्भ में)

(दायें स्तम्भ से आगे)

अब रह गये शेष पदार्थ जिन्हें कि मैंने अनुबन्ध पदार्थों की संज्ञा दी है जैसे कि—मोटर गाड़ी, घोड़े आदि पशु, फ्रिज, दूरदर्शन आदि "आसाइशें"। इन "अनुबन्ध पदार्थों" की प्राप्ति के लिये नागरिकों को स्वयं पुरुषार्थ करना होगा। किन्हीं पुण्यकर्मों वालों को ये अनायास मिल जायेंगे। किन्हीं को कुछ मेहनत करने पर और किन्हीं को बड़ी कठिनाई से। देश के किसी भी नागरिक को ये "आसाइशें" कुकर्मों—चोरी, रिश्वत, कालाबाजारी, पगड़ी लेना आदि—से प्राप्त करने का यत्न नहीं करना चाहिये। जो ऐसा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय

सुराज्य

पिछले दिनों अफगानिस्तान में जिस प्रकार एकाएक राज्य सत्ता हस्तान्तरित हुई उससे दक्षिण पूर्व एशिया के देशों की सरकारों और लोगों की आँखें खुल जानी चाहियें। पृथिवी के इस आंचल में संसार की दो महान् शक्तियाँ तो भौतिक रूप में विद्यमान हैं ही। विश्व की तीसरी महान् शक्ति भी यहां से दूर नहीं, आस-पास ही मण्डरा रही है। अन्यथा हिन्द महासागर में तटीय देशों के घोर विरोध के बावजूद इस द्वारा फौजी अड्डे की स्थापना का क्या अर्थ हो सकता है? इन तीनों की महत्वाकांक्षायें आपस में टकराती हैं। ये यद्यपि आपस में टकराने से कतराते हैं, किन्तु अपने प्रभावक्षेत्र को इस खित्ते में येन केन प्रकारेण परिवृद्ध करने में जुटे हुए हैं। प्रभावक्षेत्र को बढ़ाने की इस होड़ में ये तीनों किसी समय किसी देश में क्या कुछ कर दें, इसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इनकी राजनीतिक रेशेदानियों का शिकार इस खित्ते का कोई भी देश किसी भी समय हो सकता है। यह है वह खतरा जो आज दक्षिण पूर्व एशिया के छोटे बड़े सब देशों को दरपेश है। इस खतरे का एक ही इलाज है जैसा कि श्री बलभद्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पिछले दिनों 'आर्य सन्देश' में छपे अपने लेखों में दर्शा चुके हैं। और वह यह है कि इन देशों के लोगों में अपने देश के लिये, उस देश की परम्पराओं के लिये, उसमें प्रचलित राज्य प्रणाली के लिए अगाध आस्था प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न करना। इतनी श्रद्धा कि वे समय आने पर इसके लिए सर धड़ की बाजी लगाने को तैयार हो जाएँ। **ऐसा केवल सुराज्य की स्थापना से ही हो सकता है,** अन्यथा नहीं। ऐसा सुराज्य जिसमें हर नागरिक के लिए, न्याय, समानता का व्यवहार और मानव की गरिमा सुनिश्चित करा दी गई हो। जब तक यह नहीं होगा इस देश का भविष्य भी खतरे में ही रहेगा। सम्पूर्ण-प्रभुत्व-सम्पन्न भारत के प्रत्येक नागरिक को हृदय पर हाथ रख के सोचना चाहिये कि क्या हमारे यहाँ सबके लिए ये 'दैवी न्यामतें' सुनिश्चित करा दी गई हैं? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? ऐसा किये बिना उपर्युक्त खतरे का प्रतिकार नहीं किया जा सकता।

—सत्यानन्द शास्त्री

आर्य समाज प्रचार शिविर

गत ३० अप्रैल १९७८ को बवाना ग्राम में दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र के आर्य भाईयों की एक बैठक हुई। पं० मूलचन्द प्रधान आर्य समाज नरेला ने इस बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में निश्चय किया गया कि आर्य समाज के प्रचार को और अधिक गति से चलाने के लिये दिल्ली राज्य में एक उपदेशक विद्यालय खोला जाये। बैठक में यह भी निश्चय हुआ कि आगामी २४ से २८ जून १९७८ तक आर्य समाज मन्दिर नरेला में एक "आर्य समाज प्रचार शिविर" का आयोजन किया जाये। स्मरण रहे इन्हीं दिनों इस समाज में संस्कृत प्रशिक्षण शिविर भी सम्पन्न हो रहा होगा। जो भाई इन शिविरों में भाग लेना चाहें वे प्रधान आर्य समाज नरेला, दिल्ली राज्य अथवा प्रि० होशियार सिंह हा० सै० स्कूल बवाना को सूचित करें।

तो क्या किया?

— धर्मदेव "चक्रवर्ती" १९ माडल बस्ती दिल्ली

प्रभु भजन में यह मन न लगाया तो क्या किया?
हीरा जनम यह विरथा गंवाया तो क्या किया?

मिलना नहीं है नर तन तुझ को यह बार-बार
दुखियों की जिन्दगी में तू ला दे नयी बहार!
उपकार में यह तन न लगाया तो क्या किया?
हीरा जनम यह विरथा गंवाया तो क्या किया?

नित खेल-कूद में तेरा बचपन निकल गया
और भोग-विलास में सब यौवन विफल गया!
मल-मल हाथ फिर पछताया तो क्या किया?
हीरा जनम यह विरथा गंवाया तो क्या किया?

जब जोश था जवानी थी तुझ को न होश था
सब कुछ लुटा के होश में आया तो क्या किया?
हीरा जनम यह विरथा गंवाया तो क्या किया?
प्रभु भजन में यह मन न लगाया तो क्या किया?

अन्तःकरण चतुष्टय

अन्तःकरण और बहिष्करण आत्मा के दो प्रकार के करण अर्थात् साधन हैं। नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रियां और हस्त आदि कर्मेन्द्रियां बहिष्करण अर्थात् बाहरी साधन हैं। ये प्रत्यक्ष हैं और स्पष्ट हैं, स्वयं भी अनायास समझे जाते हैं और दूसरों को भी बतलाये जा सकते हैं। किन्तु अन्तःकरण भीतरी करण हैं। इनका दूसरों को बताना तो दूर रहा स्वयं भी समझना कठिन है। जैसे बहिष्करण अर्थात् बाहरी करणों के स्वरूप और कार्य पृथक् पृथक् हैं, ठीक इसी प्रकार अन्तःकरण अर्थात् भीतरी करणों के स्वरूप और कार्य भी पृथक् पृथक् हैं। परन्तु ये बहिष्करणों की भान्ति स्थूल या ठोस न होकर सूक्ष्म होने से, इन के स्वरूप और कार्यों में विवेक करना, भेद करना या पहचानना दुष्कर है। ये एक प्रकार से विद्युत्तरङ्ग के समान हैं। इन भीतरी करणों के नाम हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।

प्रत्येक भीतरी करण के दो दो धर्म हैं। मन के संकल्प (प्राप्ति की इच्छा) और विकल्प (निषेध की इच्छा), बुद्धि के संदेह और निर्णय, चित्त के भूतस्मरण और भावी स्मरण (आगे की चिन्ता), अहंकार के अहंभाव (मैं-पन) और ममभाव (मेरा-पन) ये धर्म हैं। **मन** बिजली के समान पतनशील तथा तीव्रगतिवाला है। केनोपनिषद् में कहा भी है "**केनेषितं पतति प्रेषितं मनः**" अर्थात् किस देव से प्रेरित हुआ मन अपने अभीष्ट पर गिर पड़ता है। मन जागता हुआ तो अपने अभीष्ट पर दूर तक जाता ही है, परन्तु सोया हुआ भी (यद्यपि उस समय इन्द्रियां कार्य नहीं करतीं) यह जागृत के सदृश जागृत व्यवहार के संस्कार से विषयों की कल्पना कर लेता है। मन सचमुच ज्योतियों का ज्योति है। जब सूर्य नहीं, अग्नि पास नहीं, प्रदीप प्रकाश नहीं तब मनुष्य मन रूपी ज्योति के सहारे काम करता ही है। मन में सदा संकल्प (अभीष्ट प्राप्ति की इच्छा) और विकल्प (अनिष्ट परिहार की इच्छा) उठा करते हैं। इन संकल्प विकल्पों को शिव संकल्प (अर्थात् व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र के लिये कल्याणकारी) बनाना मानव का कर्त्तव्य है। शिव संकल्प वाला मन मानव को उठाता है और इसके विपरीत अशिव संकल्प वाला मन मानव को गिराता है। शास्त्र ने ठीक ही कहा है "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"।

वस्तु को यथार्थ जानने, निर्णय पर पहुंचने और सावधान होने का साधन **बुद्धि** है। अकस्मात् नई वस्तु को देखकर प्रथम उस पर संदेह दृष्टि होती है, फिर संदेह भागों में जिज्ञासा होकर आखीर मनुष्य निर्णय पर पहुंचता है। यह सब कुछ बुद्धि द्वारा ही होता है। जैसा कि बाहरी ज्योति से वस्तु एवं अवस्तु की स्थिति स्पष्ट हो जाती है, ऐसे ही जीवन भर रहने वाली भीतरी ज्योति बुद्धि से मनुष्य अपनी जीवनयात्रा के सुसम्पादनार्थ सुपथ और कुपथ, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य, उपादेय और अनुपादेय को जान लेता है।

पांच ज्ञानेन्द्रियों के विषय (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द) तथा मन का संकल्पविकल्प व्यवहार और बुद्धि का संदेहनिर्णय रूप कार्य, ये सात जैसे भूत काल में अनुभव किये, वर्तमान में किये जा रहे हैं और भविष्य में किये जाने वाले हैं या जिन पर लक्ष्य तथा ध्यान है—ये सब **चित्त** के अधीन हैं। इन का स्मरण चित्त के द्वारा होता है। जो मनुष्य अपने बुरे कर्मों के परिणाम को भूल जाता है और अच्छे कर्मों के श्रेष्ठ फल को याद नहीं करता उसका वर्तमान नहीं बनता तथा जो भविष्य की नहीं सोचता उस का भी वर्तमान शून्यरूप ही होता है। जो मनुष्य पिछले बुरे कर्मों को त्याग कर और पुण्य कर्मों को बार बार संपन्न करके वर्तमान को साधता है वही सुखी होता है।

वेदों के ज्ञान से ज्ञानी और ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना से ध्यानी मनुष्य अपने आप को **अहंकार** द्वारा अनुभव करता है तथा पारिवारिक जनों, इष्टमित्रों, स्वसम्बद्ध प्राणियों का ममत्व अहंकारमय अन्तःकरण से ही होता है। इस अहंकार को शिवसंकल्प वाला बनाकर वेद का यथार्थ ज्ञान, प्रभु परमात्मा का सच्चा ध्यान बन सकता है तथा स्वसंबन्धियों का ममत्व यथोचित सुखद बन सकता है। अन्यथा स्त्री मेरी, पति मेरा, पुत्र मेरा, घर मेरा, धन मेरा इत्यादि ममत्व के जाल में फंसकर मनुष्य सच्चे सुख से वंचित हो जाता है, उन के प्रति यथार्थ कर्त्तव्य पालन से च्युत हो जाता है। इस प्रकार ईश्वर के ध्यान और वेद के ज्ञान से रहित होकर मैं दरिद्र, हूं मैं निर्बल हूं, मैं रोगी हूं, मैं अभागा हूं इत्यादि अनिष्ट अहम्भावों में ग्रस्त होकर मनुष्य महा दुःखी बना रहता है। (स्वामी ब्रह्ममुनि तीर्थ के लेखों के आधार पर संग्रहीत)

(शेष पृष्ठ २ का शेष)

समाचार पत्र के समालोचक ने "उपासना" नामक पुस्तक की समालोचना की है। स्मरण रहे 'उपासना' नामक पुस्तक में संध्या और हवन मन्त्रों की व्याख्या की गई है। समालोचना में लिखा गया है कि लेखक ने बड़ी योग्यता से सफलतापूर्वक यह समझाया है कि वास्तविक हिन्दु धर्म वह ही है जो कि ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में बतलाया है। पुराणों में लिखी हुई अन्ध विश्वास की बातें हिन्दु धर्म नहीं हो सकतीं। वस्तुतः सच्चा धर्म तो वेद का ही धर्म है।

अभी अभी आचार्य नरेन्द्र भूषण ने मलयालम भाषा में उपनिषदों का गुटका प्रकाशित किया है। सारे केरल में यह गुटका बहुत लोकप्रिय हो रहा है। कुछ दिन हुए केरल की पन्द्रह साहित्यिक संस्थाओं ने मिल कर आचार्य नरेन्द्र भूषण का उन द्वारा की गई साहित्य सेवा के लिए अभिनन्दन भी किया था। इससे वस्तुतः केरल में आर्य समाज का ही अभिनन्दन हुआ है।

आर्य भाईयो यह नवयुवक आर्य विद्वान् कितना काम कर रहा है—हर वर्ष सैकड़ों पृष्ठों की पुस्तकें लिख कर छाप देता है, चोटी के आर्य लेखकों के लेखों का अनुवाद ही नहीं करता अपितु छपवा कर प्रकाशित भी कर देता है, प्रचार भी करता है, संगठन का कार्य भी करता है, विरोधियों को उत्तर भी देता है, ऋषि के ग्रन्थ भी छाप रहा है, वेद, दर्शन, उपनिषद् भी प्रकाशित कर रहा है। ये सब कुछ शृंखलाबद्ध पुस्तकाकार में छप कर प्रकाशित हो रहा है। खेद है कि इस नवयुवक का स्वास्थ्य ठीक नहीं। वैद्यों ने परामर्श दिया है कि उसे अधिक कार्य नहीं करना चाहिए। औषध उपचार हो रहा है, खर्च उठ रहा है। खतरा है कि कहीं इसे अधरंग न हो जाये। अतः मैं सबसे अपील करूंगा कि दिल खोल कर उसकी धन से सहायता करें। ताकि उसकी दिमागी परेशानी दूर हो। वह रात दिन दीवाना वार यही माँग करता है कि मेरी भाषा में महर्षि के सब ग्रन्थ उपलब्ध होने चाहियें, वेद भी मलयालम में छप जाने चाहियें। बाईबल और कुरान मलयालम में मिलते हैं तो फिर वेद क्यों अनुपलब्ध रहें। उसे दिन रात चैन नहीं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि वह सत्यार्थ प्रकाश को मलयालम में प्रकाशित करवाने के बाद अपना लिखने का काम धीमा कर दे, ताकि उसका स्वास्थ्य कुछ सुधर सके। फिर वह सारा समय संगठन और प्रचार कार्य में लगाये। प्रभु करे कि आचार्य नरेन्द्र भूषण का स्वास्थ्य बना रहे और सर्वशक्तिमान प्रभु उन्हें कम अज कम ५० वर्ष और सुधार और सेवा करने का अवसर दें। उनके कार्य से देश की एकता को बल मिलेगा। धर्म पर बलिदान होने वाले लेखराम, श्रद्धानन्द का झण्डा केरल के गांव गाँव में फहरायेगा। लोहा गरम है चोट लगाओ। कदम बढ़ रहे हैं। इन बढ़ते कदमों को चूम लो।

केरल के मन्दिरों के बोर्ड ने एक शानदार स्मारिका छपवाई है। केरल के चोटी के ५० विद्वानों के लेख हैं। उनमें एक लेख त्यागी, तप आचार्य नरेन्द्र भूषण का है। शीर्षक है "सामवेद क्या है ?"। आचार्य भूषण से पहले केरल के साहित्य में वेद और दयानन्द कहां थे ? भाषा का रक्षक, उत्तर दक्षिण की एकता का पोषक, वैदिक धर्म और शुद्धि के काम के लिए मर मिटने वाला "जिन्दा शहीद" नरेन्द्र जैसा रत्न आर्य समाज को सौभाग्य से मिला है। उसकी कमियों को मत देखो, अपितु सहायता दे उन्हें पूरा करो। उसकी तड़प, त्याग योग्यता को समझो। श्रद्धानन्द का सपना साकार करना है तो मेरी सुनो, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। ओम् शम्।

(उर्दू "वैदिक धर्म" साप्ताहिक जालन्धर के सौजन्य

(पृष्ठ ४ का शेष)

टांग टूटी हुई तो क्या कमर है पतली उनकी।
टांग वह टांग कि जिस टांग ने दिल टांग दिया है॥

यह शेर सुनना था कि मास्टर साहिब आपे से बाहिर हो गए, चेहरा तम-तमा उठा, बदन कापने लगा, मुंह में लड़खड़ाती हुई ज़बान से "बेशरमों! गुस्ताखो! ओ बेइमानों! लातों के भूत तुम बातों से मानते। मैं अभी तुम्हें सीधा किये देता हूं।" यह कहते हुए वह कमरे उठ भागे और अनायास आरम्भ हुई विनोद सभा एकाएक इस "वाक-आ से ठप्प हो गई।

(पृष्ठ ५ का शेष)

भारतीयों की क्रान्ति साधु, सन्तों और महात्माओं द्वारा ही उद्भूत प्रस्फुटित होती रही है। आइये इन संस्थाओं को वृहद रूप दें। देश-विदे फैली आर्य समाजों तथा प्रतिनिधि सभाओं से यह अपेक्षित है कि विद्या खोलने के बाद अब वे जिले में एक एक वानप्रस्थ आश्रम बनावें जहां केवल निशुल्क शिक्षा और प्रचार की व्यवस्था हो, वरन् जहां व्यव निवृत्त ससन्तान और निसन्तान दोनों प्रकार के वृद्ध-जन स्व-व्यय या स और सरकार के व्यय पर अपना शेष जीवन प्रकृति माता की गोद में सुग ले और आध्यात्मिक वातावरण में बिता सकें।

(वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर की स्वर्ण-जयन्ती पर हुए वानप्रस्थ सम्मे में दिये गये उद्घाटन भाषण से उद्धृत)

महर्षि के आगमन का कारण

(श्री विभुदत्त शास्त्री सं० विद्यालय संतपुरा भटिण्डा)

अज्ञानी, पाखण्डी, छली, धर्म के थे ठेकेदार,
सत्य धर्म कर्म द्वार चहु ओर बन्द थे ॥
शुद्ध बुद्ध नित्य निर्विकार 'विभु' ईश का
मान अवतार भोग लाते मतिमन्द थे ॥
मौलवी मस्टण्डें गुण्डे पण्डे औ पुजारी लोग,
लूट का खा माल बने झूमते गयंद थे ॥
धन्य है नियन्ता न्याय प्रिय जगदीश तेरा,
भेजे जो यती दयालु ऋषि दयानन्द थे ॥१॥

भूल गये—वेद ज्ञान हीन देश दुर्दशा ऋषि,
चले घर छोड़-तोड़ श्रृंखला विलास की ॥
सत्य शिव सुन्दरं विभु की खोज बीच घूम,
सही शीत तप पीड़ा क्रीड़ा भूख प्यास की ॥
मिले अन्त वेद ज्ञान मान विरजानन्द दण्डी,
जिन की शरण में अधूरी पूरी आस की ॥
गुरु निदेश-देश हित निज बलिदान दे.
चले है जगा के ज्योति सत्यार्थ प्रकाश की ॥

अब हमारा कर्त्तव्य—

जगा के ज्योति वेद की चले गये हैं जो ऋषि,
न मन्द वन्द हो सदैव यह जगी रहे ॥
सुभव्य भूरि भावना भरी जो भूत भावनी,
सुनो जनों मनें में वह सदा जगी रहे ॥
कभी न पोप-कोप से डरो न गुण्डे डण्डे से,
लगी लगन जो सत्य की तुम्हें लगी रहे ॥
ठगों की दाल न गले चले न धुंधधांध,
भगे खेलों की मण्डली, 'विभु' सदा भगी रहे ॥

एक प्रश्न चिन्ह ?

नवयुवक आर्य समाज में क्यों नहीं आते ?

ले०—श्री पं० विनयकुमार विद्या वाचस्पति

आये दिन समाचार पत्रों में खबरें छपती हैं कि नवयुवक भारतीय संस्कृति और सभ्यता से विमुख होते जा रहे हैं। आर्य समाज की कुछ साप्ताहिक पत्रिकाओं में भी इस विषय पर लेख छपने लगे। सब ने स्वर में स्वर मिलाकर अलापना शुरू किया, देश का क्या बनेगा? जाति का क्या बनेगा? आर्य समाज का क्या बनेगा? सब बाह्य रूप से देखा, आन्तरिक रूप से देखने का कष्ट किसी ने नहीं किया। इसका फल यही हुआ कि रोगी का रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। पर उपदेश कुशल बहुतेरे, के चक्कर में पड़ गये। जबकि डाक्टर ही खुद रोगी हो तो बीमार का इलाज कैसे कर सकता है। यह बात वास्तव में सत्य है कि खुद हम आर्य समाजी भाई ही संक्रामक रोग से ग्रसित है तो दूसरों की भलाई क्या कर सकेंगे। इस बात को हम मानें या न मानें, पर वास्तव में सत्य है।

आर्य समाज में नवयुवक आना चाहते हैं, पर हम लोग लाना नहीं चाहते, यह कैसे हम दूसरे को आर्य बनाना चाहते हैं, आप बनना नहीं चाहते। हम दूसरे के बच्चों को आर्य बनाने की प्रेरणा देते हैं। अपने बच्चे को नहीं बनाते। गुरुकुल बहुत खोले गये, जनता की भावनाओं तथा धन का प्रयोग उसमें किया गया पर किसके लिये, पशुओं को, पक्षियों को बसाने के लिये। आज सभी संस्थाएं प्रायः बन्द सी हैं, अधिकांश में दीपक दिखाने वाला भी कोई नहीं। दीवार का नाव संस्था नहीं, संस्था तो संस्था वालों से बनती है। उसका प्रयोग करने से फलता-फूलता है। आज ऐसा कोई भी आर्य समाज का मन्त्री या प्रधान होगा जिसके बच्चे गुरुकुल में पढ़ते होंगे। हां अपवाद स्वरूप एक दो की बात नहीं होगीं। भवनों की दीवारों पर अपने नाम का पत्थर लगवा दिया किस के लिए दूसरों के लिये। जिस प्रकार कबूतर पालने के लिये कबूतरखाने बनाये जाते हैं। बनाने वाला उसमें कबूतर पालता है अपने बच्चे नहीं। उसी तरह इन संस्थाओं में आर्यों के बच्चे पढ़ने नहीं आते, औरों के आते हैं। आर्यों के बच्चे तो ईसाई मिशनरी स्कूलों में, कालेजों में, या किसी विशेष ओहदा प्राप्त कालेजों में पढ़ते हैं, वे लोग ही आये दिन हो-हल्ला मचाते हैं कि आज कल के नवयुवक आर्य समाज में नहीं आते।

ये लोग कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं अपने व्याख्यानों में, लेखों में कहते या लिखते हैं सन्ध्या करो, दोनों समय करो, हवन-यज्ञ करो, पर आप ही खुद नहीं करते।

क्रमशः

(६ पृष्ठ का शेष

स्वदेश छोड़ कर बाहर जा चुके हैं। कारण, यही है कि उनमें स्वदेश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान नहीं कराया गया। उनकी शिक्षा दीक्षा पब्लिक स्कूलों में हुई एवं अंग्रेजी माध्यम से हुई। मेरी कैनेडा यात्रा में एक कैनेडियन अधिकारी ने मुझ से पूछा कि आप अपने बच्चों को अपनी मातृ भाषा में क्यों नहीं शिक्षा देते। वे अपने देश में हमारे अंग्रेजी माध्यम द्वारा पठित डाक्टरों, इंजीनियरों आदि के आक्रमण से चिंतित था। मैंने कहा, यदि हम इन्हें अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षित न करें तो आप की सेवा कैसे करेंगे। बोला, यही तो हम चाहते हैं। आप इन्हें हिन्दी द्वारा ही पढ़ायें ताकि यह हमारे मार्केट में आकर हमारे बच्चों के साथ मुकाबला न कर पायें।

जैसा कि मैंने ऊपर कहा कि यदि हम सचमुच सन २००० तक देश में सम्पूर्ण क्रांति लाना चाहते हैं तो हमें इस विषय पर आज ही दृढ़ मत बनाना होगा।

आज देश में पूर्ण शराब बन्दी सम्भव नहीं। क्या इस लिये हम मद्यपान का विरोध कर नहीं रहे हैं? तो फिर उसी प्रकार तालीमी विषपान के विरुद्ध हम दृढ़मत होकर आवाज बुलन्द करने से क्यों हिचकिचाते हैं? कम से कम नई तालीम के मंच पर ऐसी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये।

(५ पृष्ठ का शेष)

के सब मत-मतान्तरों का खण्डन किया और वैदिक धर्म की स्थापना की। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने आर्य समाज नामक संगठन की स्थापना की। वे आर्य समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते हैं कि जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्य समाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है। समाज का बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र

तार : आर्य प्रतिनिधि, कार्यालय--आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन कृष्णपुरा चौक जालन्धर, दूरभाष--७४२५०

वार्षिक शुल्क १२) एक प्रति २५ पैसे, वर्ष ११, अंक २१, २१ मई १९७८, तदनुसार ८ ज्येष्ठ सम्वत् २०३५ दयानन्दाब्द १५५

वेद सुधा

सब से प्यार करने की शक्ति दो

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥
(अथर्व १९-६२-१)

अन्वयार्थ

हेभगवान ।

(मा प्रियं देवेषु कृणु) मुझे देव (द्विज, ब्राह्मणों) में प्रिय बना दो, (प्रियं मा राजसु कृणु) मुझे राजा (शासकों) में भी प्रिय बना दो (प्रियं सर्वस्यपश्यत) सब सबके लिये प्रिय ही देखा करें (उत शूद्र उत आर्ये) चाहे वह शूद्र हो या आर्य ।

संसार का सारा मनुष्य एक ही तरह का है। उस में कोई जाति भेद नहीं। जाति की रेखा स्वार्थ ने खींच दी। मनुष्य ने जब देखा कि उस का अधिकार छीना जा रहा है, तो जाति व्यवस्था के कई भेद बना दिये। आपने आप उत्कृष्ट बने रहने की इच्छा व्यक्त करता रहा। इतना ही नहीं, अपने पुश्तों को भी उस अधिकार से वंचित न करने के लिये, अगला कदम उस ने यह उठाया कि जन्म से ही जाति व्यवस्था कर दी। जो कि वेद शास्त्र के अनुकूल न था। मनु कहते है "जन्मनः जायते शूद्रः, संस्काराद् द्विज उच्यते। अर्थात् मनुष्य जन्म से तो शूद्र ही रहता है पर संस्कारों से द्विज बनता है। अतः शूद्र शब्द अज्ञानी, शिक्षाहीन का वाचक हो गया। शिक्षाहीन व्यक्ति के लिये शूद्रत्व प्राप्त करने के पश्चात्, केवल सेवा करना ही उसका कर्त्तव्य मुकर्रर कर दिया। क्योंकि अज्ञानी ज्ञान की बात नहीं कर सकता ज्ञान के बिना न राष्ट्र की रक्षा हो सकती है, न धन ही कमाया जा सकता

वैदिक सिद्धान्त ने वर्ण व्ववस्था को मान्यता दी है। वर्ण का आशय कार्य कुशलता से है। मनु स्वयं कहते है "शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्". ब्राह्मण कर्त्तव्य, ज्ञान च्युत होकर शूद्र बन सकता है। आगे इसी बात को और स्पष्ट किया है "नतिष्ठतीति यःपूर्वा नोपासते यस्तु पश्चिमां, सःशूद्रवत् बहिष्कार्यः सर्वस्मात् द्विज कर्मणः" कि जो व्यक्ति प्रार्थना उपासना नहीं करता वह द्विज कहलाने का अधिकारी, नहीं। द्विज वही व्यक्ति है जोकि ज्ञान सम्पन्न हो, देश की रक्षा कर सके, और धन ऐश्वर्य को रखने वाला हो। इस प्रकार इस द्विज शब्द में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य ये तीनों वर्णो का सयावेश है। इन्ही को आर्य भी कहा है। विद्वान् ही ब्राह्मण कहलाता है। विद्या से राष्ट्र को प्रकाशित करता है। यही देव भी है। यास्क "देवो दानाद्वा, द्योतनाद्वा आदि परिभाषा देकर चमकने वाले को, दान देने वाले को देव कहा है। इस के अन्तर्गत विद्यादान देने से 'ब्राह्मण. शरण, या अभयदान देने से क्षत्रिय,' धन दान देने से वैश्य भी देव कहला सकते हैं। पर इन तीनों में विद्या ही श्रेष्ठ है, अतः उन के दाता ब्राह्मण को ही देव कह कर वेद ने पुकारा है। ब्राह्मण ज्ञान का प्रतीक है। उस से प्रेम करना अवश्य चाहिये। ज्ञान से ही मनुष्य बनता है।

इस प्रकार ब्राह्मणों में प्रिय होने का तात्पर्य केवल ज्ञानवान् बनना है। ज्ञानवान् मनुष्य उन्नत होता है। आगे फिर कहा है कि मनुष्य राजाओं में प्रिय होने की चेष्टा करे। राजा का अर्थ है शासन करने वाला। शासन दो प्रकार का है। एक देश पर शासन करना दूसरा अपने इन्द्रियोपर, परिवार पर शासन करना। देश पर शासन करने का तात्पर्य है "क्षतातिकल त्रायत इत्युदग्रः" देश को क्षति से बचाना। देश को क्षति से वही बचा सकता है जो ज्ञानवान् हो और राजनीति विशारद हो। इस से यह स्पष्ट होता है जो व्यक्ति ज्ञानी है, उसे चाहिये राजनीति का भी थोड़ा बहुत ज्ञान रखे। यही कारण था कि राम के दरबार में वशिष्ठ आदि ज्ञानी महापुरुष नियुक्त थे क्योंकि वे भी राज नीति निपुण थे। इस के लिये कोई आवश्यक नहीं कि केवल क्षत्रिय ही राजनीति में भाग ले सकता है। इतना अवश्य है, कि जो शूरवीर हो वही राजा बन सकता है, पर सलाहकार के रूप में तो ब्राह्मण भी अधिकारी है। इस उपरोक्त मन्त्र में प्रजातन्त्र की झलक आती है।

प्रजातन्त्र में सब एक ही समान है।
पेशा चाहे जिस का कुछ भी हो,
समस्त व्यक्ति ज्ञानी एवं राजनीतिज्ञ,
बन सकते हैं।

इस के अतिरिक्त जो व्यक्ति न ज्ञानी बनने के लिये परिश्रम करता है, और न राष्ट्र की रक्षाही करता है केवल वह वैश्य बन कर ही देश की सेवा कर सकता है। पर उसे अधिकार नहीं कि शूद्र से घृणा करे। शूद्र को भी यह अधिकार है कि वह अपने साहस, शक्ति, ज्ञान आदि से देश को मार्ग दिखाये।

आजकल शूद्र का नाम हटाकर हरिजन नाम दे दिया। आज के राजनीतिज्ञों ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये उस नाम के जरिये फिर जातिवाद का प्रश्न खड़ा कर दिया। जितना ही हम इन को दूर रखकर अपना उल्लू सीधा करना चाहेंगे उतना ही देश अवनति की ओर जायेगा अतः इस भेदभाव को मिटाकर केवल यही समझना है कि ज्ञानी मनुष्य, आर्य। एवं अज्ञानी शूद्र है। इन दोनों से प्रेम का बर्ताव करना चाहिये। इस से ही सब एक हो सकते है।

आर्यो ! सावधान

यह हमारा दुर्भाग्य रहा है कि आज तक हम आपस में विचार करके वेद को ईश्वरीय ज्ञान न सिद्ध कर सके, बल्कि अपने स्वार्थों में उलझ रहे हैं। इस मौके का लाभ उठा कर हमारे ही भाई अंग्रेजियत की स्याही से ईश्वरी भावना को लीपपोत रहे है, ताकि आर्यावर्त के कर्णधार बालक गुमराह होकर, अपनी हस्ती को न पहचान सकें। अब हमें जागनाहै, वेद ईश्वरीय वाणी सिद्ध करके अपने गुमराह भाईयों को हमराह बनाने का प्रयत्न करना है। उपरोक्त विषय पर समस्त आर्य सज्जनों के द्वारा प्राप्त लेख का स्वागत किया जायेगा। आर्य विद्वानों भी चाहिये कि सोती हुई कलम को जगायें और आर्य मर्यादा को बचाने की चेष्टा करें, ताकि समाज का नाम उज्वल हो सकें।

—सह सम्पादक

वीर ! लेखराम !

धन्य ! धन्य ! प्राण !
वीर !......लेखराम !
धर्म राष्ट्र के शहीद !
सत्य, न्याय पुंज दीप !
धीर-वीर युद्ध रूप !
पाप-काल दुन्याय दूत !
ज्ञान के विहान !
तुम बढ़े, धरा बढ़ी !
प्रेम की ध्वजा चढ़ी !
उच्च वेद शृंग पर !
गूंजते सुवन्ध स्वर,
रक्त बिन्दु जब गिरे,
आर्य भाग्य भी फिरे !
दीप्त हो ललाम !
हम बढ़े, चले चलें !
भव्य भाव, सीख लें !!
प्राण दान दे सकें !
शुभ्र चाह ले सकें !!
लेखराम से बनें !
ताप विश्व खो सकें !!
लें न थक विराम !
वीर !......लेखराम !!

—भारतेन्द्र नाथ

C-3

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who is the Vice Chancellor of the University. Shri GBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of Revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districrs Magisteate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economics in DAV College Pawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Control of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who is the Vice Chancellor of the University. Shri GBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of Revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border xks Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districts Magistrate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economics in DAV College Rawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Cintrol of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who us the Vice Chancellor of the University. Shri GBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border Dis Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districrs Magisteate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economics in DAV College Pawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Cintrol of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who us the Vice Chancellor of the University. Shri GBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border Dis Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districrs Magisteate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economics in DAV College Pawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Cintrol of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

तार : आर्य प्रति

वार्षिक शुल्क १

वेद

सब से

प्रियं मा कृणु

प्रियं सर्वस्य पश्यत

(अ

अन्वयार्थ

हेभगवान।

(मा प्रियं दे

(द्विज, ब्राह्मणों) में

मा राजसु कृणु) मुझे

भी प्रिय बना दो (प्रि

सबके लिये प्रिय ही

प्रार्य) चाहे वह शूद्र

संसार का सार

रहा का है। उस

री। जाति की रेखा

नुष्य ने जब देखा

र छीना जा रहा

के कई भेद बना

उत्कृष्ट बने रहने की

रहा। इतना ही नहीं

भी उस अधिकार से

लिये, अगला कदम उ

कि जन्म से ही जाति

जो कि वेद शास्त्र के

मनु कहते है "जन्म

संस्काराद् द्विज उच्य

जन्म से तो शूद्र ही

कारों से द्विज बनता है

अज्ञानी, शिक्षाहीन। का

शिक्षाहीन व्यक्ति

प्राप्त करने के पश्चात्

उसका कर्त्तव्य मुकर्र

अज्ञानी ज्ञान की बात

ान के बिना न रा

सक्ती है, न धन ही कमा

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who us the Vice Chancellor of the University. Shri CBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border Dis Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districrs Magisteate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economics in DAV College Pawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Cintrol of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

21. That it may be stated that the University is now being run by Shri GBK Hooja who us the Vice Chancellor of the University. Shri GBK Hooja retired from Government service after 37 years. He was the Chairman of Manipur state Public Service Commission from 1972 to 1975. Before that he was the chairman of Rajasthan Board of revenue from 1968 to 1972. Commissioner Border Districts (1967-68) Vice Chancellor University of Udaipur (1958-60) Districrs Magisteate. Tonk(1954-55) Shri GBK Hooja also held King's Commission in the Indian Army (1943-45) and was Professer of Economic in DAV College Pawalpindi (1936-37). He entered Punjab Civil Service through open competition in 1938. He is also a member of the Board of Cintrol of the Univerwity of Udaipur and is Charter President of Rotary Club of Imphal. ....

98 13. P. 1800/9,
Vice Chancellor,
Gurukul Kangri University,
Hardwar

File
Swami Shraddhanand
GB

Regd. No. L. 455

The Punchpuri SAMACHAR

RISHIKESH Near Vedic ASHRAM | POST BOX NO : 6 Sri Printing Press, Hardwar

VOL. XVIII; No. 14 | HARDWAR : Monday, 6 April 1981 | 15 Paise

SWAMI SHRADDHANAND

RELIGIOUS LEADER, EDUCATIONIST AND VALIENT FREEDOM FIGHTER

(By Dr. Vijay Shanker, Gurukul Kangri University, HARDWAR)

'Tall, stately figure, bright eyes and a passing shadow of irritation or anger on his face over the weaknesses of the others.........How can I forget this lively image? It often comes before my eyes !

–Jwaharlal Nehru

'If any sculptar asks me to suggest a living model to construct a statue of Christ I would point towards this splendid figure, Mahatma Munshi Ramji. If an artist asks me for a model to draw a sketch of Saint Peter I will tell him to have a look at this marvellous man.'

–Ramsay Mcdonald (Ex. British P.M.)

A touch, nay a mere encounter with Rishi Dayanand changed him to a life of dedication & service to the people. Munshi Ram, for that was the name his parents gave him, was born in 1856 in a prosperous Khatri family in village Talvan in Jullunder (Punjab) His father Lala Nanak Chand was a police inspector. The child lived with his family in Bareilly, Badaun Varanasi, Mirzapur and other places wherever his father was transferred, The riches of the family and profound affection of the parents for him did not seem to have a very good effect on the child. He was an athiest during his boyhood days. But in 1879 when Munshi Ram was 23 years old an incident in Bareilly gave a historic turn to his life. That year Rishi Dayanand visited Bareilly. Lala Nanak Chand asked his son to accompany him to the meeting which Rishi Dayanand was to address. The son obeyed his father & to his great astonishment and joy the boy found that this encounter with the Rishi had pulled him out of his fallen condition and that he could now live a real & meaninghul life. Light dawned upon him. Munshi Ram was now a completely changed person. He now developed indomitable faith in God.

(See Page 2)

Swmi Dayanand's preachings and his faith in God developed unfathomable caurage and fearlessness in him.

In 1886, at the age of 30 Munshi Ram became a regular member of Arya Samaj. Soon he was dominating over all the activities of Arya Samaj. He read Satyarth Prakash that told him that educational institutions should be situated away from the dust and din of life. This led him to take a resolve to establish a Gurukula. At the instance of him Arya Pratinidhi Sabha Punjab on 26th Nov. 1898 passed the resolution for opening a Gurukula. Thus in 1902 Gurukula Kangri was established on the bank of Ganges in natural sorroundings. Munshi Ram got his two sons admitted in the Gurukula & donated all his property to the institution. He became its first Acharya.

Under his care and guidance and that of subsequent Acharyas and Kulpatis the Gurukula continued to grow and develop Students from all parts of the country came and studied here. Swami Shraddhanand wanted the Gurukula to grow into a University where all subjects including Veda, languages, humanities, sciences and crafts etc. shall be taught with greater emphasis on the studies of Vedas and such subjects as help in the understanding of Vedas. The idea was that the students developed a complete and harmonious personality. Special emphasis was laid on Asram life, games and character building of the students. Today, Gurukula Kangri, as envisaged by its founder, is a University but much remains to be done before it becomes the University of Swami Shraddhanand's dream. The alround and continued development of Gurukula Kangri is the need of the Hour When development stops, rotting starts This is true not only of individuals but of the institutions as well. The ills that beset an institution or individual sometimes soon disappear when they (individual/institution) are given a purposeful direction.

In Aprial 1917 at the age of 61, after having nourished the institution for fifteen years, Munshi Ram took Sanyas in Maypur Vatika (Hardwar) and with this he left Gurukula to live in Delhi which now become the centre of his activities Munshi Ram had now become Swami Shraddhanand Untill now Swamiji had devoted himself to the cause of education and religion and had kept himself away from active politics But now Gandhi's politcs of non-violence attracted him He also felt strongly for the poor and down-trodden. In Delhi and certain provinces of Uttar Pradesh he organised and activated Harijan uplift movement and made fervent appeal to the people to demolish the barriers of caste and creed In 1919 Mahatma Gandhi came to Delhi to meet the Viceroy Swamiji availed this opportunity to meet the Mahatma & assured him that if the latter started Satyagraha he would be with him. The Gandhi-Viceroy

(See Page 4)

talks failed. Gandhiji now declared to start Satyagraha. A Satyagraha committee was constituted and Swamiji joined it. On 29th March 1919 a meeting under the presidentship of Swamiji was held in which the fateful decesion to observe general strike in Delhi on 30th March as a against protest Roulatt Act was taken. The Hartal was observed on the appointed date. It started peacefully, but later the police fired at several places in which some person were killed & injured. In the afternoon a public meeting was held at Peepal Park which was addressed by Swamiji. After the meeting a 25000 strong procession with Swamiji at its head proceeded towards Ghanta Ghar. At Ghanta Ghar it appeared as if the Gurkha troops wer getting ready to attack the procession. To add to this apprehension, at that mement someone from the troops fired a shot. Shraddhanandji who was at the head of the procession showed exemplary courage. He moved forward and asked the troops-"Why did you fire?" Instead of replying to the question the troops pointed their bayonets towards Swamiji and threatened to shoot him if he did not get away. Not in theleast perturbed by the threat Swamiji moved one more step forward. Now the point of bayonets was toucLing his cloths. Swamiji now roared-"Shoot me", and stood steadfast. At this point an English officer on horse back came to the scene Swamiji put the same question to him as he had put to the troops-"Why did you fire?". The officer explained that it was a misfire He then ordered the troops to make way for the procession to proceed The troops retreated and the victorious procession continuedits march upto Naya Bazar.

The incidence of march 30 made a great impact on the minds of the people. The persons killed by the firing on that day included both Hindus & Muslims. Their blood had flowed together and had become one. It had a great effect. On 31st March it appeared as if the distinction between Hindus and Muslims had vanished. From this time the word HUM (We) became the symbol of Hindu Muslim unity-H standing for Hindus and M standing for Muslims. The climax of this feeling of fraternity was witnessed on April 4,1919 when at a large meeting of Muslims which was being held at Jama Masjid Delhi. Maulana Abdullaha Churiwala stood up and said that Swamiji should also address the meeting. On hearing this a wave of joy ran through the meeting and the mosque echoed with the shouts of Narai-takbir. Two enthusiastic muslims rose from the meeting and brought Swamiji from Naya bazar on a tonga. Amidst shouts of Allah-ho-Akbar, Swamiji

(See Page 6)

reached the altar of the mosque. Swamiji began his address by reciting a mantra from Rigveda and ended with' Om shanti, shanti, shanti'. In the history of India, nay in the history of Islam it was the first occasion when a non-muslim spoke from the altar of Jama Masjid.

Hindu-Muslim-Sikh all had the same love from Swamiji. His work for the emancipation of poor, downtrodden and untouchables has been praise-worthy. The following words uttered by him from congress platform bear testimony to this:

"From today those six and a half crores are not more untouchables to us, instead they are our brothers and sisters, In this fight for freedom they shall rub shoulder with us and all of us together shall achieve our goal."

Mahatma Gandhi ji, in Young India, greatly appreciated Swami Shraddhanand's sentiments. All political and social leaders of his times such as Jwaharlal Nehru, Sardar Patel, C. Raj Gopalachari, Hakim Ajmal Khan, Dr. Ansari, C. F. Andrews & others had a great respect and love for him.

The end of usch a glorious life came suddenly when on Dec. 23,1926 a religious fanatic, Abdul Rashid, assasinated Swamiji while he was ailing. The assasin was caught red handed by Pandit Dharampal Vidylankar who was with Swamiji at that time.

Swami Shraddhanand lived like a warrior and died like a warrior. His fervent patriotism, deep faith in Indian civilisation and culture, extra-ordinary capacity for sarvice & sacrifice, love for the weak and downtronden and above all a strong soul and pious life have left an indelible print on the pages of Indian History.

–Dr. Vijay Shanker
Gurukula Kangri
University Hardwar.

Edited Printed and Published by Shiva Tej Bahadur Saxena at Shri Printing Press Hardwar.

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ : अंक २४ | रविवार १२ अप्रैल १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

देश पर चारों ओर से भयंकर खतरा

मुल्क का दूसरा बंटवारा न होने देंगे : दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशाल सभा में आर्यनेताओं की चेतावनी

जनता और सरकार समय पर सचेत हो जाएं

नई दिल्ली। 'इस समय देश पर चारों ओर से खतरा है, पंजाब में फिर अलग मुल्क बनाने की मांग उठाई जा रही है, उत्तर प्रदेश को चार सूत्रों में बांटने की माँग की गई है। हैदराबाद के पास पहाड़ी शरीफ में विश्व भर के पांच लाख मुसलमानों ने इकट्ठे होकर एक नए पाकिस्तान की मांग की है। भारत में नए विदेशी प्रभाव क्षेत्र स्थापित करने के लिए विदेशी ताकते अरबों रुपयों की धनराशि खर्च कर रही है':—इन शब्दों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने रविवार के दिन शास्त्री पार्क करोलबाग में आर्यसमाज स्थापना-दिवश पर आर्य केन्द्रिय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित विशेष सभा में एकत्र आर्यजनता को चेतावनी दी।

वर्ष-प्रतिपदा के दिन आर्यसमाज की स्थापना को १०६ वर्ष पूर्ण हो गए हैं। इस अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों और आर्यसंस्थाओं की ओर से एक सम्मिलित कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। आयोजन में उपस्थित आर्यजनों से श्री शालवाले ने कहा-इस समय देश को खतरा है, वैसा इसमें पहले पहले कभी नहीं था। हैदराबाद से श्री रामचन्द्रराव वंदेमातरम् ने जमाते इस्लामी का वह पोस्टर भेजा है, जिसमें देश के नए बंटवारे द्वारा नए पाकिस्तान की मांग की गई है। विदेशी ताकते लांखों रुपए की धनराशि लगाकर देश में अपने प्रभावक्षेत्र बना रही हैं। अरबों की धनराशि से मुरादाबाद के पास दो अरबी, विश्वविद्यालय स्थापित करने की कोशिश चल रही थी, अब वहां दो मुस्लिम बस्तियां बनाई जा रही हैं। आर्यसमाज वहाँ उनके पास अपनी आर्य-भारतीय बस्ती बनाने की कोशिश करेगा। हम यहां प्रण करते हैं कि देश का दूसरा बंटवारा न होने देंगे। देश में दूसरा पाकिस्तान नहीं बनने देंगे।'

सभा के अध्यक्ष भू० पू० संसद सदस्य एवं सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने आर्यजनता को को चेतावनी दी कि जनता की गरीबी, अशिक्षा का लाभ उठाकर विदेशी ताकतें अरबों रुपए झोंक कर हमारी गरीबी का अशिक्षित जनता का प्रलोभन द्वारा विधर्मी बनाने के लिए तुल गई हैं, हमें इस खतरे का मुकाबला करना होगा। भारत सरकार के इस विदेशी पैसे का नियन्त्रण कर इस विदेशी षड्यन्त्र का अन्त करना होगा। यह केवल देश की जनता मे धर्मपरिवर्तन का सवाल नहीं है, यह भारत धर्म के संस्कृति और उसके अस्तित्व का सवाल है। विदेशी ताकतें अरबों रुपए झोंककर देश का इस्लामी करण और ईसाई करण करने के लिए तुल गई हैं। ५०००करोड़ से कहीं अधिक राशि इस घृणित लक्ष्य के लिए लगाई जा रही है।

आर्यसमाज नई दिशा दे

इस अवसर पर भाषण देते हुए प्रो० बलराज मधोक ने कहा—'इस समय आर्यसमाज ही देश को नई दिशा दे सकता है। आज राष्ट्र में आत्मविश्वास पैदा करना होगा। इस भूमि को जो अपना माने उसके लिए जो कुर्बानी-त्याग को वही इसका नागरिक माना जाना चाहिए, शेष सबको हमें विदेशी मानना होगा। आज हमें देश में राष्ट्रवाद की आवाज गुंजानी चाहिए, प्रत्येक देशवासी का भारत विकास होना चाहिए।'

छात्रों से अनुरोध

दिल्ली के छात्र-आंदोलन के नेता एवं श्री रामगोपाल शालवाले के पौत्र छात्र-नेता श्री संजयकुमार ने चेतावनी दी कि इस समय असम विक्षुब्ध है। वहाँ का छात्र भारत राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा कर वहाँ से विदेशी मुसलमानों को निकालने के लिए प्रयत्नशील है। अहमदाबाद और गुजरात के दूसरे नगरों के छात्र आर्थिक दृष्टि के आधार पर आरक्षण करना चाहते हैं। एक गरीब को पढ़ने के लिए जीवन में बढ़ने के लिए शिक्षा का मौका मिलना चाहिए, चिकित्सकों की नियुक्ति करते समय अयोग्य, अनुभवहीन व्यक्तियों को लेना जनता की जिंदगी से खिलवाड़ करना होगा। आज बंगाल में विरोध की आवाज को प्रकट करने का मौका नहीं है, गोआ में विदेशी कामुकता और नग्नता का नृत्य कर रहे हैं, आज राजनीतिक दल अल्पसंख्यकों के वोटों के लिए सौदेबाजी कर रहे हैं। मैं युवकों से अनुरोध करता हूं कि वे एक राष्ट्रभाषा, एक राष्ट्र और नमस्ते के एक अभिवादन के माध्यम से देश को एक और संयुक्त करने का संकल्प कर उसे पूरा करने के लिए जुट जाएं।

आर्यसमाज के विद्वान संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने कहा कि पिछले सौ वर्षों में हम काफी बढ़े हैं, परन्तु आज नये मत-मतांतरों, पाखंडों से हमारी मंजिल की दूरी बढ़ गई है। शंकराचार्य और पौराणिक पंडित वेदों के सायण भाष्य पर चिपटे हुए हैं, फलतः वे वेदों की भ्रांत व्याख्या करने हैं और यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं 'कि वेदों में पशुओं की आहुति का निषेध है।

ब्रह्मचारी आचार्य नरेश ने कहा कि रामायण-महाभारत की सुरक्षा कर पौराणिक भाइयों के—तम्बाकू और धूम्रपान का विरोध कर सिखों के ब्रह्मचर्य एवं गोरक्षा के प्रश्न पर नामधारियों के और भोग की प्रतिष्ठा कर ब्रह्मकुमारियों ने सिद्धान्तों की आर्यसमाज ने रक्षा की है। इन सबको आर्यसमाज के झंड़े के नीचे एकत्र होना चाहिए।

सुश्री उषा शास्त्री ने आर्यजनता से अपने जीवन में यज्ञ की भावना लाने का अनुरोध किया—

कवि मनीषी का आह्वान 'भारत की इज्जत नीलाम नहीं होने देंगे,' जनता को बहुत पसन्द आया।

पहले परिवार को आर्य बनाएं

मुनीश्वरानन्द जी का उद्‌बोधन

दिल्ली। हम 'इतने वर्षों में सारी सृष्टि को आर्य क्या बनाते, केवल दिल्ली शहर को भी आर्य नहीं बना सके अब अब हमें व्रत लेना चाहिए कि प्रत्येक आर्य वर्ष भर में अपने पूरे परिवार को आर्य बनाएगा।''—इन शब्दों में त्रिवेदतीर्थ स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज स्थापना-दिवस पर 'ओ३म्' की पताका लहराते हुए आर्यजनों का उद्‌बोधन किया।

स्वामी जी ने कहा—'ओ३म्' की पताका अवतारवाद और पाषाण-पूजा के स्थान पर एकेश्वरबाद की पताका है. आर्यसमाज स्थापना का दिन वस्तुतः वैदिक धर्म की पुनः प्रतिष्ठा का दिवस है, यह जन्म से जातिवाद के स्थान पर गुण-कर्म से आर्यत्व की स्थापना का दिन है, आज का दिन, सच्चे भाई चारे का दिन है, वेदों की पुनः प्रतिष्ठा का दिन है।'

मुनीश्वरानंद जी ने कहा —'महर्षि हमें जो काम सौंप गए हैं, उसे हमें त्याग, तपस्या और एकता से पूरा करना होगा, हमें जीवन में सच्चा संन्यासी, तपस्वी, परोपकारी आर्य बनना होगा, हम वेदों की प्रतिष्ठा करें, गुण-कर्मो के आधार पर सच्चे पुरुषार्थ से आर्यत्व का विस्तार कर ही ऋषि-ऋण पूरा कर सकते हैं।'

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद-मनन

तीन आयु प्राप्त हों !

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ॥
यजु: ३-६२

ऋषि :—नारायणः । देवता—रुद्रः ।

शब्दार्थ—(जमदग्नेः) जमदग्नि के पूर्णायु प्राप्त करने का कारण (त्रि—आयुषम) तीन जीवन शक्तियों का उपयोग है । (कश्यपस्य) कश्यप के सम्पूर्ण जीवन के आनन्दमय बनने का कारण (त्र्यायुषम्) तीन प्रकार का आहार है । (देवेषु) दिव्य पितरों या विद्वानों में (यद्) जिस प्रकार का प्रयोग (त्र्यायुषम्) आयु की तीनों अवस्थाओं में किया जाता हैं (त्र्यायुषं नः) हम भी अपने जीवन की तीनों अवस्थाओं में (तद्) उसी प्रकार का प्रयोग (अस्तु) प्राप्त करें ।

निष्कर्ष—१—जमदग्नि का यह नाम जाठराग्नि, प्राणाग्नि तथा ज्ञानाग्नि के प्रज्ज्वलित करने के कारण सार्थक है । यदि हम भी जमदग्नि की तरह अपनी जाठराग्नि को प्रज्ज्वलित रखेंगे तो स्वस्थ तथा नीरोग रहेंगे । प्राणसाधना से मन शांत रहेगा और ज्ञान साधना से आत्मा ज्ञान से प्रदीप्त रहेगा ।

२—कश्यप का नाम सर्वत्र आँखें खोल कर भले-बुरे के विचार सहित देखने के कारण सार्थक है । हम भी यदि उसकी तरह अन्नमय तथा प्राणमय कोश को वर्चस्वी बनाने वाले अन्न (ब्रह्म) का आहार करेंगे, मनोमय कोश को ईर्ष्या द्वेष आदि आसुरी प्रवृत्तियों से बचाने के लिए वर्म (कवच=संयम) का प्रयोग करके आहार करेंगे, और विज्ञानमय कोश को ज्योतिर्मय बनाने के लिए ज्ञान वर्चस का आहार करेंगे तो कश्यप बनेंगे और उसकी तरह जीवन की तीनों अवस्थाएं बाल्य, यौवन तथा वार्द्धक्य आनन्दमय बन जायेंगी ।

३—देवों, पितरों तथा विद्वानों का बाल्य, यौवन तथा वार्द्धक्य तीनों अवस्थाओं को गुजारने का यही प्रकार है । हम भी उनका अनुकरण करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन उसी प्रकार गुजारें ।

४—मनुष्य की आयु १०० वर्ष मानी गई है । शतायुर्वेपुरुषः । जीवेम शरदः शतम । इस मन्त्र में त्रिगुणित आयु की चर्चा है, इसलिए महर्षि दयानंद ने इस मंत्र के भावार्थ में लिखा है 'हे जगदीश्वर भवत्कृपया यथा विद्वान्सो विद्या-परोपकार धर्मानुष्ठानेन आनन्दतया त्रीणि शतानि वर्षाणि याव दायुर्भुञ्जते तथैव वयं त्रिशत वर्षं चतुः शत वार्षं वायुः सुखेन भुञ्जीमहि' आपकी कृपा से हम भी ३०० या ४०० वर्षों तक सुखपूर्वक जीवन भोगे ।

विशेष—इस मंत्र का ऋषि (न+रमते)=नर कुल में उत्पन्न होने के कारण नारायण बना है, जैसे गर्ग कुलोत्पन्न गार्ग्यायण कहलाता है, इसलिए यदि हम उस संकेतों को ग्रहण करके अनासक्त=निष्काम=नर कुलागत परम्परा में विशिष्टता प्राप्त करेंगे तो सम्भवतः तीन सौ वर्ष की आयु भी प्राप्त कर सकेंगे ।

नारायण (संगरहित) रुद्र तो बन ही जाता है, क्योंकि वह अनासक्त होकर सबको सन्मार्ग पर लाने के लिए उपदेश देता है । सबके दुःखों को दूर करने का प्रयत्न करता है और दूसरों को दुःख देने वाले दुष्टों को बिना पक्षपात के दण्ड देकर रुलाता है । रुद्र के तीन कार्य, आयु की तीन अवस्थाएं, जीवनकाल को सुखी बनाने के लिए तीन आहार तथा जीवन शक्तियां आयु के त्रिगुणित होने की सम्भावना प्रकट करती हैं ।

अर्थ पोषक प्रमाण—त्र्यायुषम्
Three fold vital power. ग्रिफिथ
Threefold period of life. ,,

त्र्यायुषम्—क—विद्या शिक्षा परोपकार सहितं त्रिगुणमायुः ।

ख—बाल्ययौववृद्धावस्था सुखकरं त्रिगुणमायुः ।

ग ब्रह्मचर्य गृहस्थवान प्रस्था... सुख संपादकं त्रिगुणमायुः ।

घ—त्रिशतवर्षं चतुः...वर्षं ... सुखेन भुञ्जीमहि ।

—स्वामी दया...

आयु :—एति प्राप्नोति सर्व... जीवन कालः । उणादिकोशः । व... विज्ञानं स्वामी दयानन्द

जीवन दायिनी शक्तिः । ... आयुष=आयु । आयु—जीवन श... आहार—जीवन काल । मानक हि... कोश ।

आयुषम्—आयुष्यम्—आयु के ... हितकर ।

जमदग्नि :—प्रज्ज्वलिताग्नयः ... ९-२४ । जिसकी जठराग्नि, प्राणा... तथा ज्ञानाग्नि प्रज्ज्वलित (प्रगति... हैं । जमति—गच्छति नि. २-१४

कश्यप—पश्यतीति । कश्यपः ... को भवति सर्वं पश्यतीति सौक्ष्म्या... तै० अ० ...

रुद्र :—क. रुतः सत्योपदे... ददा...

ख. रुद्—दुःखं दुःखहेतुर्वा... र्वा

ग. रोदयति पापिनः ।

आयुवर्द्धक कश्यप के तीन गुर-...
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्य...
ज्योतिषा वर्चसा ...
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या...
मानुषीख सृष्टा वधा...
अथर्व १७ १...

—मनोहर विद्यालं...

बोध-कथा

जीओ तो सम्मान से : मरो तो सम्मान से

यूनान के विवरणों में लिखा है कि सिकन्दर के शासन के विरुद्ध भारत का बुद्धिजीवी वर्ग अपना उग्र रोष हर दृष्टि से प्रकट करने के लिए तत्पर था । सिकन्दर के विरुद्ध एक भारतीय राजा को भड़काने वाले ब्राह्मण से यवनराज सिकन्दर ने पूछा—'तुम क्यों इस राजा को मेरे विरुद्ध भड़काते हो ?'

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—'मैं चाहता हूं, यदि वह जीए तो सम्मानपूर्वक जीए अन्यथा सम्मानपूर्वक मर जाए ।'

एक ब्राह्मण संन्यासी ने सिकन्दर से कहा था—तुम्हारा राज्य सूखी हुई खाल के समान है, जिसका कोई गुरुता-केन्द्र नहीं होता । जब सिकन्दर राज्य के एक पार्श्व पर खड़ा होता है तब दूसरा हिस्सा उसके खिलाफ उठ खड़ा होता है ।'

तक्षशिला के एक बूढ़े दण्डी संन्यासी को सिकन्दर के सामने यह डर दिखा कर लाने की कोशिश की गई कि सिकन्दर तो संसार के स्वामी द्यौः (ज्योस) का पुत्र है, यदि तुम उसके सामने नहीं आओगे तो वह तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर देगा ।'

यह सुनकर उस दण्डी संन्यासीने उपेक्षा की हंसी में कहा था—'जिस प्रकार सिकन्दर द्यौः का बेटा है, उसी प्रकार मैं भी द्यौः का पुत्र हूं । मैं अपनी मातृभूमि भारत से पूरी तरह खुश हूं जो माता के समान मेरा पालन-पोषण करती है । यदि सिकन्दर गंगा के पार की भूमि में जायेगा तो नन्द की सेना उसे यह दिखला देगी कि वह अभी सारे संसार का स्वामी नहीं हुआ है ।'

पश्चिमोत्तर भारत में सिकन्दर के विरुद्ध जो विद्रोह हुआ था वस्तुतः वह जन-विद्रोह था, उसका नेतृत्व तत्कालीन बुद्धिजीवी वर्ग ने किया था ।

—नरेन्द्र

अहमदाबाद के चार लाख हरिजन दुविधा...

गुजरात के आन्दोलन की प्रतिक्रिया : हरिजन क्षेत्रों में आर्य नेता तुरन्त पहुंचें : हरिजनों को मुसलमान बनाने की कोशिश

आर्य नेता श्री आनन्द प्रिय की सामयिक चेतावनी

बड़ौदा, हिन्दू धर्मरक्षक प्रसारक मण्डल कारेली बाग, आत्माराम-पथ, बड़ौदा के प्रधान, तथा गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान आनंदप्रिय ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले से अनुरोध किया है कि—'इस समय चार-पांच मूर्द्धन्य संन्यासी अहमदाबाद में जाकर अड्डा जमाएं और सब हरिजनों में विश्वास प्रकट कर उन्हें सामूहिक रूप से आर्य बनने के लिए प्रोत्साहित करें, अन्यथा मुसलमान मौलवी, पादरी, और बौद्ध साधु आदि धर्मों के प्रचारक अहमदाबाद में अड्डा जमाकर प्रचार कर रहे हैं कि हमें अरब राज्यों और विदेशों से असीम धनराशि मिल रही है, वे उन्हें उकसा रहे हैं, हमारी शरण आओ, इससे तुम हरिजनों की गरीबी दूर हो जाएगी ।'

श्री आनंदप्रिय ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान से अनुरोध किया है कि आपने जिस प्रकार मुरादाबाद में हरिजनों की सेवा करके आर्यसमाज की शान ब... इस समय दिल्ली के प्रमुख ... अहमदाबाद जाकर जुट जाएं तो ... काम होगा ।

आनंदप्रिय जी ने चेतावनी दी है ... 'गुजरात में जो आंदोलन हो रहा ... उसका रूप विकृत हो चुका है । ... विग्रह के रूप में चलाया जाने वाला आंदोलन चार लाख हरिजन मजदूरों ... केन्द्र अहमदाबाद में बिगड़ गया है ... हरिजनों को प्रेरणा दी जा रही है ... हिन्दू-धर्म त्याग दें । उन्हें पैसों का ... भन देकर मुसलमान बनाने की को... की जा रही है । बहुत से हरिजन ... प्रलोभन के शिकार बन सकते ... अम्बेदकरवादी चाहते हैं कि वे बौद्ध ... हो जाएं, ईसाई लोग भी प्रयत्नशील ... आशा है आर्य नेता और सार्वदेशिक ... इस सम्बन्ध में तुरन्त कार्यवाही क...

हम निर्भय हों !

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥

जिस प्रकार आकाश और पृथ्वी—दोनों ही न दुःख देते हैं और न भयभीत होते हैं, उसी प्रकार हे मेरे प्राण, तू भी भयभीत न हो ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

क्या हम उन्हें भूल गए हैं ?

१०६ वर्ष पूर्व १२ अप्रैल, १८७५ के दिन आर्यसमाज संस्था का सूत्रपात हुआ था। पिछले सप्ताह देश-विदेशों में आर्यसमाज—स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संस्थापक के अद्वितीय व्यक्ति, कृतित्वत्व एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों नियमों और उनके वर्त्तमान विस्तार तथा भावी सम्भावनाओं पर जोरदार भाषण हुए, सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार किए गए। यह सब ठीक है, परन्तु कुछ ऐसा लगता है कि हम आज अपने उन अगणित अनाम आर्यबन्धुओं को भूल गए हैं, जिन्होंने बड़े साहस के साथ आर्यसमाज और उसके कार्य को लोकप्रिय बनाया था। हम उन तपस्वी, और तन-मन-धन की आहुति देने वाले हुतात्माओं और शहीदों को भी भूल गए हैं जिन्होंने धर्म, समाज, जाति के लिए अपनी बलि दी थी। हम उन आर्य सत्याग्रहियों और शहीदों को भी भूला बैठे हैं, जिनके बलिदान से आर्यसमाज ने अन्यायी शासकों, अत्याचारी सम्प्रदायवादियों, महन्तों, मठाधीशों से टक्कर ली थी। सम्भवतः हम उन आर्यजनों को भी भुला बैठे हैं जिन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम, में, भाषा, स्वसमाज-सुधार, कुरीतियों के निवारण के लिए बिना आगा-पीछा किए अपने सर्वस्व की बलि दे दी।

सदा मन्दिरों और इमारतों के कंगूरे ही चमकते हैं। मस्तूल और स्तम्भों पर लगी पताकाएं और तोरण ही फहराते हैं, परन्तु ये इमारतें तथा ऊंची पताकाएं—विजयध्वज सदा नींव के पत्थरों पर आश्रित होते हैं। हम यह भूल नहीं सकते कि वस्तुतः आर्यसमाज पिछली शती का जन-आंदोलन था। आर्यसमाज की प्रगति का इतिहास असल में नवभारत के पुनर्जागरण का इतिहास है। इसका प्रत्येक व्यक्ति नेता था, हर व्यक्ति ही मानो कोई कर्मठ संस्था था। परिस्थिति और समय के तकाजे को देखते हुए जो उचित होता था, वह उसे कर गुजरता था। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि जहां देश की दूसरी राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के अखिल भारतीय केन्द्रीय संगठन पहले बने, बाद में उनका प्रादेशिक और क्षेत्रीय विस्तार हुआ, इनकी तुलना में आर्यसमाज का एक अनूठा इतिहास है। गांव-गांव, मुहल्ले-मुहल्ले, कस्बे और नगर-नगर में आर्यसमाज पहले पहुंचा, उसके प्रादेशिक, विविध देशीय और सार्वदेशिक संगठन बहुत बाद में बने। इसी के साथ आर्यसमाज के प्रसार का श्रेय न बड़े धनिकों को है, न विख्यात नेताओं और बड़े विद्वानों को है, प्रत्युत इसका प्रसार तो जन-जन, नगर-नगर, और गांव-गांव के जागरण के साथ हुआ।

आज देश के सामने गरीबी, बेकारी, भूख, रोग आदि के अभाव तो हैं ही, देश का बुद्धिजीवी एवं तरुण वर्ग विलासिता और भोग की सामग्रियों में लिप्त होकर आराम और वासना की खोज में बुरी तरह से भटक रहा है। आर्यसमाज का इतिहास त्याग-बलिदान की नींव पर बना है। सहस्रों आर्यजनों ने अपनी निष्ठा, सात्त्विकता और त्याग के बल पर ही समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ाया है। आज भोग के स्थान पर त्याग की फिर पूजा हो, कुर्सी, सत्ता और लक्ष्मी के स्थान पर पुनः विद्वत्ता और गुणों का आदर हो, उसके लिए आर्यसमाज को राष्ट्र के जीवन में नैतिकता और त्याग के आदर्शों की पुनः प्रतिष्ठा करनी होगी। यह कार्य सरल नहीं है। स्वाधीनता-आन्दोलन और समाज के प्रारम्भिक जीवन में जिस प्रकार आर्यजनों ने नेतृत्व की अपेक्षा न कर अपने व्यक्तिगत दायित्व को सर्वोपरि माना था, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक आर्यजन को दूसरों से अपेक्षा न कर पुराने आर्यजनों के त्याग-बलिदान से प्रेरणा कर उनके चरण चिह्नों पर चलना होगा। केवल ऐसी ही स्थिति में हम उन शहीदों और कर्मठ आर्यजनों को स्मरण कर उनकी थाती सुरक्षित रख सकेंगे।

'खालिस्तान' : एक राष्ट्रविरोधी मांग

पिछले दिनों सिखों की दो संस्थाओं द्वारा पृथक् सिखराज्य की मांग फिर उठाई गई है। इन संस्थाओं द्वारा की गई यह मांग पूरी तरह राष्ट्रद्रोहपूर्ण है। अभी तक सिखों का प्रमुख खालसा दीवान सिखों की शैक्षणिक और सामाजिक उन्नति के कार्य में ही संलग्न था, पिछले दिनों इस दीवान ने अपने चंडीगढ़—अधिवेशन में पृथक् सिख राष्ट्र की मांग करते हुए सुरक्षा परिषद् में सहायक सदस्यता की मांग की थी। अब पंजाब भर के ऐतिहासिक पूजा स्थलों, पर अनगिनत स्कूलों, कालेजों, अनाथालयों, अस्पतालों, गुरुद्वारों, धार्मिक स्थानों की व्यवस्था करने वाले तथा समस्त 'चढ़ानों' आदि का नियन्त्रण करने वाली संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार कर मांग की है कि दूसरे भारतीयों से पृथक् एक सिखराज्य स्थापित किया जाए।

इस संस्थाओं ने अभियोग लगाया है कि सरकार सिखों से भेदभाव करती है, उन्हें अपना उचित अधिकार नहीं मिलता। इस अभियोग की परीक्षा तथ्यों से करने को वह असत्य सिद्ध होता है। इस समय सिख भारत की जनसंख्या के केवल दो प्रतिशत तक हैं, इसके बावजूद उन्हें भारत की सुरक्षा सैन्य में दस प्रतिशत स्थान प्राप्त हैं। जनसंख्या में उनके प्रतिशत की अपेक्षा पुलिस और प्रशासन में उन्हें कहीं अधिक स्थान दिए जाते हैं। नाममात्र की -- लगभग एक दो प्रतिशत अधिक जन-संख्या होने के कारण जब से अलग पंजाबी सूबा बना है, तब से वहां की शिक्षा-संस्थाओं और प्रशासन में पंजाबी का बोलबाला है, वहां हिन्दी की उपेक्षा है। पंजाबी सूबे के बनने के बाद से वहां सदा सिख ही मुख्य मंत्री बना है, कभी ४९ या कुछ कम प्रतिशत हिन्दुओं के प्रतिनिधियों को प्रशासन का प्रमुख बनने का सौभाग्य नहीं मिला। केन्द्रीय मन्त्रिमंडल के सदस्यों तथा राज्यपालों के रूप में सिख हमेशा नियुक्त किए गए हैं। ये तथ्य सिखों से भेदभावपूर्ण व्यवहार का अभियोग झुठलाते हैं और स्पष्ट करते हैं कि उन्हें उनके अधिकारों एवं प्राप्तव्य से कहीं अधिक मिल रहा है।

अभी तक सिखों के तथाकथित उग्रवादी साम्प्रदायिक तत्त्व ही पृथक् सिख-राज्य-खालिस्तान की मांग करते थे, परन्तु पहली बार यह मांग उन संस्थाओं की ओर से की गई है जो अभी तक सम्प्रदाय की शैक्षणिक, सामाजिक और साम्प्रदायिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील थे। अब इन संस्थाओं द्वारा भी पृथक् मजहबी राष्ट्र की मांग करना, सिखों को एक पृथक् अन्तर्राष्ट्रीय जमात घोषित करने की मांग उठाना आसन्न खतरे की सूचना है। यह भी उल्लेखनीय है इस मांग के पीछे संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में बसे कुछ मजहबी सिख हैं और वे संसार की बड़ी शक्तियों और पड़ोसी पाकिस्तान के आकाओं से सीधा नाता-रिश्ता कायम करना चाहते हैं। भारत अभी तक भी देश के एक साम्प्रदायिक विभाजन के अभिशाप से मुक्त नहीं हुआ है, उसके सामने एक नए सम्भाव्य संकट का खतरा मण्डरा रहा है। देश की सम्पूर्ण राष्ट्रवादी शक्तियों को इस नए खतरे का मिलकर सामना करना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

अत्यधिक सामयिक एवं उपयोगी

द्रोणाचार्य महाविद्यालय हरियाणा के सेवानिवृत प्राचार्य वेदशिरोमणि आर्येन्द्र शर्मा (१३८, जैकमपुरा, गुड़गांव, हरियाणा) लिखते हैं — 'आपका साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' आर्य विचारधारा का निरन्तर प्रसार कर रहा है, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। 'भारत को विधर्मी बनाने का षड़यन्त्र' शीर्षक आपका सम्पादकीय अत्यधिक सामयिक एवं उपयोगी है।

श्री मनोहर विद्यालंकार द्वारा स्थायी स्तम्भ 'वेद-मनन' में प्रकाशित 'यज्ञ-भावना का विस्मरण ही यज्ञ की हिंसा है' प्रत्येक आर्य के लिए पठनीय एवं मननीय तथा कार्यरूप में प्रतिपादनीय है। आशा है कि 'आर्यसन्देश' इसी प्रकार आर्यजगत् को निरन्तर उद्बोधित करता रहेगा।'

१३ अप्रैल, १९१९, जलियांवाला बाग की खूनी होली

सेवाकार्य और सत्याग्रह संग्राम में अग्रगण्य आर्यसमाज

पहले महायुद्ध में भारत से जन और धन की प्राप्ति के लिए विदेशी सरकार ने जहां भयंकर अत्याचार किए, वहां साथ में इस आशय के आश्वासन देने में भी कोई संकोच नहीं किया कि युद्ध में विजयप्राप्ति के बाद भारत को औपनि, वेशिक स्वशासन दे दिया जाएगा।

विजय प्राप्ति के बाद, तत्काल, विदेशी सरकार की नीयत बदल गयी। औपनिवेशिक 'स्वशासन' देने के बदले समस्त देश द्वारा एक स्वर से प्रबल विरोध के बावजूद रालेट एक्ट=काला कानून-जारी करने की घोषणा की जिसके अन्तर्गत पुलिस और नौकरशाही को बिना वारंट के भी संदिग्ध 'व्यक्ति' होने के बहाने किसी भी व्यक्ति को पकड़ने और घर की तलाशी लेने के अंधाधुंध अधिकार दे दिए गए थे।

गांधी जी ने इस काले बिल को राष्ट्रीय अपमान घोषित करते हुए इसके विरोध में समूचे देश में सत्याग्रह द्वारा प्रबल आंदोलन करने की घोषणा की। कांग्रेस ने तत्कालीन नेताओं—लोकमान्य तिलक चितरंजनदास, ला० लाजपतराय इत्यादि—और नरम दल के नेता—श्री निवास शास्त्री सी. वाई. चिन्तामणि सर फीरोजशाह मेहता- इत्यादि किसी ने भी गांधी जी के सत्याग्रह प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए। समूचे देश में केवल एक ही ऐसा उल्लेखनीय और साहसी नेता था जिसने इस प्रतिज्ञापत्र सबसे पूर्व डंके की चोट हस्ताक्षर किए। यह थे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जिन्हें गांधी जी अपना बड़ा भाई कहते व मानते थे। गांधी जी के अफ्रीका सत्याग्रह में गुरुकुल कांगड़ी के प्राचार्य और मुख्याधिष्ठाता के रूप में स्वामी जी (उस समय महाराजा मुंशीराम) के छात्र और अध्यापकों सहित मजदूरी कर और एक समय का भोजन त्याग कर जो धनराशि बचायी वह श्री गोखले द्वारा द० अफ्रीका में गांधी जी को सन् सन् १९१५-१६ में भिजवाई। इससे गांधी जी अत्यन्त प्रभावित हुए। आर्य समाज के नेता के रूप में स्वामी श्रद्धानंद जी के इस सत्याग्रह में, गांधी जी के साथ, देश का नेतृत्व ग्रहण करने का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज—देश की एक मूर्धन्य संस्था के सामूहिक व व्यक्तिगत—रूप में सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय सोत्साह भाग लेने लगा।

दिल्ली के बेताज बादशाह : "मेरी छाती पर गोली मारो" स्वामी जी

१९१९ फरवरी, घटनाचक्र में तेजी आई। इससे पहले ही गांधीजी की गिरफ्तारी और गुजरात वापसी की खबर आग की तरह सारे देश में फैल गया। उस दिन ३० मार्च ही था। दिल्ली में रेलवे स्टेशन के पास दंगा हो गई। गोली चल गई। स्वामी श्रद्धानन्द उन दिनों, दिल्ली के बेताज बादशाह थे। ३-४ आदमी मर गये। शाम को जामा मस्जिद के सामने परेड के मैदान में आर्यसभा थी। वातावरण गर्म था। मस्जिद के मंच से स्वामी श्रद्धानन्द का, वेदमंत्र पाठ के साथ अहिंसा आर शान्ति के साथ, आन्दोलन चलाने और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण हुआ। हजारों-लाखों की भीड़ थी। सभा के बाद स्वामी जी के नेतृत्व में उनके पीछे सर्वथा मौन चली आ रही जनता का जलूस जब चांदनी चौक घंटाघर के पास पहुंचा, तब गोरे सार्जेंट और गोरखा सिपाही जनता की ओर बंदूक ताने खड़े थे। स्वामी जी ने अपनी स्वभाविक के निर्भयता के साथ सार्जेंट के सामने अपनी छाती खोल ऊंचे स्वर में कहा—'इस जलूस का नेता मैं हूं। गोली चलानी है तो मेरी छाती पर चलाओ। इस शाम, बेकसूर जनता पर गोली क्यों चलाते हो। स्वामी जी के इस आत्मविश्वासपूर्ण, साहस और निडर, भरे शब्दों से सार्जेंट एकदम हतप्रभ हो गया। उसके हुकुम से संगीनें नीचे झुक गईं। स्वामीजी के पीछे आ रहा हजारों का जलूस शान्तिपूर्वक आगे बढ़ गया।

पर यह समाचार बिजली की तरह कुछ ही समय में सारे देश में फैल गया। चारों ओर से स्वामी जी की इस असाधारण निर्भयता से सत्याग्रह आंदोलन में प्रबल तेजी आ गई। गांधी जी ने स्वामी जी को इस साहस के लिए बधाई देते हुए कहा—स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निर्भय व्यक्ति मैंने अपने जीवन में नहीं देखा।'

पंजाब में फौजी कानून : नेतृत्व आ. स. के हाथ में

घटनाचक्र ने पंजाब में आकर विकट रूप धारण कर लिया। पंजाब का लेफ्टि. गवर्नर ओडवायर अत्यन्त नृशंस, क्रूर और अत्याचारी शासक था। उन दिनों पंजाब के गांवों में नौजवान कम ही दिखायी देते थे। सबको जबदस्ती फौज में भरती कर लिया गया था। खून पीने वाली जोक की तरह अमीर-गरीब सबसे धन चूस लिया गया था। पंजाब में रालेट-एक्ट विरोधी और सत्याग्रह दिवस ६ मार्च १९१९ निश्चित किया गया था। पंजाब का नेतृत्व-राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक—आर्यसमाज के ही हाथ में था। ५ मार्च को रामनवमी का त्यौहार था। उसी दिन प्रान्त के कांग्रेस नेता और प्रमुख आर्यसमाजी अमृतसर निवासी डा. सत्यपाल, चौधरी बग्गा, और मुस्लिम नेता डा. किचलू—इन सबको पकड़ किसी अज्ञात स्थान में नजरबन्द कर दिया गया।

महाशय कृष्ण को लाहौर के किले में कालकोठरी में बन्द कर दिया गया। इसी प्रकार कांग्रेस नेता व प्रमुख आर्य ला० दुनीचन्द, हरकिशनलाल, ला० दुनीचन्द बैरिस्टर, रामभजदत्त चौधरी व अन्य नगरों-रावलपिंडी गुजरां वाला, पेशावर—इत्यादि नगरों के नेताओं को पकड़ जेल में डाल दिया गया।

अमृतसर में गोली

अमृतसर में अमानवीय अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गयी। ६ मार्च को नगर के चारों नेताओं की गिरफ्तारी और निष्कासन के विरोध में शहर के कई हजार व्यक्तियों का शांत और मौन जलूस अपना विरोध प्रकट करने और नेताओं की रिहाई की मांग करने डिप्टी कमिश्नर की कोठी पर प्रातः १० बजे के लगभग रेल के पुल को पार कर माल-रोड की ओर जब जा रहा था, तब हथियारबन्द और घुड़सवार पुलिस व फौज ने उसे रोक लिया। नगर नेताओं के बार-बार अनुरोध पर भी जब रास्ता नहीं मिला और पुलिस अड़ी रही, तब किसी सिपाही ने बिना किसी पूर्व सूचना के गोली चला दी।

पंजाब में वैसाखी पर्व

पंजाब में प्रथम वैशाख नव वर्ष के प्रारम्भ होते-होते एक विशिष्ट पर्व के रूप में बड़ा पवित्र और महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। पंजाब की सबसे मंडी—विशेषत: कपड़े व अन्य समान की—अमृतसर में वैशाखीपर्व दो-तीन दिन पहले ही दूर-दूर के व्यापारी माल खरीदने आते हैं, दूसरी ओर पंजाब का किसान गेहूं की फसल काट प्रसन्न मुद्रा में अमृतसर में वैशाखी का मेला देखने और खरीद कराने-करने आता है। अमृतसर में यद्यपि ६ अप्रैल के फिसाद के बाद मार्शल ला लगा दिया गया था, पर सब अखबारों के बंद किए जाने और उस समय संचार सुविधाओं की कमी हेतु देहात के लोगों को यह पता नहीं था कि अमृतसर में फौजी कानून लगा हुआ है। फलतः प्रतिवर्ष की तरह हजारों की जनता वैशाखी का त्यौहार और मेले का आनन्द लूटने वहीं हो गई।

अमृतसर में देहात के हजारों... सरकारी जासूसों की शरारत

सरकार द्वारा नियुक्त हंटर ... ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि १३ अप्रैल को अमृतसर में बाहर आए लोगों को फौजी कानून की ... नहीं थी और न ही उस दिन इसके कोई ढिंढोरा पीट जनता को सावधान किया गया। कांग्रेस द्वारा नियुक्त ... समिति ने कई प्रमाणों से यह ... खोला है कि कुछ सरकारी जासूसों ने इनमें से कुछ के नाम भी रिपोर्ट में ... गए हैं—नगर में यह घोषणा शहर ... डुगडुगी पीट कर दी कि—आज ... को ४ बजे जलियांवाला बाग में ... की ओर से एक आम जलसा होगा जि... मौजूदा सियासी हालात पर नेताओं ... भाषण होंगे।

लेखक :

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालं...

जलियांवाला बाग का स्वरूप

जलियांवाला बाग वस्तुतः ... सर्वथा उलट एक उबड़-खाबड़ ... बस्ती में एक ऐसा मैदान, उस समय ... जो तीन ओर करीब ५-६ फुट ... दीवार से घिरा और पश्चिमकी ओर ... मंजिले ऊंचे बने मकानोंके पीछे ... दीवारों से रहा घिरा टुकड़ा, केवल ... तंग दरवाजा आने जाने के लिए ... एक ओर पुराना कुआं—यह ... स्वरूप था। करीब ३॥ बजे ही श्रोता ... से—जिनमें अधिकांश बाहर से ... लोग थे यह बाग भर गया। इन ... में से ही तक मंच पर खड़ा भाषण दे ... था।

डायर द्वारा शान्त जनता पर गोला...

करीब ४॥बजे इस बाग के एक ... दरवाजे पर जनरल डायर के आदेश ... मशीनगनों ने बिना किसी पूर्व सूचना ... सावधानता की घोषणा के जहां ... निहत्थी, निरअपराध लगभग १० ... की शांत जनता पर गोले बरसाने ... कर दिए वहां बाग के तीनों ओर ... ताने खड़े सिपाहियों ने किसी को ...

भाग जाने के भी रास्ते लगभग रोक दिये। मशीनगन लगभग १० मिनट तक गोले बरसाती रही। हजारों लोग कुछ ही क्षण में से इस पाशविक अत्याचार के शिकार हो गए, जख्मी हो गये, कुछ भागदौड़ में कूद फांद बच गये, कई कुएं में कूद गये।

हंटर कमेटी के सामने अपनी गवाही में क्रूर डायर ने यह स्वीकार किया कि वह करीब १० मिनट की गोलीबारी के बाद फौजियों सहित वापस चला गया। एक प्रश्न के उत्तर में उसने साफ कहा··· "मरे हुओं और घायलों की दवा-दारु-इलाज उसका काम नहीं था।" सारा अमृतसर शहर रोने-पीटने और श्मशान की तरह बन गया। जो लोग देहात से आए थे, उनका तो सिवाय कुत्तों और गीदड़ों व चील-कौओं के कोई वली-वारस न था।

हंटर कमेटी के अनुमान से करीब ४०० लोग मरे जबकि कांग्रेस जाँच समिति के अनुसार मृतकों की संख्या करीब दो हजार थी।

पंजाब क्षत-विक्षत : स्वामी श्रद्धानन्द का नेतृत्व

क्रूर विदेशी सरकार के इस जघन्य और राक्षसी दुष्कृत्य के फलस्वरूप क्षत-विक्षत वीरभूमि पंजाब के संकट काल में सेवा और राहत के लिए जो व्यक्ति और संस्था सबसे प्रथम मैदान में आयी, वह स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में आर्यसमाज ही था। स्वामी जी ने बिना एक दिन की भी देरी किए लाहौर में म. कृष्ण के "प्रताप" कार्यालय के एक कमरे में पंजाब सेवा समिति का कार्य प्रारम्भ कर अमृतसर, लाहौर तथा अन्य प्रभावित नगरों में राहत और सहायता कार्य चालू कर दिया। इन पंक्तियों का लेखक उस समय गुरुकुल विश्वविद्यालय (गंगापार) की १३वीं कक्षा में था। महाविद्यालय विभाग के समस्त छात्र, स्वामी जी के निर्देशानुसार, विभिन्न नगरों में कार्यरत हो गए। अमृतसर में हम १० छात्र नियुक्त किए गए। सबसे पूर्व पीड़ित परिवारों की ब्योरेवार सूची बनाई गई। अमृतसर के आर्य सज्जनों ने इसमें पूरा सहयोग दिया। इन्हीं महानुभावों के निर्देशन में गांवों के पीड़ित व्यक्तियों की भी तालिका बनाई गई। सहायता के लिए धन, वस्त्र, अन्न इत्यादि की व्यवस्था स्वामी जी के नेतृत्व में, पं० मदनमोहन मालवीय और कांग्रेस नेताओं तथा अन्य दानी-उदार संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा पर्याप्त मात्रा में होती रही।

१९१९ का कांग्रेस अधिवेशन अमृतसर में : स्वागताध्यक्ष स्वामी जी ही

१९१९ का कांग्रेस अधिवेशन, एक वर्ष पूर्व ही पंजाब कांग्रेस नेताओं के विशेष अनुरोध पर, अमृतसर में होना निश्चित हो चुका था। प्रमुख कांग्रेसी नेता तो जेलों में व नजरबन्द थे। ला० लाजपत राय अमेरिका में थे और ब्रिटिश सरकार उनके भारत वापस आने पर रोक लगाए हुए थी। कांग्रेस नेताओं ने इस संकट काल में, जेल में बन्द कांग्रेस नेताओं पंजाब के=विशेष अनुरोध पर स्वामी श्रद्धानन्द को ही एकमात्र इस महान् दायित्व को संभालने के योग्य समझा। फलतः गांधी जी और मोतीलाल नेहरू ने व्यक्तिगत रूप से स्वामी जी से अमृतसर कांग्रेस का दायित्व संभालने का अनुरोध किया। पंजाब सेवा समिति का कार्य कुछ विश्वस्त और योग्य व्यक्तियों को सौंप स्वामी जी १९१९ मे अमृतसर कांग्रेस के दिसम्बर मास के अंतिम सप्ताह में होने वाले अधिवेशन की तैयारी में जुट गये। स्वागत समिति के अध्यक्ष का पद उन्हें ही सौंपा गया।

नवदिशा प्रेरक अधिवेशन : स्वामी जी द्वारा प्रथम बार हिन्दी व हरिजन समस्या

दिसम्बर मास, शीतु ऋतु यौवन पर, विशेषतः पंजाब में फिर अमृतसर में दो दिन पूर्व जोरदार वर्षा। स्वामी जी पुनः गुरुकुल कांगड़ी के महाविद्यालय विभाग के छात्रों को सेवा के लिए बुलाया। हम छात्रों में रेलवे स्टेशन पर पड़े पत्थर के कोयले की राख को ठेलों-गड्ढों पर भर नगर की मुख्य सड़कों पर बिछा दिया! इससे कांग्रेस का जलूस खूब शान से निकला।

कांग्रेस इतिहास में अमृतसर अधिवेशन देश की राजनीति को क्रांतिकारी मोड़ देने के लिए सदा स्मरणीय रहा है। यह पहला अवसर था जब स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस मंच से वेद मंत्र पाठ के साथ हिन्दी में अपना भाषण पढ़ा और पहली बार तथाकथित अछूतों के उद्धार की आवश्यकता पर स्वामी जी ने देश का ध्यान आकृष्ट किया।

इस अमृतसर कांग्रेस की सफलता के फलस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में आर्यसमाज ने, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में, सत्याग्रह आन्दोलन में सर्वाधिक योगदान किया।

ई।इ७ शास्त्री नगर, जयपुर-७

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन में पुलिस की नादिरशाही

हवन करते हुए आर्य सज्जन पकड़े गए : उपद्रवी तत्वों की उपेक्षा

नई दिल्ली। आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के आर्य सज्जन रविवार २९ मार्च के दिन आर्यसमाज के एफ ब्लाक स्थित अपने प्लाट पर हवन कर रहे थे कि उन्हें कुछ शरारती तत्वों ने हुल्लड़ और पत्थरबाजी से परेशान किया। मौके पर फ्लाइंग स्क्वैड और पुलिस ने उपद्रवी लोगों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की पर वह हवन करते हुए आर्य सज्जनों को पकड़कर पुलिस थाने ले गई। पुलिस की इकतर्फा कार्यवाही से पश्चिमी दिल्ली की आर्य समाजों और आर्य जनता में क्षोभ की लहर फैल गई है। क्षेत्र की आर्य जनता विक्षुब्ध है, वह आर्यसमाज के प्लाट पर निरन्तर वेदपाठ और हवन आदि का कार्य प्रचलित रखे हुए हैं।

सारी घटना की पृष्ठभूमि इस प्रकार है—

मानसरोवर गार्डन एक मंजूरशुदा, प्राइवेट कालोनी है। इस कालोनी में आर्यसमाज की स्थापना कई वर्ष पूर्व हो गई थी, परन्तु निश्चित स्थान के अभाव के कारण आर्यसमाज के सत्संग और साप्ताहिक अधिवेशन पारिवारिक सत्संगों के रूप में होते रहे। स्थान के अभाव को दूर करने के लिए आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के कालोनाइजर श्री मानसिंह जी से समय-समय पर अनुरोध करती रही थी, मूलतः उन्होंने समाज को ३२५ वर्गमीटर का प्लाट दान में दे दिया। इस बारे में उन्होंने अपना स्वीकृति-पत्र भी दे दिया। यह प्लाट हायर सकेण्डरी स्कूल, मानसरोवर गार्डन एफ ब्लाक के साथ है और इसके सामने पन्द्रह फुट की एक गली छोड़कर एफ ३६-३७-३८ के तीन मकान अवस्थित हैं।

उल्लेखनीय है कि एफ ३६ के मालिक श्री कन्हैयालाल ठेकेदार ने शनिवार २८ मार्च के दिन आर्यसमाज के सदस्यों को विश्वास दिलाया कि उनकी लाइन में पड़ने वाले मकान मालिकों को प्रसन्नता होगी यदि आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन का मंदिर शीघ्र बन जाए, जिससे जनता जल्दी से जल्दी इसका लाभ उठाए। इस बात का ख्याल रखते हुए समाज के सदस्यों ने रविवार २९ मार्च का सत्संग समाज के अपने प्लाट पर आरम्भ कर दिया, पर कुछ ही समय बाद कुछ लड़के वहाँ आ गये और हुल्लड़ कर पत्थर-कंकड़ फेंकने लगे। अभी यह हुल्लड़ चल ही रहा था कि फ्लाइंग स्क्वाड भी आ गया। कुछ समय बाद मोती नगर पुलिस का जत्था भी पहुंच गया।

अत्यन्त अचम्भे और खेद की बात है कि फ्लाइंग स्कवाड और पुलिस ने हुल्लड़ करने वाले ओर पत्थर फेंकने वालों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। इसकी इस इकतर्फा कार्यवाही तथा सत्संग में उनके अचानक हस्तक्षेप से उनकी भिलीभगत का अहसास हो ही रहा था कि वे यज्ञ करने वाले सत्संगी भाइयों को जबरदस्ती मोतीनगर थाने ले गए। आर्यसज्जनों की तलाशी ली गई। एस० एच० ओ० ठाकुर ने भी बाहर से थाने में आकर समाज के लोगों पर दबाव डालकर उन्हें अपने लिखे पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया और यह सब करने के बाद शाम को चार बजे समाज के कार्यकर्त्ताओं को घर जाने की अनुमति दी गई। □

'आर्य सन्देश' के ग्राहकों से हार्दिक अनुरोध

आज की भीषण मंहगाई में 'आर्य-सन्देश' आपकी सेवा में पन्द्रह रुपये मात्र के वार्षिक शुल्क से उपलब्ध कराया जा रहा है एवं प्रतिवर्ष घाटा उठाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में सदैव अग्रणी रही है। इस पत्रिका में वैदिक विद्वानों के लेख एवं प्रतिवर्ष ३, ४ आकर्षक विशेषांक निकाले जाते हैं। ऐसी स्थिति में आपसे अधिक सहयोग की आकांक्षा है।

इस दृष्टि से आर्यसन्देश के ग्राहकों से हार्दिक अनुरोध है कि जिन महानुभावों ने अपना वार्षिक शुल्क २-३ वर्षों से अभी तक नहीं भेजा है कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करेंगे। साथ ही पत्र के अधिकाधिक ग्राहक बनाकर, विज्ञापन अथवा दान देकर भी पाठकवृन्द हमें अनुगृहीत करेंगे। इस निवेदन पर जो शुल्क भेज रहे हैं एवं दान दे रहे हैं और पत्र के नूतन सदस्य एवं आजीवन सदस्य बन रहे हैं उन्हें आर्य-सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

आपसे पुनः निवेदन है कि ग्राहक महानुभाव शेष शुल्क भेजते समय या पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखने का कष्ट किया करें।

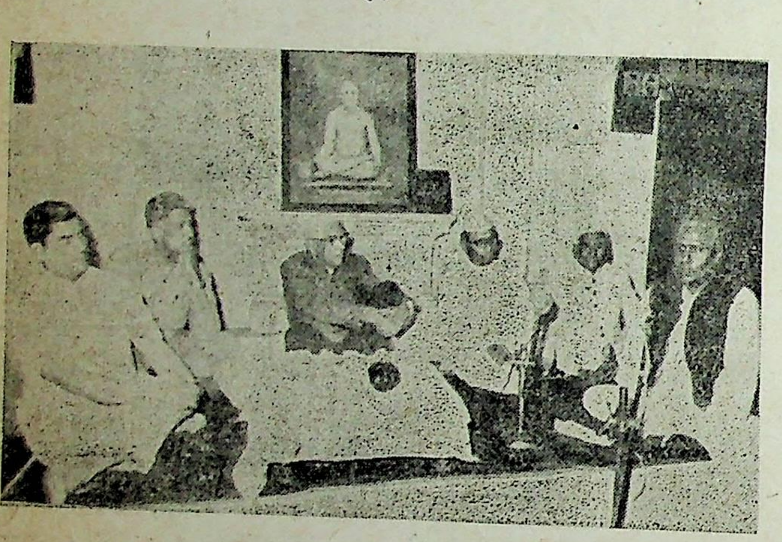
—व्यवस्थापक

आर्य जगत् समाचार

आर्यसमाज की शिथिलता उचित नहीं है

आर्यसमाज बाजार सीताराम वार्षिकोत्सव
नेताओं का सत्परामर्श

दिल्ली। 'आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा यदि किसी ने भाग लिया तो वे आर्यसमाजी ही थे—'इन शब्दों में संसद सदस्य श्री भीखूराम जैन ने दिल्ली की एक सर्वाधिक प्राचीन आर्य समाज बाजार सीताराम के ६१वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए देश के स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज के योगदान की प्रशंसा की। श्री जैन ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि आज आर्यसमाज के प्रचार में कुछ ढीलापन देखता हूं जो राष्ट्र के लिए हित में नहीं है। महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने छूआछात मिटाने, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह, शराब बन्दी, बाल विवाह विरोध की आवाज उठाई। हम सब को मिलकर महर्षि का कार्य पूरा करना चाहिए।



प्रो० बलराज मधोक ने कहा—इस समय हमारा राष्ट्र काफी परे-शानियों से घिरा हुआ है। हर राज-नीतिक दल वोट की खातिर मुसलमानों और ईसाइयों के वोट लेने के लिए उनकी हर अनुचित बात मानने को तैयार है, चाहे उनसे राष्ट्र का नुकसान ही क्यों न हों। जो व्यक्ति इस देश का खाते-पीते हैं और दूसरे देशों के गीत गाते हैं, उनके वोट का अधिकार समाप्त होना चाहिए।'

आर्य सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा—'अब समय आ गया है कि हमें संगठित होकर योजनाबद्ध तरीके से समाज में व्याप्त कुरीतियां समाप्त करनी चाहिएं। आर्यसमाज हरिजनों और सवर्णों में कोई भेद नहीं मानता।' पूर्व संसद सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द ने कहा कि आज के आर्यसमाजियों में पुराने आर्यसमाजियों जैसा जोश नहीं है। हमें अपने कहे पर आचरण करना चाहिए। आर्यसमाज बाजार सीताराम के मन्त्री श्री मामचन्द रिवारिया ने चेतावनी दी कि यदि पिछड़े वर्गों और हरिजनों में ठीक प्रचार कर उन्हें अपनाया नहीं गया तो वे लोग मुसलमान और ईसाई बन जाएंगे और हिन्दू समाज अल्पसंख्यक हो जाएगा।

आर्य युवक सम्मेलन में भाषण देते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने आर्य युवकों से अनुरोध किया कि उन्हें पिछड़े समुदाय में जाकर उनसे निकट सम्पर्क बनाना चाहिए। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री प्रिंसिपल ओम्प्रकाश और सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द ने भाषण देते हुए कहा कि केवल युवक ही आर्यसमाज का कार्य बढ़ा सकते हैं।

इस अवसर पर कवि सम्मेलन और स्त्री सम्मेलन के कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

—•—

आर्य विद्या परिषद् की परीक्षाओं की लोकप्रियता बढ़ी

यह प्रसन्नता का विषय है कि आर्य विद्यार्थियों में धार्मिक एवं नैतिक [illegible] की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि आर्य विद्यापरिषद् [illegible] तत्त्वावधान में १९८०-१९८१ में आयोजित नीति-परीक्षाओं में भाग [illegible] लिए १०९६ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे। इन नीति-परीक्षाओं में ९८५ [illegible] छात्राओं ने भाग लिया, उनमें ९५६ छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए, केवल [illegible] असफल रहे।

नीति-प्रवेशिका

नीति-प्रवेशिका की परीक्षा के लिए ३८७ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे, उनमें ३७६ परीक्षार्थियों ने भाग लिया और २६८ छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए। कवल ८ परीक्षार्थी विफल हुए।

इस परीक्षा में आर्य कुन्या गुरुकुल नया राजेन्द्र नगर की कु० सुनीता सुपुत्री राजाराम आर्य रोल नम्बर ४४० प्रथम रही। उसने १०० में से ९१ अंक प्राप्त किए।

परीक्षा में द्वितीय स्थान भी उक्त कन्या गुरुकुल की छात्रा सुमित्रा. सुपुत्री श्री भरतसिंह, रोल नम्बर ४४१ ने १०० में से ८९ अंक प्राप्त कर उपलब्ध किया।

परीक्षा में दूसरा स्थान उक्त कन्या गुरुकुल की छात्रा कु० मधुबाला, सुपुत्री श्री खैरातीलाल रोल नम्बर ४४६ ने १०० में ८९ अंक प्राप्त कर लिया।

परीक्षा में तृतीय स्थान आर्यपुत्री पाठशाला गांधीनगर के छात्र अश्विनी कुमार सुपुत्र श्री योगेन्द्रपाल, रोलनम्बर २८२ ने १०० में ८८ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-अधिकारी

नीति-अधिकारी की परीक्षा के लिए ३२२ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे, उनमें से २९७ परीक्षा में बैठे, २७६ उत्तीर्ण हुए और २१ विफल हो गए।

इस परीक्षा में सतभ्रावां आर्यकन्या महाविद्यालय का छात्रा कु० रजनी चड्ढा, सुपुत्री ताराचन्द रोलनम्बर ५६४ ने १५० में से १३१ अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस परीक्षा में द्वितीय स्थान भी सतभ्रावां आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० बसुधा, सुपुत्री श्री सुदर्शनदेव रोलनम्बर ५५५ ने १५० में से १२९ अंक प्राप्त कर लिया।

इस परीक्षा में भी तीसरा स्थान सतभ्रावां आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० करुणा भाटिया, सुपुत्री [illegible] अश्विनी भाटिया, रोलनम्बर ५९[illegible] १५० में १२७ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-ज्ञानी

नीति-ज्ञानी की परीक्षा के [illegible] १८७ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे। [illegible] परीक्षार्थी बैठे, सभी सफल [illegible] बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय [illegible] छात्रा कु० लक्ष्मी सुपुत्री श्री रघु[illegible] प्रसाद रोलनम्बर ८२८ ने २०० में [illegible] अंक लेकर पहला स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान रघुमल आर्य कन्या महा-विद्यालय की छात्रा कु० मुक्ता सुपुत्री श्री के० एल० मनोचा रोलनम्बर [illegible] ने २०० में से १५८ अंक प्राप्त [illegible] लिया। तीसरा स्थान बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय की छात्रा सविता सुपुत्री हरिकृष्ण रोलनम्बर ८०१ ने २०० में [illegible] १५४ अंक प्राप्त कर लिया।

नीति-विशारद

नीति-विशारद की परीक्षा के लिए २०८ छात्र-छात्राओं ने फार्म भरे थे, ?३४ परीक्षार्थी बैठे, सभी सफल रहे। परीक्षा में पहला स्थान रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय, राजा बाजार की छात्रा कु० सुनीता शर्मा, सुपुत्री श्री बी० एल० शर्मा रोलनम्बर ११६७ [illegible] २०० में से १६७ अंक प्राप्त कर लिया। परीक्षा में दूसरा स्थान भी उक्त रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्रा कु० सुनीता पाराशर, सुपुत्री श्री के० एन० पाराशर, रोलनम्बर ११५[illegible] ने २०० में से १६६ अंक प्राप्त कर लिया। तीसरा स्थान बिरला आर्यकन्या महाविद्यालय, बिरला लाइन्स की छात्रा कु० सुनीता सुपुत्री श्री कैलाशचन्द्र रोलनम्बर १०१५ ने २०० में से १५[illegible] अंक प्राप्त कर ग्रहण किया।

—प्रो. भारतमित्र शास्त्री
प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली

—•—

आर्यसमाजों के सत्संग

१२-४-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं. उदयपाल शास्त्री; अमर कालोनी—आचार्य कृष्णगोपाल; आर्यपुरा—पं. तुलसीराम भजनोपदेशक; आर. के. पुरम् सैक्टर-७—पं. मनोहर 'विरक्त'; आनन्द विहार हरिनगर एल ब्लाक—पं. देवराम वैदिक मिशनरी; किदवई नगर—पं. प्रकाशवीर व्याकुल; कालकाजी—पं. दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री; करोल बाग—प्रो. सत्यपाल देदार; गांधीनगर—पं. देवेन्द्र द्विवेदी; ग्रेटर कैलाश-I—डा. रघुवीर वेदालंकार; ग्रेटर कैलाश-II—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; गुड़मंडी—पं. महेशचन्द भजनोपदेशक; १५१-गुप्ता कालोनी—पं. अशोककुमार विद्यालंकार; गोविन्द भवन दयानन्दवाटिका—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; चूनामंडी पहाड़गंज—श्रीमती भगवानदेवी; जंगपुरा भोगल—पं हीराप्रसाद शास्त्री; जनकपुरी सी-३—पं. महेन्द्र प्रताप शास्त्री; जनकपुरी बी ३/२४—डा. सुखदयाल भूटानी; तिलकनगर—पं. दिवाकर शर्मा; तीमारपुर—श्री मोहनलाल गांधी; दरियागंज—पं. वेदपाल शास्त्री; नयाबांस—पं. गजेन्द्रपाल शास्त्री; पंजाबी बाग—आचार्य हरिदेव सि. भू.; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन—पं. रामरूप शर्मा; बाग कड़े खाँ—पं. बरकतराम भजनोपदेशक; बाजार सीताराम—पं. केशवचन्द्र गुन्जाल; बिरला लाइन्स—पं. विजयपाल शास्त्री; मोडल बस्ती—पं. ओमप्रकाश भजनोपदेशक; महावीर नगर—पं विश्वप्रकाश शास्त्री; मोतीबाग—पं. ओमवीर शास्त्री; मोती नगर—पं. विष्णुदेवप्रसाद विद्यालंकार; रघुवीरनगर—पं. सीसराम भजनोपदेशक; रमेशनगर—पं. छज्जूराम शास्त्री; राणाप्रताप बाग—पं. ईश्वरदत्त म. ए.; लड्डू घाटी—पं. वीरव्रत शास्त्री; लाजपतनगर—श्रीमती लीलावती आर्य; लोधी रोड जोरबाग—डा. रघुनन्दन सिंह; विक्रम नगर—पं. प्राणनाथ सिद्धांतालंकार; विनयनगर—पं. सत्यभूषण वेदालंकार; राजौरी गार्डन—प्रो. वीरपाल विद्यालंकार; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—वैद्य रामकिशोर; सराय रोहला—पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो. भारतमित्र शास्त्री; शकूर बस्ती रानी बाग—पं. प्रकाशचन्द शास्त्री; हौज खास डी-२०—पं. देवेश; शालीमार बाग—पं. सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग

आर्यसमाज बेतिया (चम्पारन) के वार्षिक चुनाव में श्री भगवानप्रसाद आर्य विद्यारत्न प्रधान तथा श्री महन्त प्रसाद आर्य मंत्री नियुक्त हुए।

आर्यसमाज नरेला का ४१वां उत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५१वां वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर खेलों का आयोजन भी किया गया व भाषण प्रतियोगिताएं भी हुईं। १४ ता० को भव्य जलूस शोभायात्रा निकाली गई। इस शुभ अवसर पर स्वास्थ्य-सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, ग्राम-सुधार-सम्मेलन हुए, जिनमें पूज्य स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती, स्वामी अमृतानन्द जी, आचार्य ब्रह्मदत्त जी शर्मा, डा० गोविन्दराम जी चौधरी, प्रि० रतीराम पाराशर प्रि० मेहरलाल पंवार, बाबू जगन्नाथ, श्री विश्वम्भर प्रसाद गुप्ता, मा० मांगेराम आर्य, पं० हेमचन्द, मा० पूर्णसिंह आर्य व आर्यमुनि ब्र० राजेन्द्र शर्मा व स्वामी नारायणानन्द जी दयानन्द मठ रोहतक आदि के भजन हुए। श्री धर्मव्रत शास्त्री द्वारा मलखम्भ व व्यायाम प्रदर्शन बड़ा आकर्षक रहा।

—राजपाल आर्य मंत्री

आर्यसमाज मस्जिद मोठ की गतिविधियां

नये वर्ष के पदाधिकारी—प्रधान—श्री सूर्यप्रतापतरनेजा, उपप्रधान—वैद्य प्रभुदयाल एवं फकीरचन्द, मन्त्री—ओम्प्रकाश भावल, कोषाध्यक्ष—सत्यपाल भारल।

१९८० वर्ष में आर्यसमाज मंदिर की भूमि डी. डी. ए. से मुक्त कराई गई, समाज मंदिर की चारदीवारी बनाई गई। मंदिर में यज्ञशाला की बुर्जी बनाई गई और मंदिर में पानी की व्यवस्था की गई।

श्री जगतराम खन्ना का स्वर्गवास

आर्यसमाज स्वरूपनगर के मंत्री एवं केन्द्रीय आर्यसभा कानपुर के प्रचार-मंत्री श्री जगमोहन खन्ना के पूज्य पिता श्री जगतराम खन्ना का आकस्मिक निधन हृदय गति रुक जाने से हो गया। ४ मार्च के दिन बालनिकुंज स्वरूपनगर में अनेक सामाजिक एवं शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)
,, ,, (अंग्रेजी)
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

शुद्धि-प्रचार के लिए आर्य विद्वान् चाहिए

शुद्धिसभा, शाखा बरेली (... सदन, फाटक गोकलचन्द, छोटी ...पुरी) के संयोजक पं० रामप्रसाद ... सूचित करते हैं कि बरेली शाखा ... शुद्धि-प्रचार के लिए एक अनुभवी विद्वान प्रचारक की आवश्यकता है।

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा ... दूसरों को भी पढ़ाइए

रजि० डी (सी)/७५९

...० बलभद्र कुमार हूजा
५, अबुलफजल मार्ग
नई दिल्ली-१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस ७२७/१-सी, गुरुनानक गली, गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

गुरुकुल कांगड़ी का भावी स्वरूप

जहां वेद-वेदांग के अध्ययन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में गंगा के तट पर जिस गुरुकुल की स्थापना हुई थी, वह केवल एक नए ढंग का शिक्षालय ही नहीं था, अपितु वह शिक्षा के क्षेत्र में एक महती क्रांति का प्रतीक भी था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किए थे, उनका प्रयोजन एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जो सामाजिक न्याय पर आधारित हो और जिसमें प्रत्येक को शिक्षा प्राप्त करने तथा अपनी अन्तर्हित शक्तियों का विकास कर जीवन संघर्ष में अग्रसर होने का समान अवसर प्राप्त हो। महर्षि दयानन्द ने जिन गुरुजनों का विचार जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया था, उनमें गरीब और अमीर, छूत और अछूत तथा ऊँच और नीच का कोई भेदभाव न रखकर सब बालकों व बालिकाओं को एक समान शिक्षा प्रदान की जाती थी, शिक्षाकाल में सबको छात्रावासों (आश्रमों) में अनिवार्य रूप में रहना था, और वहाँ सबके वस्त्र, शय्या, भोजन आदि एक समान होते थे। गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करते हुए किसी छात्र को यह अनुभूति होने का कोई अवसर ही नहीं होता था कि उसके परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति क्या है। शिक्षा के पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य प्राप्त कराने की व्यवस्था भी महर्षि द्वारा प्रतिपादित शिक्षाप्रणाली का आवश्यक अंग थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इन्हीं मन्तव्यों को क्रियान्वित करने के लिए महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी ने हरिद्वार के सामने गंगा के पार कांगड़ी ग्राम मे गुरुकुल की स्थापना की थी। जनता में गुरुकुल के लिए अनुपम उत्साह था। उसके माध्यम से वह आशा करती थी कि एक वर्गविहीन आदर्श समाज की स्थापना हो सकेगी, और गुरुकुल के स्नातक होकर जो युवक सांसारिक जीवन में प्रवेश करेंगे, वे सच्चे अर्थों में समाज-सेवक होंगे। आंशिक रूप से जनता की यह आशा पूरी भी हुई। शीघ्र ही गुरुकुल शिक्षाप्रणाली ने एक आन्दोलन का रूप प्राप्त कर लिया। पंजाब, हरियाणा उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात आदि सर्वत्र गुरुकुलों की स्थापना हुई, और हजारों विद्यार्थी इस क्रान्तिकारी शिक्षाप्रणाली से लाभ उठाने लगे। पौराणिक, जैन और ईसाई लोगों ने भी गुरुकुल स्थापित किए।

स्वराज्य के बाद ह्रास का प्रारम्भ

पर स्वराज्य के पश्चात् गुरुकुलों में एकदम ह्रास प्रारम्भ हो गया। बहुत-से गुरुकुल हाई स्कूलों तथा इन्टर कालेजों के रूप में परिवर्तित हो गये और कुछ बन्द हो गए। गुरुकुल कांगड़ी ने यूनिवर्सिटी की स्थिति प्राप्त कर ली, पर इससे भी उसे कोई लाभ नहीं हुआ। उसके छात्रों की संख्या निरन्तर घटती गई, और आवासीय प्रणाली का तो उससे सर्वथा अन्त हो गया। गुरुकुल की कोई भी विशेषता उसमें कायम नहीं रही।

पर क्या इससे यह समझ लिया जाए कि अब गुरुकुलों की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। यह स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि जिन आदर्शों व मन्तव्यों को सम्मुख रख कर गुरुकुल की स्थापना हुई थी, उनकी उपयोगिता वर्तमान परिस्थितियों में और भी अधिक है। आज न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख यह समस्या विद्यमान है, कि किस प्रकार एक ऐसे वर्गविहीन समाज की स्थापना की जाए, जिसमें सबको योग्यता प्राप्त करने का समान अवसर प्राप्त हो, सबको योग्यता के अनुरूप कार्य मिल सके और किसी भी व्यक्ति की आर्थिक व सामाजिक स्थिति उसके माता-पिता की स्थिति व कुल, जाति आदि पर आधारित न होकर उसके अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप हो

कुछ उपयोगी सुझाव

ऐसे समाज को स्थापित करने के लिए पहला पग है, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को अपनाना। इसमें संदेह नहीं कि एक बार फिर शिक्षा के क्षेत्र में एक महान् क्रान्ति के रूप से गुरुकुलों की स्थापना शुरु की जा सकती है। पर इसके लिए सबसे पूर्व गुरुकुल कांगड़ी की दशा ठीक करनी होगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित यह गुरुकुल शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श व क्रान्तिकारी संस्था माना जाता रहा है। उसके उसी स्वरूप को पुनः स्थापित करना है। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते हैं—

(१) गुरुकुल के विद्यालय विभाग के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उसके सब विद्यार्थियों के लिए छात्रावास में रहना अनिवार्य हो, जहाँ वे ब्रह्मचर्य, सादगी तथा तप का जीवन व्यतीत करें। जहाँ तक शिक्षा का संबंध है, संस्कृत, हिन्दी और धर्म शिक्षा के साथ-साथ गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों की पढ़ाई की भी वहाँ समुचित व्यवस्था हो। अंग्रेजी भाषा की शिक्षा पर भी वहाँ विशेष ध्यान देना आवश्यक है। गुरुकुल की विद्याधिकारी (मैट्रिकुलेशन) परीक्षा को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। उसे उत्तीर्ण कर विद्यार्थी अन्यत्र भी ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश पा सकते हैं। अतः गुरुकुल विद्यालय के पाठ्यक्रम को इस ढंग से निर्धारित करना चाहिए, कि उसे पढ़कर विद्यार्थी गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों तथा अंग्रेजी भाषा में जहाँ केन्द्रीय विद्यालयों के स्तर की योग्यता प्राप्त कर लें, वहाँ संस्कृत तथा वैदिक धर्म का उन्हें पर्याप्त रूप से गंभीर ज्ञान हो जाए। शिक्षा का स्तर इतना ऊँचा रख सकना अक्रियात्मक नहीं है। आवासीय (रेजिडेन्शल) प्रणाली के शिक्षणालयों में विद्यार्थी अपना सब समय विद्याध्ययन में लगा सकते हैं। गुरुकुल में शिक्षा का स्तर पहले बहुत ऊंचा रहा भी है।

लेखक :

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

(२) गुरुकुल कांगड़ी को एक आदर्श एवं उच्च स्तर का आवासीय (रेजिडेंशल) विद्यालय बनाने के लिए सब साधन विद्यमान हैं। उसका परिसर (कैम्पस) अत्यन्त आकर्षक है, उसके भवन (छात्रावास, शिक्षणालय, भोजन भंडारा चिकित्सालय आदि) भव्य तथा विशाल हैं और गुरुजनों तथा कर्मचारियों के निवास के लिए परिवार-गृह भी वहां पर्याप्त संख्या में हैं। गुरुकुल विद्यालय के समुचित विकास के लिए यह आवश्यक होगा, कि उसकी सब इमारतों की ठीक प्रकार से मरम्मत करा दी जाए और उनमें फर्निचर आदि की समुचित व्यवस्था कर दी जाए। सादगी और तपोमय जीवन का अभिप्राय भद्देपन से नहीं है। सौष्ठव और सादगी परस्पर विरोधी नहीं हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून में वहाँ की आचार्या श्रीमती दमयन्ती जी ने छात्रावास और भोजन भंडार आदि को जो रूप प्रदान किया हुआ है, उसमें सादगी के साथ-साथ सौष्ठव और आकर्षण भी है। गुरुकुल कांगड़ी में भी उसका अनुकरण कर छात्रावास, भोजन-भंडार, शिक्षणालय और चिकित्सालय को ऐसा रूप प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे मध्य एवं उच्च वर्गों के माता-पिता भी अपनी संतान को वहाँ भेजने के लिए प्रेरित हो सकें और वे वहाँ के विद्यार्थियों के रहन-सहन, भोजन तथा देखभाल से सन्तोष अनुभव करें। सन् १९०८-१५ में गुरुकुल विद्यालय के छात्रों से दस और पन्द्रह रुपये मासिक पुस्तक लिया जाता था। शिक्षा निःशुल्क थी, पर भोजन, वस्त्र तथा अन्य खर्चों के लिए ये राशियाँ (पहली से पाँचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों से दस रुपये और बड़े विद्यार्थियों से पन्द्रह रुपये) संरक्षकों को देनी होती थी। बाद में शुल्क की मात्रा में वृद्धि कर दी गई थी। १९०८-१५ के दस रुपये की क्रय शक्ति वर्तमान समय के २०० रुपयों से भी अधिक थी।

अतः उचित यह होगा, कि पांचवीं कक्षा तक के छोटे विद्यार्थियों से कम से कम २०० रु. और बड़े विद्यार्थियों से ३०० रु. शुल्क के रूप में लिए जाएं। इस शुल्क से विद्यार्थियों के रहन-सहन में और भोजन आदि के स्तर को संतोषजनक व समुचित रख सकना कठिन नहीं होगा। यह सही है, कि बहुत-से आर्य परिवारों के लिए शुल्क की यह मात्रा अधिक होगी, पर निर्धन परिवारों के सुयोग्य व मेधावी बालकों के लिए छात्र-वृत्तियों की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया जानी चाहिए। सामाजिक न्याय तथा सबको समान अवसर के सिद्धांतों को क्रियान्वित करने के लिए सरकार भी पिछड़े हुए वर्गों के मेधावी बच्चों की शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान करती है। गुरुकुल इनसे भी लाभ उठा सकता है, और पिछड़े हुए वर्गों के बालक भी गुरुकुल में वही रहन-सहन तथा शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जो शुल्क प्रदान कर मध्य तथा उच्च वर्गों के बालकों के लिए उपलब्ध हो।

(३) गुरुकुल में शिक्षा सदा से निःशुल्क रही है। भविष्य में भी वहाँ शिक्षा की कोई फीस नहीं होनी चाहिए। पर वहाँ के विद्यालय विभाग में जो भी अध्यापक व अन्य कर्मचारी नियुक्त किये जायें, उनकी योग्यता का स्तर केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों के समकक्ष तो अवश्य ही होना चाहिए। इसके लिए गुरुकुल को भी उन्हें समुचित वेतन तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करनी होंगी। दस कक्षाओं तथा ३०० के लगभग विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए जो स्टाफ रखना होगा उसका व्यय १०,००० रु. मासिक के लगभग पड़ेगा। इस राशि की व्यवस्था कर सकना गुरुकुल के लिए सर्वथा सम्भव है। वहाँ जो परिवार गृह व अन्य क्वार्टर आदि हैं। वे सब आर्य जनता के दान द्वारा बने हैं। सरकारी अनुदान का एक पैसा भी उनके लिए प्रयुक्त नहीं हुआ। इनमें प्रधानतया गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा आयुर्वेद महाविद्यालय के वे प्राध्यापक तथा कर्मचारी निवास करते हैं, जिन्हें सरकारी विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों का वेतन मिलता है। (अपूर्ण)

वेदार्थ करने में महर्षि दयानन्द की मौलिकता

वेद आर्य जाति की ही नहीं, समस्त विश्व की अमूल्य निधि है। अपितु यद्यपि अनेक भाष्यकारों ने वेदमंत्रों के अर्थ अपनी-अपनी सूक्ष्म बुद्धि के अनुसार किए हैं पर महर्षि दयानन्द के अर्थों में मौलिकता एवं नई सूझ-बूझ की जो विशेषता दिखाई देती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उदाहरणार्थ पुरुष सूक्त (यजु. ३१ अ.) के प्रथम दो मंत्रों पर विचार करते हैं।

इस सूक्त का मंत्र है "सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिः सर्वतःस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ (य० अ०-३१ म०—१)

प्राचीन वेद भाष्यकारों में सायण, महीधर, उवट आदि हैं। सायण, महीधर ने 'सहस्रशीर्षा आदि पदों का विग्रह किया है सहस्रं असंख्यानि शीर्षाणि शिरांसि यस्य सः सहस्रं अक्षीणि यस्यसः सहस्रं पादा यस्य सः वह परम पुरुष ब्रह्म असंख्य सिर, नेत्र व पादों वाला है। बहुव्रीहि समास द्वारा उनका यही अर्थ निकलता है। अब आप ही विचारिए, कि क्या उस प्रभु के असंख्य सिर, आँख और पैर सम्भव हैं। इन अर्थों से उसकी निराकारता पर संशयचिह्न लगना स्वाभाविक है। पर महर्षि दयानन्द ने आर्ष दृष्टि के आधार पर जो इन पदों का विग्रह किया है, वह तर्कसंगत एवं सर्वथा मौलिक है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'सृष्टि विद्या विषयः' प्रसंग में स्वामी जी इस मन्त्र के पदों का विग्रह करते हुए लिखते हैं—

'सहस्राण्यसंख्यातान्यस्मदां दीनां शिरांसि यस्मिन् पूर्णे पुरुषे परमात्मनि सह स्रशीर्षा पुरुषः। अस्मदादीनां सहस्राण्यक्षीणि यस्मिन्, एवमेव सहस्राण्यसंख्याताः पादाश्च यस्मिन् वर्तन्ते, स सहस्राक्षः सहस्रपाच्च।

हिन्दी भा०—सहस्रनाम है, संपूर्ण जगत् का और असंख्यात का भी नाम है, सो जिसके बीच में सब जगत् के असंख्यात सिर, आँख और पग ठहर रहे हैं, उसको सहस्रशीर्षा सहस्राक्ष और सहस्रपात भी कहते हैं, क्यों कि वह अनंत है। जैसे आकाश के बीच में सब पदार्थ रहते हैं और आकाश सबसे अलग रहता हैं, अर्थात् किसी के साथ बंधता नहीं है, इसी प्रकार परमेश्वर को भी जानो।

लेखक :
सत्यभूषण वेदालंकार

इसी मन्त्र में 'दशाङ्गुलम्' पद का अर्थ सायण वहिर्देश मात्रद्योतक मानने के साथ-साथ हृदय का वाचक भी मानते हैं। उवट ने दश इन्द्रियों, हृदय व नासिकाग्र का अर्थ लिया है। महीधर भी सायणाचार्य ग्रहीत अर्थ को मानते हैं। पर महर्षि दयानन्द ने अपनी सूक्ष्म आर्ष दृष्टि से अंगुलि शब्द को अवयव वाचक मानकर 'पाँच स्थूल और ५ सूक्ष्म भूतों के समूह तथा पाँच प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और दसवां जीव (जो उपनिषद् के कथनानुसार दश अंगुल के प्रमाण से लिया जाता है) जो इन तीनों में व्यापक होकर इनके चारों ओर भी परिपूर्ण हो रहा है इससे वह पु[illegible] कहाता है, ऐसा अर्थ किया है, जो सर्वथा मौलिक एवं युक्तियुक्त है। परमात्मा दशांगुल स्थान का भी उल्लंघन करके सर्वत्र स्थिर रहे वही सब जगत् बनाने वाला है।

इस प्रकार स्वामी जी महाराज परमात्मा को सर्वव्यापक और प्रकृति तथा कार्यरूप में स्थित जगत् को व्याप्य मानकर सर्वाधिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमेश्वर सर्वत्र भावेन स्थूल जगत् में व्यापक रहा है, ऐसी आर्य वैदिक सिद्धान्त साधिका सत्य कल्पना का आश्रय लेकर जो अर्थ किया है, वह सर्वथा मौलिक व तत्वपूर्ण है। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाली वही [illegible] सर्वव्यापिनी चेतन सत्ता है, ऐसा उनका दृढ़ विश्वास है। यही अर्थ सर्वथा प्राचीन है।

ग्रीनपार्क
नई दिल्ली-१६

समीक्षा

'आर्य सन्देश' का आर्य महासम्मेलन विशेषांक

सम्पादक : विद्यासागर विद्यालंकार : प्रकाशक; दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड़ नयी दिल्ली : पृष्ठ : ७६; मूल्य :६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्य-संदेश' का यह विशेषांक एक विशेष अवसर पर विशेष प्रयोजन से प्रकाशित किया गया है। अवसर है दिल्ली में होने वाला आर्य महासम्मेलन जो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित किया गया। यह आयोजन एक विशेष प्रयोजन से किया गया था। पिछले कुछ समय से देश में विघटनकारी प्रवृत्तियाँ जिस प्रकार बढ़ती जा रही हैं, उनसे हर जागरुक देशवासी परिचित और त्रस्त है। साथ ही चिंतित भी। इस महासम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस समस्या पर गहराई से विचार करना और इन प्रवृत्तियों को रोकने के लिए जनमानस तैयार करना था।

विशेषांक में सोलह लेख हैं जिन्हें छह खंडों में विभक्त किया गया है—

(१) भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में, (२) वेद, (३) आर्यसमाज की प्रासंगिकता, (४) महर्षि दयानन्द, (५) आर्यसमाज और (६) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द। इस विषयविभाजन के लिए सम्पादक को विशेष श्रम अवश्य करना पड़ा है, पर पाठक को इससे एक सुविधा यह हो गई है कि इन प्रकरणों से सम्बद्ध सामग्री एक साथ मिल जाती है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न लेखों में विषय की पुनरावृत्ति नहीं मिलती, जबकि इस प्रकार के विशेषांकों में पुनरावृत्ति सहज ही होती है। सम्भवतः इस खंड विभाजन के परिणामस्वरूप ही सम्पादक लेखों और इस प्रकार चयन और संयोजन कर सका कि पुनरावृत्ति नहीं हो पाई। इस सूझ-बूझ के लिए वह प्रशंसा का पात्र है।

प्रथम खंड में भारतीय इतिहास से सम्बन्धित तीन लेख हैं। तीनों लेख पढ़ने पर भारतीय इतिहास को पढ़ने के लिए एक स्वस्थ दृष्टि प्राप्त होती है। स्वस्थ दृष्टि के अभाव में भारत के इतिहास को समझना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

दूसरे खंड में एक लेख वैदिक राज्य व्यवस्था से सम्बन्धित है और एक वेदों के भाष्य से। दोनों ही ज्ञानवर्द्धक है और प्रेरक भी। तीसरे खंड में आर्यसमाज की प्रासंगिकता से सम्बद्ध तीन लेख हैं। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने लेख में ठीक ही लिखा है, 'स्वराज्य के बाद भारत में अंग्रेजी सभ्यता व संस्कृति के प्रति रुचि में अत्यधिक वृद्धि हो गई है···ईसाइयों और एंग्लो इंडियनों द्वारा संचालित शिक्षणालयों में आज ९०% के लगभग हिन्दू विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। स्वयं हिन्दुओं द्वारा न केवल बड़े नगरों में ही अपितु छोटे-छोटे कस्बों में भी ऐसे 'पब्लिक स्कूल' खोले जा रहे हैं जिनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और रहन-सहन तथा वातावरण पाश्चात्य संस्कृति के अनुरूप है।···इनकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती जा रही है और स्वयं आर्यसमाजी परिवार भी इनकी ओर आकृष्ट होते जा रहे हैं। (पृ. ३७)

इस पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। स्थिति इतनी स्पष्ट है, और इसकी भयावहता इतनी उजागर हो चुकी है कि कोई भी जागरुक व्यक्ति इससे बेखबर नहीं है। जानबूझ कर बेखबर बनने का नाटक करना चाहे तो दूसरी बात है। डा. सत्यकाम तथा डा. कृष्णलाल के लेख आज की स्थिति का विश्लेषण करते हैं और हमें अपने कर्त्तव्यों के प्रति उद्बोधित भी करते हैं। आर्यसमाज को केवल हिन्दुओं की चिंता करनी चाहिए या सम्पूर्ण विश्व की? आर्यसमाजका उद्देश्य हिन्दुओंका उपकार करना है या संसार का उपकार करना? दयानन्द भारत के, और उसमें भी हिन्दुओं के दुःख से दुखी हुए थे या सम्पूर्ण विश्व के? 'जिस सम्पूर्ण धरती पर कभी वेदानुयायी आर्यजनों का अखंड चक्रवर्ती एवं सार्वभौम राज्य था उस सम्पूर्ण धरती पर अब वेदविरुद्ध नाना मतमतान्तरों ने जन्म लेकर अज्ञान एवं तज्जन्य दुःख का प्रसार कर दिया है।' (पृ. ३९)

चौथे खंड में महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित तीनों लेख तीन भिन्न-भिन्न प्रकार से महर्षि का गौरवगान करते हैं। बुंदेली लोकगीतों में महर्षि का और उनके कार्यों का किस प्रकार स्मरण किया गया है, राष्ट्रीय एकता के लिए उन्होंने हिन्दी को आवश्यक क्यों माना और भाषा के सम्बन्ध में उनकी नीति क्या थी, इस सबका उल्लेख हुआ है। डा० द्विवेदी ने रोचक साहित्यिक शैली में महाभारत के पक्षप्रश्न वाले प्रसंगों को लेकर वर्तमान स्थिति का विवेचन करते हुए दयानन्द के सन्देश का स्मरण किया है।

पाँचवें खंड में आर्यसमाज में [illegible] कार्य का एक अति संक्षिप्त विवेचन है और हैं दो प्रेरक लेख तथा एक काव्यमय सन्देश। सबसे अन्तिम खंड में गुरुकुल के आचार्य एवं पिता के रूप में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन का एक प्रेरणादायक संस्मरण प्रो० शंकरदेव विद्यालंकार ने प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार के विशेषांकों के लिए सामग्री जुटाना और वह भी विषय विशेषज्ञों से, कितना कठिन कार्य है, इसका अनुमान वे ही लगा सकते हैं जिन्हें इस कार्य का अनुभव है। सम्पादक इस दृष्टि से भी अपने श्रम में सफल रहे हैं। अन्य दृष्टियों से मुद्रण सन्तोषजनक ही नहीं, अच्छा है।

विशेषांक 'आर्यसमाज' की ही सम्पत्ति न रहे, उसके बाहर भी जाए और अपने उद्देश्य में सफल हो—यह कामना है।

—डॉ० रवीन्द्र [illegible]

आर्यसमाजों के सत्संग

२२-२-८१

अन्धा मुगल प्रताप नगर—पं० वीरव्रत शास्त्री; अमर कालोनी—प्रो० सत्यपाल वेदार; अशोक विहार के सी ५२-ए—पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री; आर के पुरम सैक्टर ६—आचार्य हरिदेव सि० भू०; आर के पुरम सैक्टर ६ पं० हीराप्रसाद शास्त्री; किग्जवे कैम्प—पं० छज्जूराम शास्त्री; किदवई नगर—पं० तुलसी राम भजनोपदेशक; कृष्ण नगर—श्रीमती ऊषा शास्त्री; कालका जी—पं० केशव चन्द्र मुन्जाल; करोलबाग - वैद्य रामकिशोर; कोटला मुबारिकपुर —पं० दिनेशचन्द्र पाराशर शास्त्री; गाँधीनगर—पं० हरीश वेदी; ग्रेटर कैलाश-I —पं० दिवाकर शर्मा; ग्रेटर कैलाश-II—पं० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार, गुड़मण्डी—पं० सीसराम भजनोपदेशक; १५१-गुप्ता कालोनी—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार तथा ज्ञानचन्द डोगरा गायक; गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—पं० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक; जंगपुरा भोगल—पं० देवराज वैदिक मिशनरी; जनकपुरी बी ३/२४—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; टैगोर गार्डन—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; तिलक नगर—पं० रामरूप शर्मा; दरियागंज—पं० ईश्वरदत्त एम-एम; नारायण विहार—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; नया बांस—पं० सोमेश्वर दत्त शर्मा आर्य; पंजाबी बाग—पं० प्रेमचन्द श्रीधर; पंजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—पं० प्रकाशचन्द शास्त्री; बाग कड़े खां—पं० बरकतराम भजनोपदेशक; बसई दारापुर—पं० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; बाजार सीताराम —पं० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; माडल टाऊन—आचार्य गोपाल कृष्ण शास्त्री; माडल बस्ती—श्री चिमन लाल; मोतीनगर—ला० लखमीदास आर्य; रमेश नगर—पं० हरिदत्त शास्त्री; राणा प्रताप बाग—पं० गणेश दत्त वानप्रस्थी; रोहतास नगर—डा० सुखदयाल भूटानी; लड्डू घाटी—श्रीमती सुशीला राजपाल; लक्ष्मीबाई नगर ई-१२०८—श्रीमती लीलावती आर्या; विक्रम नगर—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; विनय नगर—पं० सत्यभूषण वेदालकार; सदर बाजार पहाड़ी धीरज—डा० रघुनन्दन सिंह; सराय रोहेल्ला—पं० धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या; साकेत—आचार्य रामशरण मिश्रा शास्त्री; सोहनगंज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; शादी खामपुर—वैद्य रामकिशोर तथा पं० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक; हनुमान रोड—डा० सीताराम सहगल; राजौरी गार्डन—पं० विद्यासागर विद्यालंकार;

(पृष्ठ २ का शेष)

मनुष्य को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वे आँख रहित मनुष्य ही जानते हैं। इन आँखों को शरीर को सम्राट समझकर उनकी रक्षा करना चाहिए और उन बुराइयों से उसे बचाने का प्रयत्न करना चाहिए जो हमें कुमार्ग की ओर ले जाती हैं। यजुर्वेद अ. २५ मंत्र १४, १५, १८, १६, २१ मन्त्र में कहा गया है "भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिः यजत्राः" अर्थात् हे दिव्यगुणयुक्त प्रमुकी शक्तियों-से हम आपकी कृपा से कानों से उत्तम शब्द ही सुनें, आंखों से अच्छा ही देखें। यहां आंख और कान अन्य इंद्रियों के उपलक्ष्य हैं। सम्राट यदि दुराचारी होगा तो वह सम्यक् शासक नहीं माना जाएगा। आँख के सम्राट होने का तात्पर्य है कि इसमें केवल दृष्टि शक्ति ही न हो, दृष्टि शक्ति के साथ-साथ हमारी दृष्टि शुभ हो, मित्रता भरी हो। चक्षु शक्ति में प्रेम के स्थान पर दुश्मनी की रूपरेखा का होना, परस्त्रियों तथा पर-पुत्रियों पर कामानुवासित दृष्टिपात करना, परधन देखकर उसे अपनाने का यत्न करना, दूसरे की उन्नति को देख कर मन में भत्सरता का भाव उत्पन्न करना, ये बातें चक्षु शक्ति को सम्राट् के पद से गिराती हैं आसक्ति के राज्य की सूचना देती हैं तो जहां हम चक्षु शक्ति में शक्ति की भावनाएं वहाँ उसमें सद्गुणों तथा सद्भावनाओं का बीज बो कर इसे यशस्वी सम्राट बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

इसी प्रकार 'श्रोत्रम् विराट' द्वार श्रोता को बड़ी शक्ति वाला बतलाया गया। श्रोत्र की शक्ति पर निन्दा के श्रवण, दुर्भावना से भरे गीतों को सुनने से श्रवण शक्ति की दीप्ति नष्ट हो जाती है। अतः विशेष रूप से दीप्ति करने के लिए परगुणों के सुनने, सच्छास्त्रों के आवरण करने, भक्ति सदाचार, वीरता एवं सदाचार से सम्बन्धित सदुपदेशों से श्रवण शक्ति यशस्वी बनती है।

इस प्रकार नेत्रों को बनाने के लिए नेत्रों में पवित्रता लाने के लिए ज्ञान, विचार तथा चिन्तन की आवश्यकता है जो मनुष्य सदा सचेत रहेगा, ज्ञानपूर्वक कार्य करेगा और विचार तथा चितन जिसका स्वभाव होगा, उसकी आँखों में एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति दिखाई देगी। तभी आंख सम्राट हो सकेगी। और कान भी तभी विराट हो सकेंगे।

अन्त में हम आप से कहेंगे आप अपने को सदा सौभाग्यशाली समझिए। इसका प्रभाव यह होगा कि आपका मस्तिष्क, आपका मुख, आपके केश, आपकी आंखें और आपके काम प्रभावशाली हो जाएंगे। आपको अनुभव होगा कि जगदीश्वर ने महान कार्य करने के लिए आपको भेजा है। आप अपने कार्यों से सुख, समृद्धि और सभ्यता का विकास कर संसार को नया मार्ग दिखला सकते हो।

ऋषि मेले को सफल बनाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने अनुरोध किया है कि ४ मार्च को कोटला फिरोजशाह, नई दिल्ली में आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि मेले में सभी आर्यबन्धु सपरिवार-इष्टमित्रों सहित प्रातः ८ बजे से सायं ५ बजे तक होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित हों।

केन्द्रीय सरकार कर्मचारी उस दिन रिस्ट्रिक्टिड अवश्य लें।

सब आर्य हिन्दू स्त्री पुरुष मेले को सफल बनायें।

दिल्ली की प्रादेशिक भाषा हिन्दी है, पंजाबी नहीं

यज्ञदत्त शर्मा के विचार व्यक्तिगत हैं भारतीय जनता पार्टी के नहीं —

पार्टी के अध्यक्ष विजयकुमार मल्होत्रा की घोषणा

नई दिल्ली १४ फरवरी। दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री विजय मल्होत्रा ने एक वक्तव्य में घोषित किया है—'मेरा ध्यान श्री यज्ञ दत्त शर्मा के 'पंजाबियों को अपनी भाषा पंजाबी लिखानी चाहिए विषयक वक्तव्य की ओर दिलाया गया है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि श्री यज्ञदत्त जी का वक्तव्य व्यक्तिगत है, पार्टी का इससे कोई सम्बन्ध नहीं।'

श्री मल्होत्रा ने कहा है—'प्रत्येक व्यक्ति का यह अधिकार है कि वह जनगणना में जिसे अपनी भाषा समझे, उसे ही लिखाए। इस सम्बन्ध में राजनीतिक आधार पर कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए, इसीलिए दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने इस सम्बन्ध में विचार करना उचित नहीं समझा।'

'श्री यज्ञदत्त जी ने यह स्पष्ट किया है कि यह उनके व्यक्तिगत विचार हैं, प्रचार के लिए नहीं। वैसे दिल्ली की सरकारी और प्रादेशिक भाषा हिन्दी है, यह सर्वमान्य है।'

□

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रैस ७२७/१-सी, गुरुनानक गली, गाँधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन नं० ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे, वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ४ : अंक १७ | रविवार २२ फरवरी १९८१ | दयानन्दाब्द १५६

जनगणना में अपनी भाषा हिन्दी लिखाएं

पंजाबी भाइयों से श्री ओमप्रकाश त्यागी की अपील : यज्ञ शर्मा का वक्तव्य भ्रान्तिपूर्ण

दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं भूतपूर्व संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री यज्ञ शर्मा के वक्तव्य को व्यक्तिगत, भ्रान्तिपूर्ण एवं हिन्दुओं को गुमराह करने वाला घोषित किया है।

श्री त्यागी ने अपने वक्तव्य में अभियोग लगाया है कि कुछ राजनीतिक दलों के व्यक्ति वोटों की खातिर पंजाब एवं अन्य प्रान्तों में रहने वाले पंजाबी भाइयों को वर्तमान में अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखने की प्रेरणा दे रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि पंजाब के निवासियों की विशेषकर हिन्दुओं की बोली पंजाबी अवश्य है, परन्तु उनकी मातृभाषा हिन्दी है। भाषा और बोली में बड़ा अन्तर होता है। प्रत्येक भाषा व्याकरण पर आधारित होती है, परन्तु बोली प्रत्येक दस मील पर बदल जाती है।

श्री त्यागी ने घोषित किया कि पंजाब में पंजाबी बोली को भाषा का रूप राजनीतिक उद्देश्य से किया गया और उसके पीछे एक बहुत बड़ा राजनीतिक षड्यन्त्र भी छिपा है, परन्तु यदि राजनीतिक नेताओं के झांसे में आए हिन्दुओं ने अपनी मातृभाषा हिन्दी नहीं लिखवाई और पंजाबी लिखा दी तो उनके बच्चे हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ हो जाएंगे और इसका दुष्परिणाम यह होगा कि वे अपने धर्मग्रंथ 'रामायण' और 'महाभारत' आदि को भी नहीं पढ़ सकेंगे। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि किसी भी जाति की मातृभाषा वही हो सकती है, जिसमें उनका धर्म, साहित्य एवं इतिहास लिखा होता है और यही उस जाति अथवा राष्ट्र की आत्मा होती है। इनके समाप्त होने पर जाति अथवा राष्ट्र मौत के मुंह में विलीन हो जाते हैं, इसलिए हिन्दुओं का अपनी भाषा पंजाबी लिखाना स्वयं अपनी मौत को निमन्त्रण देना है।

इस महत्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान दिलाते हुए श्री त्यागी ने कहा कि हिन्दुओं ने यदि जनगणना में सावधानी न रखी तो इसका दुष्परिणाम शीघ्र ही यह आयेगा कि दिल्ली की प्रान्तीय भाषा हिन्दी न रह कर पंजाबी होगी और पंजाब की शिक्षा-संस्थाओं में हिन्दुओं के बच्चों को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं रह जाएगा, जो देश के लिए घातक सिद्ध होगा। त्यागी जी ने राजनीतिक नेताओं से अनुरोध किया है कि वे अपनी कुर्सियों के लिए राष्ट्र हित की उपेक्षा न करें, अन्यथा उसके द्वारा देश हित की जगह राष्ट्र का अहित ही होगा।

जनगणना के बारे में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा का वक्तव्य पढ़ें पृष्ठ ८ (पर)

समस्त राष्ट्रवादी धर्मप्राण जनता से अनुरोध

आप समस्त कारोबार हिन्दी में करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ के मन्त्री श्री विद्यासागर विद्यालंकार ने समस्त राष्ट्र-वादी धर्मप्राण जनता से जिज्ञासा प्रकट की है।

- यदि आप अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं की सुरक्षा चाहते हैं।
- यदि आप अपने देश की बची हुई एकता और संगठन का संरक्षण करना चाहते हैं और देश का दूसरा बंटवारा नहीं चाहते।
- यदि आपकी इच्छा है कि आप और आपकी सन्तान वेद, गीता, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत भारतीय दर्शन आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय-मनन कर सकें।
- यदि आप अपना, अपने परिवार, अपने प्रदेश और राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल करना चाहते हैं—

तो आपका यह पुनीत कर्त्तव्य है कि आप अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और राष्ट्रीय कार्यों के लिए अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

स्मरण रखें हिन्दी जनता, सन्तों और गुरुओं की भाषा है

इसलिए आपका कर्त्तव्य है

- आप अपने निजी-व्यापारी पत्रों, धनादेश आदि में हिन्दी में हस्ताक्षर करें।
- अपने सारे तार हिन्दी में भेजें।
- अपने समस्त विज्ञापन हिन्दी में करें।
- हिन्दी के समाचार-पत्र-पत्रिकाओं को प्रमुखता दें।
- अपनी दुकान, कार्यालय, व्यवसाय और प्रतिष्ठानों के नाम हिन्दी में रखें।
- व्यक्तिगत दुकानों और प्रतिष्ठानों के नामपट्ट हिन्दी में लिखवायें।
- रसीदें, चालान और बीजक हिन्दी में छपवायें।
- बैंक, रेलवे, तार विभाग, बीमा कम्पनियों से हिन्दी में पत्र-व्यवहार करें।
- व्यापार सम्बन्धी एवं बधाई कार्ड हिन्दी में भेजें।
- दूरभाष निर्देशिका हिन्दी में ही लें।
- आयकर, विक्रयकर विवरण एवं सम्बन्धित पत्र हिन्दी में दें।

जनगणना में आर्य/वैदिक (हिन्दू) लिखाएं

आप से अनुरोध है कि जनगणना के समय गणक के प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दें

१. धर्म—आर्य। वैदिक (हिन्दू)
२. भाषा—हिन्दी
३. अन्य भाषा १. संस्कृत
२. अन्य भाषा जो आप जानते हों

कृपया ध्यान रखें कि आर्य या वैदिक लिखाने पर आपकी गिनती हिन्दुओं में ही होगी।

यह भी ध्यान रखें कि जनगणना में जाति सम्बन्धी प्रश्न नहीं किया जाएगा केवल अनुसूचित जाति अथवा जनजाति के बारे में ही पूछताछ की जाएगी।

मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

इस अंक में…

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

वेद मनन :

मन को बन्धु बनाओ, दीर्घ जीवन मिलेगा

मनो न्वा ह्वाम हे नाराशंसेन स्तोमेन । पितॄणां च मन्मभि : । यजु: ३-५३
आन एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे । ज्योक्च सूर्यं दृशे । यजु: ३-५४
ऋषि: — बन्धु: । देवता --मनः ।

शब्दार्थ - हे (बन्धो) परमात्मा तथा संसार से बांधने वाली (मनः) संकल्प-विकल्पात्मक मनन शक्ति (नु) निश्चय ही हम (नाराशंसेन) मनुष्यों-चित प्रशंसात्मक (स्तोमेन) स्तुति द्वारा तथा (पितॄणां) अपने पूर्वज पितरों के (मन्माभिः) मननपूर्ण मन्तव्यों के अनुसार तुझे (आह्वामहे) बुलाते हैं, तेरी शक्ति का आदर करते हुए तुझसे प्रार्थना करते हैं।

हम निराश होकर संसार से भागने का विचार करने लगते हैं, क्योंकि तेरी शक्ति को भूल जाते हैं। अब हमें पता लग चुका है। कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।' अत: (मन:) हे समर्थन मन तू (क्रत्वे) संकल्पपूर्वक कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करने के लिए (दक्षाय) उत्साहपूर्वक (जीव से) जीवन व्यतीत करने की इच्छा जाग्रत् करने के लिए (ज्योक्च) और दीर्घ काल तक (सूर्यं दृशे) सूर्य से प्रेरणा लेने के लिए (नः) हमारे पास (पुनः) फिर (आ ए तु) सब प्रकार की समृद्धि प्राप्त कराने के लिए (एतु) आ।

निष्कर्ष—१. 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।' अपने पितरों के इस मन्तव्य को स्मरण करने वाले को कभी निराश नहीं होना चाहिये। उसे सदा संकल्पपूर्वक कर्म करते हुए, उन्नति की कामना से दीर्घजीवन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।

२. मनुष्य का मन सदेह मित्रों और सगों से अधिक बन्धुभाव रख कर सहायता करने वाला है, इसलिए मनुष्य के समान इसके सामर्थ्य को जान कर इसकी प्रशंसा करनी चाहिए और इससे लाभ उठा कर स्वयं समर्थ बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

३. मनोहीदं मनस्विनं भूयिष्ठम् वनी वाह्यते। मन ही मनुष्य को उन्नत दशा की ओर खींच कर ले जाता है। यही बात इस मन्त्र में कही है कि यदि मन हमारा बन्धु की तरह सहायक और सहयोगी होगा तो हमारा प्रत्येक कर्म दक्षतापूर्ण होगा, जीवन दीर्घ होगा। सूर्य से प्रेरणा ग्रहण करेंगे और दूसरों को प्रेरणा देंगे।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि बन्धु संकेत करता है कि मन को सदा ... कर, बन्धु बनाकर अपने वश में रखना चाहिए। तभी हमारा मनन शुभ और शुद्ध होगा, कर्म दक्षतापूर्ण होंगे और जीवन दीर्घ होगा।

अर्थ पोषक प्रमाण—

मनः—मनुते इति ज्ञानं पवित्रां ... मनन शक्तिम् । भगवद्दाचार्य।

मनः —संकल्पविकल्पात्मकं, स्मर... त्मकं मननशीलम् । धारणावती बुद्धि अन्त: करणस्य अहंकारादि वृत्ति वा स्वामी दयानन्द.

क्रत्वे—क्रतुः कर्मनामानि० ... क्रतुः संकल्पःयज्ञो वा । उणादि० संकल्प पूर्वक कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करने के लिये।

आह्वामहे—सत्कुर्मः । भगवद् चार्य, आह्वयामः, याचामः । संस्कृत धातुकोष बन्धुः—बन्ध बन्धने।

मनोहर, विद्यालंकार

वीरता का घोष :

मेरे अंग-अंग यशस्वी हों !

(गतांक से आगे)

त्विर्षिः केशाश्चश्मश्रुणि—मूंछें और केश दीप्ति के अवतार हैं। मूंछ और दाढ़ी शरीर के सौंदर्य को बढ़ाने वाले होते हैं। स्त्रियों के बाल उनका सौंदर्य द्विगुणित करते हैं। प्राचीन ऋषि-महर्षियों के बाल उनके चेहरे की कान्ति को बढ़ाते थे। महाराणा प्रताप और शिवाजी की मूंछें और दाढ़ी उनके चेहरे की कान्ति को बहुत प्रभावशाली बनाते हैं। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की दाढ़ी और मूंछों की दीप्ति उनकी उनकी प्रतिभा की परिचायक थी। बर्नार्ड शा और तालस्ताय की दाढ़ियों की शोभा उनके चेहरे को दीप्त कर रही थीं। क्या आप ने डाकुओं, लुटेरों और चोरों के दाढ़ी मूंछ से ढके चेहरे से क्रूरता टपकती हुई नहीं अनुभव की। महाराज रणजीत सिंह, गुरु गोविन्द सिंह की सफेद दाढ़ियां कितनी हृदय की नम्रता को प्रकट करती हैं, परन्तु यह नम्रता, प्रतिभा ओर दीप्ति दाढ़ी-मूंछ की नहीं होती। यह तो उनके हृदय में उठने वाले विचारों का प्रभाव होता है जिन विचारों को हम अपने मन में सदैव स्थान देते रहते हैं, उन्हें सचेत मस्तिष्क हमारे अचेत मस्तिष्क तक पहुंचा देते हैं और वही हमारी विचारधारा हो जाती है। वह विचारधारा यदि उच्च है तो उच्चता के भाव आएंगे और यदि विचार गन्दे हैं, हीन हैं तो चेहरे पर वही विचार अपनी छाया डालेंगे मनुष्य का निर्माण भाग्य नहीं, मनुष्य के विचार और कार्यशक्ति करती है। गौरव मेहनत का अनुगामी है। काम आत्मा के लिए रसायन का काम करता है। विचार एवं कार्य ही मनुष्य की आत्मा है। उसी की छाया मनुष्य के पूरे चेहरे पर पड़ता है। अतः कहा है 'हमारी दाढ़ी मूंछ और बाल दीप्ति वाले हैं।'

मे प्राणः राजा—मेरा प्राण राजा (अमृतम्) अमर है। संध्या में इन्द्रियस्पर्श के मन्त्र में कहा गया है 'ओं प्राणः प्राणः मेरे प्राण यशस्वी और बलवान हों। हमारे जीवन में प्राण शक्ति एक मौलिक तत्व है। जीवन भर प्राण क्षण भर नहीं ठहरता वह सदा चलता रहता है। उस का ठहर जाना मृत्यु है। दो फेफड़े इसके आधार हैं। इस प्राण यन्त्र के स्वस्थ रहने से प्राण शक्ति में शक्ति हो सकती है। प्राण के शक्त रहने से ही इन्द्रियों में शक्ति, बल और शक्ति का संचार होता है। इन्द्रियों की प्रेरक शक्ति प्राण शक्ति है।

मनुष्य के शरीर में जीवात्मा के अतिरिक्त पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और ग्यारहवां मन है। परंतु इस सारी सेना के अतिरिक्त एक और वस्तु भी शरीर में है, जिसके बिना न जीवात्मा शरीर में रह सकता है न ही मन कुछ कर सकता है, न ही इन्द्रियां। नेत्र देखने में भी अन्धे हो जाते हैं, कान केवल एक ही छिद्र मात्र रह जाता है, नासिका में चाहे कितना भी इत्र उड़ेल दो वह सूंघ ही न सकेगा, रसना खट्टा-मीठा कड़वा कुछ भी न चख सकेगा—जब यह प्राण शक्ति शरीर से बाहर आ जाएगी। यह जो भी श्वास-प्रश्वास शरीर में आते जाते है, जो न दिन को, न रात को, न जागृत में, न स्वप्न में, विश्राम करते हैं, चलते ही रहते हैं। यह जन्म से मृत्यु तक चलते हैं। गर्भ में भी चलते हैं। इनका अपना कोई विषय नहीं, कोई स्वार्थ नहीं। शरीर में केवल यही निष्काम सेवक है। दूसरों के लाभ के लिए अनथक कार्य करने वाला प्राण है। इसी लिए छान्दोग्योपनिषद् के पंचम प्रपाठक के पहले खंड के पहले मन्त्र में कहा गया है :—

लेखक :

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

ओ३म्। यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद ज्येष्ठश्च ह वै श्रेष्ठश्च भवति। प्राणोवान ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च। अर्थात् प्राण सब इन्द्रियों में 'ज्येष्ठ' अर्थात् सबसे बड़ा, और श्रेष्ठ अर्थात् सबसे उत्तम है—जो ज्येष्ठ तथा श्रेष्ठ को जानता है वह स्वयं भी ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हो जाता है। छान्दोग्योपनिषद के पंचम अध्याय में ही प्राण की श्रेष्ठता सिद्ध करने को एक कथा दी है। एक बार प्राणों तथा इन्द्रियों में विवाद उठ खड़ा हुआ कि उनमें सर्व श्रेष्ठ कौन है? हर एक कहने लगा 'अहं श्रेयान् अहं श्रेयान्'—'मैं बड़ा हूं, मैं बड़ा हूं।'

वह प्राणि जगत् के पिता प्रजापति के पास गये, और बोले, भगवन! हम में कौन श्रेष्ठ है? प्रजापति ने ... दिया 'परिमन् उत्क्रान्ते शरीर पापिष्ठ तरमिव दृश्येत स व श्रेष्ठ इति' ... में से जिसके निकल जाने पर शरीर अत्यन्त घृणित दिखाई दे, वही ... श्रेष्ठ है।

पहले वाणी गई पर गूंगे ... बोले भी देखते सुनते और विचार ... हैं। नेत्र चले गए पर अंधे की ... जीवित रहा, श्रोत्र चले गए उसके ... भी काम न रुका। मन बाहर ... गया शरीर शिशुवत् जीवित ... अन्त में जब प्राण निकलने लगे ... उसने इन्द्रियों को इस तरह उखाड़ ... जैसे खूंटे से बंधा हुआ एक उत्तम ... दौड़ने लगे तो खूंटे को उखाड़ ... यह देखकर इन्द्रियां प्राण के ... आकर बोलीं 'भावन्नेधि त्वं न: ... ऽसि मोत्क्रमीरिति' भगवन तुम ... फलो, तुम्हीं हम सब में श्रेष्ठ ... यहां से मत जाओ। इस प्राण को ... षद में पिता त्वं मातरिश्वा ... जीवात्मा का पिता है—कहा ... जिस प्रकार सूर्य ब्रह्माण्ड में ... के सबको गर्मी तथा प्रकाश देता है ... प्रकार यह प्राण मनुष्य के ... सूर्यवत् सब कार्य करता है। ... बतलाता है जिन्होंने प्राण द्वारा ... विजय प्राप्त करने का यत्न किया ... सफल हुए। इसीलिए यह कहना ... प्राण मेरा राजा है और यह ...

सम्राट् चक्षु==आंख सम्राट् ... है। आंख के बिना मनुष्य का ... चल जाता है, परन्तु आंख ...

(शेष पृष्ठ ७ पर)

ओ३म्

'आर्य सन्देश'

परिवार में सब सुखी रहें !

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥ अथर्व ३. ३०. ३

भाई-भाई से वैर न करे । बहन-भाई आपस में वैर न करें । सब भाई एक समान कार्य करें । सबकी गति एक-सी हो । सब लोग मधुर-कल्याणपूर्ण बातें करें ।

जनगणना में हमारा दायित्व

पिछली एक शताब्दी से देश में जनगणना का कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है । किसी भी प्रजातान्त्रिक राष्ट्र में मर्दुमशुमारी, सेन्सेस या जनगणना का बुनियादी महत्त्व होता है । प्रजातन्त्री व्यवस्था में चुनी हुई स्थानीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय विधायक संस्थाएँ ही अपने प्रशासन की स्थापना करतीं है । इनके आधार पर ही विविध निर्वाचन मण्डलों एवं चुनाव क्षेत्रों का निर्धारण होता है और उन्हें ही बालिग मताधिकार के आधार पर अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है, फलतः किसी भी प्रजातन्त्रीय व्यवस्था में मतदाताओं के मत एवं सम्मति का विशेष महत्त्व होता है । देश, प्रदेशों और क्षेत्रों की जनसंख्या के अधिकार पर ही उन्हें कम या ज्यादह प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है । उत्तर प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली आदि प्रदेशों एवं क्षेत्रों को अपनी जनसंख्या के आधार पर देश की केन्द्रीय एवं प्रादेशिक सभाओं में अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करने का अधिकार है । इस सन्दर्भ में प्रति दश वर्षों में होने वाली जनगणना या मर्दुमशुमारी की विशेष महत्ता है । यदि हरियाणा या दिल्ली की बहुसंख्यक जनता अपने निजी वक्तव्यों से यह घोषित कर दे कि उनकी भाषा पंजाबी है तो प्रदेश के शासन, शिक्षा और भावी चुनाव प्रक्रियाओं में पंजाबी की स्थिति स्वतः सर्वोपरि हो सकती है । आज पंजाब में ४९% हिन्दी भाषाभाषियों की भाषा हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं है, प्रत्युत वहां ५१ या कुछ उससे अधिक प्र० श० पंजाबी बोलने वाले प्रशासको को शिक्षा एवं प्रशासन के क्षेत्र में अपने एकाधिकार को स्थापित करने का अधिकार मिल गया है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं भू. पू. संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी की वह चेतावनी सामयिक है जिसमें उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के श्री यज्ञ शर्मा के उस वक्तव्य को भ्रान्तिपूर्ण कहा है कि जिसमें पंजाबी भाइयों से वर्तमान जनगणना में अपनी मातृभाषा पंजाबी लिखने की प्रेरणा दी है । श्री त्यागी का यह कथन ठीक है कि भाषा और बोली में बड़ा अन्तर होता है । छत्तीसगढ़, मारवाड़ी, अवधी, ब्रज, मैथिली, राजस्थानी, बुंदेली, आदि अनेक बोलियां देश में प्रचलित हैं । हर दस मील पर बोली बदल जाती है, इसलिए बोली को भाषा का नाम देना कभी उचित नहीं कहा जा सकता है । पंजाबी बोली को भाषा का रूप भी विशुद्ध राजनीतिक उद्देश्य से दिया जा रहा है । यदि इन राजनीतिक नेताओं के चक्कर में आए हिन्दुओं ने अपनी भाषा हिन्दी के स्थान पर पंजाबी लिखा दी तो कुछ ही वर्षों में उनके बच्चे हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ हो जायेंगे और इसका दुष्परिणाम यह होगा कि उनके बच्चे और उनके परिवार अपने धर्मग्रन्थ रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद और गीता आदि को भी नहीं पढ़ सकेंगे । भारत के धर्म, साहित्य, इतिहास और संस्कृति की मुख्य भाषा संस्कृत और हिन्दी है । ये भाषाएँ हमारे वांगमय संस्कृति और साहित्य की आत्मा है इनकी उपेक्षा करते ही हमारी सम्पूर्ण संस्कृति, साहित्य, धर्म और समाज आधारहीन हो जायेंगे ।

महर्षि दयानन्द ने ३१ दिसम्बर, १८८० के दिन आर्यसमाज मुल्तान के मन्त्री श्री दयाराम वर्मा को एक पत्र लिखकर जनगणना की खानापूरी करने के विषय में अपने दायित्व के प्रति ध्यान आकर्षित किया था । महर्षि ने परामर्श दिया था कि धर्म सम्प्रदाय आदि के खाने में हमें 'वैदिक' असल कौम 'आर्य' या जाति या फिर्के के खाने में ब्राह्मण-क्षत्रिय, वैश्य आदि लिखाना चाहिए । जिसका कोई गोत्र न हो, वह काश्यप या पाराशर लिखाए । ठीक एक शताब्दी के बाद अब ऋषि की संतान आर्यजनों के समक्ष इस वर्ष की जनगणना के अवसर पर अपनी जिम्मेदारी निबाहने की घड़ी आ गयी है । कई क्षेत्रों में गणक गणना का कार्य पूरा कर चुके हैं, कई जगह पहुंचने वाले हैं और इस मास के अन्त तक गणना का अन्तिम दौर आएगा, इसलिए प्रत्येक देशवासी को स्थिति की गम्भीरता समझ कर अपना दायित्व निबाहना चाहिए । जब भी कोई गणक आपके घर पहुंच कर आपके और आपके परिवार के बारे में जिज्ञासा करे तो आपसे हार्दिक अनुरोध है कि आप अपना धर्म आर्य। वैदिक (हिन्दू) लिखाएं । आप अपनी भाषा हिन्दी लिखाएं । आप दूसरी कौन-सी भाषा जानते हैं यह जिज्ञासा करने पर आप संस्कृत या उस भाषा का परिचय दें जिसे आप जानते हों । समय रहते आपको सतर्क एवं सावधान हो जाना चाहिए । इस जनगणना के आधार पर ही यह निर्णय होगा कि दिल्ली और पंजाब आदि में हिन्दी की क्या स्थिति है ? आपके निर्णय पर आपके प्रदेश की सरकारी और शिक्षा की भाषा का फैसला होगा । आपके निर्णय से स्थिति बन या बिगड़ सकती है । समय रहते आपको मतगणना के विषय में अपना दायित्व निबाहना चाहिए ।

नारी-जागरण के आठ दशक

पिछले दिनों कन्या गुरुकुल हाथरस का हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया गया । १९वीं शताब्दी में आर्यसमाज की स्थापना से देश में राष्ट्रीय जागरण का एक युग प्रारम्भ हुआ था । राष्ट्र, समाज और जाति में नवचेतना का संचार लाने के लिए आर्यसमाज ने सामाजिक कुरीतियाँ भेदभाव, अस्पृश्यता, अशिक्षा आदि दूर करने के लिए जहाँ नानाविध उपायों का अवलम्बन किया, वहां उसने स्त्रीशिक्षा के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन किया । एक शताब्दी पूर्व उत्तरी भारत में नारी जाति की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी । समाज एवं परिवार में नारी का नगण्य स्थान था । प्रारम्भ में ईसाई प्रचारकों ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से पदार्पण किया था । लगभग ९० वर्ष पूर्व जालन्धर में महात्मा मुंशीराम जी की बड़ी सुपुत्री वेदकुमारी ने एक दिन स्कूल से लौट कर घर में एक गाना सुनाया था -

इक बार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल ॥
ईसा मेरा राम-रसिया, ईसा मेरा कृष्ण-कन्हैया ॥

यह गीत सुनकर मुंशीराम जी व्यथित हो गए । उन्होंने लाला देवराज जी के सहयोग से कोट किशनचन्द्र, जालन्धरमें ११ अप्रैल १८८५ को आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की । कालान्तर में यही संस्था उत्तरी भारत में स्त्रीशिक्षा की शिरोमणि संस्था आर्य कन्या महाविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गई । बाद में तो कन्या गुरुकुल हाथरस और कन्या गुरुकुल देहरादून आदि कई संस्थाओं तथा उत्तरी भारत के छोटे-बड़े प्रत्येक नगर में आर्यकन्या एवं पुत्रीशालाओं के माध्यम से आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत की । इन आर्य कन्या शिक्षा संस्थाओं की महत्ता इस दृष्टि से बहुत अधिक है कि एक शताब्दी पूर्व तक पौराणिकों की धारणा थी कि स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने-कराने, वेद पढ़ने-पढ़ाने तथा ब्रह्मयज्ञादि वेदोक्त वैदिक शुभ कर्म करने-कराने का कोई अधिकार नहीं है । ऋषि दयानन्द ने स्त्री-शूद्रों को अधोगति के महागर्त से निकाल कर स्त्री-शूद्रों को द्विजों के समान यज्ञोपवीत और वेद पढ़ने का शास्त्र सम्मत अधिकार देते हुए वेद का यह उद्घोष किया था—

सुमंगली प्रतरणी गृहाणाम् ॥ अथर्व १४. २. २६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमाः ॥ अथर्व ११. १. १७

ये नारियाँ शुभ मँगलकारिणी गृहस्थों का परित्राण तथा कल्याण करने वाली हैं । वे शुद्ध, पवित्र और यज्ञादि समस्त शुभ कर्मों के योग्य एवं पूजा (सत्कार) की पात्र हैं ।

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों के प्रारम्भ में भारतीय नारी पुरुष के समकक्ष है । शिक्षा, राजनीति, मताधिकार आदि क्षेत्रों में आज नारी उपेक्षित नहीं है, इतने पर भी अभी उसे समाज, परिवार और राष्ट्र में समय-समय पर सामाजिक बन्धनों, शोषणों एवं अत्याचारों का शिकार बनना पड़ता है । इस दिशा में आर्य स्त्री संस्थाएँ और आर्य विदुषी बहनें जन-जागरण एवं संगठन कर अभी बहुत कुछ कर सकती हैं ।

□

२८ फरवरी जिनकी पुण्य तिथि है—संस्मरण श्रद्धांजलि

आजीवन आर्यसमाज के प्रति अर्पित

निर्भय सम्पादक : म० कृष्ण

यद्यपि मेरे माता-पिता आर्यसमाजी विचारों के न होते हुए भी उदार धार्मिक विचारों के थे, पर मैं अपने नगर वजीराबाद, जि० गुजरावाला (अब पश्चिम पाकिस्तान में) आर्यकुमार सभा की उपज हूं। छात्र काल में और उसके बाद भी जीवन के अंतिम क्षण तक, सम्पादक और पत्रकार के रूप में, देश के विभिन्न अनुकूल-प्रतिकूल आन्दोलनों का प्रेक्षक, समालोचक और उनकी तह तक उधेड़बुन करते हुए भी, मैंने अपनी विविध सार्वजनिक प्रवृत्तियों की परिधि आर्यसमाज के क्षेत्र से बाहर कभी नहीं बनाई। आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था का सदस्य नहीं, यद्यपि, मेरे सम्मुख अनेक आकर्षक, बिन मांगे, सहज और अनायास स्वर्ण अवसर आए, जबकि मेरे कई आर्य बन्धु और सहयोगी, लोकेषणावश, इस प्रवाह में सहज ही बह गये। मेरा दृढ़ विश्वास है, मेरे अन्तिम श्वास भी, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति एक तुच्छ सेवक के रूप में पूर्णतः समर्पित के रूप में ही निकलेंगे—ये शब्द हैं जो लगभग पौन सदी तक दृढ़ आस्तिक आर्य के जीवन के साथ आर्य समाज के विभिन्न रूपों में अहर्निश सेवक,—उत्कृष्ट संगठक कर्त्तव्यनिष्ठ मूर्धन्य नेता, लौह लेखनी के जादूगर, प्रभावी वक्ता, सुयोग्य तार्किक और विचारक, मित्रधर्म पालक, उदार, संकटग्रस्तों के सहायक, सदा निर्भय इत्यादि गुणविशिष्ट महाशय कृष्ण ने चांदनी चौक दिल्ली के गाँधी मैदान में ५० के दशक में आर्यसमाज दीवानहाल में वार्षिक उत्सव में हजारों की संख्या में उपस्थित आर्य नर-नारियों के सभा में कहे। यह लेखक भी उस समय वहां उपस्थित था।

आर्य प्रतिनिधि सभा विशाल रूप में : महाशयजी का प्रभावी व्यक्तित्व

एक समय था जब आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, स्वतन्त्रता प्राप्ति के कई वर्ष बाद तक भी (हरियाणा, पंजाब के अन्तर्गत ही था) दिल्ली, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त, सिन्ध, बिलोचिस्तान, जम्मू काश्मीर सहित—का कार्यालय एक मेज कुर्सी, एक लेखक समेत एक छोटे कमरे तक ही सीमित था। ला० केदारनाथ थापर (हाल ही स्वर्गीय स्वामी ब्रह्मानंद जी आदित्य ब्रह्मचारी के पिता और गुरु कांगड़ी के प्रारम्भिक तीसरे दल के स्नातक) मन्त्री और कुछ थोड़े ही उपदेशक-प्रचारक इसके अन्तर्गत थे। म० कृष्ण पहले उपमन्त्री कुछ समय बाद मन्त्री चुने गये। १९४३ में जब इस प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती लाहौर में मनाई गई, तब यह नन्हीं संस्था वट वृक्ष के सदृश विशालकाय, चतुर्दिक व्यापक, देश की धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं में गौरव। स्पद पद प्राप्त कर चुकी थी, विशाल मैदान, क्रीड़ा क्षेत्र, लगभग आधी दर्जन संस्थाओं को समेटे लाखों की सम्पति वाला सुदृढ़, निर्मित शानदार, दोमँजिला गुरुदत्त भवन-सभा का मुख्य कार्यालय, उपदेशक विद्यालय, बृहत् वैदिक पुस्तकालय, वाचनालय सहित, शुद्धि सभा, दलितोद्धार सभा इत्यादि संस्थाओं के अतिरिक्त कार्यालय में लगभग ५० वैतनिक कर्मचारी, १०० से अधिक उपदेशक प्रचारक, हजारों आर्यसमाजें, उनके अन्तर्गत अनेक संस्थाएं, दर्जनों गुरुकुल, सैंकड़ों स्कूल, कालेज, कन्या पाठशालाएं आयुर्वेदिक औषधालय, अस्पताल-यह विराट् आकार उजागर हो गया आर्य प्रतिनिधि सभा का जब इसकी बागडोर, बीच में कुछ व्यवधान के साथ, स्वतन्त्र... काल तक महाशय जी के हाथ में ... निःसन्देह इसका एक मात्र श्रेय के... महाशय जी को नहीं किन्तु समस्त ... जनता और हिन्दू मात्र को है। ... समय स्थिति यह थी कि देश में ... भी कहीं कोई प्रबल दैवीय संकट आ... तब आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, ...

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालं...

कार्यकर्त्ता सेवा के लिए सबसे ... पहुंचते, जैसे. विहार का भूकम्प, ... का भूकम्प, उड़ीसा और हैदराबाद ... बाढ़ें, राजस्थान का अकाल, को... रावल पिंडी, मुल्तान, सहारनपुर, ... जहांपुर, कानपुर, कलकत्ता इ... साम्प्रदायिक दंगे, नोआख... (बंगाल), मलाबार (केरल) इ... स्थानों पर हिन्दुओं पर नृशंस अत्या... इत्यादि। महाशय जी ने अपने ... दैनिक प्रताप और साप्ताहिक प्रका... विदेशी सरकार की मुस्लिम पक्षीय... हिन्दू विरोधी नीति की पृष्ठभूमि में ... सँगठन की आवश्यकता पर कई स... तक प्रकाशित लेखमाला के फल... उत्तर भारत-विशेषतः पंजाब, उत्तर ... के पश्चिमी जिलों दिल्ली सीमा प्र... सिन्ध इत्यादि प्रान्तों में ठोस का... रूप में हलचल मच गई।

(शेष अगले अं...)

सामाजिक जगत्

ताड़ी खेत में योग-साधना शिविर

आर्य समाज ताड़ीखेत (अलमोड़ा) में ८ से १४ जुलाई तक स्वामी ओमानन्द सरस्वती योगाचार्य के शिष्य डा० ज्ञानप्रकाश शास्त्री कच्चाहारी एम० बी० बी० एस० के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। सभी साधकों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

माधवानन्द मैनाली
मंत्री आर्य समाज ताड़ीखेत

ग्रीष्म कालिक-साधना-शिविर

वेद संस्थान नई दिल्ली के तत्त्वावधान में ग्रीष्म कालिक साधना शिविर ७ से १३ जुलाई तक संस्थान में मनाया गया, जो महात्मा दयानन्द जी (तपोवन देहरादून) के ब्रह्मत्वमें स्वस्तियाग यज्ञ से प्रारम्भ हो कर १३ जुलाई को पूर्णाहुति तथा ऋषि लंगर के साथ समाप्त हुआ।

शिविर में श्री स्वामी दयानन्द 'विदेह' जी द्वारा प्रतिदिन प्रातः योग विषय पर वेदोपदेश, ध्यान एवं योग प्रशिक्षण संचालन हुआ। डॉ० श्री अभयदेव शर्मा संस्थानाध्यक्ष श्री डॉ० फतहसिंह जी एम० ए० डी० लिट् द्वारा वेद व योग दर्शन पर प्रवचन श्री डॉ० रामाश्रय जी द्वारा धर्मशास्त्र पर मार्मिक ६ प्रवचन, हरवंशलाल जी 'वेद मनीषी' द्वारा भजन व वेदोपदेश।

हरकृष्णलाल मंत्री

आर्य यात्रा कश्मीर

आर्य परिवारों के आग्रह पर १७ सितम्बर से २८ सितम्बर तक बसों से कश्मीर यात्रा का कार्यक्रम तैयार किया गया है। १७ सितम्बर को सायं ४ बजे दिल्ली से रवाना होंगे और २८ सितम्बर की रात्रि को दिल्ली वापिस लौटेंगे। कश्मीर में गुलमार्ग, पहलगाम, कुक्कड़नाग और अनन्तनाग आदि अधिकांश प्रसिद्ध स्थानों की यात्रा इसमें शामिल है। ३६५ रु० देकर प्रत्येक यात्री अपनी सीट रिजर्व करवा सकता है।

रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक
४६६ भीमनगर, गुड़गांवा, फोन नं० ६१५१६५

नालन्दा जिला आर्य सभा

नालन्दा जिला आर्यसमाज हिलसा, जिला नालन्दा (बिहार) की अन्तरंग सभा की बैठक १३ जुलाई को हुई जिसमें जिले भर में आर्य समाज के प्रचार को गति देने के उपायों पर विचार किया गया।

देवेन्द्रकुमार शशिकार मंत्री

--आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश समिति की बैठक २७ जुलाई को सायं ६ बजे आर्य समाज राजेन्द्रनगर में होगी। जगदेव मंत्री

— गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुआ : प्रधान- -श्री मनोहरलाल, उपप्रधान- -श्रीमती शकुन्तला गोयल, मंत्री—श्री इन्द्रराज, उपमंत्री--श्री नन्दलाल पाहवा, कोषाध्यक्ष-श्री शान्तिप्रकाश मित्थल, निरीक्षक--श्री रामशरणलाल।

—मंत्री इन्द्रराज

दोषियों को कठोर दण्ड देने की मांग

वेद प्रचारिणी सभा की बैठक होशियारपुर में डा० वीरेन्द्र सभा प्रधान की अध्यक्षता में हुई जिसमें निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए—

(१) महिलाओं पर वासनात्मक आक्रमण तथा बलात्कार के अपराधियों को कठोरतम दण्ड देने की व्यवस्था की जाए तथा सामाजिक वातावरण में परिवर्तन लाने के लिए सरकार शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करें कि लोगों में सदाचार के पालन की भावना दृढ़ बने।

(२) मिडिल स्तर से आगे सह शिक्षा को समाप्त किया जाये।

(३) सिनेमा में कामुकता-वर्धक चित्रों के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। अश्लील साहित्य एवं विज्ञापन के प्रकाशन एवं विक्रय पर रोक लगाई जावे।

(४) त्रिपुरा में हुए नर संहार के दोषी व्यक्तियों को तुरन्त दण्ड दिया जाये और अल्पसंख्यक हिन्दुओं के जान माल की सुरक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाये।

कुन्दनलाल शर्मा
मन्त्री वेद प्रचारिणी सभा
होशियारपुर

फिरोजपुर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी में आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर दि० ६ जुलाई से प्रारम्भ हो चुका है। इसमें पंजाब के अतिरिक्त जम्मू से भी आर्य वीर सम्मिलित हुए हैं।

शिविर का संचालन श्री ब्रह्मचारी आर्य नरेश, व्यायामाचार्य श्री देवव्रत श्री स्वामी प्रकाशानन्द, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री जगदीशचन्द्र बसु, एवं श्री जितेन्द्र संचालक आर्य वीर दल पंजाब, पधारे हुए हैं। प्रबन्ध व्यवस्था आश्रम की ओर से है। सभी आर्य वीर बड़े उत्साह से सभी कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं।

—आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश का वार्षिक निर्वाचन : (१) अध्यक्ष—ब्रह्मचारी राजसिंह आय (२) उपाध्यक्ष—ब्रह्मचारी जगदीश चन्द्र आर्य (३) महामंत्री ३ अनिलकुमार आर्य (४) कोषाध्यक्ष—प्रवीणकुमार आर्य (५) पुस्तकाध्यक्ष—चन्द्रमोहन आर्य (६) कार्यालय मन्त्री —अखिल कुमार

अनिल आर्य महामन्त्री

—आर्य समाज गुरु तेग बहादुर नगर (किंग्जवे) का वार्षिक चुनाव इस प्रकार हुआ : प्रधान—श्री देव राज तनेजा, उप-प्रधान—श्री राज कुमार भाटिया एडवोकेट, उपप्रधान—श्रीमती सुशीला सूद, मन्त्री—श्री प्रताप शंकर आर्य, प्रधान मंत्री—श्री राजेन्द्र दुर्गा, मन्त्राणी—श्रीमती शारदा मलिक।

वयोवृद्ध पुरोहित श्री मेहर चन्द जी का निधन

समाज के वयोवृद्ध पुरोहित श्री मेहर चन्द जी आर्य समाज राम गली हरी नगर घण्टाघर नई दिल्ली-६४ का १६ जून को रात्री के ६ बजे ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने ६० वर्ष तक भजनोपदेशक के रूप में देश भर में घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया और अब तीन वर्ष से इस समाज में पुरोहित का कार्य सुचारु रूप से कर रहे थे।

आर्य समाज में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को शान्ति की कामना कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई तथा उनकी धर्म पत्नी को हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया गया।

आनन्द प्रकाश
मंत्री WZ-४१० C/१ हरी नगर घण्टाघर
नई दिल्ली-६४

गुड़गांवा में आर्यवीर दल का शिविर

आर्यवीर दल गुड़गांव द्वारा आयोजित अष्टदिवसीय बौद्धिक शिक्षण शिविर २९ जून को सम्पन्न हुआ। ७० आर्यवीरों ने शिविर में भाग लिया। आर्यवीरों को व्यायाम, प्राणायाम, योगासन, आत्मरक्षा हेतु लाठी आदि सिखाई गई। चरित्र निर्माण हेतु उच्चकोटि के विद्वानों ने अपने ओजस्वी प्रवचनों द्वारा मार्ग दर्शन किया। मुख्य शिक्षक के रूप में श्री वेदप्रकाश की मुख्य भूमिका रही। उन्होंने आर्यवीरों को मांस-अंडा, बीड़ी सिग्रेट, शराब, मूर्तिपूजा आदि बुराईयों को समूल नष्ट करने हेतु अपने सरल एवं प्रेरक प्रवचनों तथा कथाओं द्वारा प्रेरित किया। सर्व श्री शिवकुमार शास्त्री भू० पूर्व संसद सदस्य, ठा० विक्रमसिंह एवं प्रो० उत्तम चन्द 'शरर' आदि ने अपने प्रवचनों द्वारा इस प्रकार के शिविर अयोजन को जड़ में पानी देने की संज्ञा दी। प्रो० उत्तमचन्द 'शरर' की अपील पर आर्यवीर दल, गुड़गांव की ओर से आगामी वर्ष के प्रारम्भ में आर्यवीर महासम्मेलन करने की घोषणा की गई। शिविर के कुशल संचालन हेतु सर्व श्री रामचंद्र आर्य, ओमप्रकाश आर्य, सोमदत्त (संयोजक) एवं बलदेव राज शास्त्री (शिविराध्यक्ष) का योगदान अपूर्व रहा।

सोमदत्त
संयोजक आर्यवीर दल, गुड़गांव

श्री चानन लाल आहूजा का स्वर्गवास

प्रसिद्ध उद्योगपति और दानी श्री चानन लाल आहूजा फाजिलका वाले ८६ वर्ष की आयु में ६ जुलाई रविवार को अपनी पुत्री श्रीमती विमला जी के घर चण्डीगढ़ में अपनी तीन पुत्रियों और परिवार को छोड़ कर भगवान् के प्यारे हो गये। जीवन भर तन-मन-धन, लेखनी और वाणी से वैदिक धर्म के प्रचार में लगे रहे। फाजिलका में शिक्षा संस्थाएं, औषधालय आदि उनके दान से चल रहे हैं। छोटी-बड़ी ५६ के लगभग पुस्तकें उन्होंने लिखीं और मुफ्त बांटते रहे। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—आशु राम आर्य
१५९४/७ सी चण्डीगढ़

वैवाहिक विज्ञापन

२३ वर्षीय, वैश्य, बीसा अग्रवाल, गोयल, स्वस्थ, सुन्दर, एम० ए०, (संस्कृत पूर्ण व हिन्दी अन्तिम वर्ष) ३५५ से० मी०, ४५ कि० ग्रा०, कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए। साहित्यिक पारिवारिक पृष्ठभूमि वालों को प्राथमिकता। दहेज व जाति-बन्धन नहीं। विवाह अच्छा व शीघ्र। पत्र व्यवहार का पता—

—नर नारायण स्वरूप गोयल
"पुष्पक" पत्रकार
अध्यक्ष दहेज विरोधी समिति
बागपत—२५०६०९ (उ० प्र०)

---

२३ वर्षीय, कर्ण कायस्थ, स्वस्थ, सुन्दर, बी० काम० आनर्स (उत्प्रेषित छात्र) ५ फुट ३ इंच, युवक के लिये स्वस्थ, सुन्दर, सुशिक्षित एवं गृह-कार्य में कुशल जीवन-संगिनी चाहिए। दहेज व जाति-बन्धन नहीं।

पत्र व्यवहार का पता—

वैद्यनाथ लाभ पुस्तकाध्यक्ष
विवेकानन्द पुस्तकालय एवं कला केन्द्र
कन्होली, झंझारपुर जि०—
मधुवनी (विहार)
पिन कोड—८४६४०४

---

२६ वर्षीय, ५ फुट १० इंच, सुन्दर स्वस्थ एस० एस-सी, डी० फा... व्यवसाय-रत, सूद नव युवक के लिए सुन्दर ... चाहिए। बी० आई० एम० एस० ... (नर्स) को वरीयता। दहेज या जा... नहीं। परिवार सुशिक्षित—मांस-मदिरा-तम्बाकू का सेवन नहीं।

पत्र व्यवहार का पता—

—विद्यानिधि आयुर्वेदालंकार
पो० रामसिंह पुर,
जिला गंगा नगर (राज०)

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा सहायक समिति दिल्ली—।

प्राप्त दान सूचि

१. श्री धर्मपाल जी, अमृतसर—२५ रु० २. श्री सुरिन्दर प्रसाद सोनी, तरन तारन—२१ रु० ३. श्री हीरानन्द सहगल, अमृतसर—५० रु० ४. श्री भोलानाथ दिलावरी, अमृतसर—२० रु० ५. श्री सेठां दी हट्टी, पुतलीघर—११ रु० ६. श्री श्री रामप्रकाश मेहता, पुतलीघर, अमृतसर—२१ रु० ७. श्री सुदर्शन कुमार बंसल, तरनतारन—२१ रु० ८. श्री मुन्शीराम अरूड़ चन्द मेहता, पुतलीघर, अमृतसर—१० रु० ९. श्री बलदेव सहारा, आई० टी० ओ० अमृतसर—५० रु० १०. श्री मास्टर सुखदेव कटरा भाई सन्त सिंघ, अमृतसर—५ रु० ११. श्री कश्मीरीलाल, आर्य समाज शक्तिनगर, अमृतसर—५. रु० १२. श्री सत्यपाल खांडवाले, शक्तिनगर, अमृतसर—५ रु० १३. श्री शान्तिस्वरूप, शक्तिनगर, अमृतसर—५. रु० १४. श्री बलवन्तसिंह अमृतसर—५ रु० १५. श्री राजकुमार भल्ला, अमृतसर—५ रु० १६. श्री जियालाल मल्होत्रा, चण्डीगढ़—११ रु० १७. श्री मनोहरलाल धौन चण्डीगढ़—२१ रु० १८. आर्य समाज माडलटाउन अमृतसर द्वारा—६३ रु० १९. श्री केदारनाथ उरहंटा, अमृतसर—११ रु० २०. मैसर्स नारायण घी, अमृतसर—५ रु० २१. श्री जगदीश, प्रधान, आ०स० शक्तिनगर अमृतसर—२१ रु० २२. श्री सुभाष चन्द भल्ला, छेहरटा, अमृतसर—२० रु० २३. श्री शेरीलाल आ० स० शक्तिनगर, अमृतसर—५ रु० २४. श्री चुन्नीलाल अमृतसर—५ रु० २५. श्री बूटीराम बाव अमृतसर—५ रु०।

मुद्रक :—प्रकाशक श्री रामनाथ सहगल सभा मंत्री ...

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
विश्व के आर्यों को एक सूत्र में पिरोना हमारा उद्देश्य है

ओ३म्

आर्य जगत्



आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुख-पत्र

वार्षिक मूल्य-१० रुपये, आजीवन सदस्य—१५१ रु० | एक प्रति का मूल्य-३० पैसे | विदेश में—८ पौ० या १५ डालर
वर्ष ४३, अंक ३१ | रविवार, २७ जुलाई, १९८०

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३४३७१८

वरेण्य धन का अर्थ

संचोदय चित्रमर्वाक् राध इन्द्र वरेण्यम् । असदित्ते विभु प्रभु ।
संगोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथुश्रवो बृहत् । विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ।।

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । देवता-इन्द्रः । ऋक् १-९-५, ७

शब्दार्थ—(इन्द्र) सर्व ऐश्वर्य स्वामिन् (ते) आपके पास (विभु) मात्रा व विविधता में व्याप्त और (प्रभु) प्रभाव कारक तथा (राधः) सब उचित कामनाओं को सिद्धि प्रदान करने वाला (वरेण्यम्) सब के लिये वरणीय, श्रेष्ठ और (चित्रम्) अद्भुत ज्ञानप्रद धन है। (अर्वाक्) उस धन को हमारी ओर (संचोदय) प्रेरित कीजिये—प्राप्त कराइये । और तदनन्तर इस धन को (अस्मे) हमारे लिये (गोमत्) प्रशस्त गौओं से युक्त तथा प्रशस्त इन्द्रियों से युक्त (वाजवत्) सब प्रकार की समृद्धियों से युक्त (बृहत्) परिमाण में अधिक होते हुए भी (पृथु श्रवः) कीर्ति को फैलाने वाला (विश्वायुः) १०० वर्ष की पूर्ण आयु को देने वाला तथा (अक्षितम्) कभी क्षीण न होने वाला बनाकर (धेहि) धारण कीजिये ।

निष्कर्ष—१. हमें ऐसा वरणीय धन दीजिये, जिससे हमारा ज्ञान या वाणी विकृत न होने पावें । हम धन-मद में बौरा न जावें ।

२. हमें उतना धन दीजिये, जिससे हम पूर्ण आयु भोग सकें । धन की अधिकता के कारण किसी दुर्व्यसन या कमी के कारण किसी रोग के शिकार न होने पावें ।

३. हमें ऐसा धन दीजिये, जिससे हमारी कीर्ति बढ़े । हमारे धनार्जन के साधन पवित्र हों, हमारी निन्दा न हो, और हम पर कोई दण्ड-विधान लागू न हो ।

४. धन-वृद्धि के बाद हम गोपालन न छोड़ दें और इन्द्रिय लोलुप न बन जावें ।

५, हमारा धन राष्ट्रहित में लगे ।

६. हमें प्रभूत धन होते हुए कभी [illegible] । अघोषित काले धन के कारण कई बार धनी व्यक्ति [illegible] धन वालों के सामने हाथ पसारने को विवश हो [illegible]

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि संकेत करत[illegible] है, जब हम राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के लिये मित्र[illegible] से ओत-प्रोत हों । तब कोई व्यक्ति खाद्य पदार्थों [illegible] नहीं कर सकेगा । राष्ट्र हानि की [illegible] से [illegible]—चोरी नहीं करेगा ।

भावार्थ—न ह्येतत्केवलमीश्वरस्य प्रार्थनयैव भवितुमर्हति, किन्तु विविध पुरुषार्थम-पेक्षं वर्तत एतत् । स्वामी दयानन्द ।

आर्य जगत् के दो नए विशेषांकों की घोषणा

(१) विदेश प्रचार अंक

(२) लन्दन आर्य महासम्मेलन अंक

विदेश प्रचार अंक २४ अगस्त, १९८० को प्रकाशित होगा और लन्दन आर्य महासम्मेलन अंक २१ सितम्बर, १९८० को प्रकाशित होगा ।

आर्य जगत् के विशेषांकों की अब तक धूम रही है । ये दोनों विशेषांक सर्वथा नई और अछूती सामग्री के साथ प्रकाशित होंगे ।

प्रथम विशेषांक में, विदेशों में, जहां जहां आर्य समाज का प्रचार है, उसका सचित्र विवरण होगा ।

द्वितीय विशेषांक में लन्दन आर्य महासम्मेलन का आंखों देखा हाल, सब यात्रियों का सचित्र परिचय, तथा समस्त यूरोप की यात्रा का वर्णन होगा । जो लोग लन्दन नहीं जा सकेंगे उन्हें घर बैठे आर्य महासम्मेलन की झांकी और यूरोप—यात्रा का आनन्द प्राप्त होगा ।

सामग्री और साज-सज्जा की दृष्टि से दोनों विशेषांक अद्वितीय होंगे ।

१५ अगस्त तक आर्य जगत् के आजीवन सदस्य बनने वालों को ये दोनों विशेषांक सर्वथा नि[illegible] प्राप्त होंगे ।

प्रमाण—विश्वायुः—[illegible]त वार्षिकम[illegible]क वाऽयुर्यस्मात्तत् । स्वा० [illegible]
मधुच्छन्दाः—मधु + छन्द = मधुर इच्छा रखने वाला ।
वैश्वामित्रः—विश्व + मित्र + गोत्र प्रत्यय (गुण वैशिष्ट्य का सूचक)

—मनोहर विद्यालङ्कार
५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-

[illegible] द्वारा—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—श्री आसासिंह [illegible]

आओ सत्संग में चलें !

इस दो अक्षर वाले 'बन्दर' को संभाल

—चमनलाल—

देवियो और सज्जनो !

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समस्त चेतन जगत में यह सर्वश्रेष्ठ भी है। इससे बढ़कर और कोई भी दूसरा प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये समाज के अन्य लोगों पर आश्रित नहीं है। अपनी मानसिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं को जुटाने हेतु वह जन्म से मृत्यु पर्यन्त अनेक व्यवहार करता है। यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो पता चलता है कि वह सारा जीवन इन सभी व्यवहारों को दो चीजों के वशीभूत होकर करता है और उनके जाल में फंसा मारा मारा फिरता है। इसमें उसको क्या और कितना प्राप्त होता है और अपने कार्यों में कितनी सफलता मिलती है, यह प्रत्येक के अपने अनुभव की बात है। परन्तु प्रायः सभी असफल और खोये-२ से तथा अस्त व्यस्त दिखाई देते हैं। इसलिये पहले यह जानना जरूरी है कि ये इतनी प्रभावशाली दो चीजें हैं कौन-कौन सी।

एक वस्तु के नाम में पवर्ग और तवर्ग का अन्तिम अक्षर आता है और दूसरी वस्तु के नाम में तवर्ग का चौथा और अन्तिम अक्षर। समझ में आ गया होगा। लो मैं ही बताये देता हूं—पहला शब्द है 'मन' और दूसरा है 'धन'। ठीक है न। यही दो वस्तुएं प्राणी मात्र को अपने चंगुल में फंसाये हुए हैं।

मन बड़ा शक्तिशाली और चंचल है। जैसे मदारी बन्दर को नचाता है, ठीक इसी प्रकार यह मन हमें नचाता रहता है। हमें न चाहते हुए भी इसके इशारों पर विवश हो नाचता पड़ता है। यह अपने प्रभाव से हमको अपने पीछे-२ भागने पर विवश करता है और ऐसा करते-२ हम प्रायः विषय—वासनाओं के पंक में गिर जाते हैं, जहाँ से निकलना असम्भव हो जाता है। और इस प्रकार हम अपना सर्वनाश कर लेते हैं। मेरा एक मित्र द्वितीय विश्व युद्ध में सिंगापुर गया था। उसने बतलाया कि जब शत्रु के किसी बन्दी सैनिक को सख्त सजा देनी होती थी, तो उस बेचारे को किसी ट्रक के पीछे बाँध दिया जाता था और ट्रक को तीव्र गति से चलाया जाता था। वह लाचार बन्दी ट्रक के तेजी से चलने के कारण उसके पीछे लटका हुआ और कभी इधर और कभी उधर झकोले खाता हुआ लहु-लुहान हो अन्त में दम तोड़ देता था। यह मन भी, जब हम इसके वश में हो जाते हैं, तो हमारी ऐसी ही दुर्गति कर देता है। ऋग्वेद १।१६४।३६ में आया भी है—

न विजानामि यदि वेदमस्मि,
निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि।

—अर्थात् जीव भगवान से कहता है कि हे प्रभो ! मैं तो कुछ भी नहीं जानता कि वास्तव में मैं क्या हूं, क्योंकि मैं तो एक नन्हे अबोध बालक की न्याईं सदियों से मन के चक्कर में फंसा इधर उधर विचरता हुआ धक्के खा रहा हूं और शान्ति से कोसों दूर भटक रहा हूं।

मन की शक्ति बड़ी अद्भुत है। मन की शक्ति के सम्बन्ध में यजुर्वेद में में आया है—

यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते।

—अर्थात् जिसके बिना हम कोई भी काम करने में असमर्थ हैं। कोई भी इन्द्रिय मन के सहयोग के बिना कुछ भी नहीं कर सकती। जब यह कुमार्ग पर चलता है तो इसके पतन का कुछ भी ठिकाना नहीं। यह जितने भयंकर उत्पात करता है उसका चिन्तन मात्र आदमी को रोमाञ्चित कर देता है। परन्तु जब यह सुमार्गगामी होता है तो मानव को बहुत ऊंची स्थिति प्राप्त करा देता है। यह मन ही तो है जो आदमी को शैतान या देवता बनाता है। मन के वश में न होने के कारण ही रावण जैसे वेदों के विद्वान् महान् पण्डित रसातल को पहुंच गये और इसी मन को वश में कर सन्त कबीर, दादू, नानक आदि साधारण पुरुष भी उस जगत् नियन्ता जगत् पिता का सामीप्य प्राप्त करने में समर्थ हुए। इसी भाव को अथर्ववेद १९।९।४ में इस प्रकार कहा है—

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम्।
येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः॥

—अर्थात् हे स्त्री पुरुषो ! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मंजा मन कल्याणकारी होता है और यही ब्रह्मज्ञान से पवित्र न होने के कारण घोर उत्पात भी करता है।

जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है। यदि हममें मनन करने, सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो सकता। किसी भी क्षेत्र में मानव का उत्थान या पतन इस मन के कारण ही होता है। मनुष्य के पास मन न रहने की अवस्था में उसमें और एक जड़ पत्थर में कुछ भी अन्तर नहीं रह जाता। संसार की किसी भी प्रकार की प्रगति स्वस्थ मन के प्रभाव के कारण ही तो है। मन ही वास्तव में मनुष्य को मनुष्य बनाता है। मन-हीन मनुष्य पशु से भी हीन हो जाता है। इसीलिये तो नीतिकारों ने कहा भी है: "मन के हारे हार है मन के जीत"।

मन बड़ा चंचल भी है। प्रायः एक स्थान पर नहीं टिकता और न ही किसी समय स्थिर रहता है। कुछ न कुछ तोड़ फोड़ हर समय करता ही रहता है। जैसा कि ऋग्वेद १०।५८ में कहा है—यह मन वैवस्वत यम, अन्तरिक्ष, चतुर्भुमि पृथ्वी, चारों दिशाओं, जलमय समुद्र, दूरस्थ किरणों, जल और ओषधियों, सूर्य, उषा, बड़े-बड़े पर्वतों तथा सम्पूर्ण जगत में तथा उससे परे भी बहुत दूर-दूर तक जाता है। स्पष्ट है कि मन का स्वभाव भागने का है। इस लोक से परे परलोक की भी यह सैर कर आता है। कभी अतीत की चिन्ता से चिन्तित है तो कभी भविष्यत की आशा में खोया रहता है। यजुर्वेद में मन की चंचलता का दृश्य इस प्रकार दिखाया है—

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं,
तदु सुप्तस्य तथैवैति

—जैसे जागते हुए व्यक्ति का मन दूर-२ चला जाता है, वैसे ही सोये हुए का भी। इसको न सोते चैन और न जागते कल, ऐसा है यह मन चंचल। गीता में अर्जुन ने मन की चंचलता के बारे में योगेश्वर कृष्ण से कहा था :

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥

अर्थात् हे कृष्ण ! मन बहुत चंचल है, उधेड़बुन करने वाला, बलवान तथा हठी है। वायु को वश में करने के समान उसका निग्रह अत्यन्त कठिन है। परन्तु कृष्ण ने अर्जुन को इस मन के निग्रह के जो उपाय बताए हैं उनमें अभ्यास और वैराग्य मुख्य हैं—

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

पातञ्जल योगसूत्र में भी यही बात कही गई है—

अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः।

मन का निग्रह करना अत्यावश्यक है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ईर्ष्या, द्वेष आदि अनेक शत्रु आत्मा पर प्रहार करते हैं। आत्मा अकेला है और शत्रुओं की है सेना बड़ी। कैसे पार पायेगा यह आत्मा। ऋग्वेद में ५।३०।४ में आया है—

स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र,
वेषीदेको युधये भूयसश्चित्।

हे इन्द्र ! यदि तू मन को स्थिर कर सके, तो तू अकेला ही बहुतों से लड़ने को पर्याप्त है। इसीलिए ऋषियों ने मन का संयम करने पर बल दिया है। बृहदारण्यकोपनिषद् में प्रजापति ने देवों को 'द' अक्षर के उपदेश द्वारा मन को दमन करने का ही उपदेश दिया था। मन की शक्ति को देखते हुए ही महर्षि पतञ्जलि ने योग की परिभाषा में कहा है—

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।

अतः किसी भी कार्य की सफलता के लिए मन का स्थिर करना अत्यन्त आवश्यक है। ऋग्वेद ६।१६।१७ में आया भी है—

यत्र क्व च [illegible] दक्षं दधस उत्तरम।
तत्रा सदः कृणवसे [illegible]

मन जहां जाता है, भाग-दौड़कर अपना ठिकाना बना लेता है। ऋषियों का यह भी कहना है कि यह मन सान्त पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है और इसी से इसलिए शीघ्र भाग भी जाता है। अतः अनन्त अपार कर्त्तार में इसे लगाओ, पार न पाने से वहीं लगा रहेगा। परिणामतः जीव भी अपना ठिकाना वहीं बना लेगा। स्मृतिकारों ने भी कहा है : यह मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण है। शास्त्रकारों का कहना है कि 'विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः'। मन की वृत्तियाँ बड़ी अद्भुत होती हैं। इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के मनुष्य मन की कुटिलता के कारण

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली

गुरुकुल शिक्षा पद्धति किस ओर ?

--- कुमार हुना

पाश्चात शिक्षा प्रणाली की नकल करते हुये हम विद्यार्थियों को ३ या ४ विषयों का पाठ करा के स्नातक की उपाधि से विभूषित कर देते हैं। ऐसे स्नातक अपने आपको प्राय: जीवन की समस्याओं से उलझने से और संसार सागर में कुशलतापूर्वक तैरने के अयोग्य पाते हैं। परिणामस्वरूप समाज में कुण्ठा, कलह और संघर्ष उत्पन्न होता है। स्वामी दयानन्द ने आज से १०० वर्ष पूर्व जो पठन पाठन का प्रारूप देश के आगे रखा था यदि हम उस कार्यक्रम को स्वीकार कर लेते तो आज देश में गरीबी और बेरोजगारी का जो वातावरण विद्यमान है वह न पनप सकता। जहां स्वामी दयानन्द ने विद्यार्थियों के लिये वेद वेदांग, मनुस्मृति, बाल्मिकीय रामायण, आदि का पाठ प्रस्तावित किया वहां उन्होंने अंक गणित, विज्ञान, खगोल शास्त्र, इत्यादि के पठन पाठन पर भी जोर दिया। वे चतुर्मुखी विद्या के समर्थक थे। उन्होंने स्नातक के विद्याभ्यास में आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व वेद और अर्थवेद की शिक्षा पर भी यथोचित जोर डाला। आयुर्वेद आयु और स्वास्थ्य का विज्ञान है। धनुर्वेद अस्त्र शस्त्र विद्या का शास्त्र है। गन्धर्व वेद स्वर, राग रागणी इत्यादि से सम्बन्ध रखता है। और अर्थवेद शिल्प शास्त्र, विमान, तार, भूगर्भ आदि विद्याओं से सम्बन्धित है।

स्वामी जी ने लिखा है कि इस प्रकार की १४ विद्याओं को पढ़ने से स्नातक महाविद्वान होकर अपने और सब जगत के कल्याण और उन्नति करने में सदा प्रयत्नशील रहता है। इन्हीं आदर्शों को लेकर स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०२ में हरिद्वार के समीप गंगा के पूर्वी तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। इस प्रकार अनेक विद्याओं का अभ्यास कराना तो उनका लक्ष्य था ही साथ में वे विद्यार्थियों को ऐसे वातावरण में रखना चाहते थे कि जहां उन पर महा नगरों के व्यापारी और संघर्ष मय जीवन की छाया न पड़े और वे सदाचारी, ईश्वर धर्मपरायण, कर्तव्यनिष्ठ, गुरुजन के समीप रहकर उनसे न केवल विद्याग्रहण करें अपितु उनकी दिनचर्या से प्रभावित होकर अपना आचरण भी तदनुसार निर्मित करें। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के अनुसार आचार्य ब्रह्मचारी को प्रतिज्ञा पूर्वक समीप रखकर सन्ध्या उपासना आदि सत्पुरुषों के आचार की शिक्षा देकर उनकी आत्मा के भीतर गर्भ रूप विद्या स्थापना करने के लिये उसको धारण कर, उसको पूर्ण विद्वान कर देता है और जब वह ब्रह्मचर्य एवं विद्या को प्राप्त करके घर को आता है तब उसको देखने के लिये सब विद्वान लोग उसके सम्मुख जाकर उसका सम्मान करते हैं।

---- २

[illegible] सा

किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान में [illegible] भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर ~~दिया~~ दिया जाता था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बडी आयु में किया ~~जाय~~ जाये।

आओ

देवियो औ

मनुष्य एक सा
बढ़कर औ
समाज के अन्य लं
कताओं को जुटा
विचार पूर्वक देख
को दो चीजों के
फिरता है । इसमें
सफलता मिलती
सभी असफल औ
जानना जरूरी है
एक वस्तु
वस्तु के नाम में
मैं ही बताये देता
दो वस्तुएं प्राणी
मन बड़ा
ठीक इसी प्रकार
पर विवश हो ना
विवश करता है
हैं, जहाँ से निकल
लेते हैं । मेरा एक
जब शत्रु के किस
किसी ट्रक के पी
था । वह लाचार
और कभी इधर
देता था । यह म
कर देता है । ऋ

—अर्था
जानता कि वास
सदियों से मन के
शान्ति से कोसों
मन की
में आया है—

—अर्थ
इन्द्रिय मन के स
है तो इसके पतन
उसका चिन्तन
होता है तो मान
आदमी को शैतान [illegible] देवता बनाता है । [illegible]
जैसे वेदों के [illegible] महान् पण्डित रसातल को पहुंच गये और इसी मन को वश में
कर स[illegible] दादू, नानक आदि साधारण पुरुष भी उस जगत् नियन्ता जगत् पिता
का [illegible]प्त करने में समर्थ हुए । इसी भाव को अथर्ववेद १६।६।४ में इस प्रकार

> इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम् ।
> येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥

—अर्थात् हे स्त्री पुरुषो ! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मंजा मन कल्याणकारी होता है और यही ब्रह्मज्ञान से पवित्र न होने के कारण घोर उत्पात भी करता है ।

जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है । यदि हममें मनन करने, सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

> यत्र क्व च [illegible] दधस उत्तरम ।
> तत्रा सदः कृणवसे [illegible]

मन जहाँ जाता है, भाग-दौड़कर अपना ठिकाना बना लेता है । ऋषियों [illegible]
यह भी कहना है कि यह मन सान्त पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है और [illegible]
से इसलिए शीघ्र भाग भी जाता है । अतः अनन्त अपार कर्त्तार में इसे लगाओ, [illegible]
न पाने से वहीं लगा रहेगा । परिणामतः जीव भी अपना ठिकाना वहीं बना लेगा
स्मृतिकारों ने भी कहा है : यह मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण है
शास्त्रकारों का कहना है कि 'विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः' । मन की वृत्तियाँ [illegible]
अद्भुत होती हैं । इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के मनुष्य मन की कुटिलता के का[illegible]

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ब्रह्मचारी वेद आरम्भ के समय तीन समिधा अग्नि होम करता है। ब्रह्मचर्य का नियमपूर्वक सेवन करके विद्या पूर्ण करने के लिये दृढ़ उत्साही होता है। इस प्रकार पृथ्वी सूर्य और अन्तरिक्ष के सदृश्य सबका पालन करता है। ये समिधा दान में मेखलादि चिन्हों का धारण और परिश्रम से विद्यापूर्ण करके ब्रह्मचर्य अनुष्ठान रूप से लोगों को सद्गुण और आनन्द से तृप्त करता है।

भारत अमीर देश है, परन्तु यहाँ के निवासी गरीब हैं। यदि इस समस्या का समाधान ढूंढना है तो उसका उत्तर भारत के निवासियों के गुण, कर्म और स्वभाव में निहित है। गैलब्रेथ इत्यादि प्रेक्षकों ने भारत को कोमल राष्ट्र की संज्ञा दी है। भारतवासी कोमल हैं। दृढ़ नहीं हैं। इसलिये वे प्रकृतिदत्त असंख्य और असीम भंडार का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। प्रकृति भरपूर भंडार का लाभ उठाने के लिये दृढ़ संकल्प और घोर तपस्या की आवश्यकता है। जिन राष्ट्रों के निवासी संकल्प मय होकर घोर तपस्या करते हैं वही राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं। १९४७ में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो भारत, चीन, जापान और जर्मनी की आर्थिक स्थिति बड़ी हीन थी। इन तीस वर्षों में जापान और जर्मनी कहाँ जा पंहुचे हैं, चीन ने भी बहुत उन्नति की है। भारत ने भी उन्नति तो की है परन्तु इस दौड़ में कौन आगे है कौन पीछे है। सबको विदित ही है। क्यों ? इसका उत्तर केवल इस देश के निवासियों के तुलनात्मक पुरुषार्थ में निहित है।

गुरुकुल की शिक्षा पद्धति का लक्ष्य एक ही था - नव मानव का निर्माण। गुरुकुल का ध्येय था यहाँ के ब्रह्मचारियों को कठिन तपस्या की अग्नि में तपा कर कुन्दन बनाना है। सर्व विदित है कि आज से १०० वर्ष पहिले बाल विवाह का बहुत प्रचलन था स्वामी दयानन्द ने वेदों की शिक्षा के आधार पर शिक्षा दी कि २५ वर्ष से पहिले युवक का और १६ वर्ष से पहिले किसी कन्या का विवाह न हो। वे स्वयं अखण्ड ब्रह्मचारी थे और जानते थे कि जो व्यक्ति प्रथम आयु में ब्रह्मचर्य का पालन करता है वह ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या को प्राप्त होकर निश्चित रोग रहित होता है। और जो ४४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य करता है वह ब्रह्मचारी रुद्ररूप प्राणों को प्राप्त होता है उसके आगे किसी दुष्ट की दुष्टता नहीं चलती। वह दुष्ट कर्म करने वाले को रुलाने की क्षमता रखता है और जो ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य धारण करता है वह पूर्ण विद्या, पूर्ण बल, पूर्ण शुभ गुण कर्म स्वभाव युक्त सूर्य वत प्रकाशमान होकर सब विद्याओं को धारण करता है।

------ ३

... पड जाये तो उसके कान में ... सा
किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान में ... दिया जाता
भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर दिया जाता
था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बड़ी
आयु में किया जाये।

आओ र

देवियो औ

मनुष्य एक सा
बढ़कर औ
समाज के अन्य ल
कताओं को जुटा
विचार पूर्वक देख
को दो चीजों के
फिरता है । इसमें
सफलता मिलती
सभी असफल औ
जानना जरूरी है
एक वस्तु
वस्तु के नाम में
मैं ही बताये देता
दो वस्तुएं प्राणी
मन बड़ा
ठीक इसी प्रकार
पर विवश हो ना
विवश करता है
हैं, जहाँ से निकल
लेते हैं । मेरा एक
जब शत्रु के किस
किसी ट्रक के पी
था । वह लाचार
और कभी इधर
देता था । यह म
कर देता है । ऋ

—अर्था
जानता कि वास
सदियों से मन के
शान्ति से कोसों
मन की
में आया है—

—अर्थ
इन्द्रिय मन के स
है तो इसके पतन
उसका चिन्तन
होता है तो मान
आदमी को शैत
जैसे वेदों ... न् महान् पण्डित रसातल को पहुंच गये और इसी मन को वश में कर ..., दादू, नानक आदि साधारण पुरुष भी उस जगत् नियन्ता जगत् पिता ... प्राप्त करने में समर्थ हुए । इसी भाव को अथर्ववेद १९।९।४ में इस प्रकार

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम् ।
येनैव संसृजे धोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥

—अर्थात् हे स्त्री पुरुषो ! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मंजा मन कल्याणकारी होता है और यही ब्रह्मज्ञान से पवित्र न होने के कारण घोर उत्पात भी करता है ।

जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है । यदि हममें मनन करने, सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

यत्र क्व च ... द्रक्ष दधस उत्तरम ।
तत्रा सदः कृणवसे ...

मन जहाँ जाता है, भाग-दौड़कर अपना ठिकाना बना लेता है । ऋषियों ... यह भी कहना है कि यह मन सान्त पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है और ... से इसलिए शीघ्र भाग भी जाता है । अतः अनन्त अपार कर्त्तार में इसे लगाओ, ... न पाने से वहीं लगा रहेगा । परिणामतः जीव भी अपना ठिकाना वहीं बना लेगा ... स्मृतिकारों ने भी कहा है : यह मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण है ... शास्त्रकारों का कहना है कि 'विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः' । मन की वृत्तियाँ ... अद्भुत होती हैं । इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के मनुष्य मन की कुटिलता के का...

(शेष पृष्ठ ५ पर)

कान, त्वचा, नेत्र, जीभ, नासिका, गुदा, उपस्थ, हाथ, पग, वाणी ये १० शरीर की इन्द्रियाँ है। इनमें ५ कान आदि ज्ञानेन्द्रियाँ है और ५ गुदा आदि कर्मेन्द्रियाँ हैं। ११ वीं इन्द्री मन है। वह अपने स्मृति गुण से ही अन्य इन्द्रियों से सम्बन्ध रखता है जिस जिस मन के जीतने से ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां दोनोंही जीत लिये जाते हैं। जैसे सारथी घोड़े को कुपथ में नहीं जाने देता वैसे विद्वान ब्रह्मचारी आकर्षण करने वाले विषयों की ओर जाती हुई ~~पंचअपनी~~ इन्द्रियों को रोकने का सदा प्रयत्न करते हैं।

ब्रह्मचारी इन्द्रियों के साथ मन लगाने में ~~xxxxx~~ निसन्देह दोषी हो जाता है और उन पूर्वोक्त १० इन्द्रियों को वश में करके वह सिद्धि को प्राप्त होता है। ऐसा मनुस्मृति कथन है। ब्रह्मचारी को चाहिये कि वह इन्द्रियों को वश में करके और आत्मा के साथ मन का सन्तुलन करके योगाभ्यास करे। यम नियम का सेवन करे। इससे वह अपने सब प्रयोजनों की सिद्ध ~~xxxxx~~ करेगा। ऐसा स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी का मत था। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब भावनायें आदेश मात्र होकर रह गई हैं। ऐसी संस्थायें गिनी चुनी होंगी जहां ब्रह्मचर्य का पालन करते हुयेउत्तम एवं सर्वांगिण विद्या पढ़े, उत्तम धर्म सीखे और ब्रह्मचर्य के अनन्तर परिवार, देश और संसार की सेवा के लिये तैयार होकर निकले।

जब ब्रह्मचारी शिक्षा समाप्त करके गुरुकुल से लौटता था तो गुरु उसे आशीर्वाद देता था कि हे शिष्य, जो पापरहित, अर्थात अन्याय, अधर्म आचरण रहित न्याय, धर्माचरण सहित कर्म है उन्हीं का तू सेवन किया करना। इनके विरुद्ध अधर्माचरण कभी न किया करना। हे शिष्य, जो तेरे माता, पिता, आचार्य आदि हम लोगों के जो धर्मयुक्त कर्म है उन्हीं का तू आचरण कर और जो हमारे दुष्ट कर्म है उनका आचरण कभी न करना। हे ब्रह्मचारी जो हमारे मध्य में धर्मात्मा, श्रेष्ठ, ब्रह्मवित् विद्वान है उन्हीं के समीप बैठना और संग करना और उन्हीं का विश्वास किया करना। हे शिष्य, तू यथार्थ का ग्रहण करना, सत्य मानना, सत्य बोलना। और वेदादि शास्त्रों को सुनना। अपने मन को अधर्माचरण में न जाने देना। श्रोत आदि इन्द्रियों को दुष्टाचार से रोक शिष्टाचार में लगाना तथा क्रोध आदि से शान्त रहना। विद्या आदि शुभ गुणों का दान करना। जितने भूमि, अन्तरिक्ष और सूर्यादि लोक के पदार्थ है उनका यथाशक्ति ज्ञान प्राप्त करना और योगाभ्यास प्राणायाम कर एक ब्रह्म परमात्मा की उपासना करना।

---- ४

...सा

किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान में ...

दिया जाता ~~कन्या~~

भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर

था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बड़ी

आयु में किया ~~ओर~~ जाये।

आओ स

देवियो औ

मनुष्य एक सा
बढ़कर औ
समाज के अन्य लं
कताओं को जुटा
विचार पूर्वक देख
को दो चीजों के
फिरता है। इसमें
सफलता मिलती
सभी असफल औ
जानना जरूरी है
एक वस्तु
वस्तु के नाम में
मैं ही बताये देता
दो वस्तुएं प्राणी
मन वड़ा
ठीक इसी प्रकार
पर विवश हो ना
विवश करता है
हैं, जहाँ से निकल
लेते हैं। मेरा एक
जब शत्रु के किस
किसी ट्रक के पी
था। वह लाचार
और कभी इधर
देता था। यह म
कर देता है। ऋ

—अर्था
जानता कि वास
सदियों से मन के
शान्ति से कोसों
मन की
में आया है—

—अर्थ
इन्द्रिय मन के स
है तो इसके पतन
उसका चिन्तन
होता है तो मान
आदमी को शैतान
जैसे वेदों के ... महान् पण्डित रसातल को पहुंच गये और इसी मन को वश में कर स... दादू, नानक आदि साधारण पुरुष भी उस जगत् नियन्ता जगत् पिता का ...प्त करने में समर्थ हुए। इसी भाव को अथर्ववेद १६।६।४ में इस प्रकार

> इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम्।
> येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥

—अर्थात् हे स्त्री पुरुषो ! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मंजा मन कल्याणकारी होता है और यही ब्रह्मज्ञान से पवित्र न होने के कारण घोर उत्पात भी करता है।

जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है। यदि हममें मनन करने, सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

> यत्र क्व च ... दधस उत्तरम।
> तत्रा सदः कृणवसे ...

मन जहाँ जाता है, भाग-दौड़कर अपना ठिकाना बना लेता है। ऋषियों ... यह भी कहना है कि यह मन सान्त पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है और ... से इसलिए शीघ्र भाग भी जाता है। अतः अनन्त अपार कर्त्तार में इसे लगाओ, ... न पाने से वहीं लगा रहेगा। परिणामतः जीव भी अपना ठिकाना वहीं बना लेगा। स्मृतिकारों ने भी कहा है : यह मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण है। शास्त्रकारों का कहना है कि 'विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः'। मन की वृत्तियाँ ... अद्भुत होती हैं। इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के मनुष्य मन की कुटिलता के का...

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ऐसी सांगोपांग विद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ विज्ञान को पूर्ण रूप रीति से प्राप्त करके जो स्नातक संसार क्षेत्र में उतरेगा उसके जीवन में असफलता, निराशा, कुण्ठा, अकर्मण्यता, प्रमाद की छाया पड ही नहीं सकती।

ऐसा महातपस्वी ब्रह्मचारी समुद्र के समान गम्भीर रूप से उत्तम व्रत में निवास करता हुआ वेद पठन दीर्घ निगृह आचार्य ब्रह्मचरण आदि कर्मों को पूरा करने के पश्चात पूर्ण विद्याओं को धारण कर सुन्दर वर्ण युक्त होकर पृथ्वी में अनेक शुभ गुण कर्मों से प्रकाशमान होता है वही धन्यवाद के योग्य है।

यही गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का सार है।

किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान में [illegible] सा
भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर ~~कर्का~~ दिया जाता
था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बडी
आयु में किया ~~जा~~ जाये।

आओ स

देवियो और

मनुष्य एक साम
बढ़कर और
समाज के अन्य लो
कताओं को जुटाने
विचार पूर्वक देखा
को दो चीजों के व
फिरता है। इसमें
सफलता मिलती है,
सभी असफल और
जानना जरूरी है कि

एक वस्तु के
वस्तु के नाम में तव
मैं ही बताये देता हूं
दो वस्तुएं प्राणी मा

मन बड़ा श
ठीक इसी प्रकार यह
पर विवश हो नाचत
विवश करता है औ
हैं, जहाँ से निकलना
लेते हैं। मेरा एक
जब शत्रु के किसी
किसी ट्रक के पीछे
था। वह लाचार व
और कभी इधर औ
देता था। यह मन
कर देता है। ऋग्वे

—अर्थात्
जानता कि वास्तव
सदियों से मन के च
शान्ति से कोसों दूर

मन की श
में आया है—

—अर्थात्
इन्द्रिय मन के सहयं
है तो इसके पतन व
उसका चिन्तन मात्र
होता है तो मानव
आदमी को शैतान
जैसे वेदों के विद्वान् महान्
कर सन्त कबीर, दादू, नानक ... उस जगत् नियन्ता जगत् पिता
का सामीप्य प्राप्त करने में समर्थ हुए। इसी भाव को अथर्ववेद १६।६।४ में इस प्रकार कहा है—

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वा ब्रह्मसंशितम्।
येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः॥

—अर्थात् हे स्त्री पुरुषो! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मंजा मन कल्याणकारी होता है और यही ब्रह्मज्ञान से पवित्र न होने के कारण घोर उत्पात भी करता है।

जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है। यदि हममें मनन करने, सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

तथा सदः कृणवस।

मन जहाँ जाता है, भाग-दौड़कर अपना ठिकाना बना लेता है। ऋषियों
यह भी कहना है कि यह मन सान्त पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है और
से इसलिए शीघ्र भाग भी जाता है। अतः अनन्त अपार कर्त्तार में इसे लगाओ,
न पाने से वहीं लगा रहेगा। परिणामतः जीव भी अपना ठिकाना वहीं बना लेगा
स्मृतिकारों ने भी कहा है: यह मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण है
शास्त्रकारों का कहना है कि 'विचित्र रूपाः खलु चित्तवृत्तयः'। मन की वृत्तियाँ
अद्भुत होती हैं। इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के मनुष्य मन की कुटिलता के

(शेष पृष्ठ ५ पर)

नवभारत के निर्माण में आर्य समाज का योगदान

लेखः- श्री बलभद्रकुमार जी हूजा, कुलपति

नवभारत के स्वप्नदृष्टा के रूप में ऋषि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतांत्रिक होने के साथ साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से रहित था। उन्होंने युग की धारा को बदलने का प्रयत्न किया ।

जातिगत व्यवस्था पर प्रहारः- सड़ी गली सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ ऐसे समय में आवाज उठाई जबकि उस समय का वैदिक समुदाय भी विकृत मान्यताओं का समर्थन करता करता था। जातिगत वर्णव्यवस्था ने भारत वंशीयों में ऐसी फूट का बीजारोपण किया जिससे प्रत्येक भारत वासी एक दूसरे को हिकारत एवं विद्वेष की दृष्टि से देखते थे। मानव मूल्यों की कसौटी जन्मगत जाति व्यवस्था की सरहद से हटकर विशुध्द मानवीय स्तर पर ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से उभरकर सामने आई।

अछूतोध्दारः- हिन्दु समाज में अछूतो के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार से त्रस्त होकर अछूत और शूद्र मुसलमान और ईसाई होने लगे । यह वह समय था जब धर्म के मामले में कोई बुध्दिजीवी भी तर्क एवं औचित्य से अलग हटकर आचरण करता था। सामाजिक व्यवस्था के इस संकीर्ण दायरे से क्षुब्ध होकर ऋषि दयानन्द ने मर्मान्तिक होकर एक स्थल पर कहा'' यह वर्ण व्यवस्था तो आर्यों के लिये मरण व्यवस्था बन गई है देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है'' जाति पाति के इस व्याघात को हटाने हेतु अर्न्तजातीय विवाह का चौंका देने वाला आदर्श ऋषि दयानन्द ने पराधीन भारत में रूढिगत भारतीय समाज के सामने झकझोरने वाले सत्य के रूप में उजागर किया। आर्य समाज ने इस ओर क्रियात्मक कदम उठाया लेकिन अभी अपेक्षाकृत परिणाम के लिये और अधिक कर्मठता से कार्य करने की आवश्यकता है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अब अपने विविध क्रिया कलापों के अन्तर्गत अर्न्तजातीय विवाह का पृथक विभाग खोलकर जाति के जन्म भेद को हटाने में जनमत जाग्रत करने में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

शुध्दि आन्दोलनः- ऋषि दयानन्द के पश्चात अछूतों की समस्या को स्वामी श्रध्दानन्द ने पूरे जोर रूप से उठाया । स्वामी श्रध्दानन्द के शुध्दि आन्दोलन ने हताश भारतीयों में एक नवीन प्रेरणा का संचार किया। यह ऋषि दयानन्द की विचार धारा का जादु था जो बाद में अछूतोद्धार के आंदोलन को भारत के विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों ने भी अपनाया।

स्त्री शिक्षाः- स्त्री और शूद्रों को सर्व प्रथम शिक्षित किये जाने का अभियान ऋषि दयानन्द ने चलाया। आर्य समाज ने कन्याओं को शिक्षा देने में स्वर्णिम भूमिका का निर्वाह किया। आर्य समाज के कन्याओं को शिक्षित करने के जन आन्दोलन से पूर्व शंकराचार्य ने कन्याओं को पाठशाला में भेजने का तीव्र विरोध किया वहां इस व्यवस्था का पृष्ठ पोषण भी किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान मे पिघला हुआ सीसा भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर दिया जाता था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बड़ी आयु में किया जाये।

आओ स

देवियो और

मनुष्य एक सा
बढ़कर और
समाज के अन्य लो
कताओं को जुटाने
विचार पूर्वक देख
को दो चीजों के
फिरता है । इसमें
सफलता मिलती
सभी असफल और
जानना जरूरी है

एक वस्तु
वस्तु के नाम में
मैं ही बताये देता
दो वस्तुएं प्राणी

मन बड़ा
ठीक इसी प्रकार
पर विवश हो ना
विवश करता है
हैं, जहाँ से निक
लेते हैं । मेरा ए
जब शत्रु के कि
किसी ट्रक के पी
था । वह लाचा
और कभी इधर
देता था । यह
कर देता है । त्र

—अ
जानता कि वा
सदियों से मन
शान्ति से कोसं

मन व
में आया है—

—अ
इन्द्रिय मन के
है तो इसके प
उसका चिन्तन
होता है तो म
आदमी को शं
जैसे वेदों के
कर सन्त कबी
का सामीप्य
कहा है—

—अ
होता है और
जीवन मे मन का स्थान बहुत
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बहुत्व में एकत्वः- आर्य समाज ने विभिन्नताओं से पूर्ण इस देश में एक राष्ट्र, एक समाज एक भाषा, एक धर्म तथा एक ईश्वर का ऐसा बिगुल बजाया जिससे हिन्दु समाज में एकत्व एवं स्वाभिमान का नव संचार हो उठा। एक अल्लाह और एक ईश्वर को मानने वाली 'ईसाईयत' के सामने आर्य समाज की इस एकत्व सार्वभौमिक विचारधारा ने हिन्दु समाज को ऐसी चुनौती प्रदान की जिससे लडखडाते अंध विश्वासों के टीले धराशाई होने लगे। आर्य समाज मंदिर के द्वार बिना जातिगत भेदभाव के मानव मात्र के लिये खुले है। आर्य समाज के द्वारा संस्थापित हजारों शिक्षाणालय बिना भेद भाव के सभी के लिये खुले है। आर्य समाज का एक ऐसा संगठन है जिसने सर्व प्रथम रचनात्मक रुप से शूद्र कहे जाने वाले बढई, नाई, लुहार चमार आदि जाति के लोगों को भी शिक्षित करके विद्वान पुरोहित के ~~रुम~~ रुप में नियुक्त किये। यज्ञ की वेदी पर ब्रह्मा बने इन विद्वानों का वर्ण जातिगत न हो कर कर्मगत ~~[illegible]~~ बना।

जवाहरलाल नेहरु का यह कथन अत्यधिक समचीन है '' आर्य समाज ने लडकों और लडकियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊँचा उठाने की दिशा में बडा अच्छा कार्य किया। '' (डिक्शनरी आफ इन्डिया)

जीवन के आध्यात्मिक सत्य का शाश्वत बोध कराने वाले ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वारा सही रूप में जीवन के प्रति जिस दृष्टिकोण का विमोचन किया वह समग्र जीवन क्रांति से संबंधित था। आर्य समाज के कार्य की ~~[illegible]~~ प्रशंसा करते हुए सर हर्बर रिजले महोदय ने कहा था'' आर्य समाज शिक्षित हिन्दुओं के सामने सुनिश्चित सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जिसका मूल स्रोत वेद और आर्य परम्परायें है। आर्य समाज सामाजिक और शैक्षणिक उन्नति की ऐसी योजनायें प्रस्तुत करता है जिसके बिना वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है। ''

~~नवभारत बनाम ऋषि दयानन्दः- नये भारत का निर्माण आर्य समाज की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है।~~ ऋषि दयानन्द की व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के संबंध में क्रांतिकारी मान्यताओं ने नवीन भारत के निर्माण का बीजांकुर किया। ऋषि दयानन्द ने ~~सर्वप्रथम~~ सर्वप्रथम आर्य समाज की रचना एवं उसके संविधान के आधार पर जनमानस के सामने लोकतांत्रिक व्यवस्था का उद्घाटन किया।

ऋषि दयानंद ने ही ~~सर्व~~प्रथम गुलाम भारत में वैदिक लोकतंत्र की उद्घोषणा वेद मंत्रों में उल्लेखित सभा एवं समिति के शब्दों से प्रकाशित की। आधुनिक भारत के स्वप्न दृष्टा ऋषि दयानन्द ने राष्ट्र की धारा का कोई ऐसा प्रसंग अछूता नहीं रखा जिस पर उन्होंने अपने स्पष्ट विचारों को अंकित न किए हो। वेद की महत्ता को पुर्नस्थापित कर जन मन में वेद के आलोक को विकीर्ण करने के महान कार्य का शुभारम्भ उन्होंने अपने समय में किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे विश्वविद्यालयों में दयानंद पीठों की स्थापना हो जहाँ ज्ञान विज्ञान के नूतन क्षेत्रों में वेदों को साथ लेकर गवेषणा का कार्य हो।

वेदों में अनुसंधान का कार्य विपुल रूप से भारतीय विश्वविद्यालयों में होना चाहिये। यही ~~[illegible]~~ हमारी धरोहर है।

आर्य जगत्

आओ

देवियो

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अन्य
कताओं को जु
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है। इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्रव
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से f
लेते हैं। मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक के
था। वह ल
और कभी इ
देता था। य
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से ब
मन
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चिन
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी ... नहीं है

(शेष पृष्ठ ५ पर)

~~ऋषि दयानंद ने ही सर्व प्रथम कुमार भारत में वैदिक योजना की उद्घोषणा~~

आर्य समाज और शिक्षाः-

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की भूमिका प्रान्तीय सरकारों से भी अधिक रही है। ऋषि दयानन्द ने जो शिक्षा विषयक चिंतन प्रस्तुत किया वह नव भारत की शिक्षा नीति का मुलाधार बन सकता है।

डी० ए० वी० कालेज आंदोलन तथा गुरुकुल आंदोलन इन दोनों आन्दोलनों ने शिक्षा विषयक पूर्व और पाश्चात्य, शास्त्रीय और वैज्ञानिक दोनों परिवेश का समन्वय का प्रयास किया है। आर्य समाज का करोड़ों रुपया इन स्व संचालित शिक्षा संस्थानों पर व्यय होता है। उसकी विपुल शक्ति एवं श्रम गुरुकुलों एवं कालेजों के संचालन में लगता है। समय की यह मांग है प्राचीन आचार्य शिष्य परम्परा के अनुरूप जहां छात्रों का सर्वांगीण विकास ~~अभिष्ट~~ अभीष्ट हो वहां नवीन ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षण के महत्व को भी स्वीकार किया जाना चाहिये। वैदिक ~~समन्वय~~ वाङ्मय में विज्ञान की शाखाओं की खोज की जानी चाहिये।

कुमार हुआ, कुलपति
क ऐसे भव्य भारत
कुरीतियों से रहित
ार -
जबकि उस समय
व्यवस्था ने भारत
विद्वेष की दृष्टि
मानवीय स्तर
से ताडित होकर
श्रमजीवी भी तक
न दायरे से
ा तो आर्यो
वाला आदर्श
किया। आर्य समाज
धिक कर्मठ तो

यह प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अब अपने विविध क्रिया कलापों के अन्तर्गत अर्न्तजातीय विवाह का पृथक विभाग खोलकर जाति के जन्म भेद को हटाने में जनमत जागृत कर रही है।

शुध्दि आन्दोलनः- ऋषि दयानन्द के पश्चात अछूतों की समस्या को स्वामी श्रध्दानन्द ने पूरे ओर शोर से उठाया। स्वामी श्रध्दानन्द के शुध्दि आन्दोलनने भारतीयों में एक नवीन प्रेरणा का संचार किया। यह ऋषि दयानन्द की विचार धारा का जादू था जो बाद में अछूतोद्धार के आंदोलन को भारत के विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों द्वारा अपनाया गया।

स्त्री शिक्षाः- स्त्री और शूद्रों को सर्व प्रथम शिक्षित किये जाने का अभियान ऋषि दयानन्द ने चलाया। आर्य समाज ने कन्याओं को शिक्षा देने में स्वर्णिम भूमिका का निर्वाह किया। आर्य समाज के कन्याओं को शिक्षित करने के जन आन्दोलन से पूर्व शंकराचार्य ने जहां कन्याओं को पाठशाला में भेजने को तीव्र विरोध किया था वहां इस व्यवस्था का पृष्ठ पोषण भी किया था कि यदि शूद्र के

आर्य जगत्

आश्रो

देवियो

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अन
कताओं को ज
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है । इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्रक
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक बे
था । वह ल
और कभी इ
देता था । य
कर देता है

जानता कि
सदियों से ग
शान्ति से ब
मन
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चिन
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीवन

विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

नवभारत के निमार्ण में आर्य समाज का योगदान

लेखः श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति

नवभारत के स्वप्नदृष्टा के रूप में ऋषि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतांत्रिक होने के साथ साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से रहित था। उन्होंने युग की धारा को बदलने का प्रयत्न किया। जातिगत व्यवस्था पर प्रहार -

उन्होंने सड़ी गली सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ ऐसे समय में आवाज उठाई जबकि उस समय असम का विद्वत् समुदाय भी विकृत मान्यताओं का समर्थन करता था जातिगत वर्ण व्यवस्था ने भारत में ऐसी फूट का बीजारोपण किया जिससे भारत वासी एक दूसरे को हिकारत एवं विद्वेष की दृष्टि से देखते थे। मानव मूल्यों की कसौटी जन्मगत जाति व्यवस्था की सरहद से हटकर शुध्द मानवीय स्तर पर ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से उभरकर सामने आई।

अछूतोध्दारः- भारतीय समाज में अछूतों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार से ताडित होकर अछूत और शूद्र धर्मच्युत होने लगे थे। यह वह समय था जब धर्म के मामले में बौध्दिजीवी भी तर्क एवं औचित्य से अलग हटकर आचरण करते थे। सामाजिक व्यवस्था के इस संकीर्ण दायरे से क्षुब्ध होकर ऋषि दयानन्द ने मर्मान्तिक होकर एक स्थल पर कहा'' यह वर्ण व्यवस्था तो आर्यो के लिये मरण व्यवस्था बन गई है देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है''

जाति पाँति के इस व्याघात को हटाने हेतु अन्तर्जातीय विवाह का चौका देने वाला आदर्श ऋषि दयानन्द ने पराधीन भारत में रुढिगत भारतीय समाज के सामने उपस्थित किया। आर्य समाज ने इस ओर क्रियात्मक कदम उठाया लेकिन अभी अपेक्षाकृत परिणाम के लिये और अधिक कर्मठता से कार्य करने की आवश्यकता है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अब अपने विविध क्रिया कलापों के अन्तर्गत अन्तर्जातीय विवाह का पृथक विभाग खोलकर जाति के जन्म भेद को हटाने में जनमत जाग्रत कर रही है।

शुध्दि आन्दोलनः- ऋषि दयानन्द के पश्चात अछूतों की समस्या को स्वामी श्रध्दानन्द ने पूरे ज़ोर शेर से उठाया। स्वामी श्रध्दानन्द के शुध्दि आन्दोलनने भारतीयों में एक नवीन प्रेरणा का संचार किया। यह ऋषि दयानन्द की विचार धारा का जादू था जो बाद में अछूतोद्धार के आंदोलन को भारत के विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों द्वारा अपनाया गया।

स्त्री शिक्षाः- स्त्री और शूद्रों को सर्व प्रथम शिक्षित किये जाने का अभियान ऋषि दयानन्द ने चलाया। आर्य समाज ने कन्याओं को शिक्षा देने में स्वर्णिम भूमिका का निर्वाह किया। आर्य समाज के कन्याओं को शिक्षित करने के जन आन्दोलन से पूर्व शंकराचार्य ने जहां कन्याओं को पाठशाला में भेजने को तीव्र विरोध किया था वहां इस व्यवस्था का पृष्ठ पोषण भी किया था कि यदि शूद्र के

आर्य जगत्

आओ

देवियो

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अन्
कताओं को ज़ु
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है । इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक बे
था । वह ल
और कभी ह
देता था । य
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त
का सामीप्
कहा है —

होता है और
जीवन में मन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ पर)

कान में वेद का मंत्र पड जाये तो उसके कान में पिछला हुआ शीशा भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर दिया जाता था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बडी आयु में किया जाये।

बहुत्व में एकत्व :-

आर्य समाज ने विविधताओं से पूर्ण इस देश में एक राष्ट्र, एक समाज एक भाषा, एक धर्म तथा एक ईश्वर का ऐसा बिगुल बजाया जिससे भारतीय समाज में एकत्व एवं स्वाभिमान का नव संचार हो उठा। एक ईश्वर को मानने वाले आर्य समाज की इस एकत्व सार्वभौमिक विचारधारा ने भारतीय समाज को ऐसी चुनौती प्रदान की जिससे लडखडाते अंध विश्वासों के टीले धराशायी होने लगे। आर्य समाज मंदिर के द्वार बिना जातिगत भेदभाव के मानव मात्र के लिये खुले हैं। आर्य समाज के द्वारा संस्थापित हजारों शिक्षणालय बिना भेद भाव के सभी के लिये खुले हैं। आर्य समाज एक ऐसा संगठन है जिसने सर्व प्रथम रचनात्मक रूप से शूद्र की जाने वाले बढई, नाई, लुहार, चमार और आदि जाति के लोगों को भी शिक्षित करके विद्वान पुरोहित के रूप में नियुक्त किया। यज्ञ की वेदी पर ब्रह्मा बने इन विद्वानों का वर्ण जातिगत न हो कर कर्मगत बना।

जवाहरलाल नेहरु का यह कथन अत्यधिक समचीन है'' आर्य समाज ने लडकों और लडकियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊंचा उठाने की दिशा में बडा अच्छा कार्य किया।''

जीवन के आध्यात्मिक सत्य का शाश्वत बोध कराने वाले ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वारा सही रूप में जीवन के प्रति जिस दृष्टि कोण का विमोचन किया वह समग्र जीवन क्रांति से संबंधित था। आर्य समाज के कार्य की प्रशंसा करते हुए सर हबर रिट्ले महोदय ने कहा था'' आर्य समाज शिक्षित हिन्दुओं के सामने सुनिश्चित सिध्दान्त प्रस्तुत करता है जिसका मूल स्रोत वेद और आर्य परम्परा है। आर्य समाज सामाजिक और शैक्षणिक उन्नति की ऐसी योजनायें प्रस्तुत करता है जिनके बिना वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है।''

नवभारत के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द- नये भारत का निर्माण आर्य समाज की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। ऋषि दयानन्द की व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के संबंध में क्रांतिकारी मान्यताओं ने नवीन भारत के निर्माण का बीजांकुर किया। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम आर्य समाज की रचना एवं उसके लोकतांत्रिक संविधान के आधार पर जनमानस के सामने प्रजातांत्रिक व्यवस्था का उद्घाटन किया।

आर्य जगत्

आश्रो

देवियो

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अन्
कताओं को ज्
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है । इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्रव
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से f
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक वे
था । वह ल
और कभी इ
देता था । य
कर देता है

—
जानता कि
सदियों से
शान्ति से व
मन
में आया है

—
इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त व
का सामीप्य
कहा है—

—
होता है और
जीवन में मन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ...)

==================================

लेखः- श्री बलभद्रकुमार जी हूजा, कुलपति

नवभारत के स्वप्नदृष्टा के रूप में ऋषि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही एक ऐसे भव्य भारत का चित्र उपस्थित किया जो लोकतांत्रिक होने के साथ साथ समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों से रहित था। उन्होंने युग की धारा को बदलने का प्रयत्न किया।

जातिगत व्यवस्था पर प्रहारः- सड़ी गली सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ ऐसे समय में आवाज उठाई जबकि उस समय का वैदिक समुदाय भी विकृत मान्यताओं का समर्थन करता था। जातिगत वर्णव्यवस्था ने भारतवंशियों में ऐसी फूट का बीजारोपण किया जिससे प्रत्येक भारत वासी एक दूसरे को हिकारत एवं विद्वेष की दृष्टि से देखते थे। मानव मूल्यों की कसौटी जन्मगत जाति व्यवस्था की सरहद से हटकर विशुध्द मानवीय स्तर पर ऋषि दयानन्द की वैचारिक क्रांति से उभरकर सामने आई।

अछूतोध्दारः- हिन्दु समाज में अछूतों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार से तंग होकर अछूत और शूद्र मुसलमान और ईसाई होने लगे। यह वह समय था जब धर्म के मामले में कोई बुध्दिजीवी भी तर्क एवं औचित्य से अलग हटकर आचरण करता था। सामाजिक व्यवस्था के इस संकीर्ण दायरे से क्षुब्ध होकर ऋषि दयानन्द ने मर्मान्तिक होकर एक स्थल पर कहा'' यह वर्ण व्यवस्था तो आर्यों के लिये मरण व्यवस्था बन गई है देखें इस डाकिन से इनका पीछा कब छूटता है'' जाति पाँति के इस व्याघात को हटाने हेतु अन्तर्जातीय विवाह का चौंका देने वाला आदर्श ऋषि दयानन्द ने पराधीन भारत में रूढ़िगत भारतीय समाज के सामने झकझोरने वाले सत्यता के रूप में उजागर किया। आर्य समाज ने इस ओर क्रियात्मक कदम उठाया लेकिन अभी अपेक्षाकृत परिणाम के लिये और अधिक कर्मठता से कार्य करने की आवश्यकता है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अब अपने विविध क्रिया कलापों के अन्तर्गत अन्तर्जातीय विवाह का पृथक विभाग खोलकर जाति के जन्म भेद को हटाने में जनमत जाग्रत ~~कर रही है~~। करने में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

शुध्दि आन्दोलनः- ऋषि दयानन्द के पश्चात अछूतों की समस्या को स्वामी श्रध्दानन्द ने पूरे जोर रूप से उठाया। स्वामी श्रध्दानन्द के शुध्दि आन्दोलन ने दलगत भारतीयों में एक नवीन प्रेरणा का संचार किया। यह ऋषि दयानन्द की विचार धारा का जादु था जो बाद में अछूतोद्धार के आंदोलन को भारत के विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों ने भी अपनाया।

स्त्री शिक्षाः- स्त्री और शूद्रों को सर्व प्रथम शिक्षित किये जाने का अभियान ऋषि दयानन्द ने चलाया। आर्य समाज ने कन्याओं को शिक्षा देने में स्वर्णिम भूमिका का निर्वाह किया। आर्य समाज के कन्याओं को शिक्षित करने के जन आन्दोलन से पूर्व शंकराचार्य ने कन्याओं को पाठशाला में भेजने का तीव्र विरोध किया वहाँ इस व्यवस्था का पुष्ठ पोषण भी किया कि यदि शूद्र के कान में वेद का मंत्र पड़ जाये तो उसके कान में पिघला हुआ सीसा भर देना चाहिये। आर्य समाज से पहले कन्याओं का विवाह 12 वर्ष से पूर्व कर दिया ~~[illegible]~~ जाता था लेकिन आर्य समाज के जागरण ने यह जनमत जाग्रत किया कि कन्याओं का विवाह बड़ी आयु में किया जाये।

आर्य जग

आक्रो

दे विये

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है। इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी

एक
वस्तु के नाम
में ही बताये
दो वस्तुएं प्रा

मन
ठीक इसी प्रव
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं। मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक बे
था। वह ल
और कभी द
देता था। य
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से ब

मन
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में ... व्यवहार सम्भव नहीं हो

(शेष पृष्ठ ...)

बहुत्व में एकत्वः- आर्य समाज ने विभिन्नताओं से पूर्ण इस देश में एक राष्ट्र, एक समाज एक भाषा, एक धर्म तथा एक ईश्वर का ऐसा बिगुल बजाया जिससे हिन्दु समाज में एकत्व एवं स्वाभिमान का नव संचार हो उठा। एक अल्लाह और एक ईश्वर को मानने वाली ईसाईयता के सामने आर्य समाज की इस एकत्व सार्वभौमिक विचारधारा ने हिन्दु समाज को ऐसी चुनौती प्रदान की जिससे लडखडाते अंध विश्वासों के टीले धराशाई होने लगे। आर्य समाज मंदिर के द्वार बिना जातिगत भेदभाव के मानव मात्र के लिये खुले है। आर्य समाज के द्वारा संस्थापित हजारों शिक्षणालय बिना भेद भाव के सभी के लिये खुले है। आर्य समाज का एक ऐसा संगठन है जिसने सर्व प्रथम रचनात्मक रूप से शूद्र कहे जाने वाले बढई, नाई, लुहार चमार आदि जाति के लोगो को भी शिक्षित करके विद्वान पुरोहित के रूप में नियुक्त किये। यज्ञ की वेदी पर ब्रह्मा बने इन विद्वानों का वर्ण जातिगत न हो कर कर्मगत बना।

जवाहरलाल नेहरु का यह कथन अत्यधिक समचीन है '' आर्य समाज ने लडकों और लडकियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊँचा उठाने की दिशा में बडा अच्छा कार्य किया। ''
(डिक्शनरी आफ इन्डिया)

जीवन के आध्यात्मिक तत्व का शाश्वत बोध कराने वाले ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वारा सही रूप में जीवन के प्रति जिस दृष्टिकोण का विमोचन किया वह समग्र जीवन क्रांति से संबंधित था। आर्य समाज के कार्य की प्रशंसा करते हुए सर हर्बर्ट रिज्ले महोदय ने कहा था'' आर्य समाज शिक्षित हिन्दुओं के सामने सुनिश्चित सिध्दान्त प्रस्तुत करता है जिसका मूल स्रोत वेद और आर्य परम्परायें है। आर्य समाज सामाजिक और शैक्षणिक उन्नति की ऐसी योजनायें प्रस्तुत करता है जिसके बिना वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है। ''

नवभारत बनाम ऋषि दयानन्दः- नये भारत का निमार्ण आर्य समाज की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। ऋषि दयानन्द की व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के संबंध में क्रांतिकारी मान्यताओं ने नवीन भारत के निर्माण का बीजांकुर किया। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम आर्य समाज की रचना एवं उसके संविधान के आधार पर जनमानस के सामने लोकतांत्रिक व्यवस्था का उद्घाटन किया।

ऋषि दयानंद ने ही सर्वप्रथम गुलाम भारत में वैदिक लोकतंत्र की उद्घोषणा वेद मंत्रों में उल्लेखित सभा एवं समिति के शब्दों से प्रकाशित की। आधुनिक भारत के स्वप्न दृष्टा ऋषि दयानन्द ने राष्ट्र की धारा का कोई ऐसा प्रसंग अछूता नहीं रखा जिस पर उन्होंने अपने स्पष्ट विचारों को अंकित न किया हो। वेद की महत्ता को पुनर्स्थापित कर जन जन में वेद के आलोक को विस्तीर्ण करने के महान कार्य का शुभारम्भ उन्होंने अपने समय में किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे विश्वविद्यालयों में दयानंद पीठों की स्थापना हो जहां ज्ञान विज्ञान के नूतन क्षेत्रों में वेदों को साथ लेकर गवेषणा का कार्य हो।

वेदों में अनुसंधान का कार्य विपुल रूप से भारतीय विश्वविद्यालयों में होना चाहिये। यही हमारी धरोहर है।

आर्य जग

आक्रो

दे वियं

मनुष्य एव बढ़कर समाज के अ कताओं को उ विचार पूर्वक को दो चीजों फिरता है। इ सफलता मिल सभी असफल जानना जरूरी

एक वस्तु के नाम मैं ही बताये दो वस्तुएं प्रा

मन ठीक इसी प्रक पर विवश हो विवश करता हैं, जहाँ से f लेते हैं। मेर जब शत्रु के किसी ट्रक बे था। वह ल और कभी इ देता था। य कर देता है

—

जानता कि सदियों से शान्ति से ब

मन में आया है

—

इन्द्रिय मन है तो इसके उसका चिन होता है तो आदमी को जैसे वेदों के कर सन्त ब का सामीप्य कहा है—

—

होता है और जीवन

विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ

~~ऋषि दयानन्द ने ही सर्व प्रथम गुलाम भारत में वैदिक [illegible] की [illegible]।~~

आर्य समाज और शिक्षाः -

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की भूमिका ~~प्रति~~ प्रांतीय सरकारों से भी अधिक रही है। ऋषि दयानन्द ने जो शिक्षा विषयक चिंतन प्रस्तुत किया वह नव भारत की शिक्षा नीति का मूलाधार बन सकता है।

डा० ए० वी० कालेज आंदोलन तथा गुरुकुल आंदोलन इन दोनों आन्दोलनों ने शिक्षा विषयक पूर्व और पाश्चात्य, शास्त्रीय और वैज्ञानिक दोनों परिवेश का समन्वय का प्रयास किया है। आर्य समाज का करोड़ों रुपया इन एवं संचालित शिक्षा संस्थानों पर व्यय होता है। उसकी विपुल शक्ति एवं श्रम गुरुकुलों एवं कालेजों के संचालन में लगता है। समय की यह मांग है प्राचीन आचार्य शिष्य परम्परा के अनुरूप जहां छात्रों का सर्वांगीण विकास ~~अभिष्ट~~ अभीष्ट हो वहां नवीन ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षण के महत्व को भी स्वीकार किया जाना चाहिये। वैदिक ~~संहिता~~ वाङ्मय में विज्ञान की शाखाओं की खोज की जानी चाहिये।

[illegible] गुरु उसे गर्भस्थ रखता था और उसकी इस तरह पालना करता था जैसे माँ बच्चे की पालना करती है। लेकिन आज ऐसे गुरु कहां है? ऐसे शिक्षक जो विद्यालय में प्रविष्ट बालकों की कठिनाइयों का पितावत् निराकरण करने में तत्पर हों, आज व्यवसायवाद के जमाने में उपलब्ध नहीं है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है 'मातृमान पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेद।' इसका अर्थ है कि जब किसी व्यक्ति को योग्य शिक्षक अर्थात् माता, पिता और आचार्य प्राप्त हों तभी वह विद्वान होता है। वह सन्तान वास्तव में बड़ा भाग्यशाली होता है, जिसके माता पिता धार्मिक हों और आचार्य सदाचारी।

सन्तान की शिक्षा कब से शुरु होती है, इस संबंध में भिन्न-भिन्न विचार सामने आते हैं। शिक्षा शास्त्री; फ्रायड, यूंग, राजज इत्यादि मनोवैज्ञानिक शास्त्रियों से प्रभावित होकर अब यह स्वीकार करते हैं कि सन्तान की शिक्षा शैशव काल से ही आरम्भ हो जाती है।

आकाशवाणी (नजीबाबाद) से दिनांक 17-12-82 को प्रसारित भेंट वार्ता के आधार पर.

आर्य जग

आक्रो

दे विय

मनुष्य ए
बढ़कर
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है । इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
में ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक के
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीव
विचारने की ... हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ...)

आज की शिक्षा पद्धति और भविष्य का तारतम्य

- बलभद्र कुमार हूजा,
कुलपति,
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

कोई ही ऐसा प्रबुद्ध व्यक्ति हो गा जो आज की शिक्षा पद्धति से संतुष्ट हो। मैंने कालेज के एक प्रधानाचार्य को यह कहते सुना है कि हमारी भी अजब किस्मत है। जब हम पढते थे तो उस समय अध्यापक हमें पीटते थे। अब जब हम अध्यापक बन गये हैं तो विद्यार्थी हमें पीटते है। जब एक विद्यार्थी से इस बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि आजकल के अध्यापकों के प्रति श्रध्दा कैसे उत्पन्न हो जब हमें उनसे वह स्नेह ही नहीं मिलता जिसके हम हकदार हैं। आज का अध्यापक तो केवल अपनी रोजी-रोटी के लिये ही काम करता है, उसे हमारे विकास या भविष्य में कोई दिलचस्पी नहीं। सारांश यह कि विद्यार्थियों और शिक्षकों में जो रिश्ता होना चाहिये वह आज विद्यमान नहीं है।

इसी प्रसंग में महात्मा गांधी की एक कहानी याद आती है। एक बुढिया अपने बेटे को उनके पास लाई और महात्मा जी से उसे उपदेश देने को कहा कि वह गुड़ कम खाये। महात्मा जी ने कहा, '' माता, इस बच्चे को 15 दिन बाद पुनः ले आना''। 15 दिन के पश्चात वह माता फिर पहुँची तो महात्मा जी ने बुढिया की इच्छानुसार बच्चे को उपदेश दियाः '' बेटा गुड़ कम खाया कर''बुढिया ने हैरान होकर महात्मा जी से पूछा कि यह बात तो आप 15 दिन पहले भी कह सकते थे। महात्मा जी बोले, ''माता, तब मैं स्वयं ही बहुत गुड़ खा रहा था। मैंने सोचा कि मेरी शिक्षा का इस पर क्या प्रभावपडेगा? इन दिनों में मैंने गुड खाने की मात्रा कम की है और मुझे अब विश्वास है कि मेरी बात का इस पर अवश्य प्रभाव पडेगा।''

वैदिक काल में जब कोई ब्रह्मचारी गुरुकुल में प्रवेश करता था तो गुरू उसे गर्भस्थ रखता था और उसकी इस तरह पालना करता था जैसे मां बच्चे की पालना करती है। लेकिन आज ऐसे गुरू कहां हैं? ऐसे शिक्षक जो विद्यालय में प्रविष्ट बालकों की कठिनाइयों का पितावत् निराकरण करने में तत्पर हों, आज व्यवसायवाद के जमाने में उपलब्ध नहीं है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है'मातृमान पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेद।'इसका अर्थ है कि जब किसी व्यक्ति को योग्य शिक्षक अर्थात् माता, पिता और आचार्य प्राप्त हों तभी वह विद्वान होता है। वह सन्तान वास्तव में बडा भाग्यशाली होता है, जिसके माता पिता धार्मिक हों और आचार्य सदाचारी।

सन्तान की शिक्षा कब से शुरु होती है, इस संबंध में भिन्न-भिन्न विचार सामने आते हैं। शिक्षा शास्त्री, फ्रायड, यूंग, राजज इत्यादि मनोवैज्ञानि शास्त्रियों से प्रभावित होकर अब यह स्वीकार करते हैं कि सन्तान की शिक्षा शैशव काल से ही आरम्भ हो जाती है।

आकाशवाणी (नजीबाबाद) से दिनांक 17- 12- 82 को प्रसारित भेंट वार्ता के आधार पर

आग्रो

दे वियो

मनुष्य एक
बढ़कर
समाज के अन
कताओं को उ
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है । इ
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक व
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन व
ठीक इसी प्रक
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से नि
लेते हैं । मेरा
जब शत्रु के
किसी ट्रक के
था । वह ला
और कभी इ
देता था । य
कर देता है

—
जानता कि
सदियों से म
शान्ति से व
मन
में आया है-

—
इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चिन
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

—
होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्भव नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वच्चे के मानस पटल पर शुरु से जो प्रभाव पडते हैं, उनसे ही उसकी जीवन शैली की आधार शिक्षा स्थापित हो जाती है और उसके अनुसार ही उसके चरित्र और भाग्य का निर्माण होता है।

ऋषि दयानन्द इससे भी एक कदम आगे जाते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य की शिक्षा गर्भाधान सेही प्रारम्भ हो जाती है। इसलिये उन्होंने जात कर्म संस्कार से पहले भावी माता पिता के लिये तीन अन्य संस्कारों का भी विधान रखा अर्थात् गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमन्तोनयन संस्कार ।

अभिमन्यु की कहानी तो सर्वविदित ही है। जब वह मां के गर्भ में था तो एक दिन अर्जुन ने उसकी मां सुभद्रा का दिल बहलाने के लिये उसे चक्रव्यूह की रचना के बारे में बतलाना आरम्भ किया। अभी वह चक्रव्यूह के भेद करने की विधि बता पाये थे कि उनकी पत्नी को निद्रा आ गई। वे उसे चक्रव्यूह से बाहर निकलने की विधि न सुना सके। बाद में जब महाभारत के युध्द में कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना की तो वीर अभिमन्यु का चक्रव्यूह का भेदन करके उसमें घुस तो गया लेकिन उस में से निकल न पाया। इस गाथा से भी स्पष्ट है कि व्यक्ति की शिक्षा गर्भाधान से ही आरम्भ हो जाती है। इसलिये माता और पिता का शिक्षा की ओर समुचित ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। गुरु के पास तो वच्चा 5 वर्ष की अवस्था में पहुँचता है। इसलिये सर्व प्रथम तो मातृ-शिक्षा अर्थात महिला-शिक्षा पर जोर देना होगा। यदि हमें प्रबुध्द और स्वस्थ नागरिक पैदा करने हैं तो महिला-शिक्षा की उपेक्षा हरगिज नहीं की जा सकती । अभी भी राष्ट्र में सैकडों नहीं हजारों बल्कि लाखों ऐसे विशाल अन्धकारमय क्षेत्र हैं जिनमें महिला-शिक्षा की ज्योति नहीं पहुंची। मेरी समझ में राष्ट्र के भविष्य के सन्दर्भ में यह सबसे बडी चुनौती है।

'माता निर्माता भवति,' के अनुसार यदि हम मातृ शिक्षा से विमुख होते हैं तो देश का उध्दार कदापि नहीं हो सकता ।

देश की प्रचलित पाठ्य प्रणाली में जो एक ओर विसंगति उभर कर सामने आती है, वह है पाठ्य विधि और लक्ष्यों की संकीर्णता।

कहां तो प्राचीन गुरुकुलों में ब्रह्मचारी 265 दिन पुत्रवत गुरु के निकटस्थ रहते थे और उनके आचार व्यवहार के उदाहरण से लाभ उठाते थे। कहां आजकल के विद्यालय हैं, जहां केवल कुछ घंटों के लिये विद्यार्थी गुरु का सामीप्य और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। यह स्थिति भीअगर देखें तो केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में ही है। यदि विश्वविद्यालयों की ओर निगाह डालें तो प्रकट होगा कि वे तो साल में 6 महीने भी नहीं खुल पाते।

इसी कारण तो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का प्रस्ताव हैकि विश्वविद्यालय साल में कम से कम 2०0 दिन खुले । इसी निश्चय की पालना में जब एक कुलपति अपने विश्वविद्यालय काअध्ययन अध्यापन का कार्यक्रम बनाने लगा तो पाया कि साल में केवल 165 दिन ही अध्ययन अध्यापन के लिये बचते हैं उसमें भी कभी विद्यार्थी हडताल करते हैं, कभी शिक्षक और कभी कर्मचारी।

आर्य ज

आत्म

दे विच

मनुष्य ए
बढ़का
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्रक
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं। मेरा
जब शत्रु के
किसी ट्रक के
था। वह ल
और कभी
देता था।
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से

में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चिन
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

इसके अतिरिक्त हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि आज कालेज शिक्षा को जरूरत से अधिक महत्व दिया जा रहा है और वह इसलिये कि बहुत सी नौकरियों के लिये डिग्री की शर्त लाजमी है। इसलिये डिग्रियां अर्जित करने की होड और पकड रही है। जहां हमें विद्वानों की, सुयोग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, वहां बेरोजगार और रोजगार के अयोग्य स्नातकों की भरमार हो रही है। यह भी देखा गया है कि जो योग्य स्नातक विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न होते भी हैं उनकी सेवायें जन साधारण को उपलब्ध नहीं होती। डाक्टर और इन्जीनियर या तो शहरों में टिके रहते है या फिर विदेशों में चले जाते हैं। वकील भी पूँजीपतियों की सेवा करते हैं।

गाँवों में अज्ञान, अभाव और अन्याय का कहां तक अन्त हुआ है यह प्रत्यक्ष है। सामाजिक अर्थशास्त्री आज यह प्रश्न पूछ रहे है कि क्या हम उच्च शिक्षा पर इसलिये इतना व्यय करते हैं कि हमारा शिक्षित वर्ग बडे बडे कल कारखानों के मालिकों की सेवा करे अथवा विदेशों में चला जाये। उनका कहना है कि जो संस्थान डाक्टरों और इन्जीनियरों की सेवाओं का उपभोग करते हैं, क्यों न उन्हीं पर उनके निर्माण की जिम्मेवारी डाली जाये। जन साधारण को तो साधारण वैद्यों और हकीमों की सेवाये प्राप्त होती है। इसलिये जन साधारण का धन तो उन्हीं के निर्माण में लगना चाहिये।

इसी तर्क को आगे बढाते हुये उनका कहना है कि 12 श्रेणी तक की शिक्षा को ही ऐसा रूप दे देना चाहिये जिससे कि 12 श्रेणी पास व्यक्ति कोई न कोई अर्थकरी विद्या प्राप्त करे और तत्पश्चात अपने किसी निजी धन्धे में युक्त हो जाय। 12 श्रेणी से उच्चतर शिक्षा केवल उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त हो, जिन्होंने शिक्षा अथवा अनुसंधान के क्षेत्र में प्रवेश करना है। अन्य महकमों में मुलाजमत पाने के लिये 12 श्रेणी पास करने के बाद ही प्रत्याशियों का चयन हो जाय और उनको अपने अपने क्षेत्र में यथेष्ट प्रशिक्षण दिया जाय जैसे कि फौजी मुलाजमत के लिये होता है। अर्थात् पुलिस, सामान्य प्रशासन, बैंक रेलवे, टेलीफोन बिजली इत्यादि के महकमों के लिये 12 श्रेणी पास विद्यार्थी का ही चयन हो जाय और उसकी आगामी शिक्षा दीक्षा प्रत्येक व्यवसाय के विशिष्ट स्थल में ही हो।

इससे एक बडा लाभ यह भी होगा कि विश्वविद्यालयों में शिक्षार्थियों की संख्या कम हो जायेगी और विद्यार्थियों और शिक्षकों का निकट सम्पर्क सम्भव होगा। आज विश्वविद्यालयों में जोअशान्ति होती है उस पर भी यथेष्ट नियन्त्रण होगा।

आज हमारी शिक्षा नीति भटकाव के चौराहे पर खडी है। शिक्षा प्राप्त करना तथा नैतिक स्तर ऊंचा किया जाना, हमारे शैक्षणिक जीवन की दो अलगधारायें बन गई हैं। कहां गई हमारे ऋषि मुनियों की वह आदर्श परम्परायें एवं प्राचीन संस्थायें जहां गुरु और शिष्य दीप से दीप जले की भावना से जगत जीवन में नव जागरण का स्फुट संचार करते थे? कहां विलुप्त हो गई हमारी आध्यात्मिकता जिसका आज की शिक्षा से कोई सरोकार नहीं?

आर्य ज

आत्रे

दे विः

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजों
फिरता है।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हो
विवश करता
हैं, जहाँ से
लेते हैं। मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक के
था। वह ल
और कभी
देता था।
कर देता है

—

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

—

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त क
का सामीप्य
कहा है—

—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

शिक्षा मानव निर्माण का साधन है। शिक्षा मानव को पशु के स्तर से उन्नत कर संस्कारों से उसकी जीवन धारा बदल देती है। परन्तु शिक्षा के समग्र स्वरूप पर आज जन मानस दिग्भ्रान्त हो गया है। आज का प्रबुद्ध नागरिक ज्ञान के विस्फोट से चकाचौंध है। आगामी बीस वर्षों में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्या उपलब्धियां होने वाली हैं, इसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि आज की पीढ़ी की शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे सुसज्जित होकर वे 21 वीं शताब्दी में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से आत्मविश्वास और कुशलता पूर्वक जूझ सकें।

इस परिप्रेक्ष्य में जन साधारण तक सामान्य विज्ञान पहुँचाने का लक्ष्य भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता।

वैदिक शिक्षा-प्रणाली पर हाल ही में एक कार्यशाला गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई, जिसकी प्रमुख संस्तुतियों का उल्लेख करना युक्ति संगत लगता है।

1- प्रत्येक बालक की प्राथमिक निर्माणशाला गृहस्थ है। अतः नारी शिक्षा को यथोचित महत्ता दी जानी चाहिये।

2- शिक्षा का उद्देश्य केवल कोरा ज्ञानार्जन करना नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास है। यह माता पिता एवं आचार्य के सम्मिलित प्रयत्न से और आचार्य शिष्य के आत्मीय संबंध से ही हो सकता है।

3- बच्चों में अनुकरण करने की सहज प्रवृत्ति होती है। माता-पिता और आचार्य को अपने स्वयं के आचार-विचार व व्यवहार पर ध्यान देना आवश्यक है क्योंकि आत्म परीक्षण बिना आत्म विकास असम्भव है।

4- पाठ्यविधियों अर्थकरी एवं लाभकारी शिक्षा का समावेश हमारे देश की सबसे बड़ी मांग है।

5-प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विकास हेतु यह आवश्यक है कि राजा और रंक दोनों वर्गों की शिक्षा दीक्षा एक जैसी हो। उच्च श्रेणी एवं निम्न श्रेणी के स्कूलों का वर्गीकरण समाप्त होना चाहिये। पब्लिक स्कूलों तथा सरकारी और म्युनिसिपल स्कूलों में विषमता नहीं होनी चाहिये।

6- विश्वविद्यालय की शिक्षा केवल विषय में अत्यधिक विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु जिज्ञासु छात्रों के लिये ही उपलब्ध होनी चाहिये।

7- डिग्री के आधार पर नियुक्ति की प्रक्रिया के स्थान पर समानार्थी योग्यता के आधार पर विभिन्न सेवाओं में नियुक्ति की जानी चाहिये ताकि डिग्रियां लेने की लालसा समाप्त हो। इसी से येन केन प्रकारेण डिग्रियां एवं डिवीजन लेने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लग सकेगा।

8- शिक्षकों, छात्रों एवं कर्मचारियों के हड़ताल करने की प्रवृत्ति पर अविलम्ब

आर्य ज

आओ

दे विश

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्व
को दो चीजे
फिरता है ।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूर
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हं
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त
का सामीप्य
कहा है—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

प्रतिबन्ध लगा दिया जाये। इस हेतु शिक्षण अर्थात मानव निर्माण के कार्य को आवश्यक सेवाओं में समाविष्ट किया जाना चाहिये।

9- एक शैक्षिणिक वर्ष में कम से कम 200 दिन अध्ययन अध्यापन होना चाहिये।

10- वर्तमान प्रचलित शिक्षा प्रणाली में अभिभावक की भूमिका को सबसे नगण्य समझा जाता है जब कि वास्तविक रूप में वही शिक्षा का उपभोक्ता है और शिक्षा के सारे व्यय की जिम्मेदारी भी उसी पर अवलम्बित है। छात्रों की अनुशासनहीनता पर नियन्त्रण हेतु माता पिता से सतत सम्पर्क स्थापित रखना चाहिये तथा छात्र के आचार, व्यवहार की सामयिक रिपोर्ट अध्यापक द्वारा उसके पिता को भेजी जानी चाहिये जिससे वे उसकी प्रगति से अवगत रहें। बहुधा यह देखा गया है कि उद्दण्ड शरारती छात्र भी माता पिता को सूचना दिये जाने पर सुधर जाता है। तीन महीने में न्यूनतम एक बार अभिभावक एवं अध्यापक की बैठक किया जाना समूची शिक्षा व्यवस्था का अनिवार्य अंग माना जाना चाहिये। यही मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद का साकार स्वरूप है।

महात्मा गांधी कहा करते थे कि जब कोई मंत्री, सचिव अथवा प्रशासक इस दुविधा में हो कि वह प्रस्तुत प्रश्न पर क्या निर्णय ले तो उसे ऐसे निर्धन व्यक्ति के चेहरे का स्मरण करना चाहिये जो उसने कभी देखा हो और यह सोच कर निर्णय लेना चाहिये कि उस पर इस निर्णय का क्या प्रभाव पडने वाला है। ऐसी अवस्था में लिया हुआ निर्णय कभी दोष पूर्ण नहीं होगा।

इसी प्रकार की ही कसौटी, यदि शिक्षा जगत के महारथी बुरा न मानें, तो मैं उनके सम्मुख अत्यन्त विनम्रता से प्रस्तुत करना चाहूँगा। जब भी उन्हें कोई निर्णय लेना हो, पाठ्यविधि बनानी हो या कोई कार्यक्रम सुनिश्चित करना हो, हडताल पर जाना हो, प्रदर्शन करना हो तो वे उस समय ऐसे विद्यार्थियों का चिन्तन करें जो ज्ञान की जिज्ञासा और अपने भविष्य पर भी नजर देखने वाला हो। इस कसौटी पर लिया गया उनका निर्णय निश्चय ही सर्वरूपेण श्रेयस्कर होगा। अन्ततोगत्वा शिक्षा जगत का केन्द्र बिन्दु विद्यार्थी ही तो है।

जुयाल/

आर्य ज

आग्रे

दे वि

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्व
को दो चीज
फिरता है ।
सफलता मि
सभी असफल
जानना जरू
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हो
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त
का सामीप्य
कहा है—

होता है औ
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

काल अनन्त है

—— कुमार हिन्दी

काल अनन्त है, अनादि है
अब मेरे पांव थक गये हैं -
फिर भी मैं एड़ियां चटखाती चली जा रही हूं।
जन्म जन्मान्तर से।
यमुना की धारा की तरह,
गंगा की ओर --
कभी कभी आवेग में आकर मैं प्रहार करती हूं,
तीव्र प्रहार, निष्ठुर प्रहार,
नगरों पर नगरवासियों पर
और इस तरह अपनी भूख शान्त कर लेती हूं
मैं हड़प कर लेती हूं कमलों से लदे उद्यान,
कुसुम भरे उपवन,
मवेशियों की छटपटाहट,
जनता का क्रन्दन,
यतीमों का चीत्कार।
मैं लाखों बेर पैदा हुई
लाखों बेर मरी।
जन्म और मृत्यु में अन्तर ही क्या है ?
वही न, जो ~~जागने~~ और सोने में है ? (जागने)
यह सब विचारों का ही खेल है,
आज यहां, कल, वहां -
मैं एड़ियां चटखाती चली जा रही हूं।
गंगा की ओर।
काल अनन्त है, अनादि है।

———

आर्य ज

आग्रे

दे वि

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्व
को दो चीज
फिरता है ।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूर
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश ह
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

—

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

—

इन्द्रिय मन
है तो इसक
उसका चि
होता है त
आदमी को
जैसे वेदों
कर सन्त
का सामीप्
कहा है—

—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मैं भुला चुकी हूं

—कुमार हिन्दी

मत देखो मेरी तरफ -
तुम कहते हो, मैं तुम्हारी मां हूं। हूंगी।
एक सहस्र वर्ष पूर्व तुम्हारे पिता से मेरी मुलाकात हुई थी।
वह शराबी निकला, खुदगर्जी निकला, झगडालू निकला।
उसने मुझे घर से बाहर निकाल दिया।
मुझे आश्रय दिया एक परदेशी ने।
तुम निकम्मे हो, कमीने हो।
अपने पिता की तरह।
अब मेरी मेहनत मुशक्कत की कमाई पर तुम्हारी नजर है।
जावो, तुम कमीने हो।
क्या तुमने कभी भगवान से माफी मांगी है?
जाओ, घुटने टेक कर भगवान से माफी मांगो।
वह हर जगह विद्यमान है।
हां यहीं इसी जगह इस चौराहे पर भी।
भगवान विद्यमान है।
लेकिन माफी मांगो तो सही, दिल से,
दिखलावे के तौर पर नहीं।
निकम्मे कमीने लड़के, तुम माफी नहीं मांगोगे? तो फिर चले जाओ यहां से।
तुम मेरे पुत्र नहीं।
कपूत हो।
मुझे परेशान मत करो।
मैं तुम्हें भुला चुकी हूं।
तुम्हारे कमीने पिता की तरह।

आर्य ज

आग्रे

दे वि

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजे
फिरता है ।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूरी
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश हो
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

—

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

—

इन्द्रिय मन
है तो इसके
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों के
कर सन्त
का सामीप्य
कहा है—

—

होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारी कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

शान्ति दूत

--- कुमार हिन्दी

वह देखो, अजगर निकला, धरती के पेट में से, जैसे सेब में से कीडा ।
उसने धरती को लपेट लिया है ।
अपनी लपेट में वह बढ़ता ही जाता है - बढ़ता ही जाता है ।
सैकड़ों मील के घेरे में उसने लपेट लिया है, धरती को ।
अब हजारों, हजारों वर्ग मील का रकबा उसकी लपेट में आ गया है ।
हजारों हजारों मील तक धरती सूनी हो गई है ।
जगह जगह आग के फव्वारे निकल रहे हैं ।
आग के फव्वारे - लाल, सुर्ख, गरम आग के फव्वारे ।
अब क्या होगा ? क्या होगा ?
उसका विनाश होगा।
भारत के एक कोने में, झोपड़ी में बैठा एक संत जड़ी बूटियों को रगड
रहा है ।
वह जादुई भस्मी तैयार कर रहा है ।
वह ऐसी रेखा खींचेगा, अजगर की राह में कि अजगर उस पर से गुजरते ही
भस्म हो जायेगा.।
भस्म, भस्मीभूत । फिर सब तरफ शान्ति दूत दौड़ेंगे ।
सब तरफ होगी शान्ति ।

आर्य ज

आत्रे

दे विः

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्वक
को दो चीजे
फिरता है।
सफलता मिल
सभी असफल
जानना जरूर
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश ह
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं। मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था। वह ल
और कभी
देता था।
कर देता है

—
जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

—
इन्द्रिय मन
है तो इसवे
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों वे
कर सन्त
का सामीप
कहा है—

—
होता है और
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मैं भुला चुकी हूं

—कुमार हिन्दी

मत देखो मेरी तरफ -
तुम कहते हो, मैं तुम्हारी मां हूं। हूंगी।
एक सहस्र वर्ष पूर्व तुम्हारे पिता से मेरी मुलाकात हुई थी।
वह शराबी निकला, जुवारी निकला, झगड़ालू निकला।
उसने मुझे घर से बाहर निकाल दिया।
मुझे आश्रय दिया एक परदेशी ने।
तुम निकम्मे हो, कमीने हो।
अपने पिता की तरह।
अब मेरी मेहनत मशक्कत की कमाई पर तुम्हारी नज़र है।
जाओ, तुम कमीने हो।
क्या तुमने कभी भगवान से माफी मांगी है?
अजी, घुटने टेक कर भगवान से माफी मांगी।
वह हर जगह विद्यमान है।
हां यहीं इसी जगह इस चौराहे पर भी।
भगवान विद्यमान है।
लेकिन माफी मांगो तो सही, दिल से,
दिखावे के तौर पर नहीं।
निकम्मे कमीने लड़के, तुम माफी नहीं मांगोगे? तो फिर चले
जाओ यहां से।
तुम मेरे पुत्र नहीं।
कपूत हो।
मुझे परेशान मत करो।
मैं तुम्हें भुला चुकी हूं।
तुम्हारे कमीने पिता की तरह।

आर्य ज

आग्रे

दे वि

मनुष्य ए
बढ़क
समाज के अ
कताओं को
विचार पूर्व
को दो चीजे
फिरता है ।
सफलता मि
सभी असफल
जानना जरूर
एक
वस्तु के नाम
मैं ही बताये
दो वस्तुएं प्रा
मन
ठीक इसी प्र
पर विवश ह
विवश करत
हैं, जहाँ से
लेते हैं । मेर
जब शत्रु के
किसी ट्रक
था । वह ल
और कभी
देता था ।
कर देता है

जानता कि
सदियों से
शान्ति से
म
में आया है

इन्द्रिय मन
है तो इसवे
उसका चि
होता है तो
आदमी को
जैसे वेदों वे
कर सन्त
का सामीप्
कहा है—

होता है औ
जीवन
विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

(शेष पृष्ठ ... पर)

eg. No. D (SE)—120

Registered with the registrar of Newspapers of India : RN F.2 (A/308), Press/CCS

WARDS TOTAL REVOLU-TION THROUGH PARTI-IPATOR DEMOCRACY

G. B. K. Hooja

Indira Gandhi is reported to have id that if things do not improve, e people would kick Democracy t of the way and choose another stem of Government. If true, it is very unfortunate statement, and ould make opinion-makers and ht-thinking patriotic citizens sit and think. The alternative to mocracy is understood to be Dicta-rship, which may, however, disguise elf in various garbs. Let it be said the first place that what the people ve today is not Democracy in its e sense. It is an obligarchy. The wn sahibs, aided and abetted by business and the new rich farmers ve replaced the white sahibs and the dal land-lords. Social inequities tinue. The hiatus between the es and the have-nots continues and eed tends to become wider. Not-hstanding populist slogans, men, nen and children may be seen g, eating, cooking, defecating and ping on the pavements, under the t-bridges, under the very shades igh rise buildings, 5-star hotels; rived, sunken-eyed, lack-lustre dren may be seen raising their hands in alm-seeking at the door s of the temples of the capital; g hopefuls may be seen attending ols in tents, in cold weather or without even having facilities for drinking water, while on the r hand, fabulous sums are spent he primary or middle schools ation of children from the affluent es. Is it Democracy ?

The gap between the rural poor he rural rich is equally disturbing. cions of the families of the rural receive larger sums for their maintenance (dancing and drinking) at boarding schools or colleges than the salaries of their teachers, while the women-folk of the poorer classes trudge long distances to fetch potable water. Surely, Democracy does not consist in merely having the opportunity to cast your vote once in a while in the mysterious box to indicate your preference for the person who may be installed in authority. Democracy is a way of life. It is reflected in the day to day social behaviour. It stands for the avoidance of vulgar display of riches ; it stands for equality, human dignity, participation in the decision-making process, whether at the local, state or national level, curbing of snobbery or the **burra** sahib mentality, popular control over the institutions of authority, so that they perform their functions without favour or fear, malice or ill-will, in the spirit of Dharma.

As JP pointed out, there has been a steady erosion of the democratic values and standards of public conduct evolved during the freedom movement, since Independence, so much so that today all means are considered to be right means as long as they help achieve the end. There are no holds barred. It was in this back-ground that he suggested the organisation of People's Committees, in each assembly constituency polling booth, consisting of non-party members with no-caste, no-class attitudes of mind, pledged to act as **watch-dogs of democracy** and people's rights as well as duties. In each such committee, he said, there should be some representation of students and youth of that area ; and may we add, of women too. These committees should not be **for** or **against** any party. They should only be PRO-PEOPLE. This is the basis of the Voters' Council movement as sponsored by V.M. Tarkunde. To be effective, a voters' Council has to remain in touch with the elected representatives and other organs of Government operating in the area of its jurisdiction so as to ensure that they do not "go astray" and perform their functions diligently, honestly and democratically.

WITHOUT COMMENTS

Mrs. Gandhi has all the good qualities of a leader. But she does not want anybody to come up in politics except her son, Mr. Sanjay Gandhi.

Dev Raj Urs.

"The real man in the Congress (I), the man who controlls every thing is Mr. Sanjay Gandhi. But power without responsibility is a dangerous thing"

* * *

"The Prime Minister is running the government on the basis of total trusteeship of her son who heads a team of rejected boys from Doon School".

H. N. Bahuguna

"There really is no Congress (I) at all. It is just a Collection of time servers, who have gathered around two individuals as they regard these as dispensers of spoils"

Arun Shouri

"Babu Jagjivan Ram has become a symbol of the law of diminishing returns in Indian politics. In three years, the five-star hero has become an exprendable extra".

Mainstream, April 12

"The Indian challenge has all the dimensions of a pyramid with some of the finest brains at the apex but abysmal poverty and ignorance at the Base".

G. K. Reddy

NEXT ISSUE

LSS Resolution in Assam Situation—

National Affair. *Inder Jit*

1980-81, Budget—A Critique

Voters Councils— *Milestones*

Published and Printed by Sevakram for Lok Sevak Sangh, Lajpat Bhavan, Lajpat Nagar, New Delhi-24
and printed at Vimal Printing Press, South Extension-1, New Delhi.

A Thought for the Month :

In one self lies the whole world and if you know how to look and learn, then the door is there and the key is in your hand. Nobody on earth can give you either that key or the door to open, except yourself.

J. Krishna Murti.

The AWAKENING

AUTHORITARIANISM FOR MASSES

A guiding idea recently thrown by Mrs. Gandhi that people would reject democracy if their problems were not solved, is eloquent enough to show the trend of things to come. As it comes from one who once scuttled the democratic processes and institutions in the country, it gives meaning which can not be lost on the-once-bitten-and-twice-shy. The second pronouncement in the series has again come from Mrs. Gandhi herself asking people to vote for Congress (I) in Assembly elections, the party ruling at the Centre, in the name of uniform ideology and development. The subtle suggestiveness only reinforces the guiding idea thrown by her earlier, and is designed to be in right sequence of grand stratagem of giving a bad name to democracy and later to hang it.

The danger inherent in preparing ground for giving currency to tendencies and attitudes attuned to a highly camouflaged goal, is to deprive the real masters, the people, of levers which they wield in exercise of their political and democratic rights to change the Government democratically. As long as the people are able to wield and exercise the democratic right to change the Govt., the democratic processes, institutions and democratic ethos of the nation keep on growing and strengthening.

The ruse to lay bare the so-called incapacity of democratic system to solve people's problems and to give a better economic deal to the people is directed only to lead the people astray and shear them of their real power to change the Govt., itself. The inspiration, the guarantee and the bedrock on which real socialistic edifice can be raised is democracy, participatory democracy alone. It is only in a democratic set-up that administration and the people can really be better geared and better involved in processes of development than in a despotic regime. What is achieved by despots is at a cost much higher than what can be achieved through democracy and democratic processes. Democracy and development, democracy and socialism, and people's involvement in political administration and management of economic affairs, are the compatibles, real compatibles. There is no necessary link between peoples' economic amelioration and authoritarianism. What is being held-forth in Mrs. Gandhi's new guiding idea is a contrived order of rule by one person or by a caucus at the cost of the people themselves. This intriguing fact needs to be realised.

The present-day economic, political and social mess in the country is at a stage where no party, Congress(I) inclusive, can solve country's problems as every political party is pursuing only vote-catching, populist policies and slogans which cannot provide the answer to the problems. Therefore, in the present-day transitional phase in the national affairs, tensions and stresses and strains are bound to be there. Chaotic conditions have to be concomitants of our present-day national life. The only and essential choice before us today is whether we prefer chaos in a democratic set-up or chaos under authoritarianism. Authoritarianism cannot bring about an order true to people's aspirations. To ensure a better future for the country, the chaos in a democratic set-up is thousand times preferable to chaos or so-called order under authoritarianism as even in chaos a democracic set-up continues to provide opportunities people of learning through mistakes and exercising the right to change the Govt. democratically till a stage is set for bringing about order, social, economic and political.

During the course of transition from democratic chaos to democratic order, people have to fight against the new guiding idea thrown by Mrs. Gandhi, by organising and building pressures in the shape of intellectual and social movements. These struggles have to be in spheres and at levels, as diverse as can be possible. Justice, social, political and economic can only be realised in a highly participatory democratic structure. Authoritarianism for masses is a patent contradiction in terms.

Where do we go from Here; Chaos or Community ?

Extracts from Dr. Martin Luther King Jr's Books

"It is precisely this collision of immoral power with powerless morality which contributes the major crisis of our times." (P.37)

"Let us be those creative dissenters who will call our beloved nation to a higher destiny, to a new plateau of compassion, to a more noble expression of humaneness." (P.135)

A Revolution of Values

The stability of the large world house which is ours will involve a revolution of values to accompany the socientific and freedom revolutions engulfing the earth. We must rapidly begin the shift from 'thing'-oriented society to a 'person'-oriented society. (P. 186)

Truth is found neither in traditional capitalism nor in classical communism. Each represents a partial truth. Capitalism fails to see the truth in collectivism. Capitalism fails to realise that life is social. Communism fails to realise that life is personal. The good and just society is neither the thesis of Capitalism nor the antithesis of Communism, but a socially conscious democracy which reconciles the truths of individualism and collectivism." (P. 186)

"A genuine revolution of values means in the final analysis that our loyalties must become ecumenical rather than sectional. Every nation must now develop an overriding loyalty to makind as a whole in order to preserve the best in their individual societies." (P. 190)

Why We can't Wait

"More and more I feel that the people of ill will have used time much more effectively than have the people of good will. We shall have to repent in this generation not merely for the hateful words and actions of the bad people but for the—appalling silence of the good people (P. 89-90)

"A social movement that only moves people is merely a revolt. A movement that changes both people and institutions is a revolution." (P. 127)

विचारने की शक्ति न हो, तो संसार में हमारा कोई भी व्यवहार सम्पन्न नहीं हो

Readers Reactions

VOTERS COUNCIL MOVEMENT

VALUABLE SUGGESTIONS

By

R. N. GUPTA

The author has been pleasantly surprised at some very informed and highly interesting reactions to his article entitled "Voters Councils—Why & What For", published in the May issue of AWAKENING. Most readers of newspapers and journals in India take things stoically and hardly ever take the trouble of conveying their reactions to the author or the editor, unless the reaction is too intense or touches one's person. Judged in this context, the several letters and telephonic messages received from well-meaning readers of AWAKENING are indeed most welcome and revealing.

What is the Sanction ?

An appreciative reader while admitting that Voters Councils are needed to restore the faith of the people in the integrity and viability of our democratic system asks, "What is the sanction behind the decisions of your Voters Councils that you feel elected representatives of the people will not act rapaciously in self-interest and you can hold them under leash ? If JP activists with their wide enough popular support could not prevent the self-seeking and power crazy politicians from engaging in the nefarious game of defections, how do you think voters councils will prove any better"?

A very pertinent question indeed indicative of the deep frustration in the ranks of thinking individuals against politicians of easy virtue?

The answer lies in strong, mass-based Voters Councils agitating for the enactment of anti-defection laws and conducting marches and leading deputations to Parliament for a very early passage of such legislation. All parties in the country including the one in power swear by anti-defection. They only differ in the definition of the term "defection", calling it "change of heart", "home-coming", "realignment", "freedom of conscience" and so on. The answer is "Do Enjoy a Change of Heart and certainly Come-Back Home" but not by practising deception on the voters. Resign your seat and go to the ultimate sovereign again for a fresh mandate based on your "new revelation". Strong voters councils alone can achieve this task.

Freedom from Partisanship

Another knowledgeable reader asks, "How do you foresee that the voters councils themselves will not become hunting grounds of interested politicians trying to make use of them for self-aggrandisement and partisan support"?

The answer is the Voters Council membership pledge states, "I do not belong to or owe allegiance to any political party or intend to stand for election. I am firmly opposed to trivialisation of politics and public life and flouting of solemn pledges made to the voters at the time of elections." Wide awake and vigilant members of Voters Councils can certainly detect such elements and expose and ridicule them in general body meetings.

Why not Local Welfare Bodies

A very interesting suggestion made by more than one writer is "In the plethora of voluntary bodies—all professing by high ideals of public service—not only confusing the harassed citizens but exploiting them further by impinging on their thinning purse, why not make use of "Neighbourhood Welfare Associations" which already exist in most parts of cities, towns and villages and transmit the function of **voters education** to them. The voters Councils can have a thinking cell at the centre or even perhaps at the State Headquarters, comprising eminent Constitutional experts, socially conscious individuals and activists to guide the Welfare Associations, but for Gods sake give up the idea of forming separate Voters Councils in villages and towns. This work seems neither feasible nor necessary. Each Resident Welfare Body can act as a unit of the Voters Council in its locality and serve the objective of mass education of the voters in a far more effective and practical manner.

I tend to agree with this very valuable suggestion. In fact I would go further and suggest that the work of "consumer education", "creating civic consciousness", "adult 'literacy", "popularising of national language", "civil liberties" etc. should also be entrusted to such bodies which should be made efficient, viable and strong even with the statutory transfer of certain Panchayati Raj and Municipal functions to them.

I would, however, welcome the views of other readers and the leaders of the voters council movement on this very interesting and valuable suggestion through the columns of AWAKENING or by writing to the author at B-10, Gulmohar Park, New Delhi (Phone 666815).

Vimalaji and Sarvoday Workers

Excerpts from talk to Rajasthan and Madhya Pradesh Workers

What differentiates a worker from Jeewan Sadhak ? Mainly, the difference in their attitude and approach to life.

1. A workers's attitude is centered in the Self; in the 'I, consciousness.' He is busy thinking. "I have to change society, I have to serve, I have to work." He thinks in terms of 'I gave, I did, I served. There is no place for such language in the sadhak's life. The attitude of an experiencer who has to gain something is no longer there; nor is he burdened with the idea that he has to serve or do something. The idea of service does not remain here for, who is there to serve if we are all one ? For him, all that he does is for the purification of the life and his mind. Work is an offering to God or to his *Atman*.

2. The motivating force in a worker's life are ideas and idealogy. The motive may be to improve society, but attached with such motives is always the desire and expectation of praise. Then there will be pain and disappointment if there is failure and excitement and elation at success. The motivating force in a sadhak's life is from inside. For him there is joy in act itself and he is grateful for being given the opportunity to act, as action for him is a means of purifying his being. The sadhak's attitude is "this is my compulsive action, I can do nothing else; it is my joy". He does not look for results of his work nor is he disappointed at failures. Instead his only concern is to find out how he can improve his action, and if there was failure what was the reason for it; was it due to something lacking in himself, if so, how can he improve on himself.

3. In a sadhak's life there are inner tests and for the worker it is society which asks for an account of his activities. The criteria for measuring success or failure in a sadhak's life is taken from within and for the worker from outside.

Dedicated to the Service of the People of India

The AWAKENING

Monthly Journal of Lok Sevak Sangh, a non-party, non-power seeking organisation of voluntary constructive workers. Editor : Onkar Chand

Vol II No. 6 New Delhi, June, 1980. Annual Subscription Rs. 10/-

National Affairs

LOCAL NATIONALISM IN REVOLT IN MANIPUR

by Inder Jit

First Assam, then Meghalaya. Now Manipur. Trouble is spreading in the strategic and sensitive north-east region like a wild fire. Even experts on the area, who consider the situation in the region as "normally abnormal", are beginning to feel gravely concerned. What causes them anxiety is not only the fresh trouble that has erupted in Manipur. Even more worrying is that the problem is being over simplified and wrong solutions offered out of uninformed enthusiasm. As in Assam and Meghalaya, so also in Manipur. The trouble is not merely secessionist or a law and order problem which can be put down by force. It is much deeper and is a reflection of the long neglect of the region.

Not long ago, Mr. Y. B. Chavan, Ex-Union Minister of Home, described the problem as a revolt of "Local nationalism" against continuing neglect of the region. Manipur, which today faces a new type of insurgency, provides a case in point. Unlike in Nagaland and Mizoram, the insurgency is "ideological and urban based." The insurgents are a hard core of extremist Marxists each with an armed wing. (PREPAX — People's Revolutionary Party of Kangleipak—with its Red Army; People's Liberation Front with People's Liberation Army and United National Liberation Front). Of late the three have tended to function together to create terror and collect arms and money by ambushing security personnel, killing suspected informers and looting banks.

Significantly, the insurgents, though Marxist extremists, enjoy not a little support from the Meiteis (pronounced Maiteys) who mainly inhabit the valley and, as Vaishnavaites, are given to peaceful ways. The reason is not far to fathom. The insurgents themselves are Meiteis and their revolt reflects their increasing agitation over "continuing discrimination" against them in preference to the hills all around, which are largely inhabited by the tribals, who are now Christians by faith. Manipur has a population of some 10 lakhs. Of these about two-thirds resi[de in] the valley with an area of 700 sq. miles. The balance o[ne-] third live in the hills covering 8,000 sq miles.

The Meiteis, too, were or[iginally] tribals. But they are no longer [lis]ted as Scheduled Tribes having [embra]ced Vaishnavism and are [denied] various facilities of reservatio[n] available to the Targkhul[s,] Kukis and other tribals. The[y] have, for instance, only one pe[rson in] the IAS today. In sharp c[ontrast] Mizoram, with a much smaller [popu]lation, alone has some 35 pe[rsons in the] IAS. Consequently, the Meit[eis feel] themselves "largely bypass[ed by] much of the development t[hat has] taken place in the State. In [...] Meiteis are now beginning to [demand] that they too be given the [benefits] available to the tribals.

Specifically, they would [like to] be declared as "backward c[lasses]. Alternatively, they would like [to get] these benefits by returning [to their] pre-Vaishnavite tribal root[s. Not] only that. Many Meiteis are [said] to be toying with the idea of [embra]cing Christianity which, accord[ing to a] leading Manipuri, would ens[ure] them at least the monetary an[d other] benefits that now flow liberall[y to] Christians in the area through [Church] and other Missions. Accor[ding to] what a former Union Finance [Minister] told me, a sum of Rs 200 [...] received annually by Christia[n missi]ons all over India through [...] bank channels. This is in add[ition to] much else that is received in k[ind].

Regretably, the region c[ontinues] to be a far cry from New De[lhi even] after 32 years of independenc[e ... to] realise even today that the reg[ion and] its units are essentially fight[ing for] survival and their cultural i[dentity.] Some 30 years ago, two-thirds [of Tri]pura's population consisted o[f original] inhabitants and one-third ou[tsiders.] Today, the situation has r[eversed.] Likewise, the Bhutias and Lep[chas of] Sikkim find themselves swam[ped by] Nepalis from across the [border.] Clearly, the problems of the [region] deserve immediate and in-depth [atten]tion.

Nobody in the region w[ants to] go out of India. But the Centr[e must] show by word and deed t[hat the] region is an integral part of In[dia, not] only politically and geograp[hically] but also emotionally.